मरीया प्रिलेजायेवा

लेनिन कथा



प्रगति प्रकाशन
मास्को

МАРИЯ ПРИЛЕЖАЕВА

ЖИЗНЬ ЛЕНИНА

(в сокращении автора)

на языке хинди

हिंदी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७४



लेनिन भाषन करते हुए। चित्रकार—अ० गेरासिमोव

अनुक्रम

भूमिका के बदले

तीसरे दशक की बात है। मैं दो साल तक पेरेयास्लाव ज़िले के एक छोटे से गाव के स्कूल मे अध्यापिका थी। समीप ही नदी के ऊचे तट पर गोर्की गाव था। उसमे उद्योगपति गानशिन की एक छोटी सी कोठी थी। यहा १८९४ म लेनिन की पुस्तक "'जनता के मित्र' क्या हैं और वे सामाजिक-जनवादियो के विरुद्ध कैसे लडते हैं" छपी थी

इस बारे म मुझे एक पुराने स्थानीय अध्यापक ने बताया। उसने १८९४ म चौबीसवर्षीय व्लादीमिर इल्यीच को, जो उन दिनो गोर्की आये हुए थे, देखा था।

अध्यापक ने बताया "यहा हम भोजवृक्षो से घिरी पगडडी पर टहला करते थे। और यहा, बेंच पर व्लादीमिर इल्यीच अपने विद्यार्थी साथी गानशिन के साथ बैठते थे, जो पुस्तकें भी छापता था "

इस पुस्तक मे खास बात क्या थी? सब कुछ। विशेषकर अतिम निष्कर्ष, जो एक तरह की भविष्यवाणी थी। व्ला० इ० लेनिन ने लिखा था " रूसी मजदूर सभी जनवादी तत्वो का नेतृत्व करते हुए तानाशाही को उलट देगा और (सभी देशो के सर्वहारा के साथ) रूसी सर्वहारा को खुले राजनीतिक सघर्ष के सीधे रास्ते से विजयी कम्युनिस्ट क्राति की ओर ले जायेगा।"

यह मेरे युवाकाल का पहला असाधारण, अति प्रभावपूर्ण अनुभव था

मैंने बहुत समय तक युवा व्लादीमिर इल्यीच के जीवन और कार्यकलाप से सबधित तथ्यो, सामग्रियो और परिस्थितियो का अध्ययन किया। मेरी पहली पुस्तक—"प्रारभ"—इस बारे मे थी कि युवा लेनिन ने पीटसबर्ग

मे 'मजदूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग" की स्थापना की, जो आगे चलकर रूसी सामाजिक-जनवादी पार्टी और फिर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) बनी। निश्चय ही, जारशाही सरकार यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसकी नाक के नीचे ही लेनिन और उनके साथी जार और पूजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष चलायें। लेनिन और उनके बहुत से मित्रो को गिरफ्तार किया गया, जेलो मे ठूसा गया और दूर साइबेरिया मे निर्वासित किया गया।

मै वहा गयी, जहा लेनिन ने निर्वासन के लगभग तीन वर्ष बिताये थे। शूशेन्स्कोये गाव शूश के तट पर, महान साइबेरियाई नदी येनिसेई से कुछ ही दूर बसा हुआ है। क्षितिज के पास सायान की भव्य हिमाच्छादित पर्वतश्रृखला दिखायी देती है। मै उन सभी रास्तो और पगडडियो पर चली, जिनपर कभी व्लादीमिर इल्यीच के पाव पडे थे। मैने उनकी शूशेन्स्कोये मे लिखी हुई सभी किताबें और लेख पढे और स्तब्ध रह गयी। निर्वासन मे व्लादीमिर इल्यीच ने कितना अधिक, कितना विराट काम किया था! पार्टी की स्थापना की योजना उन्होने वहा तैयार की थी। और इसके लिए सबसे पहले अवैध पार्टी समाचारपत्र का निकालने का प्रबध करना जरूरी था।

मैने व्लादीमिर इल्यीच के शूशेन्स्कोये निर्वासन के बारे मे एक पुस्तक लिखी। मगर सारी निर्वासन अवधि के बारे मे नही। मैने इसे 'असाधारण वर्ष' नाम दिया। इसमे निर्वासन के केवल एक वर्ष का वर्णन था। किन्तु कैसा वर्ष! श्रम, सृजन, चिंतन और योजनाओ की दृष्टि से किसी को भी विस्मय मे डालनेवाला! और बहुत सुखी भी। क्योकि उनके साथ उनकी मगेतर नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना क्रूप्स्काया भी आकर रहने लगी थी। वह भी क्रातिकारी और सरकार द्वारा निर्वासित थी। और आकर्षक, शालीन और बुद्धिमती कितनी थी!

उस पुस्तक मे मैने इन्ही सब बातो के बारे मे लिखा था।

क्रातिकारी नायकत्व, विचारो और भावनाओ की उदात्तता ने मुझे इतना मोहित कर लिया कि मै उनकी तरफ से आखें नही मूद सकती थी।

और तब मैने एक और पुस्तक लिखी। इस बारे मे कि निर्वासन के बाद लेनिन ने विख्यात "ईस्क्रा" के प्रकाशन की तैयारिया कैसे की। इस पुस्तक का नाम था "शाति के तीन सप्ताह"। व्लादीमिर इल्यीच प्रवास

से पहले नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना से मिलने उफा गये थे। वह उन दिनो वहा अपने निर्वासन की शेप अवधि बिता रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच क्या विश्राम खोज रहे थे? या शाति? नही। "शाति, चन हमे केवल सपनो मे ही मिलता है " काम, काम, सदा काम। पार्टी के लिए, जनता के लिए, शाति के लिए। हमेशा और हर जगह। निष्क्रिय बैठना व्लादीमिर इल्यीच का स्वभाव नही था

इस तरह मैंने अपनी मुख्य पुस्तक "लेनिन कथा" लिखने से पहले युवा व्लादीमिर इल्यीच के बारे मे तीन पुस्तके लिखी।

"लेनिन कथा" को लिखने से पहले मैं कई बार अनिश्चय का शिकार बनी, घबडायी कि इस महान विभूति की जीवन कथा के साथ मैं पूरा न्याय कर पाऊगी कि नही, मुझमे इतनी सामर्थ्य है या नही।

मुझे अपने मित्रो—सपादको, वज्ञानिको, पार्टी नेताओ की सलाहो से बडी सहायता मिली। मैंने साथियो के सहारे का अनुभव किया और जो सबसे मुख्य बात है, मैं जानती थी कि पाठको को लेनिन के जीवन के बारे मे सरल शैली मे और निष्ठा के साथ लिखी गयी पुस्तक की बहुत जरूरत है। इस तरह वतमान पुस्तक प्रकाश मे आयी।

मरीया प्रिलेजायेवा
फरवरी, १९७१

खुशी

वोल्गा के तट पर बसे शात सिम्बीर्स्क के ऊपर ग्रासमान भरहियो के कलरव से गूज रहा था। शहर के पास नदी की धार एकाएक मुड गई थी। जमी हुई वर्फ कुछ समय पहले बह गई थी। वोल्गा म जहाज जा रहा था।

"सफेद जहाज सफेद जहाज, तू किस देश जा रहा है?"

सिम्बीर्स्क मे वसन्त आ गया था।

सडको और बागो मे चिडिया चहचहा रही थी। हवा भोजवक्षो की टहनियो से खेल रही थी। चारो तरफ चहलपहल थी, खुशी थी।

उल्यानोवो के घर म भी खुशी मनायी जा रही थी। वह नदी तट से थाडी ही दूरी पर था। उसकी खिडकिया गरम धूप मे चमक रही थी। नदी की तरफ से जहाजो के भोपुग्रो की आवाजें आ रही थी।

मा पालन के ऊपर झुकी। उसमे नवजात शिशु सोया हुआ था। मा का वात्सल्य उमड आया, वह सोचने लगी "मेरा लाल वडा होकर क्या बनगा? कसा होगा इसका भविष्य?"

तभी पिता इल्या निकोलायेविच कमरे मे दाखिल हुए।

"माशेन्का! कैसी हो, मेरी माशा!" उन्होने पूछा।

पिता के पीछे पीछे बडे बच्चे—अन्यूता और साशा—भी कमरे म आ गये थे। काली आखो और घुघराले बालोवाली अन्यूता छह साल की थी और साशा चार साल का। कौतूहल भरी निगाहो से देखते हुए वे पालने के करीब आये।

"तुम्हारे भाई हुआ है, बच्चो!" इल्या निकोलायेविच ने उन्हे बताया।

"अरे, कितना छोटा है!" अन्यूता अपना आश्चर्य छिपा न सकी।

"कोई बात नहीं, बड़ा होकर तुम्हारे जैसा हो जायगा," पिता ने जवाब दिया।

"और नाम क्या रखा है?" अपने नन्हे भाई को देखने के लिए पंजों के बल पड़े होते हुए साशा ने पूछा।

"वोलोद्या नाम रखेंगे," मां बोली।

इस तरह २२ अप्रैल, १८७० को वोल्गा नदी के तट पर बसे सिम्बीर्स्क शहर में एक नये मानव, व्लादीमिर उल्यानोव, का जन्म हुआ, जिसे आगे चलकर महान लेनिन बनना था।

सरदियों की शामें

साल बीतते गये और वोलोद्या भी बड़ा होता गया। उसे आठ साल पूरे हो चुके थे। अब पालने में मन्याशा लेटी थी। हां, वोलोद्या के बाद ओल्या और मीत्या भी हुए थे। अन्यूता, साशा, वोलोद्या, ओल्या, मीत्या, मन्याशा और पिता और मां – परिवार कितना बड़ा गया था!

अन्यूता और साशा स्कूल जाते थे। वोलोद्या अभी तैयारियां ही कर रहा था। उसे गणित और सही-सही लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए घर पर ही ट्यूटर लगाया हुआ था। कभी-कभी मां भी पढ़ाती थी। वह बहुत सी, तरह-तरह की दिलचस्प कहानियां जानती थी – गरम और ठंडे देशों के बारे में, सेंट बर्नार्ड कुत्ते के बारे में, जिसने आल्प्स पहाड़ों में एक भटके हुए राही को बचाया था, रूस पर नेपोलियन के हमले और बोरोदिनो की लड़ाई के बारे में।

सरदियों की शामों को बच्चों को मां जो कहानियां सुनाती थी, उन सबको गिनाना भी संभव नहीं। वोलोद्या को ये शामें, जमे हुए पाले के डिजाइनों से ढकी खिड़कियां, मां की आवाज और पन्ने पलटने की हल्की सरसराहट बहुत पसंद थी!

और जब सरदियां अपने यौवन पर होती थीं, तो नववर्ष से पहले की शामें और भी मजेदार लगतीं। मेज पर रंग-बिरंगे कागजों का ढेर लगा होता और बच्चे उनसे तरह-तरह की डिबियाएं, झालरें और जंजीरें बनाते।

इल्या निकोलायेविच अपने कमरे मे काम कर रहे होते। मा खाने के कमरे का दरवाजा कसकर बद कर देती, ताकि बच्चा का शोरशराबा पिता के कमरे तक न पहुचे।

गुलाबी, नीले, सुनहरे और पीले छल्ला से बनी कागज की जजीरे बच्चा के हाथा म सरसराती और बल खाती। अब थोडी ही देर म नववर्ष वृक्ष की बत्तिया जगमगाने लगेंगी।

चलो, नववर्ष वृक्ष देखने चले," वोलोद्या न कहा।

"हा, हा, चले!" ओल्या तुरत तैयार हो गई।

नन्हा मीत्या भी कुर्सी से कूदकर खडा हो गया।

और म भी!"

सब एक दूसरे का हाथ पकड लो," अन्यूता न कहा।

अधेरा हॉल रहस्यमय और जादुई सा लग रहा था। खिडकिया पर बन पाले के डिजाइनो के बीच से चाद दिखायी दे रहा था और फश पर चादनी के सफेद धब्बे पडे थे। नववर्ष वृक्ष एकाकी खडा अपनी पजे की तरह फली टहनिया से चिरोजई महक बिखेर रहा था।

'चलो, सारे घर का चक्कर लगायें," वोलोद्या न फिर सुझाया।

सभी न मालूम क्या, एकाएक खामोश हो गये। आज घर कुछ नया सा, असाधारण सा लग रहा था। पर वह सचमुच नया था, क्याकि उल्यानोव परिवार कुछ ही दिन हुए उसम आकर रहने लगा था। छोटे से गलियारे म परदे के पीछे यह मा का कमरा था। उसम आलमारी पर रखा लैम्प मद मद रोशनी बिखेर रहा था। पालने मे मन्याशा सोयी थी। बच्चे दबे कदम उसके पास से गुजर गये।

आगे व सकरे जीने से होते हुए बिचले तल्ले पर पहुचे, जहा उनके अपने कमरे थे। यहा चाद और भी तेजी से चमक रहा था। खिडकियो के काचा पर बने बफ के फूल छतिवन के पत्तो जैसे लग रहे थे।

बच्चा ने एक दूसरे का हाथ छोडे बिना बिचले तल्ले का चक्कर लगाया और उसी सकरे जीने से नीचे उतर आये।

तभी पिता के कमरे का दरवाजा खुला।

"तो यहा है हमारी फौज!" खुशी से आगे लपककर नीचे झुकते हुए उन्होने बच्चा को अपनी बाहो मे ले लिया।

लेकिन उन्होने देखा कि बच्चे किसी सोच मे डूबे हुए हैं। कसकर एक

दूसरे का हाथ पकड़े हुए हैं। ल्योशा निकोलायेविच कभी आते थे कि वालोद्या के कहने पर बच्चे सारे घर का चक्कर लगाते या खेल खेलते हैं।

फिर भी माता कुछ भारी हुए उदास स्वर में कहती:

'बस हमेशा इसी तरह हिलमिलकर रहना, मेरे प्यारे बच्चो!'

गरमियों का दिन

गरमियों का मौसम बड़ा शानदार, सुहावना होता है! सिम्बीर्स्क में गरमियों में काफी गरमी पड़ती थी और हवा भी शुष्क होती थी। सेबों से बाग लहलहा उठते थे। सिम्बीर्स्क में बाग बहुत थे।

उल्यानोवों के घर के पिछवाड़े में भी एक बाग था। यह था तो छोटा ही, पर उसमें क्या-क्या नहीं था! पापलरों से घिरी पगडंडी, एल्म वृक्षों के कुंज, जिनके नीचे तेज से तेज गरमी में भी सदा ठंडा रहता था, और अकासियों के घने-घने पेड़ फूलों से इस तरह लदे हुए कि उनका नाम ही 'पीत घन' पड़ गया था।

सुबह के सात बजे थे। खिड़की से छनकर तकिये पर पड़नेवाली किरण की चमक और गरमी से वालोद्या की आंखें खुल गईं और क्षण भर बाद ही वह फर्श पर खड़ा था। व्यायाम के बाद हाथ मुंह धोकर वह हवा की सी तेजी से बाग में निकल गया—सेब के पेड़ की तरफ, ताकि रात में झड़े हुए सेबों को दूसरे भाई-बहनों से पहले ही बटोर ले और बाद में सबको खिलाये। वालोद्या को इसमें एक विशेष प्रकार का आनन्द मिलता था।

उल्यानोवों के घर में वैसे भी सभी काफी तड़के उठ जाते थे। कुएं से पानी लाकर फूलों को सींचने का काम साशा और वालोद्या के जिम्मे था। अगर शाम को भूल गये होते थे, तो सुबह को अवश्य ही सींचना पड़ता था।

बाद में सब नाश्ते के लिए खाने के कमरे में इकट्ठा होते। मां याद दिलाती कि आज किस भाषा का दिन है, यानी नाश्ते के समय किस भाषा में बातचीत करनी है—फ्रांसीसी, जर्मन या कोई और।

बेशक हर रोज रूसी में बोलना अधिक आसान होता, पर मां समझती थी कि बच्चों को विदेशी भाषाएं भी आनी चाहियें।

'नाश्ते के बाद क्या करोगे?' ओल्या ने वालोद्या से पूछा।

"वही, जा माशा।"

और साशा हमेशा की तरह किताब लेकर पढ़ने बैठ गया। वह गंभीर किताबें पढ़ता था, उसे रसायनशास्त्र, प्रकृतिविज्ञान पसंद थे। यहां तक कि अहाते के एक कोने में उसने अपनी प्रयोगशाला और जन्तुशाला भी बना रखी थी, जिसमें शाखों पत्तों के बीच कुछ न कुछ कुतरती और गिलहरी पिंजड़े में इधर-उधर कूदती फांदती रहती थी।

गरमियों में कितनी खुली छूट होती है! चाहो तो मनपसंद किताब लेकर बाग के किसी छायादार कोने में बैठ जाओ और फिर दीन-दुनिया की सुध भी नहीं रहती। दिन के खाने तक बाग में सिर्फ चिड़ियों का चहचहाना ही सुनाई देता था। हां, कभी कभी घर से मां के सिलाई मशीन चलाने की आवाज भी सुनायी दे जाती थी वह हर समय बच्चों के लिए कोई न कोई चीज सीती रहती थीं। बेटियों को भी उन्होंने सिलाई सिखा दी थी।

दिन के खाने के बाद जब और पढ़ने का मन न होता, तो ओल्या वोलोद्या से कहती

'आओ, खेलने चलें।'

"काली छड़ी का खेल खेलेंगे! 'काली छड़ी आई, कहीं भी न पाई। जिसके पीछे मिलेगी, उसी पर पड़ेगी!'"

और जब अहाते से धूप चली जाती, सभी क्रोकेट के मैदान में इकट्ठे हो जाते। खेल में नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता। वोलोद्या और पिता सबसे जोशीले खिलाड़ी थे। वे ही सबसे ज्यादा हंसोड़ भी थे। सारे खेल भर ठहाके लगाते रहते थे।

इस बीच सूरज ढलने को हो जाता और पिता का आदेश सुनाई देता

"बच्चो, नहाने का समय हो गया है!"

सभी स्वियागा में नहाने के लिए चल पड़ते। यह पास ही में बहनेवाला छोटा सा, शांत नाला था, जिसके दोनों तटों पर पेड़ उगे हुए थे। हर कोई दौड़कर पानी में कूद पड़ता और फौवारे की तरह पानी के छींटे उड़ने लगते।

आकाश में सूर्यास्त की अरुणाली अभी छायी हुई थी कि दूर क्षितिज के ऊपर पहला तारा टिमटिमाने लग गया।

नहाने के बाद वोलोद्या और साशा सबसे अलग, आगे आगे जा रहे थे।

"साशा, क्या सोच रहे हो?"

"सब कुछ। यह तारा क्या रहा था, ? यह कहाँ से आया? धरती पर जीवन कब शुरू हुआ? हमारे जीने का या हमारा उद्देश्य क्या है?'

वालोद्या सुनता रहा। उसके विचार भी दौड़ने लगे। "सचमुच, हमारे जीवन का, हमारा, क्या उद्देश्य है? जीना, सोचना, पूछना, जानना, कुछ करना, यह सब कितना दिलचस्प है। साशा बुद्धिमान है और मुझे भी उसी जैसा बनना है।'

स्टीमर पर

घाट पर दो डेकवाला स्टीमर खड़ा था। कैबिनों की खिड़कियां धूप में चमक रही थीं। पालिश किये हुए पीतल के हत्थे सोने की तरह जगमगा रहे थे। कप्तान भाप के मुंह के पास जाकर जरूरी आदेश दे रहा था।

पिता ने टिकटों को एक बार फिर देखा सभी ठीक थे। फिर सामान को गिना। हर किसी के हाथ में एक न एक टोकरी या बंडल था। स्टीमर ने दो बार लंबी और तीसरी बार छोटी सीटी दी। चक्के घूमने लगे, चप्पुओं के नीचे पानी सरसराने लगा। स्टीमर सिम्बीर्स्क से काज़ान के लिए रवाना हो गया था।

काज़ान से कोकूश्किनो गांव तक चालीस वर्स्ट का रास्ता घोड़ों पर तय करना होगा।

सिम्बीर्स्क पीछे छूट गया। उसकी लाल छतें देर तक दीखती रहीं, पर ज्यों ही नदी का मोड़ आया, सब एकाएक नजरों से ओझल हो गया।

स्टीमर के साथ-साथ चिड़ियों का झुण्ड भी कानों को फाड़ती आवाजें करता उड़ रहा था।

वोलोद्या ने उन के लिए रोटी के कुछ टुकड़े फेंके और इंजनरूम की तरफ चल पड़ा। तांबे के पुर्जों और तेल से चमकता और तनाव के कारण थर्राता हुआ स्टीमइंजन धड़धड़ाता चल रहा था। संयोजी दण्ड बिना रुके चल रहे थे और वाल्वों से सीटी छोड़ते हुए भाप निकल रही थी। भट्ठी के सामने कमर तक नंगा और कोयले और ग्रीज़ की कालिख से सना हुआ फायरमैन काम कर रहा था। उसकी पीठ पर पसीने की धारें बह रही थीं।

चप्पुओं से पानी को काटते हुए स्टीमर वोल्गा में बहाव की उल्टी दिशा में बढ़े जा रहा था। डेक पर मुसाफिर टहल रहे थे और किनारों के सुन्दर

दश्या का मजा ले रहे थे। पिता शतरज की बिसात हाथ मे लिये हुए कैबिन स बाहर निकले। शतरज के मोहरे बहुत ही खूबसूरत थे और उन्हे उन्होने खुद ही बनाया था और सभी मोहरे अलग अलग तरह के थे।

"क्या, हो जाये एक एक बाजी," पिता न वोलोद्या को ललकारा।

पिता उससे बराबरी के दर्जे पर खेलते थे, हालाकि उस समय उसे सिर्फ दसवा साल चल रहा था। वसे यह भी कोई कम न था, क्योकि शीघ्र ही, अगस्त म, उसे स्कूल म दाखिले के लिए परीक्षा देनी थी। और तब "अलविदा, मौज मस्ती!'

"हुजूर, शह बचाइये!"

वोलोद्या ने फुर्ती से घोडे को चलाकर शह बचा ली।

"बडे चालाक हो! ठीक है, तो हम यह प्यादा चलते हैं।"

"आपके प्यादे स तो हम बच ही जायेंगे, पर अब जरा आप "

हवा वोलोद्या के हल्की ललाई लिये गहरे बादामी रग के बालो से खेल रही थी। वोल्गा मे सूरज की परछाइ से आखें चुधिया जाती थी।

"इजनरूम म कितनी गर्मी है!" माथे पर बल डालते हुए वोलोद्या न याद किया। "और फिर हर कही तेल की बू! फायरमन पसीने से नहाता रहता है। किसी तरह इसकी मेहनत को आसान नही बनाया जा सकता?"

पिता चुप रहे, पर साशा, जो अब तक उनके पास आ चुका था, कधे उचकाता हुआ बोला

"स्टीमर के मालिक को इससे कोई मतलब नही कि फायरमैन को कितनी कडी मेहनत करनी पडती ह।"

"पर यह तो अन्याय है!" वोलोद्या चिल्ला पडा।

"दुनिया म तुमने न्याय कहा देखा है?"

दोनो बेटो ने पिता की ओर देखा।

"पापा, हम जानते हैं कि आप न्याय के पक्ष म ह!' साशा ने उत्तेजित स्वर मे कहा।

स्टीमर ने भारी सी सीटी दी और उसकी गूज सारी वोल्गा पर फैल गई। सामने से दूसरा स्टीमर आ रहा था, उसी को देखकर यह सीटी दी गई थी। नदी म जबदस्त उथल पुथल सी मच गई और बडी बडी लहर किनारो से टकरान लगी।

स्कूली विद्यार्थी

आखिरकार अगस्त (१८७९) का वह दिन भी आ गया, जब वोलोद्या पहली कक्षा में प्रवेश के लिए परीक्षा देने स्कूल पहुंचा। स्कूल की दोमंजिला, पत्थर की इमारत शहर के केंद्र में, वोल्गा तट से थोड़ी ही दूरी पर स्थित थी। यहीं वोलोद्या को अगले आठ साल तक पढ़ना था।

लेकिन पहले प्रवेश परीक्षा पास करनी थी। परीक्षा लेनेवाले अध्यापक सख्ती की मुद्रा बनाये हुए मेज के पीछे बैठे हुए थे। प्रवेशार्थियों को एक एक करके बुलाया गया। जब वोलोद्या की बारी आयी, तो वह निर्भीकता के साथ ब्लैकबोर्ड के सामने जा खड़ा हुआ। अध्यापक सवाल पूछते गये और वह धड़ल्ले से उनके जवाब देता गया। बाद में गणित का सवाल दिया गया, तो उसे भी तुरत हल कर दिया।

वोलोद्या को सभी विषयों में उत्तम अंक मिले।

घर लौटने पर सभी भाई-बहनों ने उसे घेर लिया और बधाइयां देने लगे। मां ने उसे चमकीले बटनोंवाली स्कूल की पोशाक पहनाकर देखी। कल से वह पहली कक्षा में जायेगा। मां खिड़की की ओर देखने लगी। अब घर में स्कूल जानेवाले तीन बच्चे हो गये थे — अन्यूता, साशा और वोलोद्या। समय को गुजरते और बच्चों को बढ़ते भला देर ही क्या लगती है!

शाम को उल्यानोवों के घर में खाने के कमरे में सफेद लैम्पशेडवाली बत्ती के उजाले में सभी बच्चे कल के पाठ की तैयारी करने जमा हुए। पांचवर्षीय मीत्या का तो कोई पाठ था नहीं, इसलिए वह बड़ी लगन से कागज पर धुआं उगलती चिमनीवाला और वोल्गा की ऊंची-ऊंची लहरों पर तैरता जहाज बनाने में व्यस्त था। वोलोद्या ने अपना काम जल्दी ही खत्म कर लिया। आखिर पहली कक्षा के विद्यार्थी को पहले ही दिन कोई ज्यादा काम तो दिया नहीं जाता। अब आगे क्या करे? वह कागज का टिड्डा बनाने में जुट गया। जब वह तैयार हो गया, तो दौड़कर आया से धागा मांग लाया और बांधकर "फुदक" जो कहा, तो टिड्डा अन्यूता के सामने था!

"वोलोद्या, फिर लगा तू शरारत करने?"

धागा खिंचा, टिड्डा गायब हो गया। पर क्षण भर बाद ही वह साशा की कापी पर बैठा था!

जब तक किसी ने उसे पकड़ नहीं लिया, सबके सब हंसते रहे।

"खामोशी से बैठ!" अयूता ने वोलोद्या को डाटा।

पर वोलोद्या था कि खामोशी से बैठ ही नही सकता था। अब और क्या मज़ाक किया जाये?

"मीत्या, ऐ मीत्या, देख बकरा आ रहा है, सीगोवाला, दाढीवाला!"

और वोलोद्या सीगोवाला बकरा बना हुआ धीरे धीरे, सीधे मीत्या की तरफ बढने लगा। मीत्या कलाबाजी खाता हुआ और खिलखिलाकर हसता हुआ मेज़ के नीचे जा छिपा। तभी दरवाजे पर पिता दिखायी दिये।

"वोलोद्या, मेरे कमरे मे आओ।"

वोलोद्या का शरारतो का जोश अभी ठडा नही हुआ था, फिर भी वह पिता के पीछे-पीछे उनके कमरे मे दाखिल हुआ। कमरे मे एक किताबो की आल्मारी थी, एक बडी सी लिखने की मेज़ थी और दूसरी तरफ दीवार के पास एक गोल मेज़ और मेहमानो के बैठने के लिए सोफा रखे थे।

"यही बैठ रहो!" पिता ने आदेश दिया।

और वह फिर अपने काम मे लग गये। छुटपन से ही वोलोद्या के मन मे पिता के कमरे के लिए बडा आदर था। पिता बहुत काम करते थे। वे प्राय दौरा पर जाते थे और सरदी हो या गरमी, सूखा हो या बरसात, सैकडो कोस चलकर देहाती स्कूलो का निरीक्षण करते थे। सिम्बीस्क प्रान्त मे शायद ही कोई स्कूल हो, जिसके अध्यापको की वोलोद्या के पिता ने, जो स्कूल इन्स्पेक्टर थे, मदद न की हो। और घर लौटने पर रिपोर्टें तैयार करनी पडती थी, अध्यापन-योजनायें बनानी होती थी, अध्यापनशास्त्र के बारे मे लेख, टिप्पणिया, आदि लिखने होते थे।

"चलो आज का काम खत्म हो गया," कागजो को सभालकर फाइल मे बद करते हुए पिता बोले। "काम खत्म हो गया, तो मौज करो। पर इसका यह मतलब नही कि दूसरो के काम मे बाधा डालो," पिता ने प्यार से वोलोद्या को चेतावनी दी। "और अब बताओ, आज तुमने स्कूल मे क्या किया।"

वोलोद्या ने बता दिया। सब कुछ ठीक था।

हॉल से मद-मद सगीत सुनायी दिया।

वे भी चुपके से हॉल मे घुसे। हल्का अधेरा छाया हुआ था। पियाना पर रखे शमादाना मे मोमबत्तिया जल रही थी। मा पियानो बजा रही थी। सगीत इतना मधुर और उजला था, जैसे कि गरमियो का धूपखिला दिन हो। वोलोद्या और पिता एक कोने मे बैठ गये और देर तक सगीत सुनते रहे।

वालोद्या जब छोटी कक्षाओं में ही था, पिता डरते थे कि वह मेहनत करना सीख पायेगा या नहीं, चूंकि वह इतना लायक था कि हर नया पाठ को आसानी से सीख लेता था। बाद में पिता को विश्वास हो गया कि वोलोद्या डटकर मेहनत करना जानता है। जानता भी क्यों न, घर में हर कोई मेहनत का इतना आदर जो करता था!

साशा स्कूल की पढ़ाई खत्म कर पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में भरती हो गया था। उसके रवाना होने से पहले दोनों भाई एक रोज वनखंड गये थे। सिम्बीर्स्क में वोल्गा के खड़े, ऊंचे किनारे को इसी नाम से पुकारते थे और दोनों भाइयों को यह जगह बहुत पसंद थी। यहां से आसमान और नदी का विस्तृत दृश्य दिखायी देता था।

तुम्हें आदमी में सबसे ज्यादा अच्छा क्या लगता है?" उस रोज वोलोद्या ने पूछा था।

मेहनत, ज्ञान और ईमानदारी," साशा ने जवाब दिया था और फिर कुछ सोचकर जोड़ा था, "मैं समझता हूं कि हमारे पिता ऐसे ही आदमी हैं।"

आज वोलोद्या को साशा के ये शब्द बार-बार याद आ रहे थे। पिता देहाती स्कूलों के दौरे पर हुए थे और अब तक उन्हें लौट आना चाहिये था।

वोलोद्या निचले तल्ले पर अपने छोटे से कमरे में बैठा पढ़ रहा था। पास ही साशा का वैसा ही छोटा सा, पर खाली कमरा था। पिछले तीन साल से वह पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। अन्यूता भी वहीं, पीटर्सबर्ग में, महिला कॉलेज में पढ़ रही थी। वोलोद्या को उनकी, खास तौर से साशा की बहुत याद आती थी।

"काफी हो गया यादों में खोये रहते! अभी पढ़ाई भी करनी है," वोलोद्या ने अपने आप से कहा।

जब कल का पाठ तैयार हो गया, तो वोलोद्या ने बचपन के दिनों की तरह सभी किताब-कापियों को संभालकर थैले में रख दिया। फिर वह सारी शाम दूसरी किताबें पढ़ता रहा।

स्कूल के अध्यापक नहीं जानते थे कि वह दोब्रोल्युबोव, पीसरेव, बेलीन्स्की और गेर्त्सेन की किताबें पढ़ता है। इनसे उसे वह-वह बात मालूम

होती थी, जो स्कूल मे कभी नही पढायी जाती थी। इन्होने उसका समाज मे कदम-कदम पर होनेवाले अन्याय से साक्षात्कार कराया।

वोलोद्या ने किताब से नजर हटाकर घडी की ओर देखा। 'उफ, मैं कितनी देर से पढ रहा हू! जरा जाकर मा को देख आऊ।" और वह नीचे खाने के कमरे की तरफ दौड पडा।

मा अकेली नही थी। पिता के दोस्त और सहकर्मी इवान याकोव्लेविच याकोव्लेव यो ही थोडी देर बैठने के लिए आ गये थे। वह जाति से चुवाश थे और चुवाश स्कूलो के इन्स्पेक्टर के पद पर काम करते थे। इवान याकोव्लेव जारशाही सरकार द्वारा उत्पीडित अपनी अल्पसख्यक जाति के हितो की रक्षा के लिए सदा लडते रहते थे।

वोलोद्या ने उन्हें कहते सुना

"हमारे इल्या निकोलायेविच की बडाई इसमे है कि वह अपने अफसरो की तनिक भी चापलूसी नही करते। उल्टे, जहा तक होना है जनता की भलाई की ही सोचते हैं। मिसाल के लिए हम चुवाशो और मोर्दविनो के लिए ही उन्होने कितना किया है, कितने स्कूल खुलवाये है!"

मा बोली

"न मालूम क्या, वह अभी तक नही लौटे है। मुझे चिन्ता होने लगी है!"

पास के हॉल से सगीत की हल्की आवाज आयी। ओल्या पियानो पर चायकोव्स्की की रचना बजा रही थी। सभी चुप हो सगीत सुनने लगे।

तभी घटिया बजती सुनायी दी। उनकी आवाज लगातार नजदीक आती जा रही थी। वोलोद्या उछल पडा। मा भी झटके से उठ खडी हुइ। उनका चेहरा एकाएक खिल उठा।

"वोलोद्या, बच्चो, पापा आ गये है!"

सचमुच, फाटक के पास आकर घटियो का बजना रुक गया। सरकारी कोट के ऊपर भेड की खाल का भारी ओवरकोट डाले इल्या निकोलायेविच ने घर म प्रवेश किया। उनकी दाढी पर बर्फ के छीटे जम गय थे।

सबने पिता को कपडे उतारने म मदद दी। कोई जाकर घर पर पहनने की जाकेट और जूते ले आया। मेज पर खाना परोसा गया। पिता को बिठाया गया, खाना खिलाया गया। स्नेह की इस बाढ न उनका दिल छू लिया। वह गरमाये हुए बैठे अचकचाकर अपनी दाढी पर हाथ फेर रहे थे

"आह, इतने तूफानी और ठडे मौसम म सफर करने के बाद घर म कितना अच्छा लगता है!

जब स्वागत का जोश कुछ शान्त हो गया और पिता से ठण्डा गाना गा लानी जाती रही, तो वोलोद्या को लगा कि वह बहुत थक गए है और कुछ दुखी भी हैं। ऐसा ही महसूस इवान याकोव्लेविच को भी हुआ।

क्या कुछ अप्रिय घटा है, इल्या निकोलायविच ?"

इल्या निकोलायविच के चौडे, ऊचे माथे पर कडवी याद से मारे बल पड गये।

'जरा सोचिये, दूर, सुनसान स्तेपी मे छोटा सा गाव है। उसके बीचोबीच स्कूल है। हर तरफ से हवाओ के थपेडे खाता हुआ। स्कूल मे अध्यापिका का छोटा सा कमरा है, जिसमे अखबार और किताबें तो दूर, लकडी तक नही है। आप सोच सकते है कि सरदियो मे स्कूल को गरमाने के लिए लकडिया भी जमा करके नही रखी गई। और सब इसलिए कि अध्यापिका गाव के धनी मुखिया के सामने झुकी नही। बेचारी की जान मे आफत कर दी है। दो शब्द सहानुभूति के कहनेवाला भी कोई नही है "

"पापा, पर आपने तो उसका पक्ष लिया !" वोलोद्या बोला।

हा लिया तो। पर मै वहा कब तक रह सकता था ? मेरे बाद वह फिर अकेली रह गई है। मुखिया ने सारे गाव को अपनी मुट्ठी मे कर रखा है। किसानो के पास कोई अधिकार है नही। जमीन भी थोडी सी है और जो है, सब जमीदारो और अमीरो की है। गरीबो को आधी सरदिया बगैर रोटी के काटनी पडती हैं।'

इल्या निकोलायेविच कमरे मे टहलने लगे। उनका दम घुट रहा था, इसलिए उन्होने कालर के बटन खोल लिये। उनकी आखो मे उदासी सी छायी हुई थी।

'मेरे प्रिय, तुम थक गये हो। कुछ आराम कर लो," मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना ने चिन्तातुर स्वर मे कहा।

'मुझे कुछ नही हुआ है, माशेका। मै अभी काफी मजबूत हूं, मोटे बलूत की तरह इल्या निकोलायेविच ने विनोद किया। "और मेरे चारो तरफ नन्हे बलूत बढ रहे हैं।"

उन्होने वोलोद्या को बाहो मे ले लिया। वह सीधा खडा हो गया। पिता की तरह उसकी गाल की हड्डिया भी थोडी सी उभरी हुई थी और माथा भी उन्ही की तरह चौडा था। पिता के स्नेह ने उसका मर्म छू लिया। पर स्वभाव से शर्मीला होने के कारण वह जवाब मे हल्के से मुस्करा कर ही रह गया।

पिता

शीतकालीन छुट्टिया खत्म होने को आ रही थी। जल्दी ही आन्या पीटसबग लौट जायेगी। वह छुट्टियो मे घर आयी थी, पर साशा नही आ पाया था, क्योकि आने-जाने पर बहुत खच होता था।

पीटसबग मे घर की कमी महसूस करने के कारण आन्या को घर म छोटी से छोटी चीज भी बेहद खुशी देती थी खाने के कमरे और हॉल मे रखे फूलो के गमले, प्यारा सा पियानो, जिसे अब मा के अलावा बहन ओल्या भी बडी दक्षता के साथ बजाती थी

सारी छुट्टियो भर वोलोद्या बहन के साथ साथ रहा।

वे बत्ती जलाये बिना हाल के एक कोने मे सोफे पर बैठ जाते। कभी-कभी ओल्या भी पास बैठकर अयूता से पीटसबग के किस्से सुनती।

"वह समय कब आयेगा जब हम भी पीटसबग पढने जायेंगे?" वोलोद्या और ओल्या सोचते।

उस दिन, यानी १२ जनवरी, १८८६ को भी वे हमेशा की तरह हाल मे बैठे बतिया रहे थे।

"बच्चो, चाय का समय हो गया है!" तभी मा की आवाज सुनायी दी।

बच्चे खाने के कमरे की ओर जाने के लिए खडे हुए। पास ही पिता का कमरा था, इसलिए वे बचपन की आदत के अनुसार दबे पाव उसकी बगल से गुजरे।

पिता अपने काम मे बहुत व्यस्त थे। सालाना रिपोट की तैयारी के लिये उन्ह सुबह से शाम तक मेहनत करनी पडी थी। दूसरे इस्पक्टर और अध्यापक आकर दिन भर उनके साथ कायक्रमा की पूर्ति और विद्यार्थियो की प्रगति के बारे मे विचार विमश करते रहे थे।

अधखले किवाडा के बीच से वोलोद्या को पिता की झुकी हुई पीठ दिखाई दी। वह मुट्ठी पर कनपटी टिकाये मेज के पास बठे थे। "पापा अपने पर तनिक भी रहम नही करते," वोलोद्या ने सोचा।

किन्तु खाने के कमरे मे वातावरण इतना सुखद और गरम था और मेज पर रखे समोवार मे पानी सिसियाते हुए खौल रहा था कि चिन्ता आशका के सभी बादल छट चले और मन म फिर उल्लास की लहर दौड

गई। एक बार फिर सभी आया और साशा के विद्यार्थी जीवन के बा
म बात करने लगे। और इसके बारे म भी कि साशा शायद वैज्ञानिक बनगा-
उसमे वैज्ञानिक के सभी लक्षण और गुण थे—और ओल्या हो सकता है
कि एक सफल सगीतज्ञ होगी। अभी से वह पियानो कितना शानदार बजाती
है और साथ ही कितनी मेहनती और लगनी भी है। मा बडी चाय का
गिलास पिता को उनके कमरे म देकर समोवार के पास बठी बच्चा की
बात सुनती हुई कुछ बुन रही थी। कुछ देर बाद पिता अपने कमरे स निकल
और दहलीज पर रुककर देर तक सबको टकटकी लगाय देखते रहे। फिर
बिना कुछ कहे कमरे म वापस लौट गये।

पापा आज कुछ बदले-बदले लगते ह," वोलोद्या के मन म टीस
सी उठी।

चलू, जरा पापा को देखू," एकाएक मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना ने तय
किया और सलाइया अलग रखकर तेजी से उनके कमरे की तरफ चल पडी।

बच्चा! आओ, वोलोद्या!" उनकी कातर चीख सुनायी दी।

पिता एक तरफ को लुढके हुए सोफे पर पडे थे। उनकी आखें बुझी
बुझी सी थी और सारा बदन बुरी तरह काप रहा था।

तुरत किसी को डाक्टर को बुलाने भेजा गया। हडबडी मच गयी।
किसी की रुलाई और भयाकुल फुसफुसाहट सुनायी दी।

घटे भर बाद बच्चा के ऊपर से पिता का साया उठ गया।

ताबूत को हाल मे रखा गया। तीन दिन तक मा उसके पास से नही
हटी। वह मानो जड हो गई थी। लडकिया रो रही थी। आसुआ से
वोलोद्या का गला रुद्ध हो गया था। मगर उसने अपने आपको सभाल लिया।
'पापा, प्यारे पापा, तुम क्या सचमुच नही रहे? तुम्हारे बिना हम कसे
जियेंगे?"

असख्य लोग इल्या निकोलायविच से अन्तिम विदा लेने आये। उनम
अध्यापक भी थे, विद्यार्थी भी और मित्र तथा साथी भी। वोलोद्या जानता
था कि पिता जनता के लिए महत्वपूण और लाभदायक काम कर रहे ह,
मगर यह वह अब जाकर ही समझ पाया कि उन्होने लोगा की कितनी
भलाई की है।

जिस रोज इल्या निकोलायेविच को दफनाया गया, उस रोज बहुत
ठड थी और धूप निकली हुई थी। पाले की मखमल से ढके पेड जडवत

खडे थे। लाल बुलफिंचें आसपास की हर चीज से बेखबर इस टहनी से उस टहनी पर फुदक रही थी, जिससे टहनिया हिल उठती और उनसे रुपहली धूल झडने लगती। ताबूत का लोग उठाये हुए थे और सबसे आगे-आगे इल्या निकोलायेविच के शिष्य श्रद्धाजलि-मालाए लिये जा रहे थे।

"अलविदा, पापा!" रुद्ध कठ से वोलोद्या ने पिता से अतिम विदा ली।

पहली मार्च

पिता जब जीवित थे, उन्ही दिनो एक बार इवान याकोवलेविच याकोव्लेव एक नौजवान चुवाश को, जिसका नाम ओखोतनिकोव था, वोलोद्या से मिलाने लाये थे। ओखोतनिकोव माध्यमिक शिक्षा पूरी नही कर पाया था।

"इसे आगे पढाना है," इवान याकोव्लेविच ने कहा था। "चुवाशो को पढे लिखे लोगो की बहुत जरूरत है।"

वोलोद्या ओखोतनिकोव को मुफ्त पढाने के लिए तयार हो गया। बाद मे जब इल्या निकोलायेविच न रहे, तो वोलोद्या और भी मन लगाकर उसे पढाने लगा। मानो इस तरह पिता की याद को ताजा रखना चाहता हो। वह जानता था कि पिता चुवाश स्कूलो की कितनी चिता करते थे कितनी मदद करते थे।

"महान आदमी थे। जीवन भर लोगो का कितना भला किया!" इल्या निकोलायेविच की याद करते हुए ओखोतनिकोव कहा करता था।

अब वोलोद्या प्राय सोचने लगा था कि जनता की भलाई के लिए कैसे रहा जाये। यह ठीक है कि वह किसान के बेटे ओखोतनिकोव को पढाता है। पर आगे? वोलोद्या महसूस करने लगा कि जनता के असली हितैषी, रक्षक क्रातिकारी लोग है। लेकिन वह ठीक ठीक नही जानता था कि क्रातिकारी सघर्ष कैसे किया जाये। उसे स्कूलो के कठोर और निर्मम तौर-तरीके पसद नही थे। उसे भगवान मे भी विश्वास नही था, इसलिए उसने गले से क्रास भी उतार फेका था। वह समाज मे अन्याय के बोलबाले के बारे मे बहुत सोचता। वह देखता था कि धनी लोग निठल्ले बैठे रहते है और गरीब दिन रात कमरतोड मेहनत करने के बाद भी ज्या के त्या गरीब

बने रहते हैं। क्या यह न्याय है? उसे जार से भी नफरत हो गइ थी। जार निरकुश था। पर उसके विरुद्ध कैसे लडा जाये?

वहा, पीटसबग मे, साशा भी क्या इस बारे मे सोचता है? या वह राजनीति से अलग रहकर सिफ विज्ञान को ही समर्पित है। वोलोद्या को इस बारे म कोई ज्ञान नही था। पीटसबग मे जो १ माच, १८८७ को घटा था, वोलोद्या मा और यहा तक कि आन्या के लिए भी, जिसमे साशा बहुत घुला मिला था और पीटसबग मे प्राय मिलता रहता था, सवया अप्रत्याशित और स्वच्छ आकाश मे बिजली के गरजने जसा था।

स्कूल मे पढाई का अतिम घटा चल रहा था। सब कुछ सामान्य था। लकिन स्कूल के बाहर एक आदमी खडा वालोद्या का इन्तजार कर रहा था

'वेरा वसीलयेव्ना ने तुरत आने का कहा है।"

वेरा वसीलयेव्ना कश्कादामोवा ने, जो इल्या निकोलायेविच की पुराना साथी थी, कापते हाथो से वालोद्या की ओर पत्र बढाया।

वह पीटसबग से आया था और उसमे लिखा था १ माच को कुछ विद्यार्थियो न जार अलेक्साद्र तृतीय को मारने का असफल प्रयास किया। सभी विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिये गये ह और उनमे अलेक्साद्र उल्यानाव भी है।

पत्र पढ लेने के बाद देर तक वोलोद्या अवाक् खडा रहा। साशा! भाई! दुबला, लबा, बडी बडी सोच मे खोयी आखोवाला, होनहार, बुद्धिमान साशा! और आन्या भी गिरफ्तार हो गई है!

पिता की मृत्यु को साल भर से कुछ ही ऊपर हुआ था। मा अभी भी शोक के कपडा मे थी। फिर भी वह न रोयी, न हतोत्साह ही हुइ। हा, चेहरे पर एकाएक झुरिया और उभर आयी। काली पोशाक म वह इतनी गभीर, इतनी शोक म डूबी लगती कि वोलोद्या का दिल कराह उठता। मा ने सबको बताया कि घर म क्या करना है और कसे रहना है और खुद उसी दिन पीटसबग के लिए रवाना हो गयी।

अब घर म वोलोद्या ही सबसे बडा था। सबस छोटी मन्याशा को सिफ नौवा साल चल रहा था।

'वोलोद्या कोई खेल खेले, मन्याशा अनुरोध करती। "न जाने क्या तुम आज हम भी नहा रहे हो!

वोलोद्या न चाहते हुए भी वहन के साथ खेलने को तो तैयार हो जाता, पर हसी तव भी नही लौटती। "साशा, मेरे प्यारे भाई, अब तुम्हारा क्या होगा?"

मई का महीना आ गया। स्कूल मे परीक्षाए शुरू हो गई। वोलोद्या और ओल्या, दोनो ही पास हो गये। दोनो ही गुमगुम, जड हालत मे परीक्षा देने आये थे। मगर परीक्षक उनके जवाबो से चकित रह गये–भाई और बहन, दोनो ने बहुत बढिया जवाब दिये थे। बहुत बढिया और तब तक अखबारा मे छप चुका था कि सावजनिक स्कूला के भूतपूव इस्पेक्टर के वेटे अलेक्सान्द्र उल्यानोव को

वोलोद्या परीक्षा देने जा रहा था। सिम्बीर्स्क की सडके चिडियो की वसतकालीन चहचहाहट से गूज रही थी। सव कुछ हमेशा जैसा था, जीवन, गति और कोलाहल से भरपूर।

तभी उसे लैम्प के खभे के पास लोगा की भीड दिखायी दी। खभे पर कोई कागज चिपका हुआ था और लोग पढ रहे थे। उनमे पिता का एक साथी भी था। वोलोद्या को देखते ही वह मुडकर तेज कदमो से वहा से चला गया। लोग भी तितर-वितर हो गये। खभे के पास पहुचकर वोलोद्या न भी कागज पर लिखी हुई सूचना पढी। उसकी आखो के आगे अधेरा छा गया। जार की हत्या के प्रयास के अपराध म पाच विद्यार्थियो को फासी दे दी गई थी। और उनमे साशा भी था।

फासी की सूचनाए सारे शहर म टगी हुई थी।

वोलोद्या जब स्कूल के हॉल मे पहुचा, तो वहा पूरी खामोशी, भयावह खामोशी छायी हुई थी। उसने ज्यामिति और त्रिकोणमिति के सवाल सबसे पहले हल कर लिए। कापी अध्यापक को देकर वह बाहर निकल वेनस्स की ओर चल पडा। वसन्तकाल की पानी से भरपूर वोल्गा कास्पियन सागर की ओर वढी जा रही थी। एक छोटा सा जहाज बडे से बजरे को खीचे लिये जा रहा था। चारा ओर नीरवता थी, सन्नाटा था। क्या किया है उन्होने साशा के साथ!

हफ्ते भर बाद मा भी पीटसवग से लौट आयी। वालोद्या न देखा कि उनके वाल पूरी तरह सफेद हो गय है और वह बहुत बूढी लगन लगी है।

सिम्बीर्स्क से विदा

सिम्बीर्स्क में अब सभी जान पहचानवालों ने उल्यानोव परिवार से मुंह मोड़ लिया। मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना जब सड़क से गुज़रती, तो मिलनेवाले कतराकर सड़क के दूसरी ओर हो लेते, ताकि फांसीयाफ्ता बेटे की मां से दो बातें न करनी पड़ें।

मगर मां गर्व से सिर ऊंचा किये अपने रास्ते चलती रहती। वह न कभी रोती, न साशा का ज़िक्र ही करती। "मां बहुत दृढ़ और गर्वीली है," *वोलोद्या बड़ी श्रद्धा से उनके बारे में सोचता।*

वोलोद्या ने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली थी। अध्यापकों के बीच इस बारे में बहस हुई थी कि प्राणदंड पाये हुए आदमी के भाई को स्वर्णपदक दिया जाना चाहिये कि नहीं। किन्तु वोलोद्या ने फाइनल की सभी परीक्षाओं में इतने बढ़िया अंक पाये थे कि उन्हें स्वर्णपदक देना ही पड़ा।

"वोलोद्या को विश्वविद्यालय में भर्ती होना चाहिये," मां ने इवान याकोव्लेविच के सामने अपने मन की बात कही। "पर सवाल यह है कि उसे पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में लेने को तैयार होंगे?"

"नहीं लेंगे। इसकी कोशिश करना भी बेकार है।"

पिता के मृत्यु के बाद परिवार को तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। बच्चे पढ़ रहे थे और कमानेवाला कोई नहीं था। मां को पिता की पेंशन मिलती थी, पर वह परिवार के भरण-पोषण के लिए भी मुश्किल से पूरी पड़ पाती थी।

अंततः यह तय किया गया कि सिम्बीर्स्क छोड़ दिया जाये। "हम अपने इस प्रिय घर को, जिसका हर कोना विगत के सुखी दिनों की याद दिलाता है, इस बाग को, जिसका हर पेड़ अपनी जान की तरह प्यारा है, और सभी मित्रों और परिचितों को, जो अब पराये बन गये हैं, छोड़कर अन्यत्र चले जायेंगे।'

पर नहीं सभी पराये नहीं बने थे। पिता के अनन्य साथी इवान याकोव्लेविच पराये नहीं बने थे। वोलोद्या का विद्यार्थी ओखोत्निकोव पराया नहीं बना था। वेरा वसील्येव्ना भी परायी नहीं बनी थी उल्टे वह दुख की घड़ी में मां के और निकट ही आ गई थी।

सिम्बीर्स्क के अखबार में एक दिन एक विज्ञापन निकला 'मकान,

जिसके साथ बाग भी है, पियानो और फर्नीचर बिकाऊ है। – उल्यानोवा, मास्को सडक।"

मकान म खरीदारो का ताता लग गया। लाग आते, कमर दखते, चीजो को छूकर, उलट-फुलटकर जाचते। मा पर वे सिर से पैर तक नजर डालत और फुसफुसाने लगते। मा पीली पडी, चेहरे पर कठोरता का भाव लिये और अपने सफेद बाला पर काला लेसदार रुमाल ओढे दरवाजे पर खडी रहती। वोलोद्या की इच्छा होती कि दौडकर मा के पास जाकर उन सब विद्वेषपूण और टटोलती निगाहा से उन्ह बचाये, उनकी रक्षा करे।

रह रहकर उसे साशा भी याद आता। "साशा, तुम्ह जार से नफरत थी। तुमने उसे मारना चाहा। तुम सोचते थ कि तब सब कुछ बदल जायेगा, लोग बेहतर रहने लगेंगे। लेकिन ६ साल पहले, १ माच, १८८१ को इसी तरह जार अलेक्सान्द्र द्वितीय भी तो मारा गया था। उससे क्या लागा का जीवन सुधर गया? तनिक भी नही। अलेक्सान्द्र द्वितीय की जगह पर अलेक्सान्द्र ततीय आ गया। लोगा की हालत ज्या की त्या बनी रही। तो इसका मतलब है कि सघप का तरीका बदलना होगा!"

इस तरह वह सोचा करता।

और इस बीच नय-नये खरीदार आते रहते। वे भी चीजो को छूते, उलटते पलटते और पसद आने पर गाडी पर लादकर ले जाते।

सिफ पियानो को ही किसी ने नही खरीदा।

वोलोद्या ने उसके ठडे ऊपरी हिस्से पर हाथ फेरा। "हमारा सारा बचपन और सुखी दिन तुम्ही से जुडे हुए थे।"

परिवार पियानो को भी अपने साथ काजान ले गया।

काजान की सभा

जब वोलोद्या उल्यानोव काजान विश्वविद्यालय मे भरती हुआ था, तो उसे आशा थी कि यहा का वातावरण सिम्बीर्स्क के स्कूल से कही असकीण, स्वच्छद होगा। पर कहा! विद्यार्थियो की हर हरकत, हर बात पर नजर रखी जाती थी। कही कोई जार और सरकार के विरुद्ध, विश्वविद्यालय के अधिकारियो के विरुद्ध या इन्स्पेक्टर पोतापोव के विरुद्ध

ता कुछ नही कह रहा है ? इन्सपेक्टर पोतापाव बहुत ही बेहूदा भारी भरकम और भावशून्य निगाहोंवाला आदमी था, जिसमे दया-सहानुभूति रत्तीभर भी नही थी। उसके आदमी आकर उसे विद्यार्थियों की हर हरकत की रिपोर्ट दे जाते। वह दोषियों की सूची बनाता और बडी बेरहमी के साथ उन्हें विश्वविद्यालय से निष्कासित कर देता। खास तौर से ग़रीब विद्यार्थियों को। ग़रीबों के वैसे भी विश्वविद्यालय में पढ़ना दिनोदिन कठिन होता जा रहा था फीस कई गुना बढ़ा दी गई थी।

काज़ान विश्वविद्यालय का वातावरण जेल की तरह मनहूस और बोझिल था। उन दिनों वैसे तो सारा रूस ही जेल सा बना हुआ था।

४ दिसंबर, १८८७ की बात है। अखबारों में मास्को के विद्यार्थी दंगों की खबर छपी थी। फलत काज़ान के विद्यार्थियों के बीच भी यह गुप्त अपील प्रचारित होने लगी अपने अधिकारों के लिए खड़े होओ! संघर्ष करो!"

दिन में बारह बजे यह आह्वान सुनायी दिया

"विद्यार्थियो! हाल में सभा होगी!"

सभी तरफ से उमडते हुए विद्यार्थी दूसरी मंजिल पर हाल में इकट्ठे होने लगे। सबसे पहले पहुचनेवालों में वोलोद्या उल्यानोव भी था।

साथियो!" सभा के अध्यक्ष ने विद्यार्थियों की भीड को पुकारते हुए कहा, हम शपथ खाते हैं कि एक-दूसरे का साथ देंगे, अपने अधिकारों की रक्षा करेंगे! हम स्वतंत्रता और न्याय की माग करते हैं "

तभी हॉल में दढियल और भारी भरकम पोतापोव ने प्रवेश किया।

'सज्जनो! मैं कानून के नाम पर आप लोगों से तुरत तितर बितर हो जाने की माग करता हूं!"

"निकल जाओ! मुर्दाबाद!" भीड चिल्लायी।

इन्स्पेक्टर डरकर भाग गया।

इसके बाद रेक्टर आया। विद्यार्थी खामोश हो गये। रेक्टर को मागपत्र थमाया गया।

'रूस में रहना दूभर हो गया है। विद्यार्थियों का जीवन दूभर हो गया है,' उसमें कहा गया था।

विद्यार्थियो, शात हो जाओ," नौजवानों की उत्तेजित भावनाओं

को शात करने का और कोई उपाय न देखकर रेक्टर उन्हे समझाने-बुझाने लगा।

"तो इसका मतलब है कि आप हमारी मागो से सहमत नही हैं?" विद्यार्थी फिर उफन पडे— "साथियो, विरोध के तौर पर हम विश्वविद्यालय छोडते हैं। अपने विद्यार्थी-काड लौटा दो!"

विद्यार्थी रेक्टर के कार्यालय मे जाकर अपने अपने काड लौटाने लगे। कार्डों का ढेर बढने लगा। दस बीस तीस निन्यानवे

काड लौटानेवालो मे वोलोद्या उल्यानोव भी था। उसी दिन शाम तक उसे विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया।

उस रात उसे गिरफ्तार भी कर लिया गया और कुछ दिन बाद विश्वविद्यालय से निष्कासित व्लादीमिर उल्यानोव निर्वासन दण्ड पाकर पुलिस की देखरेख म कोकूश्किनो गाव जा रहा था।

भविष्य का निर्धारण

कोकूश्किनो मे सरदियो मे कडाके की ठड पडती थी। बर्फानी तूफान प्राय आते थे। घर के अदर भी हवा से बचने का कोई उपाय नही था। रातो मे चिमनी के अदर हवा साय-साय करती रहती थी। जीवन बहुत ही एकाकी और उदासी से भरा था।

सारी सरदियो भर वोलोद्या पढता रहा। चेर्नीशेव्स्की उसके प्रिय लेखक बन गये। वह उनकी क्रातिकारिता से अत्यन्त प्रभावित था। चेर्नीशेव्स्की से उसे मालूम हुआ कि रूसी समाज का वास्तविक ढाचा क्या है। सारी सत्ता जार, नौकरशाहो, उद्योगपतियो और जमीदारो के हाथ मे थी। किसानो और मजदूरो के लिए जीवन जैसे-तैसे काटना भी दूभर था। चेर्नीशेव्स्की ने उसका रूसी जीवन की विषमताओ से परिचय कराया और सघष के लिए, क्राति के लिए प्रेरित किया। कितने अमूल्य पृष्ठ थे वे! वोलोद्या ने उन सरदियो मे उन्हे न जाने कितनी बार पढा होगा और हर बार वे कुछ न कुछ नया कहते थे।

अब वोलोद्या बहुत सोचता था। जीवन के बारे मे उसके अपने सपने, अपनी योजनाए थी। जीवन का लक्ष्य भी स्पष्ट हो गया था। और यह था क्रातिकारी सघष, जार और अमीरो के खिलाफ सघष, आम लोगो के सुख

और आज़ादी के लिए संघर्ष। अब वह अपना सारा जीवन उसी संघर्ष को अर्पित कर देना चाहता था।

क्रांतिकारी संघर्ष—यही जीवन का एकमात्र, मुख्य लक्ष्य था। किन्तु जीवन-निर्वाह के लिए आजीविका का साधन भी तो चाहिये। और इसके लिए विश्वविद्यालय की पढाई खत्म करना, डिग्री पाना जरूरी था।

वसंत मे वोलोद्या ने कजान विश्वविद्यालय को प्रार्थनापत्र भेजा। मगर यह स्वीकार नही हुआ।

गरमियो के अंत मे मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना ने शिक्षा मत्रालय के नाम एक प्रार्थनापत्र भेजा। यह भी मजूर नही हुआ।

वोलोद्या ने मत्रालय से एक बार फिर प्रार्थना करने का फैसला किया। मगर इस बार भी असफलता ही हाथ लगी।

अब इसके अलावा और कोई चारा नही था कि घर पर बैठकर ही विश्वविद्यालय के पूरे कोर्स की तैयारी की जाये। भूतपूर्व विद्यार्थी व्लादीमिर उल्यानोव ने विधि संकाय के चार साल के कोर्स का डेढ साल मे खुद ही अध्ययन किया और परीक्षा देने के लिए पीटर्सबर्ग रवाना हो गया।

प्रश्न बहुत कठिन थे। सफेद बालोवाले बूढे प्रोफेसरो ने उत्तरो को ध्यान से सुना। हल्के से उभरे गालो और दमकती तथा थोडी सी भिची आखोवाला नौजवान विषय को भली भाति जानता था। प्रोफेसरो ने आपस मे विचार विमर्श किया। सबकी यही राय निकली कि उल्यानोव समूचे विश्वविद्यालय मे सबसे अधिक अंक पाने का अधिकारी है।

व्लादीमिर उल्यानोव अपनी सफलता पर अत्यंत हर्षित था। वह पीटर्सबर्ग को बहुत कम जानता था और प्राय खाली समय मे बहन ओल्गा के साथ नेव्स्की मार्ग पर टहलने, शहर की सैर करने जाया करता था। ओल्गा पीटर्सबर्ग मे ही महिला कालेज मे पढती थी।

परीक्षाओ के बाद वह ओल्गा से मिलने के लिए चल पडा। अपनी खुशी उसके साथ भी बाटना चाहता था। इतनी मेहनत बेकार ही नही की थी! शीघ्र ही वह पूरी तरह पीटर्सबर्ग आ जायगा, अपना सबसे महत्वपूर्ण काम—क्रांतिकारी संघर्ष—शुरू करेगा!

जब वह बहन के यहा पहुचा, तो वह तेज बुखार से जलती हुई सन्निपात की हालत मे बिस्तर पर पडी तडप रही थी। उसके बाल बिखरे

हुए और आठ सूखे हुए थे। वह हर समय कुछ न कुछ पकड़ने की कोशिश कर रही थी और उसके होठ कुछ बुदबुदा रहे थे।

मा! मा! मुझे बचाओ!"

व्लादीमिर इल्यीच ने उसका हाथ अपने हाथों में लिया। मगर वह भाई को पहचान न सकी और झटककर अलग हो गई। वह तुरंत उसे अस्पताल ले गया और साथ ही मा को तार भी कर दिया।

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना के पीटर्सबर्ग पहुंचते पहुंचते ओल्या की हालत बिल्कुल ही बिगड़ गई। ८ मई १८९१ को उसके प्राणपखेरू उड़ गये। चार साल पहले आज के ही दिन साशा को फांसी दी गई थी।

ताबूत के पीछे-पीछे व्लादीमिर इल्यीच मा को थामे हुए चल रहा था। मा का चेहरा पीला, निष्प्रभ, आठ जोर से भींचे हुए और आखें सूनी सूनी तथा अश्रुहीन थीं।

कब्रगाह में एक और, ताजा टीला पैदा हो गया। ओल्या की सहेलियों ने कब्र को फूलों से ढक दिया।

ओल्या को दफनाने के बाद व्लादीमिर इल्यीच मा के साथ समारा लौट आया। उन दिनों उल्यानोव परिवार इसी नगर में रहता था।

समारा में बिताए हुए साल व्लादीमिर इल्यीच के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण थे। वहीं उसने विश्वविद्यालय की परीक्षा की तैयारी की थी और वहीं मार्क्स की विचारधारा का निकट से और गहरे तौर पर अध्ययन किया था।

महान जर्मन विद्वान और क्रांतिकारी कार्ल मार्क्स विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'पूंजी' के लेखक और 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' के सहलेखक थे। 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' उन्होंने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर लिखा था। मार्क्स ने सिद्ध किया था कि अंततः मजदूर वर्ग पूंजीपतियों पर विजय पा लेगा और सत्ता अपने हाथ में लेकर धरती पर एक नये, कम्युनिस्ट समाज की स्थापना करेगा। व्लादीमिर इल्यीच इससे बहुत प्रभावित हुआ था। मार्क्स के विचारों ने उसके हृदय तथा मस्तिष्क, दोनों को उद्वेलित किया था। अब उसके समक्ष भविष्य का रास्ता पूरी तरह स्पष्ट था। रास्ता चुन लिया गया था और वह भी हमेशा के लिए।

मार्क्स की विचारधारा का अनुसरण करनेवाले मार्क्सवादी कहलाते थे। इस तरह अब व्लादीमिर इल्यीच भी मार्क्सवादी था। वह समारा की

मार्क्सवादी मंडलों की गतिविधियों में हिस्सा लेने और मार्क्स के विचारों का प्रचार-प्रसार करने लगा। केवल उस समय पुलिस के चंगुल में फंसने से बचने के लिए मार्क्स के विचारों का प्रचार गुप्त रूप से ही किया जा सकता था।

परीक्षाओं के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने समारा में वकालत शुरू की और अनेक बार किसानों और गरीब लोगों की ओर से पैरवी की।

वह काम और अध्ययन में डूबा रहता। मगर उसकी हार्दिक आकांक्षा थी कि समारा छोड़कर किसी बड़े औद्योगिक नगर, खास तौर से पीटर्सबर्ग में जाकर रहने लगे। वह पीटर्सबर्ग कभी का चला भी गया होता, पर मां को अकेली कैसे छोड़ा जाय। मां आल्या की याद में बहुत उदास रहती थी। व्लादीमिर इल्यीच अपनी चिन्ता और स्नेह से भरपूर व्यवहार से मां का दिल बहलाये रखने की भरसक कोशिश करता।

आखिरकार १८९३ की शरद में उल्यानोवों ने समारा छोड़ ही दिया। मीत्या के विश्वविद्यालय में भर्ती होने का समय आ गया था। मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना मीत्या और मन्याशा के साथ मास्को में आकर रहने लगी।

आन्ना इल्यीनिच्ना का विवाह हो गया था। उसका पति मार्क तिमोफ़ेयेविच यलिज़ारोव विद्यार्थी-काल में पीटर्सबर्ग में साशा का सहपाठी था। तभी से आन्ना इल्यीनिच्ना के साथ उसकी दोस्ती थी, जो दुखों और कष्टों के दौर में और भी गाढ़ी होती गई। आन्ना, मार्क और उल्यानोव परिवार के लोग एक साथ रहते थे। इसलिए मास्को में भी सभी साथ रहने लगे।

किन्तु शक्ति और क्रांतिकारी उत्साह से भरपूर व्लादीमिर इल्यीच तो पीटर्सबर्ग में रहना चाहता था। इसलिए वह अकेला ही वहां गया।

नेवा के पार

संध्या का समय था। पीटर्सबर्ग की सड़कों पर बत्तियों का धुंधला उजाला था। इक्के-दुक्के राहगीर तेज कदमों से अपने घरों की ओर जा रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच घोड़ाट्राम में बैठे थे। घोड़ाट्राम थरथराती पटरियों पर हिचकोले खाती चली जा रही थी। खिड़कियां पाले से ढक गई थीं

ग्रौर कुछ दिखायी नही दे रहा था कि कहा जा रहे है। जाना बहुत दूर था। नेवा के पार, मजदूरो की बस्ती मे।

घोडाट्राम मे व्लादीमिर इल्यीच के पीछे पीछे काले चश्मावाला एक नाटा सा आदमी भी ट्राम पर चढा था। व्लादीमिर इल्यीच ने स्टाप पर खडे हुए उसे देख लिया था। वह अपने चेहरे के आगे अखबार किये हुए खडा था, मानो पढ रहा हो, जबकि असल मे उसकी नजर व्लादीमिर इल्यीच पर थी, जिससे उन्हे यह समझते देर न लगी कि वह पुलिस का भेदिया है।

व्लादीमिर इल्यीच बाहर निकलने के दरवाजे के बिल्कुल पास जाकर बैठ गये और कालर उठाकर सोचने लगे कि उससे पीछा कैसे छुडाया जाये। उन्होने बहाना किया कि सो रहे है, जबकि असल मे काच पर सास फूक-फूककर बर्फ पिघलाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि जिस जगह पर उतरना है वह छूट न जाये। वह एक ऐसा स्टाप जानते थे, जहा भेदिये को धामा दिया जा सकता था। आखो के कोनो से वह जमे हुए पाले मे बने छोटे से छेद से रास्ता देखते जा रहे थे। अब थोडा ही दूर रह गया था। अगले स्टाप पर उतरना है। ट्राम रुक गई।

"है कोई उतरनेवाला?" कण्डक्टर ने पूछा।

सब चुप रहे। व्लादीमिर इल्यीच भी चुप रहे।

घोडे चल दिये और तभी एकाएक व्लादीमिर इल्यीच अपनी जगह से उछले और ट्रामगाडी से कूद पडे। और फिर सिर पर पाव रखकर सीधे सामने के अहाते की ओर, जो दूसरी तरफ किसी गली मे खुलता था, भागे। पीछे से हडबडी मे घटी बजाये जाने की आवाज सुनायी दी।

घोडाट्राम रुक गई। मगर तब तक व्लादीमिर इल्यीच अहाते तक पहुच उसके फाटक मे घुस चुके थे। भेदिया भी ट्राम से कूदा, पर देर हो चुकी थी। उसने इधर देखा, उधर देखा। कही कोई नही था।

व्लादीमिर इल्यीच अहाते के दूसरी तरफ गली मे निकल निश्चित होकर अपने लक्ष्य की ओर चल दिये।

मडली की बैठक नेवा पार के इलाके मे मकेनिकल फैक्टरी के फिटर इवान बाबुश्किन के घर मे हो रही थी। नेवा के पार बहुत से कारखाने और फैक्टरिया थी। सुबह अभी झुटपुटा ही होता था कि उनके भोपू गजने लगते। मजदूर मुह अधेरे ही काम के लिए चल पडते और रात है

पर घर लौटते। सूरज कभी दखन को न मिलता। कितना अंधकारपूर्ण जीवन था! पर हमेशा तो ऐसे नहीं रहा जा सकता था!

मजदूर पुलिस से छिपकर प्योत्र बाबुश्किन के घर में इकट्ठे होते और अपनी स्थिति पर विचार करते।

इस शाम वे वहां बैठे निकोलाई पत्रोविच की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिन्हें उनके सामने भाषण करना था। निकोलाई पत्रोविच और कोई नहीं, स्वयं व्लादीमिर इल्यीच ही थे।

मगर वह मजदूर मंडली में क्योंकर आये?

इसलिए कि वह मजदूरों को मार्क्स के विचारों, सिद्धांतों के बारे में बताना चाहते थे। मार्क्स ने कहा था : मजदूर ही वह शक्ति है, जो समाज का पुनर्निर्माण करने में समर्थ है। अगर मजदूर चाहेंगे और एकजुट होंगे, तो मालिक और जार के विरुद्ध खड़े हो सकेंगे, तो कोई भी उन्हें नहीं झुका सकता। इसका मतलब है कि मजदूरों को संगठित करना है, लक्ष्य तय करना है और उसकी ओर बढ़ना है। मजदूरों का लक्ष्य एक ही हो सकता है। वह है सत्ता अपने हाथों में लेना : मेहनतकशों का राज्य स्थापित करना।

यह सबसे शानदार राज्य होगा, जिसमें सारा समाज न्याय पर आधारित होगा। और मार्क्स ने इसे कम्युनिस्ट समाज कहा था।

पहली पुस्तक

इस बीच पीटर्सबर्ग में नेवा पार की इवान बाबुश्किन की मंडली के अलावा मजदूरों की दूसरी भी कई मार्क्सवादी मंडलियां स्थापित हो चुकी थीं। पीटर्सबर्ग आने के पीछे व्लादीमिर इल्यीच का मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी मार्क्सवादियों के साथ संपर्क स्थापित करना था।

"साथियो," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "हमें मार्क्स के विचारों का सभी मजदूरों के बीच प्रचार करना है। हमें मजदूरों के साथ एकबद्ध होना है, और क्रांति की तैयारी करनी है।"

इस तरह क्रांतिकारी संघ की स्थापना हुई, जिसे बाद में "मजदूर वर्ग की मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली लीग" कहा जाने लगा। पहले संघर्ष

लीग' केवल पीटर्सबर्ग मे ही थी, बाद म उसे दूसरे शहरो म भी स्थापित किया गया।

किन्तु व्लादीमिर इल्यीच का काम इन मडलियो का नेतत्व करना ही नही था। दिन म, शाम को और यहा तक कि कभी-कभी रात गये भी वह लिखते रहते थे। वह जो किताब लिख रहे थे, वह पूजीपतियो के लिए बेहद खतरनाक थी। वह मजदूरो को बताती थी कि पूजी की सत्ता के खिलाफ सही और सगठित ढग स सघष कैसे किया जाय।

शीघ्र ही व्लादीमिर इल्यीच की पुस्तक पूरी हो जायेगी और मार्क्सवादी साथी उसे गुप्त रूप से छापकर मजदूर मडलियो के बीच बाट देंगे।

रात काफी हो गई थी। मामने के घर की बत्तिया बुझ चुकी थी। व्लादीमिर इल्यीच ने कलम रखी और खडे होकर तीन डग भरे। कमरा छोटा सा ही था, पर उन्हे चहलकदमी करना पसद था।

'रास्ता एक ही है। रूमी मजदूर विजयी कम्युनिस्ट क्रान्ति की ओर ले जानेवाले खुले राजनीतिक सघष के इस सीधे रास्ते स चलेंगे, यही वह इस समय सोच रहे थे और यही उन्होने पुस्तक म भी लिखा था। उनकी पुस्तक रूसी मजदूरो को विजयी कम्युनिस्ट क्रांति के लिए आह्वान करती थी। अभी तक कभी किसी ने रूमी मजदूरो को ऐसा साहसिक आह्वान नही किया था।

उस समय व्लादीमिर इल्यीच की अवस्था सिर्फ चौबीस साल की थी। वह अभी बिल्कुल युवा थे। मगर जानते बहुत थे और उनका दृढ विश्वास था कि रूसी मजदूर क्रान्ति करके रहेगे।

चार परचे

पुलिस घर घर जाकर विद्रोह करनेवालो को पकड रही थी और हाथ पीठ के पीछे बाधकर थाने ले जा रही थी।

"मालिक का गोदाम तोडा था? तोडा था। चलो जेल म।'

"मनेजर के दफ्तर को आग लगायी थी? चलो जेल म।

वाबुश्किन प्रतीक्षा कर रहा था कि जल्दी ही उसकी भी बारी आयेगी।

रात गये किसी के जोर से और ठहर ठहरकर दरवाजा खटखटाने की आवाज आयी।

यह व्लादीमिर इल्यीच थे। पाले से आपादमस्तक सफेद। यहां तक कि भौंहों पर भी बर्फ की धूल जम गई थी। ओवरकोट उतारकर ठंड से जमे हाथों को मलते हुए और साथ ही कमरे में चहलकदमी करते हुए वह पूछने लगे

हां, तो बताइये, कैसे शुरू हुआ? मजदूरों को क्या भुगतना पड़ा?''

बाबुश्किन व्लादीमिर इल्यीच के सामने अपना सारा दिल उडेलकर रख देना चाहते थे। कल कारखाने में हुए विद्रोह, गोदाम के तोड़े जाने और मैनेजर के दफ्तर को आग लगाये जाने की याद स्मृति में अभी ताजी थी। गोदाम तोड़ने और दफ्तर को आग लगाने के लिए ही तो आज पुलिस मजदूरों को गिरफ्तार कर रही थी।

नहीं, चेतनाशील मजदूरों को दंगे उत्पातों के जरिये संघर्ष नहीं करना चाहिये, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। 'इस बारे में परचा निकालना होगा।''

और दोनों मेज के पास बैठ गये और दबी आवाज में विचार विमर्श करने लगे कि परचे में क्या लिखना है, कि संघर्ष की घड़ी आ गयी है और खुद अपने अलावा और कोई मजदूरों को इस गुलामी से मुक्ति नहीं दिलायेगा। मगर संघर्ष दंगे फसादों के जरिये नहीं, बल्कि संगठित तरीके से करना है।

रात काफी हो गई थी। बाबुश्किन लेनिन की तेजी से चलती कलम को देख रहे थे। अचानक सिर मेज से टकराते-टकराते बच गया

नहीं, कोई बात नहीं। बस यों ही!''

'यों ही या ऊंघने लगे थे व्लादीमिर इल्यीच हंस पड़े। 'बेहतर होगा कि सो जाइये। सुबह भोर में काम पर जाना होगा।''

बाबुश्किन ने कुछ नहीं कहा और सो गये। व्लादीमिर इल्यीच परचे की नकल करने लगे। नकल साफ-साफ और बड़े अक्षरों में करनी थी, ताकि मजदूर आसानी से पढ़ सकें। एक के बाद एक करके उन्होंने चार परचे लिख डाले।

तभी अचानक फैक्टरी का भापू बजने लगा, जिसकी आवाज सारे आकाश सारी बस्ती में गूंजती हुई बाबुश्किन के घर की बर्फ से ढकी खिड़की से भी टकरायी।

नेवा पार की सारी बस्ती जग गयी।

"बाबुश्किन, उठने का समय हो गया है," व्लादीमिर इल्यीच ने जगाते हुए कहा।

बाबुश्किन चौंककर बैठ गये और आंखें मलने लगे कि कहीं व्लादीमिर इल्यीच को सपने में तो नहीं देख रहे हैं। मगर फिर मेज पर पड़े चार परचों पर नज़र पड़ी, तो रात की सब बातें याद हो आयीं।

'इन्हें मजदूरों के बीच बांटना है," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। 'अफसोस है कि और नहीं लिख सका।'

वे घर से निकल पड़े। आकाश में धूमिल, नीले तारे अभी भी टिमटिमा रहे थे। चिमनियों से धूए के सफेद बादल उठ रहे थे। सड़क पर मजदूरों की काली छायाएं दौड़ रही थीं। व्लादीमिर इल्यीच और बाबुश्किन जाकर उनके बीच खो गये।

बाबुश्किन ने जेब से परचे निकाले और चुपके से जान-पहचान के मजदूरों को दे दिया। वे पढ़ने के बाद दूसरे मजदूरों को दे देंगे।

"हमारा पहला आंदोलन परचा है। सफलता की कामना करता हूं, बाबुश्किन, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

"मिनोगा"

"मिनोगा" (मोरीना) एक पतली, लंबी मछली का नाम है। न जाने क्यों नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना क्रूप्स्काया जैसी आकर्षक युवती को यह अजीब सा छद्मनाम दे दिया गया था। वैसे भी "संघर्ष लीग' के सदस्यों को प्रायः ऐसे निराले नाम दे दिये जाते थे। उदाहरण के लिए, ग्लेब क्रजिजानोव्स्की को "सूसलिक" (बनमूस) कहा जाता था, हालांकि दोनों के बीच कोई साम्य नहीं था। जहां तक व्लादीमिर इल्यीच का सवाल था, तो सब उन्हें स्तारीक" (बुढऊ) कहकर पुकारते थे, जो उनके दिमाग और शिक्षा को देखते हुए सही भी था।

नवंबर के महीने की बात है। अलेक्सांद्रिस्की पार्क के सब पेड़ सांताक्लाज की कहानी की तरह बर्फ से पूरी तरह ढंक चुके थे। "मिनोगा", यानी नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना पब्लिक लाइब्रेरी के सामने पार्क में धीरे-धीरे टहल रही थी। वह छोटा फर का कोट और फर की टोपी पहने हुई थी। छोटे से दस्ताने के अंदर वह एक कापी पकड़े हुई थी, जिसमें मजदूरों

की जनता के बारे में ज्यों-ज्यों सूचनाएँ भेज था कि पहरा सख्त गज़
हो जाय। ये सूचनाएँ पहरे के लिए काफ़ी थीं।

व्लादीमिर इल्यीच ने कार्यकर्ताओं के साथ पहला पर्चा लिखा और उसकी चार हजार प्रतियाँ लिये हुए सात भर हो गया था। अब पीटर्सबर्ग की संघर्ष लीग की सदस्याएँ कोट के अस्तर में पर्चे छिपाती थीं और उन्हें गुप्त रूप से कारखानों-कारखानों में बाँटती थीं।

आखिरकार वह व्लादीमिर इल्यीच, आ ही गये। वह थियेटर नारोद्नी दोम में बाहर निकल रहे थे। उन्हें देखते ही नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना प्रसन्नता से उनकी तरफ भागी। वहाँ से मिल और नेवा नदी की तरफ चल पड़े। व्लादीमिर इल्यीच ने उनकी बाँह अपनी बाँह में ले ली थी।

'नारोद्नी दोम में काफी काम किया क्या?' नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने पूछा और कापी को उनके हाथों में पकड़ दिया।

'हाँ, काफी काम किया है' व्लादीमिर इल्यीच ने कापी को और अंदर ठूँसते हुए जवाब दिया। 'अभी सूचनाएँ नहीं हैं?'

'हाँ।'

'धन्यवाद!'

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने ठंड से गुलाबी पड़े अपने चेहरे को व्लादीमिर इल्यीच की तरफ मोड़ा। उनकी आँखें चमक रही थीं। व्लादीमिर इल्यीच को इस सीधी-सादी और गंभीर लड़की का साथ कितना अच्छा लगता था! उनसे पहली मुलाकात पीटर्सबर्ग आने के तुरंत बाद हुई थी। मगर क्या तभी? व्लादीमिर इल्यीच को लगा कि वह उनसे हमेशा से परिचित है। वह अपने मन की बात उसे बताना पसंद करते थे। वह भी खुशी-खुशी और बड़े उत्साह से उनकी मदद करती थी। दोनों के एक से विचार, एक सा लक्ष्य और एक सा ध्येय था।

एकाएक नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने महसूस किया कि व्लादीमिर इल्यीच ने सावधान सा कराते हुए उनका हाथ दबा दिया है। एक बहुत ही नागवार किस्म का आदमी, जिसने अपने कोट के कालर उठा रखे थे, उनका पीछा कर रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच ने तुरंत बातचीत का विषय बदल दिया और जोर जोर से इधर-उधर की बात करने लगे। जैसे कि यही, कि सुना है कि

लिगोव्का मे एक दुकान है, जिसमे मरदिया की टापिया वहुत मस्ती विक रही ह

भेदिया उनका पीछा करता जा रहा था।

'अच्छा हा कि हम अलग हो जायें," व्लादीमिर इल्यीच फुमफुमाये।

दोनो ने एक दूसरे से विदा ली। व्लादीमिर इल्यीच को आगे जो भी सडक मिली, उसी तरफ चल पडे। भेदिया भी उन्ही के पीछे पीछे। कुछ मिनट तक व्लादीमिर इल्यीच तेज कदमो से आगे वढते रहे और फिर एकाएक पाम ही की किसी गली म मुड गये। भेदिया इसे न दख पाया और सडक पर ही आगे निकल गया। व्लादीमिर इल्यीच न गली म अपन को किसी रईस के मकान के सामन खडा पाया। दरवाजे के शीशे के पीछे दरवान की कुर्सी खाली पडी थी। वह तुरत उसम घुसे, कुर्सी पर वठे और मेज पर से अखवार उठाकर चेहरे के सामन कर लिया।

भेदिया भागा भागा गली मे आया। "कहा गया वह आदमी, जिसका पीछा कर रहा था? जमीन म घुम गया है क्या?' भेदिया हैरान था। उस खाली हाथ ही वापस लौट जाना पडा।

उसकी सूरत इतनी दयनीय थी कि न चाहते हुए भी व्लादीमिर इल्यीच ठहाका लगाकर हस पडे। अब वहा ज्यादा देर बैठना ठीक न था, क्योकि दरवान किसी भी समय आ सकता था। व्लादीमिर इल्यीच न आस्तीन के अदर कापी को टटोला। वह सही सलामत थी। खतरा टल चुका था। अब जैसे भी हो, जल्दी से जल्दी घर पहुचना और काम म लग जाना है।

हमारा आन्दोलन दबाया नहीं जा सकता

८ दिसवर, १८६५ को नादेज्दा क्रूप्स्काया के घर म सघप लीग" की वैठक थी। लीग न गरकानूनी अखवार "रवाचेय देलो" (मजदूर ध्यय) निकालने का फमला किया था। वठक म पहले अक के लिए एकत्र सामग्री पर विचार होना था। सभी मुख्य लख, जोशीले और निर्भीक लेख, व्लादीमिर इल्यीच ने लिखे थ।

यह तय किया गया कि अखवार को किमी गुप्त छापाखान म छापा जाय। फिनलण्ड की खाडी के तट पर, पीटमवग के वाह्याचल म एक ऐसा छापाखाना था।

सारी सामग्री अनातोली वानेयव का दे दी गयी। यह २३ वर्षीय विद्यार्थी तनमन स क्रातिकारी काय का अर्पित था। व्लादीमिर इल्यीच सबस उत्तरदायित्वपूण काम उसी को सौंपा करते थे। कल वानेयेव लखा का छापाखाने म ले जायगा और शीघ्र ही मजदूरा के हाथा म उनका पहला अखबार हागा।

बैठक काफी देर स खत्म हुई। सभी अपन अपने घरा को चल दिय। व्लादीमिर इल्यीच वही बठे रह। वह नादज्दा कान्स्तान्तीनाव्ना के साथ बाते कर रहे थे। मगर बातें थीं कि खत्म ही नही हाती थी। साथिया की चर्चा चलती, ता व्लादीमिर इल्यीच हर किसी म कोई न कोई विशषता खोज लेत और उसकी तारीफ के पुल बाध देते। वह लोगा से प्यार करते थ। चर्चा मजदूरो की भी चली। कभी उनम ज्ञान पिपासा है! बाबुश्किन का ही ल। चितन योग्य और प्रतिभावान है

'अच्छा, नाद्या, अब चलूगा," व्लादीमिर इल्यीच न आखिरकार कहा। 'कल फिर आऊगा।'

सडके सुनसान थी। इक्की-दुक्की बत्तिया ही जल रही थी। उनके धूमिल उजाले म भी तार साफ-साफ दिखायी दे रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच घोटाद्राम से पब्लिक लाइब्रेरी तक पहुचे। यहा भी नीरवता थी। वह अकेल थे। बफ के बोझ से अलेक्सांद्रिन्स्की उद्यान के लिण्डन वक्षो की टहनिया झुक गई थी। तभी कोई टहनी टूटी और उसस सूखी बफ हवा म बिखर गई। व्लादीमिर इल्यीच इस समय अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा मे थे।

कुछ समय पहल उन्होने गारोखावाया सडक पर एक मकान म कमरा किराये पर लिया था। भेदिय प्राय उनका पीछा करते थे, इसलिए सावधानी के लिए प्राय पता बदलते रहना पडता था।

घर पहुचने पर वह दबे पाव अपन कमरे म घुस, ताकि मालकिन जाग न जाय। अभी सोने की इच्छा नही थी। सोचा कि क्यो न कुछ पढ लिया जाये। व्लादीमिर इल्यीच न अपनी अगली किताब के लिए सामग्री चनी और पढाई म इतने डूब गय कि समय का भी ख्याल न रहा। घडी पर देखा तो दो बजने वाले थे।

'अब सोना चाहिय," उन्होन मन ही मन कहा पर फिर पढने मे मशगूल हो गये।

दो बजे किसी ने घटी बजायी।

व्लादीमिर इल्यीच एकाएक कुछ समझ न पाये और आश्चर्य के मारे कान लगाकर सुनने लगे।

सबसे पहले दरबान घुसा, जो चमड़े का कोट और एप्रन पहने था। उसके पीछे-पीछे बिना कोई आवाज किये सिविल वर्दी में दो आदमी व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में दाखिल हुए। उनके पीछे पुलिस का अफ्सर था।

"गिरफ्तारी का वारंट है।"

सिविल वर्दीवाले आदमी कमरे की तलाशी लेने लगे। किताबों को उलटा-पलटा, बिस्तर उठाकर देखा, अंगीठी और अंगीठी की चिमनी में झांका।

व्लादीमिर इल्यीच बिना कुछ कहे दीवार के पास खड़े रहे।

वह अपने साथियों के बारे में सोच रहे थे। वे कहां हैं? गिरफ्तार वह अकेले हुए हैं या साथी भी? और नाद्या? क्या हमारा आंदोलन खत्म हो गया है? 'नहीं, हम खत्म नहीं हो सकते,' व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा। 'हमारा आंदोलन दबाया नहीं जा सकता! हम नहीं होंगे, तो दूसरे सैकड़ों हज़ारों मजदूर उठ खड़े होंगे, रूस का सारा मज़दूर तबका उठ खड़ा होगा!'

वार्ड नं० १९३

छत के नीचे सकरा सा जालीदार झरोखा। दीवार के पास लोहे की तुड़वा मेज़ और लोहे की ही कुर्सी। फ़र्श पर बिखरी हुई किताबें। जेल में पढ़ने की मनाही नहीं थी। बहनें और नाद्या व्लादीमिर इल्यीच को ज़रूरत की किताबें ला देती थीं। उस रात नाद्या को गिरफ्तार नहीं किया गया था। बहनें और मां व्लादीमिर इल्यीच की गिरफ्तारी की खबर पाते ही मास्को से आ गयी थीं।

आज बृहस्पतिवार था, मुलाकात का दिन। व्लादीमिर इल्यीच ने किताबों को किनारे रख दिया और दीवार की तरफ़ पीठ करके मेज़ के पास खड़े हो गये। दरवाज़े में छोटा सा छेद था, जिससे वार्डर समय-समय पर अंदर झांक लेता था। पीठ से छेद को ढक कर व्लादीमिर इल्यीच ने रोटी के टुकड़े को गोल किया और उसमें अंगुली से गड्ढा सा बनाया। यह दवात थी। स्याही का काम दूध करता था। उन्होंने किताब उठायी और

दूधिया स्याही से पंक्तियों के बीच लिखने लगे। शब्द लिखते ही दूध सूख जाता था और कुछ भी दिखायी नहीं पड़ता था। आज वह किताब को वापस दे देंगे। घर पर नाद्या या बहन पृष्ठ को लैम्प पर गरमाएगी और धीरे धीरे शब्द उभरने लग जायेंगे। इस तरह सारा पत्र पढ़ा जा सकेगा। पर इस बार वह पत्र नहीं, बल्कि परचा लिख रहे थे।

८ दिसम्बर की उस रात को उनके अलावा "संघर्ष लीग" के १६० सदस्य और भी गिरफ्तार किये गये थे। मगर इससे लीग खत्म नहीं हो गयी। उसकी प्रेरणा पर हड़ताल और धरने जारी थे। व्लादीमिर इल्यीच हड़तालियों के लिए परचे लिख रहे थे।

दरवाजे पर चाभियों का गुच्छा झनझनाने और ताला खोलने की आवाज सुनायी दी। दरवाजा खुला। वार्डर अन्दर आया। व्लादीमिर इल्यीच ने तुरत रोटी की दवात को उठाकर निगल लिया।

वार्डर ने पास आकर इधर उधर ताका और कुछ भी संदेहजनक न पाकर कोठरी से बाहर निकल गया। व्लादीमिर इल्यीच ने दूसरी दवात बनायी और आगे लिखने लगे।

घंटे भर बाद चाभियों का गुच्छा फिर झनझनाया। उल्यानोव की मंगेतर मिलने के लिये आयी थी। नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना दोहरी जाली के उस पार खड़ी थी। हाथ मिलाना संभव नहीं था, केवल सिर हिलाकर और मुस्कराकर ही अभिवादन किया जा सकता था। नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना मुस्करायी, हालांकि व्लादीमिर इल्यीच को सींखचों के पीछे देखकर उनका दिल रोने को हो आया था। बड़े बहादुर हैं! हौसला तनिक भी नहीं खोते!

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने मां और बहनों की ओर से भी अभिवादन कहा और बताया कि वे सब सकुशल हैं, उन्हें याद करते हैं और प्यार करते हैं।

बाद में काम की बात पर आये। मगर काम की बात कैसे करें अगर सींखचों की दोहरी दीवार के बीच सिपाही घूम रहा हो और हर शब्द को सुन रहा हो?

आज लाइब्रेरी की किताबें बहनों को भेज दी हैं, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। और मयाशा की किताब भी। ये शब्द कहते हुए उन्होंने नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना को ध्यान से, बहुत ध्यान से देखा।

"उन्होंने मर्यादा पर विशेष जोर दिया है," नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना ने मन ही मन गौर किया "इसका क्या मतलब है? अरे हां, समझ गई! इसका मतलब है कि उसमें कोई पत्र या परचा होगा।"

व्लादीमिर इल्यीच आगे भी पहेलियां बुझाते रहे।

'मेरे वार्ड का नंबर जानती हो?'

"क्या नहीं? जानती हूं। एक सौ तिरानवे!"

'उन्होंने यह क्या पूछा है? यों ही तो नहीं पूछा होगा। अहा, समझ में आया। १९३ पृष्ठ पर परचा लिखा होगा,' नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना ने फिर मन ही मन अनुमान लगाया।

वे सिपाही की आंखों में आसानी से धूल झोंक रहे थे।

सिपाही ने दीवार घड़ी की ओर देखा।

'समय पूरा हो गया है।'

घंटा कितनी जल्दी बीत गया था! दोनों में से कोई भी जुदा नहीं होना चाहता था। दोनों एकाएक उदास हो गये।

'ठीक है, वोलोद्या। तो अगली मुलाकात तक। और देखना बहुत उदास मत होना!"

व्लादीमिर इल्यीच को वापस कोठरी की तरफ ले गये। वह चलते चलते भी पीछे देख रहे थे। जब तक वह नजरों से ओझल न हो गये, नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना वहां खड़ी उन्हें देखती रही।

ताले में चाबी घूमी और व्लादीमिर इल्यीच फिर अपनी कोठरी में थे। वह अभी अभी खत्म हुई मुलाकात के बारे में ही सोच रहे थे। कल्पना की आंखों से उन्होंने देखा कि नाद्या जेल के फाटक से बाहर निकल गई है और अब शायद ग्रीष्म उद्यान की तरफ जा रही है।

व्लादीमिर इल्यीच कोठरी के अंधेरे में देर तक चहलकदमी करते रहे और बड़े स्नेह से नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना के बारे में सोचते रहे।

हरा लैम्प

व्लादीमिर इल्यीच को सुदूर शूशेन्स्कोय गांव में निर्वासन की सजा भुगतते हुए पूरा एक साल हो गया था। इससे पहले चौदह महीने उन्होंने जेल में काटे थे। निर्वासन के लगभग दो साल अभी बाकी थे।

उस दिन, यानी ७ मई, १८९८ को पहली बार अपनी नित्यचर्या को तोड़कर ब्लादीमिर इल्यीच "रूस में पूंजीवाद का विकास" लिखने नहीं बैठे। यह किताब इस बारे में थी कि कैसे रूस के देहातों और शहरों में जमींदारों और पूंजीपतियों की ताकत बढ़ती जा रही है और पूंजी के जुए तले पिसती हुई आम जनता का जीवन उत्तरोत्तर दरिद्र और दूभर होता जा रहा है।

दोपहर के भोजन के बाद एक स्थानीय गरीब किसान सोसीपातिच ने, जो दुबला-पतला, फुर्तीला और सिर पर कनटोप और बदन पर फटा पुराना कोट पहने हुए था, खिड़की खटखटायी। उसके कंधे पर बंदूक लटकी हुई थी।

"ब्लादीमिर इल्यीच, बत्तखों के शिकार को नहीं चलेंगे क्या?"

ब्लादीमिर इल्यीच चिंताग्रस्त थे। पीटर्सबर्ग से नाद्येज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को अब तक पहुंच जाना चाहिये था। साथियों के कुछ बाद नाद्येज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को भी क्रान्तिकारी कार्यों के लिए पीटर्सबर्ग में जेल में बैठना पड़ा था। और अब जेल के बाद निर्वासन की सजा हो गई थी। उसने कोशिश की थी कि उसे भी शूशेन्स्कोये भेजा जाय, जहां ब्लादीमिर इल्यीच सजा काट रहे थे। इसकी अनुमति मिल गई थी और वह चल भी पड़ी थी। पर शूशेन्स्कोये पहुंचने में न जाने क्या इतनी देर लगा रही है

अपनी व्याकुलता को दबाने के लिए ब्लादीमिर इल्यीच ने खूंटी से बंदूक उतारी और घर से निकल पड़े।

"हां, जूते भी ठीक ही पहने हैं," सोसीपातिच ने दाद दी।

जंगली बत्तखों के शिकार के लिए दलदलों में चलने के लिए ब्लादीमिर इल्यीच के जूते सचमुच बहुत उपयुक्त थे। घुटनों से भी ऊंचे। वे पेरोवो झील की तरफ चल पड़े, जो कोई दस वेर्स्ट की दूरी पर थी। वहां बत्तखें इतनी थीं कि झील के किनारों पर पंख ही पंख बिखरे दिखायी देते थे।

दिन सुहावना था। धूप भी अधिक तेज नहीं थी। घास सूरज की उजली किरणों से चमक रही थी। हरे मैदान इतने ताजे लग रहे थे कि जैसे किसी ने उन्हें धो दिया हो। दूर क्षितिज पर नीले आकाश की पृष्ठभूमि में बर्फ से ढके, आंखों को चकाचौंध करनेवाले ऊंचे सायान पहाड़ फैले थे।

"देखिये, झील आ गई है। अब देखिये, निशाना न चूकियेगा, ब्लादीमिर

इल्यीच ! पहला निशाना चूकना अच्छा नही माना जाता,' शिकार की जगह पर पहुचने पर सासीपातिच ने चेतावनी दी।

व्लादीमिर इल्यीच बदूक हाथ म लेकर खडे हो गये। बदूक लिय खडे रहना और जगली पक्षिया की चहचहाहट, सीटिया और ठुक ठुक को सुनना कितना आनदकर है!

झील के किनारे उगे घन सरकडा के बीच कोई चीज सरसरायी। व्लादीमिर इल्यीच स काई दस एक कदम की दूरी पर ही एक बडी सी गहरे भूरे रग की जगली बत्तख निकली और अपने भारी पखा का फडफडाती उड गई। उन्हाने गोली दागी। पर हुआ कुछ नही।

वह विचारा म इतना खोये हुए थे कि घोडा दबाने म देर हो गई।

'उफ्फ, व्लादीमिर इल्यीच, आप भी कमाल करते है, सोसीपातिच नाराज हो उठा।

अपशकुन के बावजूद आगे शिकार अच्छा ही रहा। उन्हाने कई बत्तखें मारी। फिर अलाव जलाकर धूए से काली पडी केतली म चाय बनायी।

सासीपातिच अच्छे मूड म आकर व्लादीमिर इल्यीच का रात वही बिताने के लिए उत्साहित करने लगा। उसने बहुत कहा, मगर व्लादीमिर इल्यीच का काई पूर्वानुभूति घर बुला रही थी।

अधेरा हो गया था। अहाता म गाये दुही जा रही थी, बाल्टिया म दूध की धार झनझना रही थी।

"व्लादीमिर इल्यीच, देखिये, आपके घर म उजाला है!" सोसीपातिच ने कहा।

उजाला व्लादीमिर इल्यीच ने भी देख लिया था। गली के छोर पर उनके घर की दो खिडकिया म उजाला था। हरा उजाला। व्लादीमिर इल्यीच के मन म खुशी की लहर दौड गयी।

बरामदे म सादी पोशाक पहने दुबली पतली नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना रेलिग को पकडे हुए खडी थी। व्लादीमिर इल्यीच बरामदे की तरफ दौड पडे।

"नमस्ते, नाद्या!"

"वोलोद्या!"

"यहा आना यहा आना, दिखाना तो यहा तुम कैसे हो गये हो! कमरे के अदर से नाद्या की मा येलिजावेता वसील्येव्ना का हर्षित स्वर

सुनायी दिया। घर पर मगेतर आयी है और ये घुमक्कड़ महाशय शिकार पर निकल हुए हैं।

कमरे म हर शेड क नीचे लैम्प जल रहा था।

तुम्हारे लिए लायी हू। हरा उजाला आखो का चुभता नही,' नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना बाली।

वह उस मास्को से लायी थी। उस दिन की रेलयात्रा म, फिर स्तेपो पर और बाद म चकाचक खाती घोडागाड़ी पर, वह उस बहुत सभाल रहा थी। उन्ह डर था कि शूशेन्स्कोय तक सही सलामत नही पहुचा पायेगी पर पहुचा दिया था।

व्लादीमिर इल्यीच, आपसे एक प्रार्थना है

नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना भी अब शूशेन्स्कोय आ गयी थी। व सब एक परिवार की तरह रहने लगे। शूश नदी के किनारे पर बने एक नये मकान म फ्लैट किराये पर ले लिया गया था।

नये घर म व्लादीमिर इल्यीच के काम करने के लिए एक कमरा अलग कर दिया गया। उसम किताबो की आलमारी थी, और लिखन पढ़न क लिए एक रलिगदार ऊची डेस्क जिस पर हरे शेडवाला लैम्प रखा था। सर्दियो म शूशेन्स्कोय म लाग जल्दी ही सो जाते थे, मगर व्लादीमिर इल्यीच के कमरे म हरी बत्ती देर तक जलती रहती

व्लादीमिर इल्यीच खड़े होकर लिखना पसद करते थे। 'रूस म पूजीवाद का विकास' लगभग सारी खडे-खडे ही लिखी गई थी। व्लादीमिर इल्यीच बहुत काम करते थ। शूशेन्स्कोय म रहते हुए उन्होने उपरोक्त किताब और कई लख लिखे और अग्रेजी से कुछ साहित्य का अनुवाद किया। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना उनकी बहुत मदद करती थी, हालाकि वह खुद भी उन दिनो स्त्री मजदूरो के बारे म एक पुस्तिका लिख रही थी। उन्हे मजदूर जीवन का अच्छा ज्ञान था।

दोनो साथ साथ काम और आराम करते थे। कभी कभी वे साथ साथ शूश के किनारे के जगल या दूर यनिसेई की तरफ टहलने निकल जाते। दोनो नौजवान थे एक दूसरे को चाहते थे और खुश थ।

दोपहर का समय था। येलिजावेता वसील्येव्ना ने दरवाजा खटखटाया और बताया कि कोई मिलने आया है। व्लादीमिर इल्यीच लिखने में व्यस्त थे और काम को अधूरा नहीं छोड़ना चाहते थे। पर अगर कोई गरीब किसान सलाह मांगने के लिए आता था, तो वह सब काम छोड़ देते थे। येलिजावेता वसील्येव्ना ने किसान को अंदर आने के लिए कहा। उसका चेहरा रक्तहीन और झुर्रीदार था, हालांकि उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं थी। किसान ने देवप्रतिमा की खोज में कोने में नजर डाली, पर वहां कुछ न पाकर खिड़की की ओर मुंह करके ही अपने सीने पर सलीब बनाया।

बैठिये," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

किसान लाल रूमाल में बंधी मटकी को पैरों के पास रखकर व्लादीमिर इल्यीच द्वारा दिखायी गई कुर्सी पर बैठ गया।

'व्लादीमिर इल्यीच, मैं बड़ी मुसीबत में हूं। कुछ सलाह दीजिये।'

वह देर तक बताता रहा कि कौन है, कहां से आया है और क्या मुसीबत उसपर टूट पड़ी है। हुआ यह था कि उसकी एक लड़की थी, जिसे उसने मजबूरी के कारण बीस रूबल पगार पर साल भर के लिए एक जमींदार के यहां काम करने भेजा था। लड़की अभी ग्यारह महीने ही काम कर पायी थी कि घर पर मां बीमार पड़ गई। इतनी बीमार कि हिलडुल भी नहीं सकती थी। घर में छोटे भाई-बहनों की पूरी पलटन थी। लड़की को काम छोड़कर उनकी देखभाल के लिए घर लौटना पड़ा। मगर जमींदार ने उसकी पगार देने से इन्कार कर दिया। कहा कि पूरे साल काम नहीं किया है।

"तो क्या वह बेकार ही इन ग्यारह महीनों तक कमर तोड़ती रही है?" किसान ने निराशा भरे स्वर में कहा। 'क्या मामले को यों ही रहने दें?'

"नहीं, यों ही तो नहीं रहने देना चाहिये,' व्लादीमिर इल्यीच ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया और गुस्से में भरकर तेजी से कमरे में चहलकदमी करने लगे।

"सुनिये, हम ऐसा करते हैं हम इलाकाई हाकिमों के नाम एक अर्जी लिखकर न्याय की मांग करेंगे और जमींदार का मुकदमे की धमकी देंगे,' व्लादीमिर इल्यीच ने कहा

फिर डेस्क के पास रुके, क्षण भर सोचते रहे और आधे घंटे बाद

अर्जी तैयार थी। वह काफी जोरदार शब्दो मे लिखी गई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने किसान को विस्तार से बताया कि अर्जी किसे देनी है और क्या कहना है।

'न्याय आपके पक्ष म है," व्लादीमिर इल्यीच ने हौसला बढाया। "हिम्मत न हारे। अगर पहली अर्जी मजूर नही होगी, तो फिर आना। हम और ऊपर के हाकिमो को लिखेंगे और न्याय पाकर रहगे।"

किसान ने टोपी को हाथो के बीच मसलते हुए व्लादीमिर इल्यीच का धन्यवाद दिया और लाल रूमाल म बधी मटकी बढाते हुए नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना से कहा

मालकिन, मैं और तो क्या द सकता हू, पर यह थोडा सा मक्खन ही कबूल कर लीजिये।'

"अरे रे, आप क्या बात करते है।" नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना बोली।

'नही, नही, मक्खन हमे नही चाहिये," व्लादीमिर इल्यीच ने भी कहा।

किसान हैरान था कि ये लोग उससे कुछ लेने से इन्कार क्यो कर रहे है। आखिर अर्जी तो व्लादीमिर इल्यीच ने ही तो लिखी थी। कितने अजब लोग ह।

किसान अपने दिल म राजनीतिक निर्वासित की सजा पाये हुए उल्यानोव की शुभ स्मृति को सजोये चला गया। शूशेन्स्कोय म निर्वासन के काल म व्लादीमिर इल्यीच न न मालूम कितने किसानो के हृदयो म अपनी शुभ स्मृति छोडी होगी।

तलाशी

पिछले साल पहली मई का दिन व्लादीमिर इल्यीच ने अकेले ही मनाया था। मगर इस बार नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना उनके साथ थी और उन्होंने फैसला किया कि पहली मई को क्रातिकारियो के ढग से मनायेंगे।

सुबह का नाश्ता किया, त्योहार के दिन के कपडे पहनकर तैयार हो गये। तभी देखा कि दरवाजे पर उन्ही की तरह के राजनीतिक निर्वासित पोलिश क्रातिकारी प्रोमीन्स्की खडे ह। शानदार सूट और टाई पहने हुए।

"पहली मई मुबारक हो!"

सभी एक अन्य राजनीतिक निर्वासित फिनिश ओस्कर एगरग के घर की ओर चल पड़े।

उस साल वसन्त कुछ देर से शुरू हुआ था। शूश नदी मे हिमखण्ड अभी भी तैर रहे थ। व आपस म टकरात, तजी स आगे बढने और यनिसेई म जा मिलत। उनकी सरसराहट नदी तट पर भी साफ साफ सुनायी दे रही थी। हवा म कुछ ठडक अवश्य थी, मगर दिन खूब धूपीला और हुलसित करनेवाला था। सभी उल्लास और उमग से भरपूर थे।

एगरग क यहा पहुचकर बेंच पर बठकर सभी गान लगे

आया खुशी का दिवस मई का,
दुखा की छाया दूर हटे।
गीत हमारा जग-जग गूजे
हडताला का दौर चले।

एक गीत खत्म हुआ, तो दूसरा गाने लगे।

बाद म सभी मैदान म घूमने निकले। नीले आकाश तले, गाव से दूर 'वार्शाव्याका" गीत गूजने लगा

छाये हुए है अनिष्ट के बादल,
दबा रही है शोषण की शक्ति।
लड़ेंगे हम करके एक आकाश-पाताल,
कसी बनेगी हमारी नियति?

दिन कितना अच्छा कटा था! रात को व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना देर तक न सो सके। बस बाते करते रहे और सपने बुनते रहे कभी ऐसा समय भी आयेगा, जब स्वतन्त्र रूस मे मजदूर और अन्य लोग लाल झडे हाथ मे लिए हुए बेरोक टोक पहली मई का उत्सव मनायेंगे?

अगले दिन देखा कि दूर सडक पर धूल उड रही है, घोडा की टापें सुनायी दे रही हैं। पुलिस के सिपाही शूशेन्स्कोये आ रहे थे। घोडागाडी व्लादीमिर इल्यीच के घर के सामन आकर रुकी। उससे दो किरिचधारी सिपाही कूदे। पीछे की सीट से उनका नाटा सा, भारी भरकम अफ्सर उतरा।

'तलाशी लो!" अफसर चिल्लाया और सीधे व्लादीमिर इल्यीच के कमरे म किताबा की आलमारी की ओर लपका।

आलमारी म अवैध साहित्य, पत्र और कुछ रसायन थ, जिन्ह व्लादीमिर इल्यीच गुप्त पत्र लिखने थे। अगर यह सब सिपाहियो के हाथ लग गया, तो निर्वासन की सजा और बढ जायगी। हो सकता ह कि कई साल और।

अगर आपकी मर्जी है, तो मैं मस्त हूँ, व्लादीमिर इल्यीच ने आलमारी के पास कुर्सी रखते हुए कहा। "कहा से शुरू करगे?"

पूछने क साथ-साथ उन्होने ऊपरी खाने की तरफ इशारा भी किया। नाटा अफसर जिसे सिपाही दोनो ओर से थाम हुए थ, हाफ्ते हुए कुर्सी पर चढ गया और ऊपर के खाने मे तलाशी लेने लगा। मगर किताबें बहुत ज्यादा थी।

कोई आध घटे तक किताबो के पन्ने उलटन-पलटने के बाद अफसर बेहद थक गया और सिपाहियो से तलाशी जारी रखने को कह खुद बैठ गया। उसकी आखें चकराने लगी थी। कोई इतने सारे पन्ने पलटकर तो दखे! पुलिस अफसर को तो किताबो के इतने बडे ढेर का देखना भी अच्छा नही लग रहा था। तलाशी बहुत धीरे-धीरे चल रही थी।

आखिरकार सबसे निचले खाने की बारी भी आ गयी। उल्यानोवो का भाग्य सकट म था।

एकाएक नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने आगे बढकर मुस्कराते हुए कहा 'यहा मेरी स्कूली किताबें हैं। आप जानते ही हैं कि मैं अध्यापिका हू।'

"रहने दो!" अफसर ने हुक्म दिया।

वह खाना खाना और एक-दो पेग वोदका पीना चाहता था। वह बहुत थक गया था।

तलाशी खत्म हो गयी। निचले खाने को किसी ने नही देखा। उसम अवैध साहित्य, रसायन, आदि थे।

पुलिस चली गई।

येलिजावेता वसील्येव्ना कमरे मे दाखिल हुइ। अब तक वह पास के कमरे म बैठी घबराहट के मारे सिगरेट पर सिगरेट पीती जा रही थी।

वला टल गई? फुसफुसाते हुए उन्होने पूछा।

'टल गई!' व्लादीमिर इल्यीच हस दिये और साइबेरियाई अदाज म बो 'मगर

बीमार वानेयेव के यहा

डाकिया हफ्ते मे दो बार डाक पहुचा जाता था।

पत्र रिश्तेदारा और साथियो से मिलते थे। इस इलाके म कोई डेढ सौ वस्ट के दायरे म "सघष लीग" के बहुत से सदस्य निर्वासन की सजा काट रहे थे। कुछ साथी और दूर, बल्कि बहुत दूर सबसे गये-गुजरे, बारहो मास बफ से ढके इलाका मे भेजे गये थे।

एक बार व्लादीमिर इल्यीच को घर से, आना इल्यीनिच्ना का एक पैकेट मिला। वह गोपनीय था, यह वे उस पर बने पहचान निशान से जान गये। तो इसका मतलब है कि कोई महत्वपूण चीज होगी। और ऐसा ही निकला भी। गुप्त लिखावट म लिखे कागजो को डेवलप किया तो पाया कि एक लेख है।

व्लादीमिर इल्यीच उसे पढने लगे। उनकी भौंहो मे बल पड गये। उन्ह आना इल्यीनिच्ना का भेजा हुआ लेख पसद नही आया था। बहन ने उसे एक अ रूसी शीपक दिया था "क्रेडो", जिसका रूसी मे मतलब होता था विश्वास, दृष्टिकोण।

आना इल्यीनिच्ना न लिखा था कि कुछ लोगा का दल माक्सवाद के विरुद्ध प्रचार करने लगा है। दल छोटा ही है, पर काफी सक्रिय है। उसका कहना है कि मजदूरा को राजनीति स कोई मतलब नही। उन्हे क्राति नही चाहिये। उन्ह बस एक ही चीज चाहिये वेतनवृद्धि। और इसके लिए मालिका और उद्योगपतिया के साथ शातिपूण सबध जरूरी है।

ऐसे दृष्टिकोणो को "अथवाद" कहा जाता था।

"क्या किया जाये?" व्लादीमिर इल्यीच सोचने लगे। "ये लोग तो मजदूरा को क्रातिकारी उद्देश्या से दूर हटा रहे हैं।"

व्लादीमिर इल्यीच अपने मन की बात को जोर से बोल भी रहे थे। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना उनकी इस आदत से परिचित थी। इसलिए वह कुछ न बोली। अभी वह कोई न कोई हल ढूढ लेगे।

और सचमुच, कुछ देर टहलन और सोचने के बाद हल ही मिल गया

"साथियो को बुलाकर 'क्रेडो' पर विचार विमश करेगे। विरोधपत्र लिखेंगे और गुप्त रूप से कारखाना फैक्टरियो मे भेजेंगे।"

और तुरत वह नादेज्दा कोन्स्तान्तीनाव्ना के साथ अपने सभी निर्वासित साथियो को पत्र लिखने बैठे, ताकि व किसी न किसी बहाने अधिकारियो स अनुमति लेकर मीटिंग म शामिल हो। मगर मीटिंग कहा हो? शूशेन्स्काये सबसे ठीक जगह थी, पर व्लादीमिर इल्यीच ने येरमाकोव्स्कोये गाव क चुना, जो शूशेन्स्काये से साठ वर्स्ट की दूरी पर था। वहा व्लादीमिर इल्यीच के एक अनन्य साथी अनातोली वानयेव सजा काट रहे थे। जेल म उन्हे तपेदिक की बीमारी हो गई थी। उसने उन्हे अदर ही अदर इतना खोखला कर दिया था कि अब वह बिस्तर से उठ भी नही सकते थे।

यही कारण था कि व्लादीमिर इल्यीच ने मीटिंग के लिए येरमाकोव्स्कोये को चुना।

वानेयेव सफेद बिस्तर पर लेटे थे। मगर खुद बिस्तर से भी सफेद और कमजोर थे। बडी-बडी आखें बुखार से दहक रही थी। मगर वह खुश थे, सुखी थे कि सबके साझे ध्येय मे हाथ बटाया था। कितनी अदम्य इच्छा थी अभी और जीने, काम करने और लोगो का भला करने की!

'क्रेडो" पर बहस हुई। विरोधपत्र लिखा गया। शीघ्र ही उसे देश के सभी शहरो की मजदूर मडलियो म पढा जायेगा

'साथियो, अर्थवादियो' को मत सुनो। हमारे सामने एक ही रास्ता है – क्रांति!"

व्लादीमिर इल्यीच मीटिंग के बाद वानेयेव के बिस्तर के पास बैठ गये। वानेयेव थक गये थे। माथे पर पसीने की ठडी बूदें झलक आयी थी। आखें मानो गड्ढो मे खो गयी थी।

बेचारे वानेयेव! जारशाही जेलो और निर्वासन म कितना कष्ट भोगा है! व्लादीमिर इल्यीच ने उनके दुबले पडे हाथ को सहलाया, बातें की, आगे की योजनाओ के बारे म बताया। जल्दी ही निर्वासन की अवधि पूरी हो जायगी। व्लादीमिर इल्यीच ने बताया कि मजदूरो की मार्क्सवादी पार्टी बनायेंगे, अपना सर्वहारा समाचारपत्र निकालेगे और जारशाही के खिलाफ जूझते रहेगे।

वानेयेव अत्यत उत्सुकता और प्रशसामिश्रित भाव से उन्हे सुन रहे थे। बाहर अगस्त की शाम का अधेरा बढने लगा था। कही दूर स अकार्डियन की दिल मे कसक पैदा करनेवाली आवाज आ रही थी। और वानेयेव बुखार के कारण सूखे हुए होठो से फुसफुसा रहे थे

"धन्यवाद, व्लादीमिर। तुमने मुझे फिर जिंदा कर दिया है। मुझे विश्वास है "

यह वानयेव के जीवन की अन्तिम खुशी शाम थी।

तीन हफ्ते भी नहीं बीत होंगे, कि व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को पुनः क्रस्नोयार्स्क आना पड़ा। मगर इस बार अनातोली वानयेव की अन्त्येष्टि के लिए।

"अलविदा, अनातोली," ताबूत के निकट खड़े होकर व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "हम वचन देते हैं कि क्रांति के ध्येय के प्रति सदा वफादार रहेंगे।"

बर्फ के पहले-पहले कण हवा में उड़ रहे थे। मृत अनातोली के चेहरे पर गिरकर भी वे गल नहीं रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने कब्र के लिए लोहे की पट्टी आर्डर करायी। उस पर लिखा था "अनातोली अलेक्सान्द्रोविच वानयेव। राजनीतिक निर्वासित। अवस्था २७ वर्ष। निधन—८ सितंबर, १८९९।"

रिहाई

घर में कुछ असामान्य सा घट रहा था। कमरों में जहां-तहां बक्से, गठरियां, किताबों के बंडन बिखरे पड़े थे। सारी सुव्यवस्था गड़बड़ा गयी थी। घर के कामकाज में येलिज़ावेता वसील्येव्ना का साथ देनेवाली पाशा की नीली आंखों से लगातार आंसू बहे जा रहे थे उल्यानोव साइबेरिया से वापस जा रहे थे। उनकी निर्वासन अवधि पूरी हो गई थी।

२९ जनवरी का भोर होने से पहले, जब अभी शूशेन्स्कोये के घरों की खिड़कियों में अंधेरा था, चिमनियों से धूआं नहीं उठने लगा था और बस्ती के छोर पर उपावाल से पहले का कुहासे से ढका आकाश धरती को छूने के लिए प्रयत्नशील था, दो स्लेजगाड़ियां पोर्च के सामने आकर रुक गयीं। पाशा पल्लू से आंसू पोंछती हुई इधर उधर दौड़ रही थी। व्लादीमिर इल्यीच सामान और किताबें गाड़ियों में लादने लगे। दूसरों ने भी मदद की।

"अब कुछ क्षण के लिए बैठ जाओ। सफर से पहले बैठना जरूर चाहिये," येलिज़ावेता वसील्येव्ना बोली।

पेत्मेनिया! खास तौर से लबे सफर म, जब ताजी हवा मे जीभर सास ली जा सकती हो और चुभती ठड गालो को झुलस रही हो, उनका अभाव बहुत खटकता था। अफसोस कि भूल गये!

मिनूसिन्स्क शहर काफी दूर था। वहा से अचीन्स्क रेलवे स्टेशन तक कोई तीन सौ वस्ट और तय करने थे। सफर रात दिन जारी रहा। मौसम अच्छा था। दिन म प्रचुर धूप होती थी। आकाश निरभ्र था। मोतियाई पाले से ढके पेडा और आखो को चकाचौंध करती बफ की भरमार थी। राते उजली थी। आकाश के निस्सीम विस्तार म चाद का विशाल गोला कही-कही दिखायी देनेवाले तारा के बीच जहाज की तरह तैरता लगता था।

पाचवे दिन भोर के समय भूतपूव राजनीतिक निर्वासित अचीन्स्क पहुचे।

स्टेशन की घटी बजी। गाडी के आने का समय हो गया था।

भारी फुफकारे छोडते, कालिख और तेल से काले पडे इजन ने यात्री डिब्बो को प्लेटफाम पर ला खडा किया। गाडी यहा एक ही मिनट रकती थी। तभी रवाना होने की घटी भी बज गयी। निर्वासन से वापसी का सपना पूरा हो गया। अब आगे नया जीवन था।

चिगारी, जो ज्वाला बनेगी

साइबेरिया की गहराइया म
मान औ धैय की जरूरत अपार,
व्यथ न जायेंगे दुखद सघप
और आपके उदात्त विचार।

ये पक्तिया कवि पुश्किन ने नेरचिन्स्क, साइबेरिया, मे निर्वासित दिसबरवादियो को लिखी थी। इसके उत्तर मे कवि दिसबरवादी ओदोयेव्स्की ने उन्हे लिखा

न होगा व्यथ हमारा सघप अथक
उठेगी कभी चिगारी से लपट!

व्लादीमिर इल्यीच ने अखबार को 'ईस्क्रा' (चिगारी) नाम देने का फैसला किया।

शूशेन्स्कोये में रहते हुए ही उन्होंने उसकी पूरी योजना तैयार कर ली थी। अब उसे कार्यरूप देना था। साइबेरिया से लौटकर व्लादीमिर इल्यीच प्स्कोव में रहने लगे। अकेले ही। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की निर्वासन अवधि अभी खत्म नहीं हुई थी, इसलिए वह बाकी समय के लिए उफा में ही रह गया। प्स्कोव में व्लादीमिर इल्यीच ने "इस्क्रा" निकालने के लिए तैयारियां शुरू कीं। वह विभिन्न शहरों की यात्रा करते। "इस्क्रा" में काम करने के लिए साथियों का ढूंढ़ना। अखबार के लिए लेख लिखनेवालों को ढूंढ़ना था। फिर ऐसे आदमियों की तलाश भी जरूरी थी, जो अखबार का गुप्त रूप से वितरण करते। "इस्क्रा" को आम तरीके से दुकानों और स्टालों पर नहीं बेचा जा सकता था। और अगर कोई ऐसा करता, तो उसे तुरंत जेल हो सकती थी। अखबार निकालने के लिए पैसा की भी जरूरत थी।

जमीन आसमान एक करके चार महीने में व्लादीमिर इल्यीच ने "इस्क्रा" की तैयारी पूरी कर ही ली।

पर एक सवाल अभी बाकी था। अखबार को छापा कहां जाये? रूस में रहते हुए भला कोई ज़ार के खिलाफ, जमींदारों और उद्योगपतियों के खिलाफ, पुलिस के अफसरों के खिलाफ अखबार छापने के लिए तैयार होता?

व्लादीमिर इल्यीच को इस बारे में भी काफी सोचना पड़ा।

उन्होंने साथियों से परामर्श किया। अन्त में यह तय हुआ कि उसे विदेश में छापा जाय। बेशक वहां भी ऐसा अखबार पूर्णतया गुप्त रूप से ही निकाला जा सकता था। पर वहां रूसी पुलिस के भेदिये इतने अधिक नहीं थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने जैसे-तैसे डाक्टरी सर्टिफिकेट का इंतजाम किया और इलाज के बहाने विदेश रवाना हो गये। इससे पहले वह नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से भी मिल आये, जिनका निर्वासन नौ महीने बाद खत्म होता था। अब वह वतन से दूर जा रहे थे। क्या बहुत अरसे के लिए? जैसे कि बाद में पता चला, बहुत अरसे के लिए।

तंग सड़कों, नुकीली छतोंवाले मकानों और प्राटेस्टेण्ट गिरजावाले जर्मन शहर लाइपज़िग में बहुत अधिक कल-कारखाने और उनसे भी अधिक छापेखाने और हर तरह की किताबों की दुकानें थीं। वहां कोई पचीस साल

की उम्र का गेमन राऊ नाम का एक जमन रहता था। शहर के बाहर एक छोटे से गाव म उसका छापाखाना था। उसम मशीन के नाम पर सिफ एक ही—हालाकि काफी बडी—छपाई मशीन थी और वह भी बहुत पुरानी। उस पर मजदूरा का येलक्द अखबार, तरह-तरह के पोस्टर और पम्फ्लेट छाप जाते थ।

गेमन रोऊ सामाजिक-जनवादी था। एक दिन लाइपजिग के सामाजिक-जनवादियो न उसे बताया कि रूस से एक माक्सवादी आया है। रूसी माक्सवादी अपना क्रातिकारी अखबार निकालना चाहते है और यह तय किया गया है कि उसका पहला अक लाइपजिग म छप।

"तो हमे साथियो की मदद करनी चाहिय," लाइपजिग के सामाजिक जनवादियो न गेमन रोऊ से कहा।

लाइपजिग आनेवाला रूसी साथी और कोई नही, व्लादीमिर इल्यीच ही थे। उन्होने शहर के छोर पर एक कमरा किराये पर लिया। वह हमेशा मुह अधेरे ही उठ जात थे, जब हर कही नि स्तब्धता होती थी। यहा तक कि फक्टरियो के भापू भी नही बजते थे। कमरा बहुत ठडा था। दिसम्बर का महीना चल रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच ने स्पिरिट के लैम्प पर पानी उबाला, टिन के मग म चाय बनाकर गरम-गरम पी और हमेशा की तरह घर से निकल पडे। जाना दूर था। गेमन राऊ के छापखाने तक। यही कोई पाच छह किलोमीटर का रास्ता होगा। घोडाट्राम वहा नही जाती थी, इसलिए पैदल ही जाना होता था। रास्त म पैदल या साइकिलो पर सवार मजदूर और बाजार जानेवाले किसानो के ठेले मिलते थे। शहर की सीमा आ गयी। आगे बफ स ढके खेत थे। दूर, क्षितिज के पास जगलो के काले साये खडे थे। शहर के छोर पर बसी बस्तियो की बत्तिया जल रही थी। गेमन रोऊ के छापखान की खिडकी से लालटेन का उजाला दिखायी दे रहा था।

सारा छापाखाना एक बडे से कमरे मे समाया हुआ था, जिसके आधे हिस्से म पुरानी छपाई मशीन खडी थी। कमरे म दो कपोजिग बाक्स भी थे। लोहे की अगीठी म लकडिया जलते हुए चटक रही थी। लपटे कप-कपाती थी, तो उनके साथ ही दीवारो पर पडनेवाले साये भी काप जाते थे।

"आज महत्त्वपूण दिन है," गेमन रोऊ ने जमन मे व्लादीमिर इल्यीच से कहा।

व्लादीमिर इल्यीच ने फिर दिखावटी गम्भीरता प्रकट की। सचमुच आज महत्त्वपूर्ण दिन था। सब तरह की तैयारियाँ हो चुकी थीं, पर आज

कम्पाजीटर ने भारी फ्रेम उठाकर मशीन पर चढ़ाया। मशीनमैन ने हत्था घुमाया। मशीन खटखटायी। सिलेण्डर घूमने लगा और अखबार का पहला पन्ना मशीन से बाहर निकला। इस तरह "ईस्क्रा" का पहला अंक छपकर तैयार हुआ।

व्लादीमिर इल्यीच ने एक अंक उठाया। इस घड़ी की वह कब से और कितनी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे थे!

'अब हमारे पास अपना, मजदूरों का, क्रान्तिकारी अखबार है! उड़ चलो, हमारे अखबार, चारों की तरफ! करो पैदा जागृति और उभारो क्रान्ति के लिए!

व्लादीमिर इल्यीच ने सबको सुनाते हुए अखबार का नाम पढ़ा
'ईस्क्रा।'
दायीं तरफ ऊपर कोने में छपा था
'उठेगी अभी चिंगारी से लपट!"

लेनिन

मुसाफिर गाड़ी केनिग्सबर्ग जा रही थी। तीसरे दर्जे के डिब्बे में एक कोने में खिड़की के पास एक नौजवान बैठा था। वह म्यूनिख में सवार हुआ था और तब से सारे रास्ते भर ऊंघता रहा था। उसके पैरों के पास एक काफी बड़ा सूटकेस रखा था।

गाड़ी केनिग्सबर्ग पहुंच गई। यह पत्थर के किले, गिरजाघरों और लाल खपरैल की छतोंवाला पुराना शहर था। बाल्टिक सागर के तट पर होने के कारण यहां बंदरगाह भी था, जिसमें दसियों जहाज खड़े थे। उनमें से एक का नाम था "सेंट मार्गरीता"। म्यूनिख से आये जर्मन ने इधर उधर ताका झांका और फिर बंदरगाह की ओर न जाकर पास ही के एक बीयरखाने में घुस गया। बीयरखाने में भीड़ बहुत थी। चारों तरफ तम्बाकू का भूरा, कड़ुआ धूआं छाया हुआ था। जर्मन एक खाली जगह पर बैठ गया और सूटकेस को उसने मेज के नीचे खिसका दिया। फिर बैरे से सासेज मंगाकर बीयर के साथ धीरे धीरे खाने लगा। इतने धीरे धीरे कि मानो

उसके पास फालतू वक्त बहुत हो। या हो सकता है कि वह किसी का इन्तज़ार कर रहा था? हा, उसे सचमुच "सट मागरीता' के जहाज़ी का इतजार था। उससे मिलन के लिए ही वह म्यूनिख से आया था, हालांकि उसे पहले कभी नही देखा था। जब भी कोई नया आदमी बीयरखाने म आता, म्यूनिख से आया हुआ जमन दाये हाथ से बालो का दायें कान की तरफ सहलाते हुए टकटकी लगाकर उसे देखता। इस तरफ किसी का ध्यान भी नही जा सकता था, क्योकि बालो का सहलाना कोई अस्वाभाविक बात नही थी। मगर यह एक इशारा था।

आखिरकार जहाजी आ ही गया। समुद्री हवा और धूप से उसका चेहरा ताबई हो गया था। दरवाज़े पर खडे-खडे उसने सभी लोगो पर नज़र डाली और बालो को सहलाते हुए आदमी को देखकर सीधे उसकी तरफ बढ चला। मेज़ के पास बैठकर उसने पैर से सूटकेस को टटोला और बोला

"उफ्फ, कितनी भयकर हवा है!"

"अगर अपने रास्ते की तरफ है, तो कोई बात नही," म्यूनिख से आये जमन ने जवाब दिया।

"ठीक ही पहचाना, भैया, अपने ही रास्ते की तरफ है।"

यह पहचान-वाक्य था। तुरत ही दोनो के बीच आत्मीयता पैदा हो गयी। दोनो का एक ही ध्येय था, जिसके खातिर वे यहा बीयरखाने मे इकट्ठे हुए थे।

बातचीत जल्दी ही खत्म हो गयी और दोनो बीयरखान से बाहर निकल आये। अब सूटकेस जमन के हाथ मे नही, बल्कि जहाज़ी के हाथ म था। किसी ने इस बदलाव पर ध्यान नही दिया। आखिर किसी को इससे मतलब भी क्या था? दो साथी जा रहे ह, बाते कर रहे है। चौराहे पर दोनो अलग हो गये। म्यूनिख से आया जमन स्टेशन की ओर चल पडा और सूटकेस "सेट मागरीता" पर बाल्टिक सागर से होते हुए स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम की ओर।

रात म हवा और तेज हो गयी। लहरे आसमान छूने लगी। तूफान "सट मागरीता' को कभी इधर तो कभी उधर फेंकने लगा। अधेरा ऐसा था कि हाथ को हाथ नही सूझता था।

जहाज छह घटे देर से स्टाकहोम पहुचा। फिनिश जहाज़ "सुआमी' शायद कभी का हेल्सिगफोस के लिए रवाना हो चुका होगा।

'समय पर नहीं पहुंच पाया," जहाजी को अफसोस हो रहा था।

अचानक उसे "सुओमी" दिखायी दिया। वह स्टाकहोम के बन्दरगाह में खड़ा भाप छोड़ रहा था। शायद तूफान की वजह से उसे भी रुक जाना पड़ा था और अब लंगर उठाने की तैयारियां कर रहा था।

'आहिस्ता से आगे!' कप्तान ने आदेश दिया।

चक्कों के नीचे पानी खौलने लगा। जहाज चल पड़ा।

'वाइस-कप्तान साहब!' भारी सूटकेस को खींचते हुए जहाजी चिल्लाया, 'वर्निमजग से आपकी चाची ने पार्सल भेजा है।'

दौड़ने की वजह से जहाजी हांफ रहा था। सूटकेस बहुत भारी था। उसे लगा कि उसकी सारी कोशिश बेकार हो गयी है, क्योंकि "सुओमी' तट से हट चुका था।

लेकिन नहीं, कोशिश बेकार नहीं गयी। चमत्कार सा हुआ। कप्तान ने उसका चिल्लाना सुन लिया और

"आहिस्ता से पीछे!" "सुओमी" पर आदेश सुनायी दिया। 'स्टाप!"

'वाइस-कप्तान साहब! जहाजी पूरे जोर से चिल्लाया, "आपकी चाची ने गरम स्वीटर भेजे हैं।"

घाट पर खड़े सभी लोग ठहाका लगाकर हंस पड़े। न जाने क्यों, सभी खुश थे कि 'सुओमी" पार्सल लेने के लिए वापस लौट आया है। वाइस कप्तान ने सूटकेस लिया, हाथ हिलाकर जहाजी को धन्यवाद दिया और 'पार्सल' को अपने कैबिन में छिपा लिया।

सूटकेस की यात्रा जारी रही।

जब जहाज हेल्सिंगफोर्स पहुंचा, तो मूसलाधार बारिश हो रही थी। वाइस-कप्तान ने बरसाती पहनी और सूटकेस उठाकर तेजी से घोड़ाट्राम के स्टाप की ओर बढ़ चला। पानी इतना अधिक बरस रहा था कि जैसे बाढ़ ही आ गयी हो। ओह, कहीं बक्से में पानी न चला जाय! वाइस कप्तान ने इधर-उधर ताका, पर वह मजदूर कहीं नहीं दिखायी दिया, जिससे उसे स्टाप पर मिलना था। जहाज कुछ घंटे देर से पहुंचा था। ऊपर से यह मूसलाधार बारिश! सड़कें सुनसान थीं। कहीं वह पीटर्सबर्ग का मजदूर इंतजार करते-करते ऊब न गया हो! क्या किया जाये? तभी घोड़ाट्राम आती दिखायी दी, पर वह मजदूर उसमें भी नहीं था। अचानक

वाइस-कप्तान ने देखा कि सामने के घर के फाटक से एक आदमी बाहर निकल इधर उधर देखते हुए उसकी ओर आ रहा है। यही वह मजदूर था, जिससे उसे मिलना था।

"कैसी बदकिस्मती है! खडे खडे अकड गया हू," मज़दूर बडबडाया।

"तूफ़ान के कारण देर हो गयी। कब जायेंगे?"

"आज।"

"ठीक है। म अभी तार से सूचित कर दूगा।"

मज़दूर ने सहमति मे सिर हिलाया और सूटकेस उठाकर घोडाट्राम पर चढ गया।

कुछ घटे बाद सूटकेस रेलगाडी से पीटसबर्ग जा रहा था।

गाडी खाली पडे बसन्तकालीन खेतो, बारिश से भीगे गावो और निर्जन दाचो* की बगल से गुज़र रही थी। पीटसबर्ग का मजदूर इन जगहो को भली भाति जानता था, इसलिए चुपचाप बैठा अखबार पढ रहा था और बेलोओस्त्रोव स्टेशन की प्रतीक्षा कर रहा था।

बेलोओस्त्रोव से रूस की सीमा शुरू होती थी। वहा हमेशा कस्टम चेकिंग होती थी।

कस्टम का आदमी वैगन मे आया।

"कृपया अपने सूटकेस दिखाइये।"

पीटसबर्ग के मज़दूर ने बिना कोई जल्दबाज़ी दिखाये अपना सूटकेस खोला।

एक जोडी कपडे, पुराना चारखानेदार पट्टू और मिठाई का डिब्बा। बस। कस्टमवाले ने सूटकेस के किनारे ठकठकाए, पर सदेहजनक कुछ भी न मिला।

उसी दिन मज़दूर पीटसबर्ग मे था और वसील्येव्स्की द्वीप पर एक पत्थर के मकान की सीढिया चढ रहा था। दूसरी मजिल पर दरवाजे पर तावे की प्लेट लगी थी "दातो का डाक्टर ।

आगन्तुक ने घटी बजायी। दो लबी और एक छोटी। इसका मतलब था कि डरने की कोई बात नही, अपना ही आदमी आया है।

दातो के डाक्टर ने दरवाज़ा खोला।

---

* दाचा — ग्रीष्मकालीन बगला। — स०

"आइये, आपका ही इंतजार था।"

क्रांतिकारी गुप्त मुलाकात के लिए यहीं एकत्र हुआ करते थे।

डाक्टर के कमरे में एक लड़की मजदूर का इन्तजार कर रही थी।

लाइये,' उसने कहा और मजदूर के हाथ से सूटकेस ले लिया। बेचारे ने रास्ते में क्या-क्या नहीं झेला था! तूफान, बारिश, कस्टम चेकिंग

लड़की ने सूटकेस से चारखानेदार पट्टू और दूसरी चीजें निकालीं। लेकिन यह क्या? आगन्तुक ने सफाई से सूटकेस का तला दबाया और वह ढक्कन की तरह खुल गया। सूटकेस में दो तले थे। निचले तले में कसकर तह किये हुए अखबार रखे हुए थे। लड़की ने एक अखबार उठाया। 'ईस्क्रा'।

अच्छा तो यह है वह चीज, जिसे केनिग्सबर्ग, स्टाकहोम, हेल्सिंगफोर्स से होते हुए इतनी मेहनत और इतने गुप्त रूप से म्यूनिख से पीटर्सबर्ग पहुंचाया गया है!

लड़की सूटकेस से 'ईस्क्रा' निकालकर अपने टोप के डब्बे में रखने लगी। जब सब अखबार आ गये, तो उसने फीते से डब्बे को बांध लिया और पीटर्सबर्ग के छोर पर स्थित मजदूर मंडलियों को बांटने चल पड़ी।

वह 'ईस्क्रा' की एजेण्ट थी। 'ईस्क्रा" के गुप्त एजेण्ट रूस के सभी बड़े शहरों में थे।

'ईस्क्रा' को गुप्त रूप से जहाजों से, रेलगाड़ियों से ले जाया जाता, सीमा के इस पार पहुंचाया जाता।

"ईस्क्रा" मजदूरों और किसानों की आंखें खोलता, उन्हें दिखाता कि उनका वास्तविक जीवन क्या है।

"ईस्क्रा" उन्हें सिखाता "जारशाही के खिलाफ लड़ो! मालिकों के खिलाफ लड़ो!

"ईस्क्रा" उन्हें पार्टी की स्थापना के लिए, क्रांति के लिए ललकारता।

शीघ्र ही रूस में 'ईस्क्रा' की प्रेरणा पर एक शक्तिशाली मजदूर आंदोलन शुरू हो गया।

इस विराट आंदोलन के नेता, मार्गदर्शक और 'ईस्क्रा' के मुख्य संपादक व्लादीमिर इल्यीच थे।



उल्यानोव परिवार। मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना, इल्या निकालायविच और उनके बच्चे अान्ना, मरीया अलेक्सान्द्र, दमीत्री आन्ना और व्लादीमिर। सिम्बीर्स्क, १८७६।

'आइए, आपका ही इन्तजार था।"

क्रातिकारी गुप्त मन्त्रणाओं के लिए यही एकत्र हुआ करते थे।

डाक्टर के कमरे में एक लड़की मजदूर का इन्तजार कर रही थी।

लाइए, उसने कहा और मजदूर के हाथ से सूटकेस ले लिया। बेचारे ने रास्ते में क्या-क्या नहीं झेला था! तूफान, बारिश, चेकिंग

लड़की ने सूटकेस में चारखानेदार पट्टू और दूसरी चीजें निकालीं। लेकिन यह क्या? आगन्तुक ने सफाई से सूटकेस का तला दबाया और वह ढक्कन की तरह खुल गया। सूटकेस में दो तले थे। निचले तले में कसकर तह किये हुए अखबार रखे हुए थे। लड़की ने एक अखबार उठाया। 'ईस्क्रा'।

अच्छा, तो यह है वह चीज, जिसे कैनिगसबर्ग, स्टाकहाम, हेल्सिंगफोर्स से होते हुए इतनी महनत और इतने गुप्त रूप से म्यूनिख से पीटर्सबर्ग पहुचाया गया है!

लड़की सूटकेस से 'ईस्क्रा' निकालकर अपने टोप के डब्बे में रखने लगी। जब सब अखबार आ गये, तो उसने फीते से डब्बे को बाध दिया और पीटर्सबर्ग के छोर पर सक्रिय मजदूर मडलियों को बाटने चल पड़ी।

वह 'ईस्क्रा' की एजेण्ट थी। 'ईस्क्रा" के गुप्त एजेण्ट रूस के सभी बड़े शहरों में थे।

'ईस्क्रा" को गुप्त रूप से जहाजों से, रेलगाडियों से ले जाया जाता, सीमा के इस पार पहुचाया जाता।

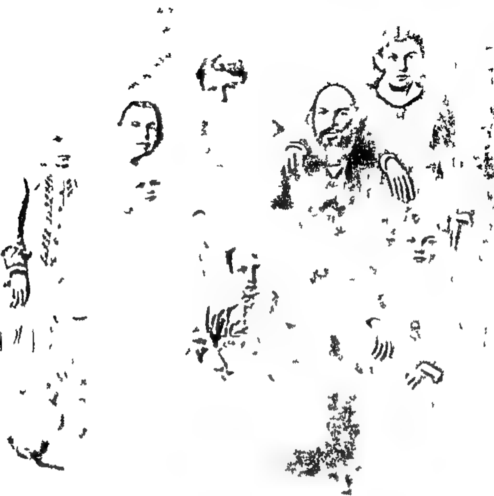
"इस्क्रा" मजदूरों और किसानों की आखें खोलता, उन्हें दिखाता कि उनका वास्तविक जीवन क्या है।

"ईस्क्रा' उन्हें सिखाता 'जारशाही के खिलाफ लड़ो! मालिकों के खिलाफ लड़ो!'

'ईस्क्रा' उन्हें पार्टी की स्थापना के लिए क्राति के लिए ललकारता।

शीघ्र ही रूस में 'ईस्क्रा' की प्रेरणा पर एक शक्तिशाली मजदूर आदोलन शुरू हो गया।

इस विराट आदोलन के नेता, मार्गदर्शक और "ईस्क्रा के मुख्य सपादक व्लादीमिर इल्यीच थे।

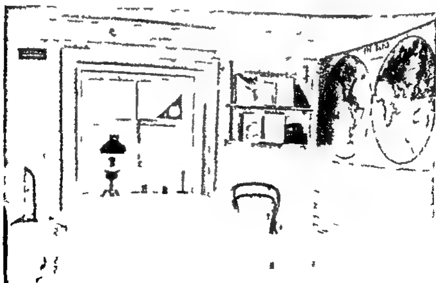


उल्यानोव परिवार। मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना, इल्या निकोलायविच और उनके बच्चे ओल्गा, मरीया, अलेक्सांद्र, दमीत्री आन्ना और व्लादीमिर। सिम्बीर्स्क, १८७९।



सिम्बीर्स्क में उल्यानोवों का घर।

व्लादीमिर इल्यीच का कमरा।





व्ला० इ० लेनिन स्कूल समाप्ति के वप मे। सिम्बीस्क १८८७।



किशोर व्ला० इ० लेनिन। चित्रकार—व० प्रागेर।

व्ला० इ० लेनिन के बडे भाई अलेक्सान्द्र इल्यीच उल्यानोव (१८६६–१८८७)।





व्ला० इ० लेनिन काजान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की क्रांतिकारी सभा में। ४ दिसंबर १८८७। चित्रकार—ओ० विशयाकोव।



व्ला० इ० लेनिन। समारा, १८९१।



ब्ला० इ० लेनिन काजान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की क्रांतिकारी सभा में। ४ दिसंबर १८८७। चित्रकार—ग्रो० विशयाकोव।



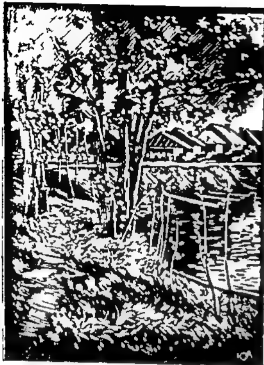
व्ला० इ० लेनिन। समारा, १८९१।

व्ला० इ० लेनिन। सेंट पीटर्सबर्ग फरवरी १८९७।



पहला परचा। चित्रकार—फ० गोलूब्कोव।

चित्रकार – यू० आव्देयेव। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया १८६५



शूशेन्स्कोये। चित्रकार – यू० आव्देयेव।



शूशेन्स्कोये मे व्ला० इ० लेनिन का कमरा।

शूशेन्स्कोये का वह घर, जिसमे विवाह के बाद व्ला० इ० लेनिन सपरिवार रहने लगे थे।



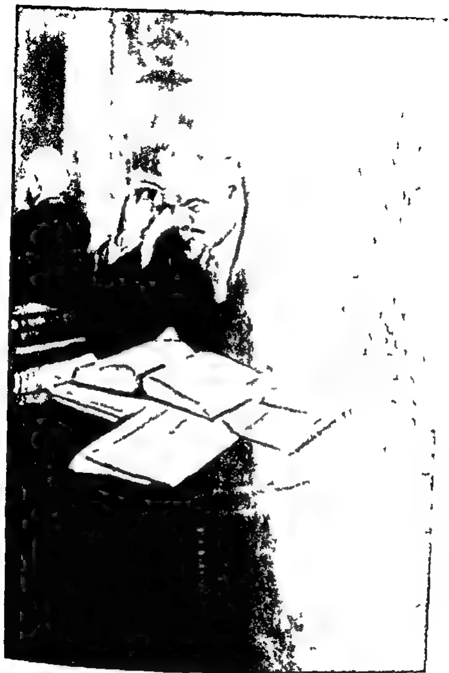
РОССИЙСКАЯ СОЦИАЛ-
ДЕМОКРАТИЧЕСКАЯ
РАБОЧАЯ ПАРТИЯ

ИСКРА

ईस्क्रा का पहला अंक। १९००। इसका अग्रलेख—"हमारे आंदोलन के फौरी लक्ष्य"—व्ला० इ० लेनिन ने लिखा था।

लाइपजिग का वह मकान जिसमें व्ला० इ० लेनिन की देखरेख में "ईस्क्रा" का पहला अंक छपा था।



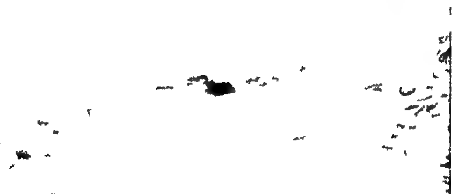


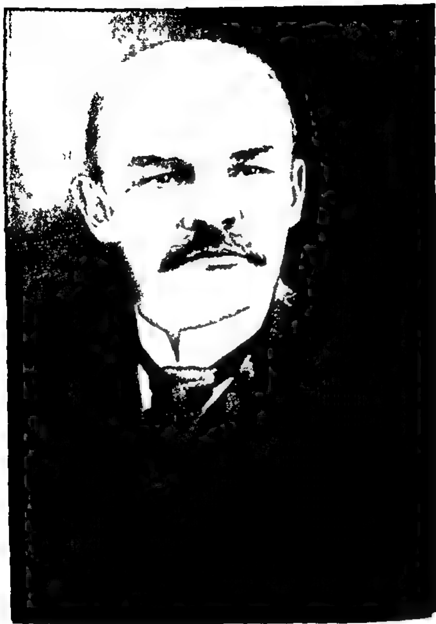
बर्लिन के पुस्तकालय में व्ला० इ० लेनिन। चित्रकार – व० पेरेल्मान।





१९०५ मे मजदूरो द्वारा खडी की गयी बरिकेडें। चित्रकार–ई० व्लादीमिरोव।





व्ला० इ० लेनिन। पेरिस, १९१०।

व्लादीमिर इल्यीच तथा रूस से मजदूरों और "ईस्क्रा" के एजेण्टों से बड़ी संख्या में पत्र, लेख, आदि मिलते थे और लगभग सब कूट भाषा में लिखे होते थे। वह उन्हें "ईस्क्रा" में छापते, मजदूरों के पत्रों के जवाब देते, "ईस्क्रा" के लिए लेख तैयार करते और साथ ही राजनीति और क्रांतिकारी संघर्षों के बारे में किताबें लिखते।

दिसंबर, १९०२ से व्लादीमिर इल्यीच अपने लेखों और किताबों को लेनिन नाम से छापने लगे।

यह महान नाम था, एक ऐसा नाम, जिससे शीघ्र ही सारी दुनिया परिचित होनेवाली थी।

बोल्शेविक

पहाड़ों के देश स्विट्ज़रलैण्ड में नीली जेनेवा झील के तट पर एक खूबसूरत शहर है—जेनेवा। उसके बाहर, झील से थोड़ी ही दूरी पर सेशेरोन नाम की मजदूर बस्ती में एक छोटा-सा दोमंजिला मकान था। और मकानों की तरह उसकी छत भी खपरैल की थी। खिड़कियां नीले रंग की थीं और मकान के साथ एक छोटा-सा हरा भरा बगीचा भी था।

इस मकान में इल्यीच दम्पति, यानी व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना रहते थे।

पहले वे म्यूनिख में रहते थे। मगर वहां की पुलिस को "ईस्क्रा" की गंध लग जाने की वजह से उन्हें वह शहर छोड़ना पड़ा और वे इंग्लैण्ड की राजधानी लंदन आ गये। साल भर तक "ईस्क्रा" लंदन से निकलता रहा। पर बाद में यहां रहना भी खतरनाक हो गया। "ईस्क्रा" के लिए दूसरी जगह ढूंढ़ना जरूरी था। तब इल्यीच दम्पति जेनेवा की निकटवर्ती सेशेरोन बस्ती में पहुंचा।

"बहुत खूब!" मिनट भर में सारे मकान का मुआयना करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "बहुत खूब। जगह शांत है और यहां मैं चैन से काम कर सकूंगा।"

मकान में नीचे काफी बड़ी रसोई थी और ऊपर दो छोटे, मगर काफी उजले कमरे थे।

व्लादीमिर इल्यीच के पास काम तो बहुत था, पर जिस शांति की उन्होंने कल्पना की थी, वह शीघ्र ही मिथ्या साबित हो गयी। बस्ती के निवासियों ने देखा कि रूसियों के यहां बहुत लोग आते हैं। जुलाई, १९०३ में तो आनेवालों का मानो तांता ही लग गया। आगन्तुक कभी अकेले आते तो कभी दो या तीन के दल में। यह पहचानना मुश्किल नहीं था कि वे स्थानीय नहीं हैं—स्थानीय निवासियों से उनका पहरावा भी अलग था और भाषा-बोली भी। वे रूसी बोलते थे और रूसी जाति के थे। साफ लगता था कि वे जेनेवा पहली बार आये हैं और यहां की हर चीज उनके लिए नयी है। उन्हें यहां का धूपखिला आकाश, उजले रंग की खिड़कियां, और क्यारियों में खिले फूल, सब बेहद पसंद थे।

हो सकता है कि सेशेरोन के निवासियों को १९०३ की गरमियों में जेनेवा में इतने अधिक रूसियों को देखकर आश्चर्य हुआ हो। मगर उनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि वे सब रूस के विभिन्न भागों से यहां पार्टी की दूसरी कांग्रेस में भाग लेने के लिए आये हैं।

कांग्रेस के लिये चुने गये लोग विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए लेनिन के पास आते, उनकी राय पूछते। वे जानते थे कि कांग्रेस की तैयारी में सबसे अधिक योग व्लादीमिर इल्यीच ने दिया है। कांग्रेस की तैयारी के तौर पर व्लादीमिर इल्यीच ने "ईस्क्रा" में बहुत से लेख लिखे थे, पार्टी के गठन के बारे में "क्या करें?" नामक एक शानदार किताब छापी थी और पार्टी का संविधान तथा जुझारू कार्यक्रम तैयार किया था। "हम समाज का नया, बेहतर गठन चाहते हैं। इस नये, बेहतर समाज में न कोई अमीर होगा, न गरीब। सभी को समान रूप से काम करना होगा," लेनिन ने साथियों को समझाया।

लेनिन ने इन सब बातों के बारे में बहुत सोचा था। वास्तव में पार्टी कार्यक्रम की रूपरेखा उन्होंने अपने निर्वासन काल में ही तैयार कर ली थी। अब वह चाहते थे कि कांग्रेस में सभी मिलकर तय कर लें कि नये समाज के लिए संघर्ष का सबसे सही और कारगर तरीका क्या है।

जेनेवा से कांग्रेस में भाग लेनेवाले ब्रुसेल्ज पहुंचे। वहां एक विशाल, अंधेरे और असुविधाजनक आटा-गोदाम में कांग्रेस का उद्घाटन हुआ। कांग्रेस के लिए गोदाम को साफ कर दिया गया था और खासकर ताजी हवा आने दी गई थी। एक किनारे पर लकड़ियों के तख्तों से मंच बनाया गया

था। बड़ी खिड़की पर लाल कपड़ा टांगा हुआ था। प्रतिनिधियों के बैठने के लिए बेंच लगायी गयी थीं। प्रतिनिधि अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। प्लेखानोव मंच पर चढ़े। वह पहले रूसी मार्क्सवादी थे और बहुत बड़े विद्वान थे। लेनिन से पहले ही वह मार्क्स के दार्शनिक विचारों के बारे में कई किताबें लिख चुके थे। औपचारिकतापूर्ण वातावरण में प्लेखानोव ने कांग्रेस का उद्घाटन किया और अत्यन्त प्रभावशाली भाषण दिया।

सभी ने सांस रोककर उन्हें सुना। व्लादीमिर इल्यीच तो बिल्कुल भावाकुल हो उठे थे। उनकी आंखें उल्लास से चमक रही थीं। पार्टी की पुनर्स्थापना और पार्टी कांग्रेस का सपना वर्षों से उनके मन में [illegible] रहे थे। आखिरकार वह साकार हो ही गया।

कांग्रेस की कारवाई शुरू हुई तो लगभग पहले ही दिन से संघर्ष भी छिड़ गया, क्योंकि कुछ प्रतिनिधि लेनिन द्वारा प्रस्तावित [illegible] से सहमत नहीं थे।

उन्हें यह बहुत नया और जोखिमपूर्ण लगता था। नवीनता उन्हें डराती थी। अब वे लेनिन से बहस करने लगे। मार्तोव लेनिन के मित्र थे और [illegible] पक्ष को [illegible] उन्होंने [illegible] और [illegible] में मदद किया कि अधिकतर प्रतिनिधि उनकी तरफ हो गये। कांग्रेस में पार्टी के कार्यक्रम और नियमावली पर विचार किया गया, केंद्रीय समिति और "इस्क्रा" का संपादक-मंडल चुना गया। प्रत्येक [illegible] सभी प्रश्नों पर छिड़ा। लेनिन ने कांग्रेस में एक रिपोर्ट पेश की, जो उतनी स्पष्ट और विश्वासोत्पादक थी कि सभी प्रतिनिधियों ने उसे असाधारण एकाग्रता के साथ सुना। कांग्रेस की [illegible] बैठक हुई और लेनिन उसमें [illegible] बार बार। वह बोलते थे तो जादू कर देते थे। अधिकतर प्रतिनिधि लेनिन के पक्ष में थे। [illegible] उन्हें बोल्शेविक (बहुमतवाले) कहा जाने लगा। जिन्होंने लेनिन का विरोध किया, वे मेन्शेविक (अल्पमतवाले) कहलाने लगे। बोल्शेविकों के विपरीत, जो अधिकाधिक लेनिन के गिर्द एकजुट हुए, मेन्शेविक [illegible] से दूर हटते गये।

कांग्रेस [illegible] [illegible]। [illegible] गया था। [illegible] है। [illegible]

कारिया की काग्रेस हो रही है, इसलिए उसने उनके पीछे अपने भेदिया की पूरी पल्टन लगा दी थी। खतरा पैदा हो रहा था। काग्रेस को दूसरी जगह ले जाया गया। सभी लदन चले आये। यहा काग्रेस की कार्यवाही जारी रही। जीत लेनिन की हुई। उनके निर्भीक और जोशीले साथी-बोल्शेविक—उनके साथ थे।

लदन मे प्राय बारिश होती है। इस बार तो झिरमिरी इतनी देर तक जारी रही कि लदन की सडके मानो छतरियो का सागर ही बन गयी। बीच-बीच मे कभी इगलिश चैनल से आनेवाली हवा घने बादलो को उड़ा ले जाती, थोडी देर के लिए नीला आकाश चमक उठता, धूप खिल जाता, मगर फिर वही बारिश।

ऐसे ही एक दिन काग्रेस के बाद, जब सूरज थोडी सी देर के लिए चमककर फिर बादलो के पीछे छिप गया था, लेनिन ने कहा

'साथियो! बीस साल पहले यहा लदन मे कार्ल मार्क्स का देहावसान हुआ था। आइये, हम भी महान मार्क्स की कब्र पर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने चले।"

और सब साथ साथ कब्रगाह की ओर चल पडे। कब्रगाह लदन के उत्तरी भाग मे एक ऊचे टीले पर बने पार्क मे स्थित थी। टीले से लदन का विहगम दृश्य दिखायी देता था कालिख से काली पडी इमारते, काली छत और धूआ उगलती फैक्टरियो की चिमनिया।

मार्क्स की कब्र सफेद सगमरमर से बनी थी और चारो तरफ हरी हरी घास उगी हुई थी।

कब्र के शीष पर गुलाब की झाडी थी। फूलो की पखुडिया झुकी हुई थी मानो अपना शोक व्यक्त कर रही हो। हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। सडको पर काली छतरिया लिये लोग आहिस्ता आहिस्ता आ-जा रहे थे।

"साथियो,' लेनिन ने सिर से टोपी उतारते हुए कहा, "महान मार्क्स हमारे गुरु थे। उनकी कब्र के पास खडे होकर हम शपथ खाते है कि उनके विचारो के प्रति सदा निष्ठावान रहेगे और कभी सघर्ष से मुह नही मोडेगे। आगे, साथियो! सिर्फ आगे!'

पीटसबग मे पुतीलोव कारखाने के मालिका ने बेवजह तीन मजदूरो को नौकरी से निकाल दिया। सिफ इसलिए कि फोरमैन उन्हे पसद नही करता था। इस पर कारखाने मे असतोष की जबदस्त लहर दौड गयी।

"हमे कोई अधिकार नही है। हम अधिकार दो। हमारा खून चूसनेवाले फोरमैन मुर्दाबाद!" मजदूरो ने माग की।

कारखाने मे हडताल हो गयी। सभी मजदूरा ने काम करने से इकार कर दिया। कारखाना निष्क्रिय हो गया। दो और कारखाने भी ठप्प हो गये। अगले दिन और ३६० कारखाना और फक्टरिया के मजदूर हडताल पर चले गये। मशीनें रुक गयी। सारा पीटसबग जड हो गया। सब इन्तजार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

रविवार, ६ जनवरी, १६०५ को हजारा मजदूर सडका पर निकल पडे।

"चलो, जार से न्याय मागें," मजदूर कह रहे थे। "जार हमारे पिता की तरह है। वह हमे भूखा नही मरने देगा।"

बोल्शेविका ने समझाया वहा मत जाओ, जार तुम्हे नही सुनेगा।

मजदूर बढते रहे। यह सोचकर कि जार नही जानता कि जनता की कसी दुदशा है और ज्या ही जान जायेगा, त्या ही हमारा पक्ष लेने लगेगा, इन बदमाश मालिको और फोरमैना को सजा देगा। नही ता हमारा जीवन ही दूभर हो गया है।

मजदूर जार के पास दरखास्त लेकर जा रहे थे। रविवार की सुबह को पीटसबग के कोने-कोने से मजदूरा के जलूस शीत प्रासाद की ओर बढने लगे। सडको और स्क्वायरो पर लोगो का ताता लगा हुआ था। भीड हाथा मे देवप्रतिमाए और गिरजाघरो के झडे लिये हुए थी, जिन पर सुनहरी कशीदाकारी चमक रही थी। जलूसा मे औरत और बच्चे भी थे। सभी के मन मे विश्वास था, आखा मे अनुरोध था।

लेकिन यह क्या? चौराहो पर बदूक हाथ म लिये सिपाहिया की टकडिया खडी थीं। उनके आगे सफेद दस्तान पहने अफसर खडे थे।

यह वह समय था, जब सुदूर पूव म घमासान लडाई छिडी हुई थी। लगभग साल भर पहले जापान ने रूस पर आक्रमण किया था। रूसी जनरल

इसके लिए बिल्कुल तैयार नही थे। फलत रूसी सेना दिन प्रतिदिन हारती जा रही थी। हजारो सिपाही दूर, कही दूर मारे जा रहे थे

और यहा, पीटसबग मे, जारशाही अधिकारियो न अपने ही निहत्थे मजदूरो के विरुद्ध सारी राजधानी म फौज खडी कर दी थी। क्यो? किसलिए?

'व्यवस्था बनाये रखन के लिए," माता मरियम की प्रतिमा हाथ मे लिये एक मजदूर ने समझाया। "शायद भीड से डर गये हैं।"

स्क्वायर के पार पत्थर का बना विशाल शीत प्रासाद खडा था। उसकी सैकडो खिडकिया मूकवत देख रही थी। प्रासाद के सामने मैदान म सफेद, अनरौंदी बर्फ पडी थी। भयावह चेहरोवाले सिपाहियो की घनी पक्ति प्रासाद की रक्षा कर रही थी। भीड को देखकर अफसर ने हाथ उठाया। सभी सगीनें तन गयी।

"भाइयो, सिपाहियो, डराओ नही!" मजदूर चिल्लाये। "हम अपने ही हैं। जार से सिर्फ दरखास्त करने जा रहे है।"

'ठहरो! आगे बढना मना है!" अफसर न चिल्लाते हुए आदेश दिया।

मजदूर क्षण भर के लिए असमजस मे पड गये। मगर पीछे की कतारो ने, जिन्होने सिपाहियो को नही देखा था, आगे को धक्का दिया।

"हे प्रभु, जार चिरायु हो!' सारा स्क्वायर गूज उठा।

आगे की कतारो के मजदूर सफेद रूमाल फहराने लगे।

'हम निहत्थे, शातिप्रिय है! हम जार के सामने दरखास्त पेश करना चाहते हैं!" मजदूर चिल्लाये और धार्मिक झडे, देवप्रतिमाए और सफेद रूमाल उठाये आगे बढते रहे।

फायर!" अफसर ने आदेश दिया।

गोलिया सनसनायी। भीड मे से कोई बीस मजदूर धराशायी हो गये।

'फायर!' अफसर फिर चिल्लाया।

गोलिया फिर सनसनाने लगी।

"फायर! फायर! फायर!'

स्क्वायर मे भगदड मच गयी। लोग घरो के दरवाजो मे छिपने के लिए भागे और मुर्दा होकर गिर पडे। शीत प्रासाद के सामने का मदान लाशो से पट गया। तभी तलवार भाजते हुए घुडसवार सैनिक भी आ गये।

"भाइयो! मारे गये!" भयाकुल भीड की चीख-पुकार से स्क्वायर गूज उठा।

"लानत है! लानत है!"

"देख लिया अपने जार को?" गुस्से से एक युवा बोल्शेविक चिल्लाया। "ये है तुम्हारा जार, जिसमे तुम्हे इतना विश्वास था! किस निमम जानवर मे तुमने विश्वास किया था?"

मजदूर समझ गये। गोलिया जार ने ही चलवायी थी। जार के ऊपर से जनता का विश्वास सदा-सदा के लिये उठ गया।

उस खूनी रविवार को पीटसबग मे एक हजार से अधिक मजदूर मारे गये और पाच हजार घायल हुए।

शाम तक पीटसबग की सडको पर लैम्पपोस्ट गिरा गिराकर बैरिकेड खडे हो गये। मजदूरो ने जारशाही के खिलाफ जग का ऐलान कर दिया।

जेनेवा के बाहरी छोर पर, आर्वा नदी के समीप कारूज नाम की एक सडक थी। रूसी प्रवासी उसे काख्जका सडक कहते थे। इस इलाके मे अधिकाश आवादी उन्ही की थी। यहा लेपेशीन्स्की दम्पति का एक भोजनालय था। दोनो पति-पत्नी साइबेरियाई निर्वासन के दौरान व्लादीमिर इल्यीच के साथी रह चुके थे। लेपेशीन्स्की भोजनालय को सभी रूसी प्रवासी जानते थे। पहली मजिल पर बडा सा कमरा और आम खिडकियो की जगह पर दो प्रदशन खिडकिया। तख्तो की बनी लम्बी, साफ-सुथरी मेजें और एक कोने म पियानो। यह भोजनालय ही नही, एक तरह से बोल्शेविको का क्लब भी था। यहा लोग व्याख्यान सुनते, शतरज खेलते और राजनीतिक चर्चा करते

पीटसबग के खूनी रविवार की खबर जेनेवा पहुचते ही सभी प्रवासी बिना किसी के बुलाये स्वत लेपेशीन्स्की भोजनालय मे एकत्र हो गये। सब खामोश थे, निस्तब्ध थे, गभीर थे। बोल्शेविक समझ गये कि रूस मे व्यापक, अभूतपूव विद्रोह शुरू हो गया है।

"घर लौटना है, वतन लौटना है!" व्लादीमिर इल्यीच सोच रहे थे। कोई शोकातुर स्वर मे गाने लगा

तुम चढे बलिवेदी पर
सघष की

दूसरा न खड होकर उसका साथ दिया

निस्वाथ प्रेम की,
लोकस्नेह की।
तुमने किया
सवस्व न्योछावर
जनता के सुख,
आजादी की खातिर।

बहुतो की आखो मे आसू थे।

'रूस मे क्राति हो रही है," भावविह्वल स्वर म व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

क्राति! कितना जोशीला, कितना प्रिय था यह शब्द! उसी शाम लेनिन ने "व्पेर्योद' (आगे बढो) के लिए एक ललकार भरा लेख लिखा। यह बोल्शेविको का नया अखबार था। "ईस्क्रा' पर मेन्शेविको का कब्जा हो गया था।

लेनिन ने लिखा "विद्रोह शुरू हो गया है। ताकत का जवाब ताकत देने लगी है। सडको पर लडाइया हो रही ह बैरिकेड खडे हो रहे ह, गोलिया सनसना रही हैं, तोपे गडगडा रही हैं। खून की नदिया बह चली हैं, स्वाधीनता के लिए गहयुद्ध छिड गया है

क्राति जिंदाबाद!

सवहारा विद्रोह जिंदाबाद!'

सागर में लाल झडा

गरमिया खत्म होने को आ रही थी। एक दिन जेनेवा म उल्यानोवा के घर की घटी बजी।

'वोलोद्या, तुम्हे मिलने आये हैं," नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने एक अपरिचित नौजवान के लिए दरवाजा खोलते हुए कहा।

नौजवान का चेहरा गोल और किशोरो की तरह भोला था और काली भौंहो के नीचे भूरी, उजली आखें उत्सुकता और किंचित आश्चय से देख रही थीं।

"आइये, आइये! आप से मिलकर हम बहुत खुशी हुई है," नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने कहा और मन ही मन सोचने लगी "कितना प्यारा नौजवान है! चेहरा बताता है कि निश्छल और नम्र है। जरूर रूस से आया होगा।"

रूस में मजदूरों की हड़ताल, प्रदर्शन, वगैरह अभी जारी थे। वतन से बोल्शेविक व्लादीमिर इल्यीच से सलाह लेने प्राय आया करते थे।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के पीछे-पीछे नौजवान ने लेनिन के कमरे में प्रवेश किया। मगर कमरे में पैर रखने से पहले दहलीज पर उसने सैनिकों की तरह हल्के से अपनी छाती को तान लिया था।

"आप कहां से हैं?" व्लादीमिर इल्यीच ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं युद्धपोत 'पोत्योम्किन' का जहाजी अफानासी मात्यूशेंको हूं," आगन्तुक ने जवाब दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने तेजी से आगे बढ़कर बड़े उत्साह से उससे हाथ मिलाया।

"क्रांतिकारी 'पोत्योम्किन' के जहाजियों के नेता! नादूशा, देखो तो कितने युवा हैं!"

आधे घंटे बाद स्पिरिट के लैम्प पर तामचीनी की केतली खौल रही थी। मेज पर स्वादिष्ट रोटी और ताजा, पीला मक्खन रखा था।

"हां, तो प्रिय मात्यूशेंको, बताइये, आप क्या बताने जा रहे थे," जब अतिथि चाय के साथ रोटी के कुछ टुकड़े खा चुका तो व्लादीमिर इल्यीच ने बेसब्री के साथ पूछा।

जहाजी अफानासी मात्यूशेंको अपने युद्धपोत "पोत्योम्किन" की कहानी सुनाने लगा।

यह हाल ही में निर्मित और अत्यंत शक्तिशाली तोपों से लैस सबसे बड़ा जहाज था। उसमें सात सौ चालीस जहाजी काम करते थे। उस समय वह सेवास्तोपोल में लंगर डाले हुए था।

रूस में हर कहीं क्रांति का ज्वार आया हुआ था। गांवों में किसान जमींदारों के खिलाफ उठ खड़े हुए थे। रूसी-जापानी युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था। जापानी जीत रहे थे और रूसियों को एक के बाद एक करारी

हार पानी पड रही थी। त्यूमीम्स्की घाटी म हमारे जहाजा की एक पूरी टुकडी नष्ट हो गयी थी। जारशाही सरकार डरी हुई और सकटग्रस्त था। जनता जार निकोलाई द्वितीय से नफरत करती थी।

युद्धपोत 'पोत्योम्किन' का कमाडर बहुत ही क्रूर और निर्दयी आत्मा था। उसे डर था कि कहीं क्राति की आग जहाज पर भी न फैल जाये। इसलिए वह सैनिक अभ्यास के बहाने युद्धपोत को सेवास्तोपोल से, मजदूर हडतालो और प्रदशनो से दूर समुद्र म ले गया।

खुले समुद्र की बात है। एक दिन सुबह घटी बजने पर सभी जहाजी उठे। सबको उनका काम बाट दिया गया। जहाजियो के एक बडे दल को डेक धोने का काम सौंपा गया।

अचानक वे पाते हैं कि ऊपरी डेक से असह्य सी बू आ रही है। जहाजी ऊपर चढे, तो देखते हैं कि वहा खूटी पर गोश्त लटका हुआ है और उसमे मोटे मोटे सफेद कीडे रेंग रहे ह। कीडे इतन अधिक थे कि लगता था कि गोश्त खुद बखुद हरकत कर रहा है। यह दृश्य देखकर जहाजियो को उबकाई आन लगी।

"तो यह है हम खिलाने के लिए!"

'हम कीडे नही खायेंगे, खुद अफसर लोग खायें इन्ह!'

कौन? अफसर? अरे उनके लिए तो अलग राशन है!"

दिन के खाने की घटी बजी। जहाजी खाने के हाल मे इकट्ठे हुए। रसोइय ने सूप परोसा, तो उसम भी कीडे तैर रहे थे।

'हम नही खायेंगे!"

सारे हॉल मे एक भयावह सी खामोशी छा गयी। रसोइये न डरकर अफसर को बुलाया। वह आते ही गालिया देने लगा, पर ज्यो ही जहाजियो के सफेद, कठोर चेहरो पर नजर पडी, तो एकाएक चुप हो कमाडर को बताने चल दिया। शीघ्र ही नगाडे की आवाज सुनायी दी। यह जनरल लाइन अप का सकेत था। जहाजी हडबडाते हुए ऊपरी डेक की ओर दौडे और लाइन बाधकर खडे हो गय। चारो तरफ नीला समुद्र था और ऊपर खुला, शुभ्र–आसमान। समुद्र मे छोटी छोटी लहरे उठ रही थी। उनमे डेलफिनो के झुण्ड खेल रहे थे।

'तुम लोग बगावत करते हो!" कमाडर चिल्लाया। 'म तुम्हे दिखाता कि सैनिक पोत पर बगावत कैसे की जाती है! किसने उकसाया है?'

जहाजी चुप, बुत की तरह खडे रहे। सामने बदूके ताने सतरिया की कतार थी।

"तिरपाल लाओ।" कमाडर ने आदेश दिया।

क्या मतलब था इसका? इसका मतलब था कि कमाडर ने बगावत उकसानेवालो को प्राणदण्ड देने का निश्चय कर लिया है। वह अगुली दिखाकर कहेगा "तुमने उकसाया था।" और बस।

तिरपाल लाकर डेक पर खोल दी गयी। अभी उससे जहाजियो को ढक देंगे। उसके नीचे होने का मतलब था प्राणदण्ड। बिना किसी सुनवाई के प्राणदण्ड!

सभी सकते मे आ गये। मौत अब आयी, तब आयी बचाव कोई नही था। चारो तरफ नीला समुद्र था, गर्म धूप से आलोकित आसमान था, निर्बाध हवा थी।

सहसा कतार मे एक जहाजी आगे उछला

"भाइयो! कब तक सहगे? हथियार उठाओ, भाइयो!"

और सबसे आगे आगे शस्त्रागार की तरफ लपक पडा। यह अफानासी मात्यूशेंको था। साथी उसे वैसे भी बहुत अशान्तस्वभाव कहा करते थे।

"जल्लाद कमाडर मुर्दाबाद!" मात्यूशेंको चिल्लाया। "जार मुर्दाबाद! आजादी जिदाबाद, साथियो!"

कतार टूट गयी। जहाजियो ने बदूकें उठा ली।

सीनियर अफसर ने बुर्जी के पीछे छिपकर पिस्तौल दागी। गोली जहाजियो के नेता, बोल्शेविक, अटल और साहसी साथी वाकूलिचूक को लगी। वह गिर गया।

'अच्छा, तो यह बात है! लो, तुम भी लो!" पागल की तरह चिल्लाते हुए मात्यूशेंको ने अफसर को भी मौत के घाट उतार दिया।

सभी जहाजी गुस्से से बौखला उठे थे। उन्होंने कुछ और अफसरो को भी, खास तौर से जिनसे उन्ह बहुत नफरत थी, गोली से उडा दिया और समुद्र मे फेंक दिया। कमाडर जान बचाने के लिए छिप गया। किन्तु जहाजियो ने उसे भी खोजकर समुद्रार्पण कर दिया।

युद्धपोत "पोत्योम्किन" आजाद था। पर आगे क्या हो? जहाज का कमाडर कौन बने? जहाज आगे कहा जाये?

अफानासी मात्यूशेंको के नेतृत्व मे एक कमीशन नियुक्त किया गया

ग्रौर यह फैसला हुआ कि ग्रोदस्सा की ग्रोर बढा जाये। मस्तूल पर ग्रब ज़ारशाही के झडे की जगह ग्रपना, क्रातिकारी झडा फहरा रहा था। यह १४ जून, १६०५ की घटना है।

लाल झडा फहराये हुए युद्धपोत "पोत्योम्किन" पूरी रफ्तार से ग्रोदेस्सा की ग्रोर बढने लगा। लाल झडा हवा म लहरा रहा था, प्रकाशस्तभ की तरह चमक रहा था, स्वाधीनता सघष के लिए जहाज़िया का ग्राह्वान ग्रौर मागदशन कर रहा था।

जहाज ने जब ग्रोदेस्सा मे लगर डाला, तो रात हो चुकी थी। उसका सचलाइटा ने ग्रधेरे को टटोला। चकाचौंध करनेवाले उजाले ने काले सागर ग्रौर नगर की नीरव सडका का चक्कर लगाया। तोपे ग्रोदेस्सा की ग्रोर तनी हुई थी। वहा मजदूरो की हडताले जारी थी। ऐसे मे काश 'पोत्योम्किन' भी तुरत मजदूरा की सहायता मे गोलाबारी शुरू कर दे। ग्रभिजात लोगो ग्रौर ऊचे ग्रधिकारियो के महला का मिट्टी म मिला दे। लेकिन जहाज़िया का नेता, बोल्शेविक वाकूलिन्चूक तो ग्रफसर की गोली से घायल होकर मर गया था। ग्रौर शेष सभी इतने जवान ग्रौर ग्रनुभवहीन थे।

इस बीच पीटसबग से ज़ार ने सेवास्तोपोल ग्रादेश भेज दिया था "बगावत तुरत दबा दी जाय।"

सेवास्तोपोल के सभी जहाज युद्धपोत 'पोत्योम्किन" की बगावत को दबाने के लिए ग्रोदेस्सा की ग्रोर चल पडे।

चौथे दिन सुबह 'पोत्योम्किन" के सतरियो को क्षितिज पर मस्तूल ग्रौर चिमनिया दिखायी दी। ये "पोत्योम्किन" को घेरे मे लेने के लिए ग्रा रहे तेरह जहाज थे।

एक के मुकाबले मे तेरह!

'पोत्योम्किन' पर ग्रलाम बज गया। जहाज़ी ग्रपनी ग्रपनी जगह पर लडाई के लिए तैयार हो गये।

युद्धपोत चुपचाप समुद्र की ग्रोर बढने लगा। मात्यूशेको के ग्रादेश पर सिगनलमन ने सदेश भेजा 'पोत्योम्किन' की कमाड सभी जहाजो के तोपचियो से गोलिया न चलाने का ग्रनुरोध करती है।'

ग्रौर ग्रचानक समुद्र 'पोत्योम्किन को दबाने के लिये भेजे गय सभी तेरह जहाजा के जहाज़िया के 'हुर्रा के उदघोष स गूज उठा। एक जहाज

से संदेश भेजा गया "हम तुम्हारे साथ हैं!" और वह चिड़िया की सी सहजता से "पोत्योम्किन" की ओर बढ चला।

समुद्र का विस्तार एक बार फिर "हुर्रा!" की आवाजो से गूज गया।

टुकडी का कमाडर डर गया कि कही सबके सब बगावत न कर बैठे। उसने तत्काल टुकडी को सेवास्तोपोल वापस लौटने का आदेश दिया।

अब लाल झडा फहराते हुए दो बागी जहाज ओदेस्सा के तटवर्ती समुद्र म खडे थे। खडे थे मगर ओदेस्सा पर कब्जा नही कर रहे थे। उन्हे किसी चीज का इन्तजार था। वे खुद नही तय कर पा रहे थे कि क्या करे।

तब तक "पोत्योम्किन" पर ईंधन और मीठे पानी का भण्डार खत्म होने को आ गया था। शीघ्र ही इजन रुक जायेगा। जहाजी उत्तेजित थे। वे जानते थे कि कुछ न कुछ करना चाहिये। पर कैसे?

दूसरे जहाज का हौसला अल्पकालीन सिद्ध हुआ। उसके मस्तूल का लाल झडा धीरे धीरे नीचे उतरने लगा।

"पोत्योम्किन" ने लगर उठाया और खुले समुद्र मे निकल पडा।

इस बीच जेनेवा से लेनिन का दूत "पोत्योम्किन के जहाजियो की सहायतार्थ रूस के लिये रवाना हो चुका था। लेनिन ने जहाजियो को दृढतापूवक और तेजी से काम करने और नगर को अपने कब्जे मे लेने की सलाह दी थी।

लेनिन का दूत ओदेस्सा पहुचा, तो उसे लाल झडा कही नही दिखायी दिया। लाल झडा दूर समुद्र मे चला गया था।

युद्धपोत पर मीठा पानी बहुत कम रह गया था। तुरत कोई उपाय करना जरूरी था। "पोत्योम्किन" ने फेओदोसिया मे पानी लेने की कोशिश की, मगर स्थानीय अधिकारियो ने इकार कर दिया

"हम बागियो को पानी नही देंगे!"

अजेय और बेघर लाल झडा फिर समुद्र म निकल पडा। जहाजी चिंतित थे, उनका आत्मविश्वास जवाब दे रहा था। क्या किया जाये?

ग्यारहवे दिन युद्धपोत "पोत्योम्किन" ने एक रूमानियाई बदरगाह मे, पराये घर म, पराये समुद्र मे लगर डाला।

"पोत्योम्किन' के जहाजियो मे और ताकत नही रह गयी थी। उनके पास न पानी था, न कोयला और न रोटी।

रूमानिया की सरकार ने कहा

"युद्धपोत हमे दे दो, हम तुम्हे शरण देते है और निश्चित रहो कि ज़ार के हाथ वापस नही सौंपेंगे।"

"पोत्योम्किन" पर जहाजियो की यह आखिरी रात थी। अलविदा, स्वतत्र "पोत्योम्किन"! ग्यारह दिन तक तुम्हारे कारण जनरल और अफसर, ज़ार और सभी सेठ कापते रहे। तुमने क्राति का झडा बुलन्द किया। तुम्हारी कीर्ति अमर रहे!

गुप्त मुलाकातें

मास्को—पीटसबर्ग एक्सप्रेस ट्रेन को छूटने मे चार मिनट रह गये थे। ज्यादातर मुसाफिर अपनी जगहो पर बैठ चुके थे। प्लेटफार्म पर विदा करनेवालो की भीड थी। आखिरी डिब्बे के पास दो भेदिये खडे थे।

"नही, अब नही आयेगा," गहरी सास लेते हुए एक ने कहा।

"अरे, देखना, आखिरी क्षण तक जरूर आ जायेगा," दूसरे ने जवाब दिया।

वे आखो तक झुके टोपो के नीचे से गौर से देखने लगे। प्लेटफार्म पर और मुसाफिर दिखायी दिये। एक, जो नाटा, गठीला और गोल फ्रेमवाला नीला चश्मा पहने था, हाथो मे सूटकेस और पीला सफरी बक्सा लिये हुए था। उन दिनो फिनलैण्ड मे ऐसे बक्सो का फैशन था। दूसरा मुसाफिर कुछ छैला किस्म का और चारखानेदार ओवरकोट पहने था।

नीले चश्मेवाला मुसाफिर कुछ कह रहा था। भेदिये उसे सुन नही पाये। भेदिये घबरा रहे थे कि जिसका उन्हें इतजार था, वह अब तक क्यो नही आया है। और यह नीले चश्मेवाला कौन है? वह तो नही लगता, पर क्या मालूम... भेदिये नीले चश्मेवाले के पीछे-पीछे दौडे।

लेकिन गाडी चल पडी थी। नीले चश्मेवाला कूदकर पायदान पर चढ गया और छैला किस्म का आदमी वही रह गया। शायद अपने साथी को छोडने आया था।

'नही ही पकड पाये,' बडे दुख से एक भेदिये ने कहा। "रिपोर्ट तो मिली थी कि वह आज पीटसबर्ग जा रहा है। पर यहा उसकी छाया

तब नही दिखायी दी। ये रहा उसका फोटो। प्लेटफाम पर तो ऐसा कोई आदमी था नही।"

उसने जेब से फोटो निकाली। गाल की हड्डिया कुछ-कुछ उठी हुई, माथा बहुत चौडा, भौंह बीच म उठी हुई और आखें किनारा पर मिची और हसती हुई सी। ऐसा था वह चेहरा, जो फोटो से झाक रहा था।

"यह लेनिन उल्यानोव है। जेनेवा से रूस म मजदूर विद्रोहा मे भाग लेने जा रहा है। हुक्म हुआ है कि जरूर पकडना है। कल फिर आयेंगे," भेदिये ने फोटो को वापस जेब मे रखते हुए कहा।

इधर एक्सप्रेस गाडी ताराभरी रात मे पेडो पर अपने कडवे धुए के छल्ले छोडती हुई भागी जा रही थी। पटरिया के दोना ओर हिमाच्छादित नीरव और शात जगल फैले थे।

सुबह पीटसबग मे नीले चश्मेवाले न घोडागाडी ली और कुछ ही देर बाद वह राजधानी के लगभग केंद्रीय इलाके मे स्थित अपने घर मे था। घर के नाम पर वहा एक छोटा सा कमरा ही था, जिसम पतले से कबल से ढकी चारपाई, खिडकी के पास छोटी सी मेज और एक कुर्सी थी। उसमे बहुत समय से कोई नही रहता था।

उस आदमी ने चश्मा उतारा और सूटकेस मे रख दिया। फिर पीले बक्से से कागज निकाला और मेज के पास बैठकर लिखने लगा।

कोई घटे भर बाद दरवाजे पर हल्की सी आहट सुनायी दी। ताले मे चाभी घूमी और नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना ने कमरे मे प्रवश किया। वह दस्ताने और फर की किनारियावाली टोपी पहने हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच झटके से उठ खडे हुए।

"नाद्यशा, मेरी प्रिय!"

"मास्को मे उन्होंने तुम्हारा पीछा किया?" चिन्तित स्वर से नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना ने पूछा।

'अरे, कुछ न पूछो!" व्लादीमिर इल्यीच व्यग्यपूवक मुस्कराये।

अपनी चिन्ता को छिपाते हुए नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना सूटकेस से सामान निकालने लगी। नीला चश्मा? यह किसलिए?

"भेस बदलने के लिए," व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया। "नाद्यूशा, जानती हो, इन नीले चश्मा की बदौलत ही म पुलिस की आखो मे धूल झाक सका!"

रूमानिया की सरकार ने कहा

"युद्धपोत हमे दे दो, हम तुम्हे शरण देते है और निश्चित रहो कि जार के हाथ वापस नहीं सौंपेगे।"

'पोत्योम्किन" पर जहाजियो की यह आखिरी रात थी। अलविदा, स्वतंत्र 'पोत्योम्किन'! ग्यारह दिन तक तुम्हारे कारण जनरल और अफसर, जार और सभी सेठ कापते रहे। तुमने क्राति का झंडा बुलंद किया। तुम्हारी कीर्ति अमर रहे!

गुप्त मुलाकातें

मास्को–पीटर्सबर्ग एक्सप्रेस ट्रेन के छूटने मे चार मिनट रह गये थे। ज्यादातर मुसाफिर अपनी जगहो पर बैठ चुके थे। प्लेटफार्म पर विदा करनेवालो की भीड थी। आखिरी डिब्बे के पास दो भेदिये खडे थे।

'नही, अब नही आयेगा" गहरी सास लेते हुए एक ने कहा।

अरे, देखना, आखिरी क्षण तक जरूर आ जायेगा," दूसरे ने जवाब दिया।

वे आखो तक झुके टोपो के नीचे से गौर से देखने लगे। प्लेटफार्म पर और मुसाफिर दिखायी दिये। एक, जो नाटा, गठीला और गोल फ्रेमवाला नीला चश्मा पहने था, हाथो मे सूटकेस और पीला सफरी बक्सा लिये हुए था। उन दिनो फिनलैण्ड मे ऐसे बक्सो का फैशन था। दूसरा मुसाफिर कुछ छैला किस्म का और चारखानेदार ओवरकोट पहने था।

नीले चश्मेवाला मुसाफिर कुछ कह रहा था। भेदिये उसे सुन नही पाये। भेदिये घबरा रहे थे कि जिसका उन्हे इंतजार था, वह अब तक क्यो नही आया है। और यह नीले चश्मेवाला कौन है? वह तो नही लगता। पर क्या मालूम भेदिये नीले चश्मेवाले के पीछे पीछे दौडे।

लेकिन गाडी चल पडी थी। नीले चश्मेवाला कूदकर पायदान पर चढ गया और छैला किस्म का आदमी वही रह गया। शायद अपने साथी को छोडने आया था।

"नही ही पकड पाये," बडे दुख से एक भेदिये ने कहा। "रिपोर्ट तो मिली थी कि वह आज पीटर्सबर्ग जा रहा है। पर यहा उसकी छाया

तब नहीं दिखायी दी। ये रहा उसका फोटो। प्लेटफार्म पर तो ऐसा कोई आदमी था नहीं।"

उसने जेब से फोटो निकाली। गाल की हड्डिया कुछ कुछ उठी हुई, माथा बहुत चौडा, भौंहें बीच मे उठी हुई और आखें किनारो पर भिची और हसती हुई सी। ऐसा था वह चेहरा, जो फोटो से झाक रहा था।

"यह लेनिन-उल्यानोव है। जेनेवा से रूस म मजदूर विद्रोहा म भाग लेने जा रहा है। हुक्म हुआ है कि जरूर पकडना है। कल फिर आयेंगे," भेदिये ने फोटो को वापस जेब मे रखते हुए कहा।

इधर एक्सप्रेस गाडी तारोभरी रात मे पडा पर अपने कडवे धुए के छल्ले छाडती हुई भागी जा रही थी। पटरिया के दोना ओर हिमाच्छादित नीरव और शात जगल फले थे।

सुबह मीटसवग मे नीले चश्मेवाले ने घोडागाडी ली और कुछ ही देर बाद वह राजधानी के लगभग केन्द्रीय इलाके मे स्थित अपने घर मे था। घर के नाम पर वहा एक छोटा सा कमरा ही था, जिसम पतले से कबल स ढकी चारपाई, खिडकी के पास छोटी सी मेज और एक कुर्सी थी। उसमे बहुत समय से कोई नही रहता था।

उस आदमी ने चश्मा उतारा और सूटकेस मे रख दिया। फिर पीले बक्से से कागज निकाला और मेज के पास बठकर लिखने लगा।

कोई घटे भर बाद दरवाजे पर हल्की सी आहट सुनायी दी। ताले मे चाभी घूमी और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने कमरे मे प्रवेश किया। वह दस्ताने और फर की किनारियोवाली टोपी पहने हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच झटके से उठ खडे हुए।

"नाद्यशा, मेरी प्रिय!"

"मास्को मे उन्हाने तुम्हारा पीछा किया?" चिन्तित स्वर मे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने पूछा।

"अरे, कुछ न पूछो!" व्लादीमिर इल्यीच व्यग्यपूवक मुस्कराये।

अपनी चिता का छिपाते हुए नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सूटकेस से सामान निकालने लगी। नीला चश्मा? यह किसलिए?

"भेस बदलने के लिए,' व्लादीमिर इल्यीच न जवाब दिया। "नाद्यूशा, जानती हो, इन नीले चश्मो की बदौलत ही मैं पुलिस की आखा म धूल झाक सका।"

व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तातीनोना गैरकानूनी रुप से स्वदेश लौटे थे और पीटसबग म दूसरो के नाम से बने पासपोर्टों पर रहते थे। उन्‍ह गुप्त रूप से मिलना पडता था और ये मुलाकाते भी बहुत छोटी और हडबडी म होती थी।

इस समय व्लादीमिर इल्यीच मास्को की घटनाओ के बारे मे बताने के लिए बेताब थे। वह उन्ही के बारे म साथिया से विचार विमश करन क लिए मास्को गये थे।

हुआ यह था कि अक्तूबर मे मास्को रेलवे जक्शन के मजदूर हडताल पर चले गये थे जिसके बाद एक एक करके शहर के कल-कारखाना, परिवहन, बिजली तथा पानी सप्लाई व्यवस्था के मजदूरो ने भी हडताल की घोषणा कर दी। सारा मेहनतकश मास्को हडताल पर था। बाद म यह हडताल दूसरे शहरो मे भी फैल गई। गावो मे भी अशाति के लक्षण नजर आने लगे थे।

विद्रोह की इस व्यापक आग को बुझाने के लिए जार ने एक घोषणापत्र जारी किया, जिसमे मजदूरो को आजादी का वचन दिया गया था। मगर यह एक धोखा था। मजदूर जानते थे कि जार पर विश्वास नही किया जा सकता। उन्‍ह जनवरी महीने म पीटसबग मे शीत प्रासाद के सामने हुआ हत्याकाण्ड भली भाति याद था।

७ दिसबर, १९०५ को दिन म १२ बजे मास्को मे फिर हडताल हो गयी। सरकार न विद्रोही मजदूरो का दबाने के लिए फौज भेजी। मजदूरा न इट का जवाब पत्थर से दिया और सारे मास्को म सडको और चौराहा पर, कारखाना और फैक्टरियो के सामने बैरिकेड खडे हो गये।

विद्रोही मजदूरा का मुख्य केद्र प्रेस्न्या का मजदूर इलाका था, जहा बहुत से कल कारखाने थे। मजदूरो ने अपने प्रतिनिधिया की सोवियत गठित की और मजदूर सत्ता की स्थापना की घोषणा की।

जार सरकार ने इसके जवाब मे पैदल, घुडसवार, तोपखाना और बख्तरबद टुकडिया मास्को भेजी। प्रेस्न्या पर तोपो से गोले बरसने लगे। मजदूरा के लकडी के घर और बैरक माचिस की डिबियाओ की तरह जलने लगी।

लडाई दस दिन तक जारी रही। मजदूर और बाल्शेविक बडी वीरता से लडे। लेकिन जारशाही की तोपो न उनके विद्रोह को निममता के साथ कुचल दिया।

क्या मजदूरो को हथियारो का सहारा लेना चाहिये था?

"नही," मेशेविको न कहा था।

कोई जरूरत नही थी, प्लेखानाव न भी उनका समथन किया था। रूस मे क्राति की आग भडकी हुई थो और प्लेखानोव दिनादिन बाल्शेविको से दूर हटते जा रहे थे।

"विद्रोह की ज़रूरत थी," लेनिन ने दढता के साथ कहा। "मज़दूरा को हथियारा का सहारा लेना चाहिये था। इमसे उन्हे सघप की दीक्षा मिली है।"

इस समय पीटसबग के उस छोटे से कमरे मे ब्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना को इन्ही सब बाता के बारे म बता रहे थे। क्योकि वह पार्टी की केद्रीय समिति की सेक्रेटरी थी, पार्टी मीटिगा क आयोजन और पार्टी की विभिन्न शाखाओ के बीच सपक स्थापित करने का भार उनके जिम्म था और फिर वह लेनिन की सबसे विश्वस्त सहायक भी थी।

उन्हे अपने सबसे प्रिय साथी निकोलाई बाउमन की याद हो आयी। यह याद बहुत कष्टदायी थी। ईस्का" की तैयारी म बाउमन ने लेनिन के साथ सक्रिय भाग लिया था। वही उसे विदेश से रूस मगवाने का इन्तज़ाम भी करते थे। एक दिन पुलिस ने उन्हे पकड लिया और जेल म बद कर दिया। मगर वह वहा से भाग गये और फिर निधडक होकर पार्टी के काम म जुट गये। मगर पुलिस के चगुल से देर तक बचे न रहे और फिर जेल मे बद कर दिये गये।

अक्तूबर, १९०५ मे बाउमन को रिहा कर दिया गया। मगर कुछ दिन बाद एक मजदूर प्रदशन के समय किसी भाडे के हत्यारे न उनकी हत्या कर दी।

निकोलाई बाउमन की, इस साहसी, उदात्त, निष्ठावान क्रातिकारी, बाल्शेविक वीर की शवयात्रा मे मास्को के हजारा मजदूरा ने भाग लिया था

'हमारी पार्टी की ताक़त ऐसे ही लोगा मे है,' ब्लादीमिर इल्यीच न कहा और खिडकी के पास आकर खडे हो गये। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना भी उनके बगल मे आकर खडी हो गयी।

"वोलोद्या, देखो तो!"

खिडकी के सामने सडक के दूसरी ओर एक आदमी खडा था। सिर पर फर की टापी, गले म रगबिरगा मफलर, देखन म पूणत सामान्य,

मगर कुछ अजीब से ढग से एक ही जगह पर खडा हुआ। पास ही एक दूसरा आदमी फुटपाथ पर तेज कदमों से टहल रहा था।

हमे जगह बदलनी पडेगी,' व्लादीमिर इल्यीच बोले।

उन्होने मेज पर से कुछ ही समय पहले लिखा हुआ लेख उठाकर नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना को थमाया। उन्होने चुपचाप उसे अपनी जैकेट के अन्दर छिपा लिया। व्लादीमिर इल्यीच ने पीली टोकरी को चारपाई के नीचे धकेल दिया।

ओह, किसी तरह यहा से बच निकले," नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना बुदबुदायी।

वह व्लादीमिर इल्यीच की सुरक्षा के बारे मे बहुत चिन्तित थी। खतरा हर दिन, हर क्षण मडराता रहता था। अगर पकडे गये, तो हवालात हो जायगी और फिर जरूर हमेशा के लिए कालेपानी की सजा भुगतनी पडेगी।

लेकिन उन्होने अपनी चिन्ता, अपनी घबराहट को छिपाकर इतना ही कहा कि साथी एक जगह पर व्लादीमिर इल्यीच का इन्तजार कर रहे है और वह यही बताने आयी है। यहा से जितना जल्दी हो, निकल जाना है, न जाने कैसे गुण्डे पीछे लगा रखे है

वे हाथ मे हाथ डाले घर से निकले और बायी तरफ न जाकर-वैसे उन्हे जाना बायी तरफ ही था—दूसरी दिशा मे चल पडे। व्लादीमिर इल्यीच ने विनम्रता सी प्रकट करते हुए कसरत की बात छेड दी। कितना अच्छा हो, अगर आज कसरत सुनने चला जाये। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना सहमति मे सिर हिला रही थी और आखो के कोनो से देखती जा रही थी कि भेदिया या कही कोई शक तो नही हुआ है? मगर नही। एक जो रगबिरगा मफलर पहने हुए था, पहले की तरह ही अचल खडा था, और दूसरा अपने अधैर्यपूर्ण स्वभाव के कारण इधर-उधर दौड रहा था।

गाडीवाले!" तभी व्लादीमिर इल्यीच ने आवाज दी।

उनके पास से गुजरती घोडागाडी भेदिया से कुछ ही कदम की दूरी पर रुक गयी। व्लादीमिर इल्यीच ने पहले अपनी साथी को बिठाया और फिर स्वय भी बैठ गये।

'सादोवाया सडक! उन्होने बिना कुछ सोचे समझे गाडीवाने से कहा

और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से दबी आवाज में जर्मन में बोले "कितना अच्छा हो, अगर अभी ठंड बढ़ जाय और बर्फीली हवा चलने लगे। ये मूर्ख यहां जम जायेंगे।"

वे मादोवाया से पहले ही उतर गये और व्लादीमिर इल्यीच के पुराने परिचित अहाते से होते हुए वसील्येव्स्की टापू की ओर चल पड़े। फिर भी चूंकि इसकी संभावना थी कि कोई उनका पीछा कर रहा होगा, वे उसकी आंखों में धूल झोंकने के लिए देर तक बेमतलब इधर-उधर घूमते रहे। जनवरी का महीना था। पीटर्सबर्ग में साल के इस समय जैसा कि आम तौर पर नहीं होता, धूप खूब खिली हुई थी। चारों तरफ सफ़ेद बर्फ़ चमक रही थी और ठंड गालों में चुभ रही थी।

"ओह, मैंने बर्फ़ की ऐसी सफ़ेदी कब से नहीं देखी है!" व्लादीमिर इल्यीच ने मुग्ध स्वर में कहा।

"हां, हमारी रूसी सरदी है!" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने जवाब दिया।

अप्रत्याशित रूप से इतनी देर तक एक दूसरे का साथ पाने से दोनों बहुत खुश थे।

शाम को ठीक नियत समय पर और इसकी भली भांति जांच करके कि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा है, व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना द्वारा बतायी हुई जगह की ओर चल पड़े। वहां पीटर्सबर्ग के बोल्शेविक और अग्रणी मज़दूर जमा हो चुके थे। बस लेनिन के ही पहुंचने की प्रतीक्षा थी।

फिर प्रवास में

दो साल तक सारे रूस में मज़दूर और किसान विद्रोहों की ज्वाला जलती रही। दो साल तक ज़ारशाही अधिकारी रूस में क्रांति को दबाते रहे। असंख्य लोग गिरफ्तार हुए, निर्वासित किये गये, फांसी पर चढ़ाये गये।

व्लादीमिर इल्यीच पीटर्सबर्ग से थोड़ी ही दूर फिनलैण्ड में रहते थे। यहां से वह ग़ैरक़ानूनी बोल्शेविक अख़बार "प्रोलेतारी" (सर्वहारा) निकालते थे। पीटर्सबर्ग के बोल्शेविक केन्द्र के साथ उनका स्थायी संपर्क

६

मगर कुछ अजीब से ढंग से एक ही जगह पर खड़ा हुआ। पास ही एक दूसरा आदमी फुटपाथ पर तेज कदमों से टहल रहा था।

"इस जगह बदलनी पड़ेगी," व्लादीमिर इल्यीच बोले।

उन्होंने मेज पर से कुछ ही समय पहले लिखा हुआ लेख उठाकर नादेज्दा कोंस्तांतीनोव्ना को थमाया। उन्होंने चुपचाप उसे अपनी जैकेट के अंदर छिपा लिया। व्लादीमिर इल्यीच ने पीली टोकरी को चारपाई के नीचे धकेल दिया।

"ओह, किसी तरह यहां से बच निकलें," नादेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना बुदबुदायी।

वह व्लादीमिर इल्यीच की सुरक्षा के बारे में बहुत चिन्तित थी।

खतरा हर दिन, हर क्षण मंडराता रहता था। अगर पकड़े गये, तो हवालात हो जायगी और फिर जरूर हमेशा के लिए कालेपानी की सजा भुगतनी पड़ेगी।

लेकिन उन्होंने अपनी चिंता, अपनी घबराहट को छिपाकर इतना ही कहा कि साथी एक जगह पर व्लादीमिर इल्यीच का इन्तजार कर रहे हैं और वह यही बताने आयी है। यहां से जितना जल्दी हो, निकल जाना है, नहीं तो देखा नहीं कैसे गुण्डे पीछे लगा रखे हैं।

वे हाथ में हाथ डाले घर से निकले और बायीं तरफ न जाकर— वैसे उन्हें जाना बायीं तरफ ही था—दूसरी दिशा में चल पड़े। व्लादीमिर इल्यीच ने विनम्रता सी प्रकट करते हुए कंसर्ट की बात छेड़ दी। कितना अच्छा हो, अगर आज कंसर्ट सुनने चला जाये! नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सहमति में सिर हिला रही थी और आंखों के कोनों से देखती जा रही थी कि भेदियों को कहीं कोई शक तो नहीं हुआ है? मगर नहीं। एक, जो रंगबिरंगा मफलर पहने हुए था, पहले की तरह ही अचल खड़ा था, और दूसरा अपने अधैर्यपूर्ण स्वभाव के कारण इधर-उधर दौड़ रहा था।

"गाड़ीवाले!" तभी व्लादीमिर इल्यीच ने आवाज दी।

उनके पास से गुजरती घोड़ागाड़ी भेदियों से कुछ ही कदम की दूरी पर रुक गयी। व्लादीमिर इल्यीच ने पहले अपनी साथी को बिठाया और फिर स्वयं भी बैठ गये।

"सादोवाया सड़क!" उन्होंने बिना कुछ सोचे-समझे गाड़ीवाले से कहा

ग्रौर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनाव्ना से दबी ग्रावाज मे जमन मे बोले "कितना अच्छा हो, अगर अभी ठड बढ जाय और वर्फीली हवा चलने लगे। य मूख यहा जम जायेगे।

वे मादोवाया से पहले ही उतर गये और व्लादीमिर इल्यीच के पुराने परिचित ग्रहाते से होते हुए वसील्यव्स्की टापू की ग्रोर चल पडे। फिर भी चूकि इसकी सभावना थी कि कोई उनका पीछा कर रहा होगा वे उसकी ग्राखो मे धूल झोकने के लिए देर तक बेमतलब इधर-उधर घूमते रहे। जनवरी का महीना था। पीटसवग मे साल के इस समय जैसा कि ग्राम तौर पर नही होता, धूप खूब खिली हुई थी। चारो तरफ सफेद बफ चमक रही थी और ठड गालो मे चुभ रही थी।

"ग्रोह, मैंने बफ की ऐसी सफेदी कब से नही देखी है!" व्लादीमिर इल्यीच ने मुग्ध स्वर मे कहा।

"हा, हमारी रूसी सरदी है!" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनाव्ना ने जवाब दिया।

अप्रत्याशित रूप से इतनी देर तक एक दूसरे का साथ पाने से दोनो बहुत खुश थे।

शाम को ठीक नियत समय पर ग्रौर इसकी भली भाति जाच करके कि कोई उनका पीछा नही कर रहा है, व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना द्वारा बतायी हुई जगह की ग्रोर चल पडे। वहा पीटसवग के बाल्शेविक ग्रौर अग्रणी मजदूर जमा हो चुके थे। बस लेनिन के ही पहुचने की प्रतीक्षा थी।

फिर प्रवास में

दो साल तक सारे रूस मे मजदूर ग्रौर किसान विद्रोहो की ज्वाला जलती रही। दो साल तक जारशाही ग्रधिकारी रूस मे क्राति को दबाते रहे। असख्य लोग गिरफ्तार हुए, निर्वासित किये गये, फासी पर चढाये गये

व्लादीमिर इल्यीच पीटसबग से थोडी ही दूर फिनलैण्ड मे रहते थे। यहा से वह गरकानूनी बोल्शेविक ग्रखबार 'प्रोलेतारी' (सवहारा) निकालते थे। पीटसवग के बोल्शेविक केन्द्र के साथ उनका स्थायी सपक

६

बना हुआ था। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना पार्टी के काम लेनिन के संदेश लेकर जगह-जगह पैगाम जाती रहती थी।

एक दिन वह पीटर्सबर्ग से लौटी, तो बहुत चिन्तित थी। ज़ार सरकार व्लादीमिर इल्यीच के पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई थी। उसने सभी पुलिस स्टेशनों को आदेश दे दिया था कि जैसे भी हो बोल्शेविकों के नेता लेनिन को खोजा जाये।

उन दिनों फिनलैण्ड भी रूसी ज़ार के कब्ज़े में था।

बोल्शेविक केन्द्र ने निर्णय किया कि लेनिन को विदेश चला जाना चाहिये और "प्रोलेतारी" भी वहीं से निकाला जाये।

"अलविदा, मेरे प्यारे," नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने लेनिन को विदा दी। "स्वीडन में मिलेंगे।"

तय यह हुआ था कि नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना स्टाकहोम बाद में जायेंगी। अतः व्लादीमिर इल्यीच अकेले ही रवाना हुए।

१९०७ का दिसंबर महीना था। रेलगाड़ी हेल्सिंगफोर्स से फिनिश बंदरगाह आबो जा रही थी।

विचारों में खोये होने की वजह से व्लादीमिर इल्यीच की नज़र कम्पार्टमेंट के दरवाज़े के शीशे से बाहर गलियारे में खड़े आदमी पर देर से पड़ी।

मगर जब देखा, तो एकदम पहचान गये कि पुलिस का भेदिया है! व्लादीमिर इल्यीच अब तक उन्हें पहचानना सीख गये थे। शायद आबो के स्टेशन पर पुलिस इंतज़ार कर रही होगी। इसमें शक नहीं कि भेदिये ने तार कर दिया होगा कि पंछी आ रहा है।

क्या किया जाये? आबो से पहले का स्टेशन भी निकल गया था। गाड़ी व्लादीमिर इल्यीच को सीधे पुलिस के शिकंजे में लिये जा रही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने दरवाज़े की ओर देखा। भेदिया वहां नहीं था। शायद उसे विश्वास हो गया था कि शिकार अब बच कर कहीं नहीं जा सकता, इसलिए वापस अपनी सीट पर चला गया था। बहुत संकटपूर्ण स्थिति थी। एक घंटे बाद व्लादीमिर इल्यीच सींखचों के पीछे बंद होंगे।

वह खड़े हुए और अपना छोटा सा सूटकेस उठाकर आहिस्ता आहिस्ता डिब्बे के दरवाज़े की ओर बढ़े। गलियारा सुनसान पड़ा था। उन्होंने धीरे से दरवाज़ा खोला। चेहरे पर बर्फ़ीली हवा का थपेड़ा लगा। उफ़, गाड़ी कितनी तेज़ जा रही है! डिब्बा यों हिचकोले खा रहा था कि संभलकर

खडे हो पाना भी मुश्किल था। व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ मिनट इंतजार किया। कूदने की हिम्मत नहीं हो पा रही थी। वह पहियों की तेज़ घडघडाहट सुनते रहे। तभी ख्याल आया कि शायद मोड पर रफ्तार कम हो जाय। और सचमुच मोड आने पर गाडी की रफ्तार धीमी हो गयी। अब कुछ भी हो, दूसरा कोई चारा था नहीं। व्लादीमिर इल्यीच कूद पडे।

वह बर्फ के एक बडे से ढेर पर गिरे। कालर और जूतों के अंदर बर्फ भर गयी, चेहरा भी बर्फ से सन गया। मगर हड्डियां सही सलामत थीं। वह सही-सलामत थे, जिंदा थे! गाडी बर्फ के ढेर की बगल से घडघडाती हुई निकल गयी। आखिरी डिब्बे की लाल बत्ती कुछ दूर तक दिखायी देती रही, फिर ओझल हो गयी। वहीं बहुत दूर जाकर गाडी की आवाज भी खो गयी। अब हर तरफ निःस्तब्धता थी, बर्फ थी, रात थी और तारों से झिलमिल आसमान था।

व्लादीमिर इल्यीच बर्फ के ढेर से उठे, कपडों और चेहरे से बर्फ झाडी और रेलवे पटरी के किनार किनारे पैदल ही आबो की तरफ चल पडे। कोई बारह वर्स्ट का फासला तय करना था। और वह भी सर्दियों की रात में। मगर पुलिस के चंगुल से तो मुक्ति मिली। व्लादीमिर इल्यीच मन ही मन कल्पना करने लगे कि भेदिया कैसे डर से कांपता और हडबडाता हुआ उन्हें सभी डिब्बों में खोज रहा होगा। और वह हंस पडे "चूक गये, बेटा! देखना कैसी खबर ली जाती है तुम्हारी!"

अब किसी तरह आबो पहुंचना और वहां स्वीडिश जहाज में बैठना ही बाकी रह गया था और तब खतरा टल जायेगा।

मगर व्लादीमिर इल्यीच जहाज के लिए देर से पहुंचे। और खतरा भी टला नहीं था। वह दायें, बायें, हर जगह मौजूद था। बंदरगाह रूसी पुलिस और उसके भेदियों से भरा पडा था। अतः वहां रुकना नामुमकिन था। बोल्शेविक केंद्र ने जिस फिनिश साथी को व्लादीमिर इल्यीच को आबो से स्टाकहोम भेजने का इंतजाम सौंपा था, उसने बताया कि शहर में भी कदम कदम पर पुलिस है। आबो से तुरंत रवाना होना जरूरी था।

फिनिश साथी ने व्लादीमिर इल्यीच को समुद्र के चट्टानी तट पर एक मछुआरा बस्ती में पहुंचा दिया। यहां समुद्र में सैकडों छोटे बडे टापू, प्रायद्वीप और खाडियां थीं और यह सब साल के इस समय बर्फ से ढका हुआ था।

दो मछुआरे व्लादीमिर इल्यीच को उस टापू तक पहुंचाने के लिए तयार हो गये। क्योंकि जहाज इस चट्टानी टापू के किनारे कुछ देर के लिए रुकता था। हिमताड़क पोत बर्फ तोड़कर जहाजों के लिए रास्ता बनाते थे और यह टापू इसी रास्ते की बगल में था।

रात अंधेरी और तूफानी थी। रात में इसलिए निकले कि लोग न देख पायें। किसी को भी हैरानी हो सकती थी कि ये लोग ऐसी अविश्वसनीय बर्फ पर कहां और क्यों जा रहे हैं।

बर्फ कच्ची थी। उसमें कहीं-कहीं दरार पड़ गयी थी और कभी-कभी पानी भी दिखायी दे जाता था। मछुआरे जानते थे कि जिस रूसी को वे जहाज तक पहुंचा रहे हैं, वह ज़ार के विरुद्ध लड़ रहा है। फिनिश लोग ज़ार से नफ़रत करते थे। इसलिए अगर वह रूसी भी ज़ार के ख़िलाफ़ है, तो वे उसके लिए सब कुछ करेंगे।

तीनों आदमी ख़ामोशी से और लंबे लट्ठों से रास्ता टटोलते हुए कदम-ब-कदम करके आगे बढ़ रहे थे। बर्फ के कण गालों में चुभ रहे थे। आसमान में अंधेरा घुप्प था। हवा तेज़ हो गयी थी। समुद्र से जहाजों के भोंपुओं की आवाज़ें आ रही थीं।

'धन्यवाद इन मछुआरों का कि मुझे ऐसी भयंकर रात में रास्ता दिखाने को तैयार हो गये। धन्यवाद, साथियो,' व्लादीमिर इल्यीच सोच रहे थे।

वह नहीं जानते थे कि ऐसी रात में ऐसे रास्ते पर चलना कितना ख़तरनाक था। वह लट्ठे से रास्ता टटोलते हुए मछुआरों के पीछे-पीछे चल रहे थे। अचानक बर्फ हिली और गोली छूटने की सी आवाज़ के साथ उसमें दरार पड़ गयी। बर्फ एक ओर को झुकी और पैरों के नीचे से खिसकने लगी। दरार से पानी ऊपर फटा। व्लादीमिर इल्यीच ने लट्ठे से टटोला, मगर वह पानी में गहरे और गहरे घुसता गया।

उन्हें ठीक याद नहीं कि वहां से वह कैसे बच पाये। किसी ने उनकी तरफ़ हाथ बढ़ाया। उन्होंने उसे पकड़ा और आगे कूदे।

मछुआरों ने फिनिश में कुछ कहते हुए व्लादीमिर इल्यीच की पीठ ठोकी। फिर जर्मन में कहा

"गेनोसे, गेनोसे साथी!

वे बेहद खुश थे कि रूसी साथी जो जनता की तरफ से जार के विरुद्ध लड रहा है, बर्फीले पानी म गिरते गिरते बच गया।

ब्लादीमिर इल्यीच टापू तक पहुच गय। स्वीडिश जहाज़ ने उन्हें उठाया और स्टाक्होम पहुचा दिया। वहा उन्होंने नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की प्रतीक्षा की।

अब वे फिर जेनेवा मे थे। फिर मातभूमि से दूर पराये देश म।

क्रातिकारी रूस के बाद ब्लादीमिर इल्यीच जब अपनी वफादार मित्र और प्रिय जीवनसगिनी नादूशा के साथ उस दिसबर मे जेनेवा पहुचे, तो यह पुराना परिचित शहर उन्हें बहुत अनाकर्षक लगा।

सरदिया थी, पर बफ नही थी। फुटपाथो पर ठडी धूल उडाती तेज और निमम हवा हर समय चलती रहती थी।

जेनेवावासी घरो म बद रहते थे। सडके सुनसान थी। इस बार लेनिन ने जेनेवा म अपने को बहुत अकेला और पराया महसूस किया।

मा से मुलाकात

१९१० का साल था। ब्लादीमिर इल्यीच लेनिन फिर स्वीडन की राजधानी स्टाक्होम म थे। मगर इस बार वे किसी खास, बहुत ही खास काम से यहा आये थे।

तेज कदमो से और मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न वह स्टाक्होम की शरदकालीन सडको पर चले जा रहे थे।

उन्हें स्वीडिश लोक भवन म भाषण करना था और इस समय वह वही जा रहे थे। ब्लादीमिर इल्यीच को पहले भी दसियो बार विभिन्न नगरो मे मजदूरो और पार्टी सदस्यो के सामने भाषण देना पडा था। पर आज वह इतने खुश क्या थे? राह चलते वह स्नेहसिक्त नजरो से पराये स्वीडिश जीवन को, टेढी मेढी और तग गलियोवाले शात और साफ सुथरे स्टाक्होम को देखते जा रहे थे। यह उनका पुराना परिचित शहर था। मगर आज उसे देखकर वह बार बार मुस्करा रहे थे।

तभी उन्हें फूल बेचती एक लडकी दिखायी दी। उसके परो के पास लाल और पीले गुलाबो से भरी टोकरी रखी हुई थी।

'मुझे ये लाल गुलाब देना। धन्यवाद।

व्लादीमिर इल्यीच फूलों का गुलदस्ता लिए भाषण देने जा रहे थे।

लोक भवन आ गया। आज यहां एक कमरे में प्रवासी रूसी बोल्शेविकों की सभा थी।

"लेनिन! लेनिन!" स्नेहपूर्ण उद्गारों ने व्लादीमिर इल्यीच का स्वागत किया।

रूसी राजनीतिक प्रवासियों ने उन्हें घेर लिया, उनसे हाथ मिलाये। वे सब उन्हें उनकी किताबों और लेखों, बोल्शेविक समाचारपत्र "ईस्क्रा", "व्प्येर्योद", "नोवाया जीज्न" और "प्रोलेतारी" और पार्टी कांग्रेसों से जानते थे।

उस छोटे से कमरे में पीछे की सीटों पर दो महिलाएं बैठी थीं। एक बिल्कुल वृद्ध थी। वह बंद गले की पोशाक पहने थी और सफेद, बिल्कुल बर्फ से सफेद बालों पर लेसदार शाल ओढ़े हुए थी। उसके नाक-नक्श तेज थे। कमरे में जब "लेनिन! लेनिन!" का उद्घोष हुआ, तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

दूसरी महिला नौजवान थी। उसकी आंखें काली, गालों की हड्डियां कुछ उभरी हुईं और चेहरा तनिक गंभीर सा था। लेनिन के प्रवेश करते ही वह भी खिल उठी। व्लादीमिर इल्यीच ने पास आकर फूल वृद्ध महिला के घुटनों पर रख दिये।

"रूस से मेरी मां और बहन मुझसे मिलने आयी हैं," उन्होंने अपने इर्दगिर्द खड़े लोगों को बताया।

"बहुत अच्छा किया आपने आकर बे" एक बोल्शेविक ने वृद्ध महिला को संबोधित करते हुए कहा। "ऐसे बेटे पर आप गर्व कर सकती हैं।"

लेनिन ने छोटी सी मेज के पीछे खड़े होकर अपना भाषण शुरू किया। यह भाषण असामान्य था। पहली बार मां उन्हें सुन रही थी। वह संबोधित कर रहे थे साथियों को, बोल्शेविकों को और अपनी मां को। मां, जो अपने बच्चों की मित्र थी। उनके सभी बच्चे क्रांतिकारी बने थे। वह उनसे जेल में जाकर मिलती थी, उनके लिए खाने पीने की चीजें, किताबें ले जाती थी। १८९५ में जब व्लादीमिर इल्यीच को जेल हुई थी, तो मां पीटर्सबर्ग आयी थी। "मां, मुझे याद है कि तब तुमने सीखचों के पार से मुझे कैसे देखा था। तुम्हारे होंठ कांप रहे थे पर फिर भी तुम मुस्कराती रही थीं।"

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भाषण मे पार्टी की स्थिति का, सभी गलत विचारो से सघर्ष करने के तरीको का जिक्र किया।

१६०५ की क्राति असफल रही, पर हमे हिम्मत नही हारनी चाहिये। हमे साहसपूर्वक आगे बढना है। हमारे सामने एक ही रास्ता है

व्लादीमिर इल्यीच ने क्रातिकारी सघर्ष के इस एकमात्र रास्ते के बारे मे बताया।

भाषण के बाद सबने उन्हे घेर लिया। वह बडी मुश्किल से लोक भवन से बाहर निकल पाये।

शाम का समय था। घरो की खिडकियो से नारगी और नीला प्रकाश बाहर सडको पर पड रहा था। बदरगाह की तरफ से ठडी बयार आ रही थी। कही सगीत गूज रहा था।

मा और मन्याशा सडक पर खडी व्लादीमिर इल्यीच का इतजार कर रही थी।

"मा, तुम्हे यहा देखकर मैं कितना खुश हू!" वह अपने उदगार छिपा न पाये।

वह जानना चाहते थे कि मा आज की सभा के बारे मे क्या सोचती है। व्लादीमिर इल्यीच को अपना बचपन और उन सुखी दिनो का मा का रूप याद हो आया। मा सदा बहुत शात, सयत और न्यायप्रिय थी। व्लादीमिर इल्यीच को एक भी ऐसा मौका याद नही, जब किसी बात पर मा से उनका मतभेद हुआ हो।

"वोलोद्या, जानते हो," मा बोली, "मैने तुम्हारी बहुत सी किताबें और लेख पढे है और तुम्हारे विचारो और लक्ष्यो की बहुत कद्र करती हू। मगर आज मुझे यह विश्वास भी हो गया कि लोग तुम्हे बहुत चाहते है।"

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना और मन्याशा दस दिन स्टाकहोम मे रही। व्लादीमिर इल्यीच उन्हे मिलने पेरिस से आये थे। दस दिन जैसे पलक झपकते ही बीत गये।

रूसी जहाज स्टाकहोम से सुबह रवाना होता था। पतझड का मौसम आ गया था। आसमान मे बादल घिरे थे। हवा पेडो से पत्ते उडा रही थी और खाडी मे छोटी छोटी लहरे पैदा कर रही थी। पानी मे नौकाग्रा

व्लादीमिर इल्यीच फूलों का गुलदस्ता लिए भाषण देने जा रहे थे।

शोर थमा आ गया। आज यहां एक कमरे में प्रवासी रूसी बोल्शेविकों की सभा थी।

"लेनिन! लेनिन!" स्नेहपूर्ण उद्गारों ने व्लादीमिर इल्यीच का स्वागत किया।

रूसी राजनीतिक प्रवासियों ने उन्हें घेर लिया, उनसे हाथ मिलाये। वे सब उन्हें उनकी किताबों और लेखों, बोल्शेविक समाचारपत्र "ईस्क्रा", "व्पेर्योद", "नोवाया जीज्न" और "प्रोलेतारी" और पार्टी कांग्रेसों से जानते थे।

उस छोटे से कमरे में पीछे की सीटों पर दो महिलाएं बैठी थी। एक बिल्कुल वृद्ध थी। वह बंद गले की पोशाक पहने थी और सफेद, बिल्कुल बर्फ से सफेद बालों पर लेसदार शाल ओढ़े हुए थी। उसके नाक-नक्श तीखे थे। कमरे में जब "लेनिन! लेनिन!" का उद्घोष हुआ, तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

दूसरी महिला नौजवान थी। उसकी आंखें काली, गालों की हड्डियां कुछ उभरी हुई और चेहरा तनिक गंभीर सा था। लेनिन के प्रवेश करते ही वह भी खिल उठी। व्लादीमिर इल्यीच ने पास आकर फूल वृद्ध महिला के घुटनों पर रख दिये।

"रूस से मेरी मां और बहन मुझसे मिलने आयी हैं," उन्होंने अपने इर्दगिर्द खड़े लोगों को बताया।

"बहुत अच्छा किया आपने आकर के" एक बोल्शेविक ने वृद्ध महिला को संबोधित करते हुए कहा। "ऐसे बेटे पर आप गर्व कर सकती हैं।"

लेनिन ने छोटी सी मेज के पीछे खड़े होकर अपना भाषण शुरू किया। यह भाषण असामान्य था। पहली बार मां उन्हें सुन रही थी। वह संबोधित कर रहे थे साथियों को, बोल्शेविकों को और अपनी मां को। मां, जो अपने बच्चों की मित्र थी। उनके सभी बच्चे क्रांतिकारी बने थे। वह उनसे जेल में जाकर मिलती थी, उनके लिए खाने-पीने की चीजें, किताबें ले जाती थी। १८९५ में जब व्लादीमिर इल्यीच को जेल हुई थी, तो मां पीटर्सबर्ग आयी थी। "मां, मुझे याद है कि तब तुमने सीखचों के पार से मुझे कैसे देखा था। तुम्हारे होंठ कांप रहे थे, पर फिर भी तुम मुस्कराती रही थी।'

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने भाषण मे पार्टी की स्थिति का, सभी ग़लत विचारो से सघर्ष करने के तरीको का जिक्र किया।

१६०५ की क्राति असफल रही, पर हमे हिम्मत नही हारनी चाहिये। हमे साहसपूर्वक आगे बढना है। हमारे सामने एक ही रास्ता है

व्लादीमिर इल्यीच ने क्रातिकारी सघर्ष के इस एकमात्र रास्ते के बारे मे बताया।

भाषण के बाद सबने उन्हे घेर लिया। वह बडी मुश्किल से लोक भवन से बाहर निकल पाये।

शाम का समय था। घरो की खिडकियो से नारगी और नीला प्रकाश बाहर सडको पर पड रहा था। बदरगाह की तरफ से ठडी बयार आ रही थी। कही सगीत गूज रहा था।

मा और मन्याशा सडक पर खडी व्लादीमिर इल्यीच का इन्तजार कर रही थी।

"मा, तुम्हे यहा देखकर मैं कितना खुश हू!" वह अपना उद्गार छिपा न पाये।

वह जानना चाहते थे कि मा आज की सभा के बारे मे क्या सोचती है। व्लादीमिर इल्यीच को अपना बचपन और उन सुखी दिनो का मा का रूप याद हो आया। मा सदा बहुत शात, सयत और न्यायप्रिय थी। व्लादीमिर इल्यीच का एक भी ऐसा मौका याद नही, जब किसी बात पर मा से उनका मतभेद हुआ हो।

"वोलोद्या, जानते हो," मा बोली, "मैने तुम्हारी बहुत सी किताबें और लेख पढे है और तुम्हारे विचारो और लक्ष्यो की बहुत कद्र करती हू। मगर आज मुझे यह विश्वास भी हो गया कि लोग तुम्हे बहुत चाहते है।"

मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना और मन्याशा दस दिन स्टाकहोम मे रही। व्लादीमिर इल्यीच उन्हे मिलने पेरिस से आये थे। दस दिन पलक झपकते ही बीत गये।

रूसी जहाज स्टाकहोम से सुबह रवाना होता था। पतझड का मौसम आ गया था। आसमान मे बादल घिरे थे। हवा पेडो से पत्ते उडा रही थी और खाडी मे छोटी छोटी लहरे पैदा कर रही थी। पानी मे नौकाये

का शोर गूंजा हुआ था। वातावरण में एक तरह की बेचैनी और उदासी थी।

बेटे को बार बार गले लगाने के बाद मां जब सीढी चढकर जहाज़ पर पहुंची, तो व्लादीमिर इल्यीच का हृदय विदाई के दुख से कराह उठा। मां बार बार मुडकर रूमाल हिला रही थी। जहाज देर तक खडा रहा, पर व्लादीमिर इल्यीच उस पर चढ नही सकते थे। वह रूसी धरती था, उस पर रूसी कानून था। व्लादीमिर इल्यीच के उस पर पैर रखने की देर थी कि तुरत गिरफ्तार कर लिये जाते।

जहाज के भापू की आवाज देर तक खाडी के ऊपर गूजी। समुद्री चिडिया कानो को फाडती हुई चीखी। जहाज घाट को छोडने लगा।

"अलविदा, मा!"

व्लादीमिर इल्यीच ने मा को फिर कभी नही देखा

लोज़ूमो गाव में

१९११ का साल चल रहा था। उन दिनो फ्रास मे हज़ारो रूसी क्रातिकारी प्रवासी रहते थे। व्लादीमिर इल्यीच भी पेरिस मे रहते थे। वसत के अत मे वह और नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना पेरिस से कोई पद्रह एक किलोमीटर की दूरी पर बसे लाज़ूमो गाव चले आये। इरादा यह था कि सारी गरमिया यही बितायी जायें।

गाव के साथ साथ एक सडक थी और रातो को उस पर किसानो की गाडियो के खडखडाने का शोर मचा रहता था—किसान अपना माल बेचने के लिए पेरिस ले जा रहे होते थे।

लाज़ूमो मे लगभग सभी मकान पत्थर के बने हुए और धूए से बुरी तरह काले पडे हुए थे। गाव के पास ही स्थित छोटी सी चमडा फैक्टरी की चिमनी दिन रात धूआ उगलती रहती थी, जिससे यहा तक कि घास और पेड भी काले लगने लगे थे। मगर खेतो मे फिर भी हरियाली दीख जाती थी। व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना यहा आराम के लिए नही बल्कि काम के लिए आये थे।

अभी झुटपुटा ही था कि व्लादीमिर इल्यीच जाग गये। गरमियो की उजली सुबह के बावजूद कमरे मे अधेरा और ठडक थी।

तब तक नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने नाश्ता तैयार कर दिया था।

'श्रीमान, आज देर तक सोये रहे! इसके लिए आपको एक अंक मिलेगा,' झटपट बिस्तर से उठते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने अपने आपसे कहा और हाथ मुह धोकर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की मदद को लपके।

अचानक व्लादीमिर इल्यीच के हाथ से शक्करदानी फिसल गयी। मगर उन्होंने बडी फुर्ती से उसे जमीन पर गिरने से पहले ही पकड लिया।

"क्यो हू न असली बाजीगर?"

'हा, तीन अंक तो मिल ही सकते है," नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने जवाब दिया।

उस साल मास मे भयकर गरमी पड रही थी। सूरज सुबह से ही आग बरसा रहा था। दोगला झबरैला कुत्ता जीभ निकाले हाफता गली म चहारदीवारी की छाह मे लेटा हुआ था।

'क्या तुझे भी गरमी लग रही है?" व्लादीमिर इल्यीच ने कुत्ते को सहलाया और फिर चमडा फैक्टरी के मजदूर को नमस्ते की।

रविवार का दिन था। मजदूर अपने नसदार हाथो को घुटनो पर रखे चहारदीवारी की छाह म बैठा था। उसका चेहरा लबा, दुबला और बेहद थका हुआ था।

सडक से एक जगमगाती, स्प्रिगदार बग्घी गुजरी। उसम जालीदार छतरी के नीचे एक महिला और बच्चे बैठे हुए थे। मजदूर ने हडबडाकर खडे होते हुए सलाम किया। महिला ने भी हल्के से सिर झुकाया।

'हमारे मालिक की बीवी है,' चमडा मजदूर ने आदरपूर्ण स्वर म कहा।

जी भर कर आराम ये ही लोग कर सकते है," व्लादीमिर इल्यीच ने व्यग्य किया।

मजदूर कुछ क्षण चुप रहा, फिर विनम्रता से बोला

'भगवान ने अगर अमीर और गरीब बनाये है, तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना भी चाहिए।"

सडक के पार गिरजाघर की घटिया बजने लगी। रविवार की प्रार्थना का समय हो गया था। मजदूर ने अपनी छाती पर सलीब का चिह्न बनाया और यह बुदबुदाता हुआ गिरजाघर की ओर चल पडा कि दुनिया भगवान ने बनायी है, हम इसमे कोई दखल नही दे सकते।

"श्रीमान," पडोसी के लडके ने व्लादीमिर इल्यीच से पूछा, "आप अपने स्कूल जा रहे है? आप क्या छुट्टी के दिन भी पढाते है?"

लेनिन का स्कूल, जो लोजूमो की सडक के दूसरे छोर पर था, एक निराले तरह का स्कूल था। देखने मे भी वह और स्कूलो की तरह नहा था। पहले यहा एक सराय हुआ करती थी। परिस जाते हुए डाकगाडिया यहा रुका करती थी। गाडीवान आराम करते थे, घोडो को दानापानी देते थे। मगर यह बहुत पहले की बात थी

१६११ की वसन्त मे व्लादीमिर इल्यीच ने स्कूल के लिए इस भतपूव सराय को किराये पर ले लिया। विद्यार्थियो ने खुद सारा कूडा करकट साफ किया, तख्ते ठोककर मेज बनायी और पडोसिया से मागकर कुछ पुरानी तिपाइया और कुर्सिया भी इकट्ठी की। इस तरह लेनिन का स्कूल काम करने लगा।

विद्यार्थी और कोई नही, बल्कि रूसी मजदूर थे। जारशाही पुलिस से छिपकर व रूस के विभिन्न नगरो से यहा आये थे। और उनके अध्यापक थे व्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और कुछ दूसरे साथी।

जब व्लादीमिर इल्यीच स्कूल मे पहुचे, तो सभी विद्यार्थी अपनी अपनी जगह पर बठे थे। अध्यापक के कमरे मे प्रवेश करते ही सब खडे हो गये। मगर हसी की बात यह थी कि सब नगे पैर थे। लोजूमो मे गरमी इतनी असह्य थी कि जूता भी नही पहना जा सकता था।

ये सब जिज्ञासु और योग्य नौजवान थे। व्लादीमिर इल्यीच के व्याख्यान उन्ह बेहद पसद थे।

"भगवान ने अगर अमीर और गरीब बनाय ह, तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना भी चाहिये,' व्लादीमिर इल्यीच न अप्रत्याशित ढग से पाठ शुरू किया।

उनके होठा पर व्यग्य भरी मुस्कान थी और आखें हस रही थी। विद्यार्थी आश्चय से मुह बाये बैठे थे।

"ऐसा मुझसे आज एक फासीसी चमडा मजदूर ने कहा,' कुछ देर रुककर व्लादीमिर इल्यीच ने स्पष्टीकरण दिया।

विद्यार्थिया मे उत्तेजना फल गयी।

"अच्छा, तो यह बात है! जरूर कोई काहिल होगा।"

"व्लादीमिर इल्यीच, आपका यह फ्रासीसी दकियानूस है। उसे यहा ले आइये, हम सुधार देंगे।"

और एक विद्यार्थी ने खडे होकर कहा

"मै भी चमडा मजदूर हू। पर मैं सोचता हू कि भगवान के कानून हमारे किसी काम के नही। जरूरत है अमीरो को गरदनिया देने और नये समाज का निर्माण करने की।"

"सही कहा," आसपास सभी चिल्लाये।

विद्यार्थियो की ऐसी प्रतिक्रिया व्लादीमिर इल्यीच को अच्छी ही लगी।

"तो इसका मतलब है कि अमीरो और गरीबो का होना जरूरी नही है," उन्होने विद्यार्थियो की बात दोहरायी और फिर बडी सहजता के साथ राजनीतिक अर्थशास्त्र के विषय पर आ गये। राजनीतिक अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो सामाजिक उत्पादन के विकास का अध्ययन करता है।

व्लादीमिर इल्यीच मजदूरो को मार्क्सवाद की शिक्षा दे रहे थे। वह कह रहे थे कि मजदूर को शिक्षित, समझदार और जानकार होना चाहिये। उसे राजनीति की अच्छी पकड होनी चाहिये।

क्या उस फ्रासीसी चमडा मजदूर जैसा आदमी क्राति के लिए लड सकता है, जो कदम-कदम पर भगवान की दुहाई देता हो और आगे कुछ न जानता हो? हमारे यहा रूस मे भी ऐसे दकियानूस मजदूरो की कमी नही है। पिछडेपन से क्रातिकारी सघर्ष मे कोई मदद नही मिल सकती।

"मजदूरो के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है," व्लादीमिर इल्यीच कहा करते थे।

इसीलिए उन्होने लाजूमो मे पार्टी स्कूल खोला था। मजदूर उसमे चार महीने पढते और रूसी मजदूर वर्ग के लिए क्राति मे निष्ठा और ज्ञान का सदेश लेकर स्वदेश लौटते।

फ्रास के उस साधारण और नगण्य से गाव—लोजूमो—को आज सारी दुनिया जानती है। और यह इसलिए कि वहा लेनिन ने पहला पार्टी स्कूल खोला था।

आह माँ! विश्वास नहीं होता कि विपत्ति टल गयी है!"

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना व्लादीमिर इल्यीच को देखती रही। वह यहां थे। जेल में नहीं, बल्कि उसके साथ! और सकुशल। आफत टल गयी थी।

'यह सब दुःस्वप्न था, अब भूल जाओ,' व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया। 'अरे, बाहर देखो तो शरद में बर्न कितना खूबसूरत लगता है!"

वे अब स्विट्जरलैण्ड की राजधानी बर्न में थे। पूरी तरह आजाद। कुछ ही समय पहले तक व्लादीमिर इल्यीच सीखचों के पीछे बन्द थे। यह एक पोलिश कसबे पोरोनिन की घटना है।

अगस्त, १९१४ में पहला विश्वयुद्ध छिड़ गया था। पोरोनिन उस समय आस्ट्रिया के अधिकार में था।

हजारों रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेज, आस्ट्रियाई और हंगरियाई औरतों ने दहाड़ें मारते हुए और शायद आखिरी बार अपने पतियों और बेटों को गले लगाया था। रूस के देहातों से गाड़ियां भर भरकर रंगरूट और हथियार मोर्चे पर भेजे गये थे।

लड़ाई के पहले ही दिनों में पोरोनिन में आस्ट्रियाई पुलिस ने लेनिन को गिरफ्तार कर लिया। इसलिए कि वह रूसी थे। फिर हमेशा कुछ न कुछ लिखते और रूस भेजते रहते थे। यानी जासूस थे। इसका सबूत? सबूत की क्या जरूरत! पुलिस अगर कहती है कि जासूस है, तो जरूर होगा।

और इसकी सजा प्राणदण्ड हो सकती थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को कितने गहरे मानसिक संताप और हताशा से गुजरना पड़ा! दो हफ्ते तक व्लादीमिर इल्यीच मौत के कगार पर खड़े रहे थे। मगर कुछ ऐसे साथी मिल गये थे, जिनकी दौड़धूप, प्रयत्नों के फलस्वरूप लेनिन को जेल से मुक्त करवाया जा सका।

पोरोनिन से तटस्थ स्विट्ज़रलैण्ड की राजधानी बर्न वे कल ही पहुंचे थे। स्विट्ज़रलैण्ड युद्ध में भाग नहीं ले रहा था। यहां जीवन सामान्य गति से बह रहा था। पति या पुत्र के विछोह से रोती या छातियां पीटती माएं यहां नहीं थीं।

उन्होंने झटपट नाश्ता किया, बतन समेटे और घर से निकल पड़े। गिरजाघरों म प्राथनाए अभी चल रही थी, वन का आकाश घंटाघरों म आती सुमधुर ध्वनियों स गूज रहा था।

हमेशा की तरह इस बार भी व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना वन म एक सबसे छोरवर्ती, छोटी और सकरी सडक पर ठहरे थे, जिसका नाम था डिस्टेलवेग, यानी भटकटैया की सडक। साफ है कि यह कोई सघन इलाका नहीं था।

कोई दस मिनट व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना डिस्टेलवेग पर चले होगे कि शहर का आखिरी मकान भी पीछे छूट गया। आगे जगल था, सितवर महीने का, सोने की तरह जगमगाता और रग बिरगा। वह शहर के खत्म होने ही शुरू हो जाता था और पहाडियो चोटियो, सबको ढके हुए था।

एकाएक व्लादीमिर इल्यीच रुक गये।

"नाद्यूशा, यही न?" उस जगह पर पगडडी छोडने के निशान को पहचानते हुए उन्होंने पूछा। यानी यहा पर पगडडी छोडकर खाई पार करनी थी। खाई पारकर वे कोई बीस कदम और चले और फिर हाथो से झाडी जो हटायी, तो सामने खाली मैदान दिखायी दिया। उसम कोट और बरसातिया बिछाये कुछ आदमी बैठे हुए थे।

'नमस्ते, साथियो!" व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

पीछे एक टहनी टूटी। दवदार की शाखे हिली और झुरमुट के पीछे से टोकरी हाथ म लिये हुए एक और आदमी निकला। बन के लोग पिकनिक पर जाते हुए ऐसी टोकरियो म खाना ले जाया करते थे।

कल वन पहुचने पर व्लादीमिर इल्यीच ने एक परिचित रूसी बोल्शेविक को खबर कर दी थी। उसने दूसरे को बताया, दूसरे ने तीसरे को और इस तरह सबको खबर लग गयी थी कि अगली सुबह जगल मे मीटिंग है।

बोल्शेविक ठीक, नियत समय पर पहुच गये। सभी लेनिन को सुनने को उत्सुक थे।

रूसी जनता और दूसरे देशो की जनताओ पर लडाई का वज्र गिरा है," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "मगर यह लडाई किसे चाहिये? पूजीपतियो को। वे लडाई से मालामाल हो रहे ह, नयी नयी मडियो पर कब्जा करने के लिए ललक रहे ह, ताकि ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाया जा

गये। सिपाहियों और मजदूरों को मातृभूमि की रक्षा के नाम पर धोखा दिया जा रहा है। यह असल में मातृभूमि की रक्षा नहीं, बल्कि पूंजीपतियों के मुनाफे की रक्षा है। हम सिपाहियों, मजदूरों और किसानों को समझाना है सभी देशों के सिपाहियों और मेहनतकशो, तुम्हारे हाथों में हथियार आ गये हैं। इन हथियारों का निशाना अपने शासकों और पूंजीपतियों को बनाओ! शांति करो! यह अन्यायपूर्ण लड़ाई खत्म हो! लड़ाई के विरुद्ध लड़ो!"

लेनिन ने ये बातें न केवल समीपवर्ती जगह में ही नहीं कही, बल्कि इनके बारे में लेख भी लिखे और उन्हें रूस के बाल्शेविकों को भेजा।

और बोल्शेविकों ने मोर्चे पर गुप्त रूप से उनका सिपाहियों और मजदूरों के बीच प्रचार किया।

सिपाही लेनिन के लेखों को पढ़ते थे और सोचते थे "सचमुच क्या बेहतर नहीं होगा कि हम इन बंदूकों का मुंह अपने फैक्टरी मालिकों और जमींदारों की तरफ कर दें, जार का तख्ता पलट दें और नये ढंग से रहने लगें?"

वापसी

वन में लेनिन ने साम्राज्यवाद के बारे में एक किताब लिखी। इसमें उन्होंने बताया कि लुटेरू लड़ाइयों के बिना पूंजीपतियों का काम क्यों नहीं चल सकता। वे पराये मुल्कों पर कब्जा करते हैं, उन्हें उपनिवेश बनाते हैं, दूसरों का खून चूस-चूसकर मोटे बनते हैं और चूंकि अपने लालच पर लगाम लगा पाना उनके लिए संभव नहीं होता, इसलिए वे सारी दुनिया को आपस में बांटने की, बड़े से बड़ा हिस्सा हथियाने की कोशिशें करते हैं। यह प्रक्रिया जितनी आगे जारी रहेगी, उतनी ही अधिक ऐसी लुटेरू लड़ाइयां होंगी, साम्राज्यवाद के अंतर्गत जनसाधारण की हालत उतनी ही बुरी होगी। किन्तु मजदूर वर्ग की चेतना और शक्ति भी बढ़ रही है, समाजवादी क्रांति की घड़ी नजदीक आती जा रही है।

ऐसी किताब लिखने के लिए सारी दुनिया के इतिहास, सारी दुनिया के लोगों के जीवन को जानना जरूरी था। व्लादीमिर इल्यीच को इस किताब की तैयारी के लिए बहुत अधिक अध्ययन करना पड़ा।

वन से व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ज्यूरिख चले आये। शुरू मे इरादा दो ही हफ्ते रहने का था, मगर काम की वजह से पूरे एक साल रहना पडा। ज्यूरिख मे पुस्तकालय बहुत अच्छा था। फिर शहर भी कोई बुरा नहीं था। काफी बडा, चहल पहल भरा, बहुत से कल-कारखाने और बडी संख्या म मजदूर।

व्लादीमिर इल्यीच शाम तक पुस्तकालय म बैठे रहते। दिन म थोडी देर के लिए घर आते, भोजन करते और फिर वापस दौड पडते।

पुस्तकालय को ओर जानेवाली सकरी सडक के किनारे चेस्टनट के ऊचे ऊचे पेड खडे थे। उस पूरे साल म शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा, जब व्लादीमिर इल्यीच चार बार इन चेस्टनटो के नीचे से और टाउन हॉल, प्राचीन गिरजे और पुराने घरो की बगल से न गुजरे हो।

यहा से थोडी ही दूरी पर ज्यूरिख झील थी। जब उसम क्रुद्ध लहरे उठती थी और गरजता हुआ पानी तट से टकराता था, तब उसके निकट जाना भी कठिन होता था। मगर बाद म जब लहरे शात हो जाती, पानी का नीला विस्तार धूप म चमकने लगता, तो झील का सौंदय देखते ही बनता था। व्लादीमिर इल्यीच स्विटजरलैण्ड की प्राकृतिक सुषमा पर मुग्ध थे। मगर मातभूमि की याद भी उन्हे हर समय सालती रहती। ओह, उन दिनो वह रूस की याद म कितना व्यथित रहते थे।

एक दिन दोपहर के भोजन क बाद व्लादीमिर इल्यीच पुस्तकालय लौटने को तैयार ही थे कि किसी ने जोर से दरवाजा खटखटाया। आगन्तुक एक प्रवासी था। वह इतना उत्तेजित था कि उससे जवाब की प्रतीक्षा भी न हो सकी और वह भडभडाता हुआ सीधे कमरे म आ गया।

"आपने सुना? नही सुना? रूस मे क्राति हो गयी है!"

व्लादीमिर इल्यीच ने तुरत टोपी उठायी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने चलते चलते कोट पहना। तीनो झील की तरफ चल दिये। झील की चादी धूप म चमक रही थी। गव से गरदने उठाये सफेद हस पानी म तर रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच अखबार के स्टैण्ड की तरफ लपके। यहा, झील के किनारे स्टैण्ड पर हमेशा ताजे अखबार टगे होते थे।

व्लादीमिर इल्यीच व्यग्रता के साथ अखबारो म छपी खबरो को पढने लगे "फरवरी, १९१७। रूस म क्राति।"

"आखिरकार हो ही गयी!" व्लादीमिर इल्यीच अपनी उत्तेजना छिपा न पाये।

वह रूस से घनिष्ठ रूप से सम्बधित थे। उन्होंने वहां रहते हुए क्रान्तिकारी संघर्ष का नेतृत्व किया था। वह जानते थे कि क्रांति अब निकट ही है। फिर भी मातृभूमि से आये समाचार ने उन्हें असाधारण रूप से उत्तेजित कर डाला था।

नहीं, इसमें कोई शक नहीं कि वहां, रूस में कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना घट रही थी। अब जितना जल्दी हो घर लौटना था, वतन लौटना था। यहां और रुकना ठीक नहीं। जैसे भी हो, तुरंत रूस लौटना था! आखिरकार उनका सारा जीवन, सारा श्रम उसी को तो अर्पित रहा था, जो इस समय रूस में घट रहा था! लेकिन यहां से निकलें कैसे?

व्लादीमिर इल्यीच का चैन जाता रहा, आंखों से नींद जाती रही। वह दुबले पड़ने लगे।

अंततः स्विस साथियों की दौड़धूप और कोशिशों के बाद रूसी प्रवासी क्रांतिकारियों को निर्गमन वीज़ा मिल ही गया।

गाड़ी दो घंटे बाद रवाना होती थी। व्लादीमिर इल्यीच अब पराये देश में एक क्षण भी और नहीं रुकना चाहते थे। इन दो घंटों में सामान बांधना था, पुस्तकालय की किताबें वापस करनी थीं, मकान का किराया चुकता करना था। फिर भी सब काम पूरा हो गया। दो घंटे बाद वे ज़्यूरिख से बर्न के लिए रवाना हो गये। बर्न से जर्मनी के लिए गाड़ी लेनी थी। लेनिन के साथ तीस अन्य रूसी प्रवासी भी रूस लौट रहे थे।

'सहायता और शरण के लिए धन्यवाद!' स्विट्ज़रलैण्ड की धरती छोड़ते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने स्विस साथियों को आभार संदेश भेजा।

गाड़ी स्विटजरलैण्ड की आंखों को चकाचौंध करती झीलों और गर्व से सिर ऊंचा उठाये खड़े पहाड़ों को पीछे छोड़ती धड़धड़ाती हुई आगे बढ़ी जा रही थी।

जर्मनी का इलाका भी पार हो गया। अब सामने बाल्टिक सागर का विक्षुब्ध विस्तार था। युद्ध का ज़माना होने से समुद्र में जहां तहां सुरंगें बिछी हुई थीं। फिर भी जैसे तैसे वे एक मालवाही जहाज से स्वीडन पहुंचे

और वहा से फिनलैण्ड। उफ, रास्ता कितना लम्बा और खतरनाक था! मगर अब शीघ्र ही पेत्रोग्राद* आ जायगा।

गाडी की खिडकी से पतले पतले तनावाले चीड और देवदार के घने जगल दिखायी दे रहे थे। सफेद बर्फ अभी पूरी तरह नही गली थी। काई के ढेरो से ढके दलदलो मे जहा तहा काला पानी चमक रहा था।

"रात को जब पेत्रोग्राद पहुचेंगे तो शायद सब सोये हुए होगे" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बोली।

लैम्पपोस्टो की धुधले उजाले मे पत्थर की इमारतो के बडे बडे आकार अस्पष्टता के साथ उभरने लगे। ये गोदाम, डिपो आदि थे। गाडी की रफ्तार धीमी हुई। फिनलैण्ड रेलवे स्टेशन अब दूर नही था।

इजन ने रात की निस्तब्धता को चीरते हुए सीटी दी। गाडी प्लेटफार्म पर आकर रुक गयी। इजन भारी आवाज करता हुआ भाप छोड रहा था लेकिन यह क्या? यह सगीत किस लिए? प्लेटफार्म पर मार्सई की धुन बज रही थी।

"सलामी देने के लिए सावधान!" आदेश सुनायी दिया।

प्लेटफार्म लोगो से खचाखच भरा हुआ था। ये पेत्रोग्राद के मजदूर थे, लाल गार्ड सेना के सैनिक थे, क्रोन्श्तादत के जहाजी थे।

"सावधान!"

एकाएक पूर्ण निस्तब्धता छा गयी। लाल गार्ड और जहाजी सलामी देने के लिए कतार बाधकर खडे हो गये।

लेनिन अपने डिब्बे के दरवाजे पर आये। वह आश्चर्यचकित थे।

"साथियो"

"लेनिन जिन्दाबाद! लडाई खतम हो! क्राति जिन्दाबाद!" जवाब मे आसमान गूज उठा।

प्लेटफार्म के बाहर, रेलवे स्टेशन के सामने के स्क्वायर मे भी हजारो कण्ठो ने इन नारो को दोहराया। स्क्वायर मे लोगो का सागर उमडा हुआ था। सर्चलाइटो के उजाले मे झडे आग की लपटो की तरह फहरा रहे थे।

---

* फरवरी, १९१७ की क्राति के बाद से पीटर्सबर्ग को पेत्रोग्राद कहा जाने लगा। —स०

स्टेशन के बाहर एक बख्तरबंद गाडी खडी थी। उसकी तापें ग्रामाश थी। वह भी पार्टी और मजदूर वर्ग के नेता का स्वागत कर रहा था। मजदूरो और सैनिको ने लेनिन को उस पर खडा किया। असंख्य मैत्रीपूर्ण हाथ उनकी तरफ बढे। असंख्य आखें मुस्करायी।

लेनिन की इच्छा हुई कि उन सबको, युद्ध और ग्रसवादी से संतप्त उन अपने सगो जैसे मजदूरो को गले लगा ले।

"साथियो," लेनिन ने कहा, "आपने क्रांति की है, जार का तख्ता उलटा है। मगर सत्ता पर पूजीपतियो ने कब्जा कर लिया है। वे हम पर राज करना चाहते हैं। मगर हम चाहिये मेहनतकशो का राज। हम आठ घटे का काम का दिन चाहते हैं। हम किसानो को जमीन, भूखो को रोटी, दुनिया को शाति देना चाहते है। हम समाजवादी क्राति चाहते है!"

हुर्रा! लेनिन जिंदाबाद! भीड चिल्लायी। फिनलण्ड स्टेशन के सामने के स्क्वायर का समा ऐसा था कि उस समय मानो रात न होकर खुशी भरी वसन्त की सुबह हो।

बख्तरबंद गाडी धूमधाम के साथ चल पडी। लेनिन हमेशा के लिए घर लौट आये थे।

रस्स्तान्नाया सडक

ब्लादीमिर इल्यीच ने तकिये से सिर उठाया। साफ-सुथरा, सादा सा कमरा। छोटी सी लिखने की मेज। मेज पर ताजे अखबार। खिडकी पर फूलो का गमला। एक कोने मे गहरे लाल रंग की कशीदाकारीवाले रेशमी कवर से ढकी हुई कुर्सी।

"मैं कहा हू? सपना तो नही है क्या?"

नही, यह सपना नही था। ब्लादीमिर इल्यीच अपनी बहन आन्ना इल्यीनिच्ना के घर मे थे।

उन्हे खुशियो से भरपूर कल के दिन और असामान्य मुलाकातो की याद हो आयी। रेलवे स्टेशन से बख्तरबंद गाडी उन्हे पहले नर्तकी क्शेसिन्स्काया के भूतपूर्व प्रासाद मे ले आयी थी। अब वहा बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति और नगर समिति का मुख्यालय था।

बख्तरबंद गाडी धीरे धीरे चल रही थी।

रात काफी हो गयी थी, फिर भी बहुत से घरा म उजाला था। सडका पर लोगो की भीड थी।

"लेनिन!" लोग चिल्ला रहे थे।

बख्तरबद गाडी बार-बार रुक जाती थी। लेनिन लोगा का सरल और स्पष्ट भाषा म समाजवादी क्राति के बारे म मजदूरा की अपनी क्राति के बारे म बताने की कोशिश करते। उनके हृदय मे जोशीले शब्दा का ज्वार उठा हुआ था।

नेवा और पत्रोपाव्लोव्स्क किले से कुछ ही दूरी पर स्थित क्शेसिन्स्काया प्रासाद लोगा से घिरा हुआ था।

"लेनिन बाहर आयें! लेनिन चद शब्द कहे!" भीड चिल्ला रही थी।

लेनिन ने कई बार बाल्कनी पर आकर जनता का सबोधित किया। अगर रात का समय न होता, तो बाल्कनी से पेत्रोपाव्लोव्स्क की सुनहरी मीनार और भारी, अभेद्य दीवार अवश्य दिखायी देती। इन दीवारा के पीछे, किले की कूआ जैसी अधेरी सीलन भरी और ठडी कोठरिया म रूस के कितने होनहार लोग कालकवलित हुए थे! मगर अब इस मनहूस किले से कोई भय नही था, कोई खतरा नही था।

"पुराना अब वापस नही लौटेगा," लेनिन ने लोगा से कहा था। "आगे बढो, साथियो! समाजवादी क्राति जिदाबाद!"

प्रासाद मे सारे पेत्रोग्राद के बोल्शेविक इकट्ठे हो गये थे। वे वहा से न खुद जाते थे, न लेनिन को ही जाने देते थे।

सिर्फ सुबह पाच बजे ही नादेज्दा कोस्तातीनोव्ना के साथ व्लादीमिर इल्यीच थके हुए मगर खुशी की उमग से भरपूर घर पहुच पाये। आखिरकार वे फिर अपने वतन मे थे। इस बीच क्या कुछ नही भोगा था! आखिरकार रूस के जीवन मे महान मोड आ ही गया

उत्तेजना और विकलता के कारण व्लादीमिर इल्यीच को नीद भी ठीक से नही आयी। कुल मिलाकर यही कोई एक घटा सो पाये होगे। हल्की सी झपकी आती थी कि आखे फिर खुल जाती थी। घर म हर तरफ खामोशी थी।

व्लादीमिर इल्यीच उठे और गलियारे मे टहलने लगे। उन्हे लगा कि यह घर समुद्र मे तरते जहाज जैसा है। लबा और सकरा सा गलियारा, उसके दोनो तरफ केबिना जैसे कमरे। गलियारे के अत मे खाने का तिकोना

कमरा और तिकोनी बाल्कनी। जैसे कि जहाज का अगला हिस्सा हो। खाने के कमरे में पियानो रखा था। उल्यानोव परिवार जहां भी रहा, पियानो हमेशा साथ रहा।

व्लादीमिर इल्यीच ने स्वरलिपियां उठायीं। ये मां की स्वरलिपियां थीं। इस घड़ी को देखने के लिए वह सात महीने और जिन्दा न रह सकीं। और नाद्या की मां भी नहीं।

व्लादीमिर इल्यीच ने शोकाकुल नजरों से जहाज के अगले हिस्से की तरह के कमरे को देखा। इस झूलती कुर्सी पर मां शाल में लिपटी हुई, किताब हाथ में लिए बैठा करती थीं। वह बूढ़ी, कमजोर हो गयी थीं और हर समय अपने बच्चों की याद में घुलती रहती थीं। कोई निर्वासन में था तो कोई जेल में। बेचारी मां! अपने बच्चों से मिलने के लिए उन्होंने किस किस जेल का "दर्शन" नहीं किया! पीटर्सबर्ग की जेल, मास्को की जेल, सरातोव की जेल, कीयेव की जेल... भाग्य ने उनसे किस किस शहर की खाक नहीं छनवायी!

व्लादीमिर इल्यीच ने स्वरलिपियां को वापस पियानो पर रख दिया और बिना कोई आहट किये अपने कमरे में लौट आये। पहले इस कमरे में मां रहा करती थीं। मां का आखिरी निवास। मां की कुर्सी। गहरे लाल रंग के फूलोंवाले इसके कवर को उन्होंने ही काढ़ा था... मां! काश एक क्षण के लिए तुम्हें फिर देख पाता, तुम्हारे कोमल हाथों को एक बार फिर चूम पाता!

शीघ्र ही घर में सभी जग गये। लेकिन आज की सुबह कल जैसी नहीं थी। कल सभी खुश थे, उमंग से भरपूर थे। आज हर कोई दबी आवाज में बात कर रहा था।

सारे रास्ते भर व्लादीमिर इल्यीच खामोश रहे।

लिगोव्का से वोल्कोवो कब्रिस्तान तक रस्स्तानाया सड़क से होते हुए जाना पड़ता था। यह मातमी सड़क थी, आखिरी मंजिल थी। उसके बाद विदाई। हमेशा, हमेशा के लिए विदाई।

कब्रिस्तान में बर्फ अभी गली नहीं थी। कब्रों के बीच उसके सफेद ढेर चमक रहे थे। चीड़ की एक शाख मां की कब्र पर रखी हुई थी। पास ही में एक और कब्र थी। छोटी। ओल्या की कब्र। उस पर एल्म की नंगी शाखें झुकी हुई थीं।

व्लादीमिर इल्यीच ने टोपी उतारी और सिर नीचे झुकाये देर तक खडे रहे।

आखा के आगे बचपन के दृश्य तिर गये। सिम्बीर्स्क का घर। खाने के कमरे मे बत्ती का मद उजाला है। बच्चे खाने की मेज के गिर्द बैठे हैं। मा किताब खोलती है। बच्चे कोई दिलचस्प, असामान्य कहानी सुनने के लिए उत्कण्ठित है। मा की आवाज कितनी अच्छी, मीठी और कोमल है।

फिर एक बिल्कुल ही दूसरा दृश्य याद आया।

जेल म कोठरी का दरवाजा भारी आवाज करते हुए खुलता है

"कैदी उल्यानोव, तुम्हारी मा मिलने आयी है।"

वह जेल के गलियारो मे भागता है, डरता है कि मा स मिलने का समय कम न हो जाये। नीची छतवाला अधेरा सा कमरा। बीच मे दोहरी जाली है। मा का प्यारा चेहरा जाली से चिपका हुआ है। आखा से स्नेह फूट रहा है। "वोलोद्या, राजी-खुशी तो हो? तुम्हारे लिए दूध और खाने की चीजें लायी हू। और जो किताबें मागी थी, उन्ह भी "

मा, मेरी प्यारी मा! तुम हमारा नया जीवन नही देख पायी। कितना दुख है, कितना अफसोस है! मा, प्यारी मा, हम तुम्हारा विवेक, तुम्हारे उपकार कभी नही भूल पायेंगे।

सत्ता सोवियतो को

लेनिन मा की कब्र के सामने झुके और फिर वहा से सीधे बोल्शेविको की सभा मे भाषण देने के लिए चल पडे। यह ४ अप्रैल, १९१७ की बात है, इसलिए इतिहास म इस भाषण को "अप्रैल थीसिस' के नाम से जाना जाता है। उसे उन्होने स्वदेश लौटते हुए रास्ते मे रेलगाडी मे लिखा था। उसमे उन्हान इसकी सुनिश्चित योजना पेश की थी कि जार का तख्ता उलटने के बाद बोल्शेविको और जनता को कैसे काम करना है।

सत्ता अस्थायी सरकार के हाथा म आ गयी थी। मगर इस सरकार के सदस्य कौन थे? जमीदार और पूजीपति। क्या ये धनवान लोग गरीब मजदूरा और किसानो की चिन्ता करना चाहेंगे? बिल्कुल नही। उन्ह अपनी सपत्ति की ही चिन्ता है। तो बोल्शेविक अस्थायी सरकार का समर्थन क्या करें? नही, बोल्शेविक अस्थायी सरकार का नही बल्कि सोवियतो का समर्थन करेंगे।

मजदूरो और किसानो के प्रतिनिधियों की सोवियतें तब तक स्थापित हो चुकी थी, पर अभी वे कोई खास शक्तिशाली नहीं थीं। उनमे बहुत से मेन्शेविको और ऐसे दूसरे तत्वो ने अड्डा जमा लिया था, जो बोल्शेविको से सहमत नहीं थे।

'सोवियतो को अधिक शक्तिशाली बनाना है!" लेनिन ने कहा।

इसका क्या मतलब था? इसका मतलब था कि उन्हे बोल्शेविको का पक्षधर बनाना है। और तब सोवियतो की सहायता से जमींदारो से जमीन और पूजीपतियो से कारखाने छीनने हैं। जमीन और कारखाने जनता की सपत्ति हो जायेगे। इसके अलावा युद्ध का अन्त करना है।

लेनिन इन्ही के लिए बोल्शेविको और मजदूरो का आह्वान कर रहे थे।

लेनिन अपनी योजना पर दृढ थे। उनके सामने एक महान लक्ष्य था और वह इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कृतसकल्प थे।

मजदूर जानते थे कि उनका रास्ता बोल्शेविको के साथ है। मगर यह बात सभी मजदूर नहीं समझते थे और सभी किसान भी नहीं। मेन्शेविक और बूर्जुआ तबके के लोग मजदूरो और किसानो को हर तरह से बरगलाने की कोशिशें करते थे। वे अपने अखबारो मे बोल्शेविको के बारे मे तरह-तरह की उलूल जलूल बातें लिखते, युद्ध का प्रचार करते, बूर्जुआ सत्ता के पक्ष मे लोगो को उभारते। मगर बोल्शेविको के पास भी अपना अखबार था, जिसका नाम था 'प्राव्दा" यानी सत्य। उसका कार्यालय मोइका नदी के किनारे एक बडी सी इमारत के तीन छोटे से कमरो मे था और वह सचमुच सत्य से लोगो का साक्षात्कार करवाता था।

मीटिंग से व्लादीमिर इल्यीच 'प्राव्दा' के कार्यालय मे आये। उसके लिए एक लेख लिखा। फिर दूसरे दिन भी। हर रोज वह बोल्शेविक अखबार के लिए एक दो लेख लिखते थे। कभी कभी तो तीन भी। इसके अलावा वह पेत्रोग्राद के विभिन्न कल कारखानो मे मजदूरो के सामने भाषण देते थे। वह मेहनतकशो के हितो के लिए बोल्शेविको के जन सघर्ष को इतनी अच्छी तरह समझाते थे कि धीरे धीरे सभी मजदूर और किसान उनकी तरफ झुकते गये।

लेनिन को रूस लौटे तीन ही महीने हुए थे। इस बीच स्थिति मे बहुत परिवर्तन आ गया। लेनिन अकेले नहीं थे। उनके बहुत से साथी थे और सभी मिलकर नयी व्यवस्था के लिए सघर्ष कर रहे थे। सैनिक लडना नहीं

चाहते थे। मजदूर पूजीपतिया के लिए काम करने से इकार करने लगे थे। किसान जमीन माग रहे थे।

एक दिन पेत्रोग्राद के मजदूर और सैनिक खुद ही सडको पर निकल आये। उनकी स्थिति असह्य बन गयी थी। बोल्शेविको न उनका सडको पर निकलन के लिए आह्वान तो नही किया था मगर जब इतने विशाल पमाने पर आदोलन शुरू हो ही गया तो उन्होने प्रदशनो का नेतत्व किया और भरसक कोशिश की कि आदोलन शातिपूण रह। प्रदशनकारी नार लगा रह थे "सारी सत्ता सोवियतो को!' पूजीवादी सरकार मुर्दाबाद!", "रोटी दो, शाति दो आजादी दो!

प्रदशनकारिया का जलूस अनुशासनबद्ध था, आत्मविश्वास से भरपूर था और इससे जन आदोलन की जबदस्त शक्ति का पता चलता था।

अस्थायी सरकार के मत्री डर गये। हालाकि वे अपने को क्रातिकारी सरकार कहते थे, फिर भी उन्होने वैसी ही नीचता का परिचय दिया, जसी कि १९०५ मे जार ने दिखायी थी। उन्होने सशस्त्र फौज को निहत्थे लोगो पर गोलिया चलान का हुक्म दिया।

यह ४ जुलाई, १९१७ की बात है।

दूसरे दिन सुबह व्लादीमिर इल्यीच यह देखन कि अखबार कैसे निकल रहा है और साथिया को सलाह देने के लिए मोइका नदी के तट पर स्थित "प्राव्दा" कार्यालय म गये।

'प्राव्दा" की इमारत के सामने झटके के साथ ब्रेक लगाती हुई एक सैनिक गाडी आकर रुकी। फौजी बूटा की ठाप-ठाप सुनायी दी। भडाके से दरवाजा खुला और सगीनें ताने हुए कुछ यकेर (फौजी स्कूल के विद्यार्थी) "प्राव्दा" कार्यालय मे दाखिल हुए।

"लेनिन कहा है?"

सौभाग्यवश लेनिन उस समय वहा नही थे। वह पहले ही सकुशल घर लौट चुके थे। नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना और बहन दरवाजे के पास कान लगाये खडी, निस्तब्ध और पीली पडी हुई उनका इतजार कर रही थी।

"वोलोद्या! अस्थायी सरकार ने तुम्हे वैधानिक सुरक्षा से वचित व्यक्ति घोषित कर दिया है।'

तभी घटी बजी। सभी सहम गये।

'तुम्हारे लिए तो नहीं आये हैं?" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने फुसफुसाते हुए पूछा।

व्लादीमिर इल्यीच बिना कोई आहट किये अपने कमरे की ओर भागे। सभी पत्रों और दस्तावेजों को शीघ्रातिशीघ्र नष्ट करना जरूरी था, ताकि कहीं पुलिस के हाथ न पड़ जायें।

'खोलिये," दरवाजे के पीछे से किसी ने दबी आवाज में कहा।

अरे यह तो स्वेदलोव हैं!" आन्ना इल्यीनिच्ना पहचान गयीं।

सभी खुश थे कि घंटी बजानेवाला पुलिस का आदमी नहीं था।

'याकोव मिखाइलोविच! आइये! आइये!" कमानीरहित ऐनक पहने दुबले और काली आंखोंवाले आदमी के लिए दरवाजा खोलते हुए बहन और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने एक साथ कहा।

स्वेदलोव की उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं हुई थी। किशोरावस्था से ही उन्होंने अपना सारा जीवन पार्टी को अर्पित कर दिया था। जारशाही सरकार ने क्रांतिकारी स्वेर्दलोव को निर्वासन की सजा देकर दूर नरीम्स्की इलाके में भेजा। चार बार उन्होंने वहां से भागने की असफल कोशिशें की और आखिर में सफल हो भी गये। पर आजाद जिंदगी ज्यादा दिन न चली। पुलिस ने फिर पकड़ लिया और इस बार उन्हें तुरुखान्स्क इलाके में निर्वासित किया गया, जहां से बहुत कम लोग ही लौट पाते थे।

सिर्फ क्रांति के बाद ही स्वेदलोव को इस मौतगाह से छुटकारा मिला। वह बुद्धिमान थे, प्रतिभाशाली थे और लेनिन के सबसे जोशीले साथियों में से थे।

'व्लादीमिर इल्यीच, युंकेरों ने 'प्राव्दा' कार्यालय को तहस-नहस कर दिया है। सारे शहर में तलाशियों और गिरफ्तारियों का दौर चल रहा है। युंकेर किसी भी क्षण यहां भी आ सकते हैं। अच्छा हो कि आप अभी यह जगह छोड़ दें।'

व्लादीमिर इल्यीच कुछ सोचते हुए खड़े रहे। तो क्या क्रांतिकारियों पर अत्याचार फिर शुरू हो गये हैं? क्या फिर छिपना पड़ेगा?

व्लादीमिर इल्यीच कुछ क्षण के लिए तय नहीं कर पाये। मगर खतरा बहुत गंभीर था। वैधानिक सुरक्षा से वंचित आदमी को अदालत की इजाजत के बगैर कोई भी मार सकता था। अस्थायी क्रांतिकारी सरकार ने लेनिन को खत्म करने का फैसला कर लिया था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वनकर्मी

[illegible] के [illegible] से [illegible] पर सेस्त्रोरेत्स्क [illegible] में [illegible] एक [illegible] था। मजदूर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] कारखाना [illegible] [illegible] पास ही [illegible] था। पास ही [illegible] [illegible] थी [illegible] कोई [illegible] किलोमीटर थे। [illegible] के दिनों में [illegible] [illegible] नीला-नीला दिखायी देता था।

एक दिन येमेल्यानोव के पास केन्द्रीय समिति का आदमी आया। बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने निर्णय किया था कि किसी तरह अपने पार्टी के नेता लेनिन को कहीं छिपाकर प्रतिक्रियावादी सरकार के चगुल मे पडने से बचाना है।

"साथी येमेल्यानोव, यह काम आपको सौंपा गया है।"

पहले तो येमेल्यानोव ने व्लादीमिर इल्यीच को अपने भुसौरे में छिपाना चाहा।

मगर फिर तुरत ही याद आ गया कि यहाँ छिपाना खतरनाक है। अनजान पडोसी हैं। गली मुहल्ले के बच्चे कभी भी भुसौरे में आकर खेल सकते हैं। फिर उसके भी अपने सात बच्चे हैं। नहीं, कोई दूसरी जगह ढूँढनी होगी।

सुबह तडके ही येमेल्यानोव ने व्लादीमिर इल्यीच को जगाया। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] में [illegible] हुई थी। [illegible]

मकान के ठीक पीछे ही थी। येमेल्यानोव ने नाव खोली और बिना कोई शोर किये चप्पू चलाने लगा। आसपास के घरों में लोग अभी सोये हुए थे। हर तरफ खामोशी थी। विशाल झील का पानी भोर के हल्के गुलाबी उजाले में झिलमिला रहा था।

येमेल्यानोव लेनिन को जल्दी से जल्दी रजलीव के दूसरे किनारे पहुंचा देना चाहता था। रास्ता कोई चार वर्स्ट था। वह घबड़ा रहा था कि कहीं कोई पड़ोसी इतने तड़के उसे एक अनजान आदमी को नाव में ले जाते न देख ले। यह तो सभी अखबारों में छप चुका था कि सरकार लेनिन को खोज रही है। और फिर लोग भी तरह-तरह के होते हैं। इसीलिए येमेल्यानोव जल्दी कर रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच खामोशी से पतवार थामे हुए थे। सुबह की हवा का झोंका आया और झील के ऊपर छाया भूरा कुहासा छंट गया। किनारे साफ-साफ दिखायी देने लगे। दूर क्षितिज के ऊपर आसमान में लाली छाने लगी।

इस नीरवता में व्लादीमिर इल्यीच को बहुत पहले गुजरे हुए वर्ष और उन दिनों के साथी याद हो आये। उन्हें पीटर्सबर्ग का मजदूर इवान बाबुश्किन याद आया। बाबुश्किन के साथ मिलकर ही व्लादीमिर इल्यीच ने 'संघर्ष लीग' का पहला परचा लिखा था। पीटर्सबर्ग का सर्वहारा इवान बाबुश्किन जोशीला क्रांतिकारी और कट्टर बोल्शेविक बन गया था। १९०६ में सरकार ने बिना किसी मुकदमे के उन्हें फांसी चढ़ा दिया।

व्लादीमिर इल्यीच को "पोत्योम्किन" का जहाजी अफानासी मात्यूशेंको याद आया, जो उन्हें अपने जहाज पर हुई बगावत के बारे में बताने जेनेवा आया था। स्वदेश लौटने पर उसे भी फांसी दे दी गयी।

याद आनेवाले साथियों में ऊफा का नौजवान मजदूर इवान याकूतोव भी था। १९०५ की क्रांति के दौरान याकूतोव ने ऊफा में मजदूर गणतंत्र की स्थापना की घोषणा की थी। किन्तु क्रांति दबा दी गयी और उसके साथ ही इवान याकूतोव को फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। क्रांति के दौरान हजारों मजदूर योद्धा शहीद हुए। उनकी याद कभी नहीं भुलायी जायेगी।

व्लादीमिर इल्यीच को इसका भी खयाल आया कि सेस्त्रोरेत्स्क के मजदूर येमेल्यानोव ने उन्हें बूर्जुआ सरकार से छिपाकर अपने लिए बहुत बड़ा

। ही रिया
। गय। व

ा ग्रौर ता
। िन गन

ान नही,'
ा था।
ना पडा
गात भी ता
ीमिर ग्रीच
नग्रन, विनाय
ा करत। इन
।। नुक छिपकर
मनाह, निर्देश

ह मवहार था
कांग्रेस न नेनिन

ग्राये हुए आगे बढ
है।' पार्टी कांग्रेस

ग्त करती थी। वह
हम ग्रौर दत्ता के
ग्रा सरकार न ग्रपन

से खाली नही था।
थी।

नही करनी है। आप माना फिनलण्ड के है और इसलिए रूसी बिल्कुल नहीं समझते। याद रखिये, एक शब्द भी नही!'

'पर मैं क्या फिनिश मजदूर जैसा लगता हू?" व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा।

येमेल्यानोव ने व्लादीमिर इल्यीच को एक बार फिर सिर से पैर तक देखा। व्लादीमिर इल्यीच ने दाढी बना ली थी और मूछे छाटी कर दी थी और मिरज़ई जैसे गलेवाली कमीज़ और पुराने, जर्जर कोट मे बिल्कुल मजदूर जैसे लग रहे थे।

हा, हा, आप बिल्कुल फिनिश मजदूर की तरह लगते है," येमेल्यानोव ने जवाब दिया और फिर कहा "आपके लिए खाने पीने का सामान सुबह या शाम को ला दिया करेगे।"

'और अखबार? अखबार बहुत जरूरी है। सभी। और एक बात और। आपको मजदूर को लिखने का बहुत काम करना है। इसके लिए सबसे उचित जगह कौन सी होगी?"

इधर देखिये " येमेल्यानोव ने झोपडी के पास की घनी झाडियो को हाथ से हटाते हुए कहा।

व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि वहा उनके बीच मे थोडी सी जगह साफ कर दी गयी है और इसमे दो ठूठ रखे हुए है, एक कुछ ऊचा और दूसरा कुछ नीचा। छोटा बैठने के लिए और बडा मेज का काम करने के लिए।

'आपका जगल मे काम करने का कक्ष " येमेल्यानोव ने कहा। "हर तरफ से छिपा हुआ और पूरी तरह शात।"

झोपडी मे व्लादीमिर इल्यीच के रहने की पूरी व्यवस्था करके कुछ समय बाद येमेल्यानोव चला गया। व्लादीमिर इल्यीच भी झील तक उसके साथ गये और जब तक नाव रजलीव के नीले विस्तार मे नजरो से ओझल न हो गयी, वही पर खडे रहे। फिर अदृश्य नाव का हाथ हिलाकर विदा दी और तेज कदमो से लौट पडे। अपने 'कक्ष' मे पहुचकर उन्होने नीली कापी खोली। उन दिनो वह इस बारे मे किताब लिख रहे थे कि मजदूरो को सर्वहारा की तानाशाही के लिए, अपने राज्य के निर्माण के लिए सघर्ष कैसे करना है।

इजन न० २६३ का फायरमैन

केन्द्रीय समिति ने लेनिन का छिपाने का फैसला करके ठीक ही किया था। उनके घर छोडने के दूसरे ही दिन युकेर तलाशी लेने पहुच गये। वे लेनिन को ढूढ रहे थे।

मगर लेनिन रजलीव के किनारे झोपडी मे रह रहे थे। यहा और तो सब ठीक था, पर मच्छरो ने नाक म दम किया हुआ था। वे दिन रात काले बादलो की तरह मडराते रहते।

"अस्थायी सरकार से तो बच गया, पर मच्छरो से कोई मुक्ति नही," व्लादीमिर इल्यीच कहते। मच्छरो ने उन्हे बुरी तरह काट लिया था।

कभी-कभी बारिश भी होने लगती। तब झोपडी म ही बैठे रहना पडता था। आग जलाना भी मुमकिन नही था। चाय बनाने की सोच भी तो कैसे? कुल मिलाकर वहा रहना आसान नही था। मगर व्लादीमिर इल्यीच हताश नही हुए। काम उनके पास बेहद्द था। वह लेख लिखते, किताब की रूपरेखा तैयार करते, बोल्शेविको की काग्रेस का निर्देशन करते। इन दिनो पेत्रोग्राद म बोल्शेविक पार्टी की छठी काग्रेस हो रही थी। चुक छिपकर आनेवाले साथियो के जरिये व्लादीमिर इल्यीच उसे अपनी सलाह, निर्देश भेजते।

वह कहते थे हम सशस्त्र क्राति की तैयारी करनी है, सर्वहारा को किसानो के साथ मिलकर सत्ता अपने हाथो म लेनी है। काग्रेस ने लेनिन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

"इस लडाई मे हमारी पार्टी अपना झडा ऊचा उठाये हुए आगे बढ रही है पुरानी दुनिया का अत नजदीक आ गया है!" पार्टी काग्रेस ने अपने आह्वान म कहा।

बूर्जुआ अस्थायी सरकार लेनिन से डरती थी, नफरत करती थी। वह जानती थी कि लेनिन ही बोल्शेविक पार्टी का इतने साहस और दृढ़ता के साथ नेतृत्व कर रहे ह। लेनिन को पकडने के लिए बूर्जुआ सरकार ने अपने सैकडो भेदिये लगा रखे थे।

व्लादीमिर इल्यीच का झोपडी म रहना अब खतरे से खाली नही था। पतझड का मौसम भी करीब आ गया था। रातो म ठड बढ गयी थी। बारिश प्राय होने लगी थी। बुरी तरह भीगा हुआ जगल मनहूस और उदास लगने लगा था।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने तय किया कि लेनिन को और कहीं, अधिक सुरक्षित जगह भेज दिया जाये।

एक दिन येमेल्यानोव मुंह अंधेरे ही अपने कारखाने में पहुंच गया। बहाना था कि मैनेजर से मिलना है। पर इतनी सुबह कौन मैनेजर काम पर आता है? यही येमेल्यानोव चाहता भी था। जान पहचान के चौकीदार ने उसे मैनेजर के कमरे में जाने की इजाजत दे दी। येमेल्यानोव असल में फिनलैण्ड की सीमा पार करने के लिए अनुमति पत्र हासिल करना चाहता था। कारखाने के कुछ मजदूर फिनलैण्ड के इलाके में रहते थे और मैनेजर उन्हें सीमा पार आने जाने के लिए अनुमति पत्र देता था। मैनेजर की मेज पर अनुमति पत्र यों ही बिखरे पड़े थे। येमेल्यानोव ने उनमें से एक उठाकर चुपके से जेब में रख लिया और सीधे लेनिन से मिलने चल पड़ा। व्लादीमिर इल्यीच अब कोन्स्तान्तीन पत्राविच इवानोव बन गये। दाढ़ी मूछें अच्छी तरह मुडवा ली और भौंहो को भी दूसरे ढंग से बना लिया। सिर पर नकली बाल लगा लिये। माथे पर खिंची टोपी के नीचे से घुंघराले बालों का गुच्छा दिखायी देने लगा। लेनिन की शक्ल सूरत इतनी बदल गयी कि नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी एकदम न पहचान पाती।

शाम को उन्होंने झोपड़ी छोड़ दी और जंगल से होते हुए रेलवे स्टेशन की ओर चल दिये। व्लादीमिर इल्यीच के साथ येमेल्यानोव और दो फिनिश साथी थे। पहले तो ठीक-ठीक जा रहे थे। सिर्फ जैसा कि पतझड़ के मौसम में होता है, अंधेरा बहुत हो गया था। पगडंडी पर बढ़ते हुए पेड़ों की टहनियां बारबार उनके चेहरों से टकरा जाती थीं। अचानक दलदल शुरू हो गया। पगडंडी गायब हो गयी और पेड़ भी कम हो गये। ज्यों ज्यों आगे बढ़ते गये, झाड़ियों के बीच से गुजरना मुश्किल होता गया। मगर यह क्या? आगे धुआं छाया हुआ था। किसी ने अलाव जला रखा है या कहीं आग लगी हुई है? हर कदम के साथ धुआं गाढ़ा और असह्य बनता जा रहा था। सांस लेना और रास्ता देख पाना भी मुश्किल हो गया।

'यहां से मुड़ चलें,' येमेल्यानोव ने कहा। "दलदल में पीट जल रहा है।'

पीट की आग से बढ़कर भयानक और खतरनाक और कुछ नहीं होता। जमीन के नीचे आग सुलगती है, तेज होती है और आगे फैलने लगती है।

अचानक उसकी लपटें जमीन फाड़कर ऊपर उठती हैं और आसपास सब कुछ जला डालती हैं।

"व्लादीमिर इल्यीच, मेरे पीछे पीछे आइये।"

चारों तरफ से धुएं से घिरे हुए वे अंधों की तरह रास्ता टटोलते हुए, गिरते उठते हुए किसी तरह वहां से बाहर निकले।

धुआं अब पीछे छूट गया था। परों के नीचे अब दलदल नहीं था।

बुरी तरह थके हुए वे सुस्ताने के लिए जमीन पर बैठ गये। पर कमजोरी के मारे कांप रहे थे।

अगले दिन रात के एक बजकर पन्द्रह मिनट पर पेत्रोग्राद से फिनलैण्ड जानेवाली गाड़ी उदेल्नाया स्टेशन पर आकर खड़ी हुई। उसका ड्राइवर एक फिनिश था, जिसका नाम था गूगो यालावा। वह बोल्शेविक था और पेत्रोग्राद में रहता था। उसे अपने ऊपर को उठी काली चिमनी और गोल, गरम बगलोंवाले इंजन में, जिसका नंबर २९३ था, बहुत प्रेम था। उसने बाहर झांककर देखा। सब ठीक था। क्रासिंग के पास, जहां इंजन रुका था, एक आदमी खड़ा सिगरेट पी रहा था और निकट ही दूसरा बत्ती के उजाले में अखबार पढ़ रहा था। तय यही हुआ था कि छोड़ने आया एक आदमी सिगरेट पी रहा होगा और दूसरा अखबार पढ़ रहा होगा। "मगर लेनिन कहां है?" गूगो यालावा को चिंता हुई।

उसी क्षण तेज़ कदमों से चलता हुआ एक नाटा सा और गठीला मजदूर इंजन की तरफ बढ़ा। वह टोपी पहने हुए था, जिसके नीचे से चेस्टनट के रंग के बाल बाहर झांक रहे थे। रेलिंग पकड़कर वह इंजन के केबिन में चढ़ा।

"नमस्ते। मैं इवानोव हूं। आपका फायरमैन।"

'नमस्ते, साथी फायरमैन," गूगो यालावा ने जवाब दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने—फायरमैन वही थे—कोट उतारा और पेशेवर फायरमैन की तरह भट्ठी के पास लकड़ियों का ढेर लगाने लगे। इंजन ने हल्की सी सीटी दी और चल पड़ा।

बेलोओस्त्रोव स्टेशन तक तो बिना किसी डर चिन्ता के पहुंच गये। यह रूसी सीमा का आखिरी स्टेशन था। वहां युंकरों और पुलिस का जमघट

लगा हुआ था। गाडी के रुकते ही व दस्तावेजो की जाच के लिए सीटिया बजाते हुए डिब्बो की तरफ लपके।

"कही यहा भी न आ जायें," आशकित स्वर में गूगो यालावा ने कहा। 'हालांकि अनुमति पत्र तो है, फिर भी उनसे दूर रहने में ही खैरियत है।'

और नीचे कूदकर इजन को गाडी से अलग किया और पानी भरने के बहाने पूरी रफ्तार से इजन को वर्के की ओर ले गया।

पहली घटी बजी। पुलिस अभी भी डिब्बो की छान रही था। स्पष्ट था कि किसी को खोज रही थी। सारे स्टेशन में उत्तेजना फैली हुई थी।

तभी दूसरी घटी बजी। गाडी के रवाना होने के समय से एक मिनट पहले ही गूगो यालावा ने अपने इजन न० २९३ को डिब्बो से जोडा। फिर तीसरी घटी भी बज गयी। इजन ने नटखटपन सा दिखाते हुए सीटी दी। 'खाली हाथ रह गये, प्यारो!' ड्राइवर गूगो यालावा ने पुलिस और युकेरा को चिढाया।

और गाडी आगे चल पडी। रात का समय था। अगस्त महीने के आसमान मे तारे छिटके हुए थे। व्लादीमिर इल्यीच ने इजन के कैबिन से बाहर झाका। चेहरे पर ताजी हवा का थपेडा लगा।

शीघ्र ही वे फिनलैण्ड मे थे।

पुलिस दारोगा के यहा शरण

हेल्सिगफोर्स में पुलिस का दरोगा गुस्ताव सेम्योनोविच रोवियो नाम का एक नौजवान था। एक दिन रोवियो को गवर्नर जनरल के यहा से बुलावा आया। गवर्नर-जनरल रूसी था, क्योंकि उन दिनो फिनलैण्ड रूसी साम्राज्य का अग था।

अकडकर खडे गवर्नर-जनरल ने डरावनी आवाज मे धीरे धीरे कहा 'पेत्रोग्राद से एक गुप्त आदेश मिला है।"

'जी।'

'लेनिन का नाम सुना है?"

रोवियो ने सोचने की सी मुद्रा मे ठोडी पर हाथ फेरते हुए कुछ ठहरकर जवाब दिया कि हा, जानता हू। सभी अखबारो मे छपा है कि

अस्थायी सरकार लेनिन को गिरफ्तार करना चाहती है पर किसी तरह उन्हे ढूढ नही पा रही है।

"ऐसा शक है," गवनर ने आगे कहना जारी रखा, "कि लेनिन यहा हेल्सिगफोस मे छिपा हो सकता है।'

रोवियो चुप रहा और इस आशा म कि गवनर आगे क्या कहता है, उसे बडे ध्यान से देखता रहा।

"आपको लेनिन की खोजने के लिए तत्काल कदम उठाने हैं।"

"जी।'

"अगर आप लेनिन को पकड सके

"म भरसक कोशिश करूगा।"

"और याद रखिये, सरकार ने लेनिन को पकडने के लिए बहुत बडे इनाम की घोषणा की है, गवनर जनरल न अनुग्रह सा दिखाते हुए पुलिस अधिकारी को उत्साहित किया।

गुस्ताव रोवियो न सल्यूट किया और गवनर के कमरे से निकल आया। उनकी कनपटी पर पसीने की बूदे झलक आयी थी। बडे चारखानेदार रूमाल से उसने पसीना पोछा।

गवनर के यहा से वह अपने दफ्तर न जाकर रेलवे स्टेशन की ओर गया। हेल्सिगफोस—पेत्रोग्राद मेल को रवाना होने म अभी देर थी, पर वह तयार खडी थी। प्लेटफाम पर गाडी का डाक अधिकारी गुस्ताव रोवियो की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका चेहरा उनीदा और निरपक्षता का भाव लिये हुए था। लगता था कि दुनिया म उसे किसी चीज से कोई सरोकार नही। व बिना कोई जल्दबाजी दिखाय प्लेटफाम पर चलने लगे। मौका देखकर रोवियो ने जेब से एक पकेट निकालकर डाक अधिकारी को दिया, जिसे उसने तुरत अदर की जेब म छिपा लिया।

'उस आदमी से है और पहले के ही पते पर देना है,' रोवियो न समझाया।

"ठीक है," डाक अधिकारी न जवाब दिया और बदले म गुस्ताव रोवियो को एक पैकेट थमाया, जिसे उसने उसी तरह तुरत जेब मे रख लिया। फिर दोनो अलग हो गये। और अब भी दारोगा अपने दफ्तर नही गया।

रास्ते म एक दुकान स उसने कुछ अडे, मक्खन और रोटी खरीदी।

९

अब घर जाना है" उसने मन ही मन कहा। वह केन्द्रीय सडको म चक्कर लवा चक्कर लगाते हुए गलियो से होता हुआ जा रहा था। वैसे अगर ध्यान स उसका पीछा किया जाता, तो उसकी बहुत सी हरकतें अजीब लग सकती थी। मगर पुलिस के दारोगा का पीछा कौन करता? यह देखना तो उसीका काम था कि शहर मे व्यवस्था बनी रहे।

"गुप्त आदेश मिला है!' हागनरूम स्क्वायर के बडे घर की पाचवी मजिल पर चढते हुए उसे गवनर जनरल के साथ हुई बातचीत याद हो आयी। यहा पाचवी मजिल पर उसका एक कमरे का फ्लैट था, जिसमे इस समय—कही अगर गवनर को यह मालूम होता!—ब्लादीमिर इल्यीच बठे "राज्य और शाति" किताब लिख रहे थे। ज्यूरिख मे नोट की गयी टिप्पणियोवाली नीली कापी भी रज़लीव की झोपडी से अब यहा आ गयी थी।

रोवियो सावधान सा कराते हुए खासा। ब्लादीमिर इल्यीच उछलकर खडे हो गये।

"डाक है?

"डाक तो है। पर, ब्लादीमिर इल्यीच, पहले कुछ खाना खा लीजिये।"

"नही, पहले डाक। कहिये कहा है?"

जब तक रोवियो अपनी पोशाक के अदर की जेब से पकेट निकालता, ब्लादीमिर इल्यीच बेसब्री के मारे हाथ मलते रहे।

'आपके पैकेट के बदले म मिला है, ब्लादीमिर इल्यीच।"

पैकेट म कई पत्र थे। ब्लादीमिर इल्यीच ने एक पर सरसरी निगाह डाली। फिर दूसरा लिया। यह रसायन से लिखा हुआ था। लप जलाकर उसे गरमाया और पक्तियो के बीच अक्षर उभरने लगे। ब्लादीमिर इल्यीच पढते हुए बोलते भी जा रहे थे

अच्छा। अच्छा। अच्छा। दिलचस्प खबरे ह।"

खबर यह थी कि पेत्रोग्राद और मास्को मे सोवियतो म बोल्शेविको का असर बढता जा रहा है, सोवियते बोल्शेविक बन गयी ह, बूर्जुआ सरकार पर से जनता का विश्वास उठ गया है, जनता बोल्शेविको पर ज्यादा विश्वास करने लगी है, आदि आदि।

पुलिस दरोगा ने गवनर के यहा जाने की पोशाक उतारी, कमीज की बाहे चढायी और रसोई म अडा तयार करन लगा।

अजीब बात थी कि यह पुलिस दारोगा गवनर जनरल के माथ न होकर लेनिन के साथ क्यो था?

इसलिये कि उसका जम एक मजदूर परिवार म हुआ था। वह खुद भी बढई रहा था और १८ साल की उम्र से क्रातिकारी आदोलन मे हिस्सा लेने लगा था। जार की सत्ता उलटने के बाद ही मजदूरो ने उसे पुलिस दारोगा चुना था।

अडा तैयार करके रोवियो ने व्लादीमिर इल्यीच का खाने के लिये बुलाया।

पेत्रोग्राद से मिली खबरो से व्लादीमिर इल्यीच बहुत खुश थे। अब जल्दी ही वह भी रूस लौट जायेंगे। बोल्शेविक पार्टी मजदूर वग को क्राति के लिये ललकारेगी। मजदूर अस्थायी सरकार का तख्ता उलट देंगे। मजदूरो की सरकार बनेगी। इन्ही सब बाता के बार म लनिन न गप्त रूप स पेत्रोग्राद भेजे गये लेखो मे भी लिखा था और अब अपनी किताब म भी लिख रहे थे।

रोवियो खाता जा रहा था और गवनर जनरल के माथ हुई बातचीत के बारे मे बताता जा रहा था। जब लेनिन ने सारी बात का सुन लिया, तो चालाकी से आखो को सिकोडते हुए कहा

"जीवन म कभी-कभी कितनी बेतुकी बात हाती हैं पुलिस दारोगा दूसरा के बारे म तो गवनर जनरल को रिपोट करता है और खुद घर म किसे बिठाये हुए है?"

'कसे किसे? परम आदरणीय पादरी को!'

पुलिस दारोगा गुस्ताव रोवियो ने जिस भावशून्यता के साथ जवाब दिया, उससे व्लादीमिर इल्यीच पहले तो दग रह गये और फिर ठहाका लगाकर हस पडे। सचमुच वह हेल्सिगफोस पादरी के भेस म ही आये थे। इससे पहले वह जिस छोटे से गाव म कुछ समय के लिये ठहरे थे, वहा फिनिश साथियो ने कुछ शौकिया अभिनताओ को भेजा था। य लाग मजदूर और सामाजिक-जनवादी थे। उन्होंने कितनी चतुराई से उनका भेस बदल डाला था! वे शहर से पादरी का लबा चोगा और ऊचा टाप ले आये थे। व्लादीमिर इल्यीच के लबी-लबी भौह चिपकायी गयी थी सिर

पर नकली बाल लगाये गय थे और ऐसे सजा दिया गया था कि वम चाह तो अभी किसी गिरजे म बाइबिल का पाठ शुरू कर सकत थे। अब उन्हें ही नय भेस की चिन्ता करनी हागी।

एक दिन गुस्ताव रोवियो व्लादीमिर इल्यीच को एक हेयर ड्रेसर के पास ले गये। उसका जन्म पीटसबग मे हुआ था और वहा वह कई थियेटरा म हेयर ड्रेसर रह चुका था। वह राजधानी के बहुत स काउण्टा और अमीरो को भी जानता था और उन्हे नौजवान दीखन म मदद करता था।

"आप नकली बालो के बिना भी काफी जवान लगते ह," हेयर ड्रेसर ने तसल्ली सी देते हुए व्लादीमिर इल्यीच स कहा।

"मैं बूढा दीखना चाहता हू" व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया।

"बूढा? क्यो?" हेयर ड्रेसर को आश्चय हुआ।

"नही मेरा मतलब है कि कुछ रोबीला सा," व्लादीमिर इल्यीच ने हसते हुए कहा। 'सफेद बालोवाला साठ एक साल के बूढे जसा।'

साठ एक साल का बूढा? सफेद बालोवाला? नही, कभी नहा! आप चाहते ह कि मैं जवान आदमी को समय स पहले बूढा बना दू? बिल्कुल नही!' हेयर ड्रेसर चिल्लाया। 'मेरा काम लोगा को जवानी लौटाना है, न कि बूढा बनाना।'

'यह तो ठीक है, पर मेरे लिये अपवाद के तौर पर कर दीजिय,' व्लादीमिर इल्यीच ने मुस्कराते हुए आग्रह किया।

हेयर ड्रेसर काफी आनाकानी के बाद अन्तत सहमत हो ही गया। गुस्ताव रोवियो सोच रहा था

'व्लादीमिर इल्यीच अभी और कब तक या भेस बदलत रहेंगे? उन्हे अभी और कितना भटकना होगा?"

एक गुप्तवास और

वीबोर्ग की पुरानी सडको पर शरद की ठडी हवा चल रही थी।

ऐसे ही एक ठडे दिन एड्वार्द राहिया पेत्रोग्राद से वीबोर्ग आया। वह ऊचे कद का, खुशमिजाज और तेजदिमाग नौजवान था। गरमिया के अत म व्लादीमिर इल्यीच को रजलीव झील से उदेल्नाया स्टेशन पहुचानेवालो

म पेत्रोग्राद का यह फिनिश मजदूर भी था। पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उस लेनिन के सपकदूत का काम सौपा था।

इस बार राहिया लेनिन को लेने के लिये वीबोग आया था। लेनिन हेल्सिंगफोस से यहा, रूस के और नजदीक आ गये थे। वह रूस पहुचने के लिये उतावले थे। और अब वह घडी आ गयी थी।

व्लादीमिर इल्यीच घबरा रहे थे। पर राहिया को कोई डर नही था।

"व्लादीमिर इल्यीच, स्टेशन चलना है उसने कहा और लबे लबे डग भरता हुआ चल पडा।

पर नही, राहिया भी घबरा रहा था। सिफ उसने इसे छिपा रखा था। व्लादीमिर इल्यीच भी अपनी घबराहट को छिपाये हुए थे।

वे गाडी म वठे और बिना कोई बात किय एक फिनिश स्टेशन तक पहुचे। डिब्बे मे सब मुसाफिर फिनिश थे। व्लादीमिर इल्यीच फिनिश भाषा नही जानते थे, इसलिये मुसाफिरा का ध्यान अपनी आर न खीचन के लिये वह खामोश ही बैठे रहे।

समय-समय पर व्लादीमिर इल्यीच चुपके से जेब म रखी चाभी को टटोल लेते थे। यह पेत्रोग्राद के छोर के मजदूर मुहल्ले के एक गुप्त फ्लट की चाभी थी।

गाडी स्टेशन के करीब पहुचने को हुई, तो राहिया तेजी स खडा हुआ और डिब्बे से बाहर निकला। व्लादीमिर इल्यीच भी उसके पीछे पीछे। स्टेशन आने पर वे उतर गये। एकाएक व्लादीमिर इल्यीच चौक पडे। सामने पटरिया पर पेत्रोग्राद के उपनगरो को जानेवाली गाडी खडी थी और उसके इजन का नम्बर था २९३। "अहा, हमारा पुराना साथी! एक बार पहले मदद की थी, अब फिर करेगा।"

इजन के कबिन से ड्राइवर गूगो यालावा गभीर मुद्रा बनाये हुए बाहर झाक रहा था। पर राहिया और परिचित फायरमैन को देखते ही वह मुस्करा पडा "हमारा फायरमैन कुछ बूढा सा हो गया है।"

सक्षेप मे, व्लादीमिर इल्यीच उसी इजन पर सवार होकर फिनलैण्ड स उदेल्नाया स्टेशन लौट रहे थे।

उदेल्नाया से जिस जगह उन्हें जाना था वह कोई पाच वस्ट की दूरी पर थी। अक्तूबर की उस ठडी शाम को सडके सुनसान थीं। केवल हवा ही सनसना रही थी।

मगर पहले से नियत जगह पर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना उनका इतजार कर रही थी। वह किसी मोटे कपडे का हाफकोट और फेल्ट का गोल टोपी पहने हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने उनका ठड से अकडा हुआ हाथ अपने हाथो मे लिया। वह दस्तान नही पहने थी। अपनी फिक्र करना नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने कभी सीखा ही नही था। बस हर समय क्राति के लिए काम करने की ही लगी रहती थी। पार्टी जहा भेजे, जहा जाने को कहे, वह हर समय तैयार रहती थी।

सेर्दोबोल्स्काया सडक और वाल्शाई सम्पोन्येव्स्की प्रोस्पेक्त के चौराहे पर एक बडा सा बदसूरत सा इटो का चौमजिला मकान था। उसके आसपास के शेष सभी मकान मामूली और लकडी के बने हुए थे।

व्लादीमिर इल्यीच दढता के साथ उसके दरवाजे की ओर बढे, मानो यही के रहनेवाले हो। एइनो राहिया सम्पोन्येव्स्की प्रोस्पेक्त की ओर मड गया। उसका आज का काम पूरा हो चुका था। व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सीढिया चढकर चौथी मजिल पर पहुचे। चाभी से दरवाजा खोला। दरवाजे के सामने गलियारा था और उसके अन्त मे व्लादीमिर इल्यीच का कमरा। बायी ओर से चौथा। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने बताया था कि घर मे मालकिन के अलावा और कोई नही है। मालकिन मार्गरीता वसील्येव्ना फोफानोवा उनकी सहेली थी।

लेकिन यह क्या? ये आवाजे कहा से? व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि एक कमरे मे उजाला है और वहा मेज के गिर्द कुछ औरते बैठी है, जो देखने से अध्यापिकाए लगती थी।

'हा, तो शिक्षा का उद्देश्य है ' व्लादीमिर इल्यीच को सुनायी दिया।

विश्वास नही होता था कि गुप्त फ्लैट मे मीटिंग हो रही है। और वह भी उनके आने के ही दिन! व्लादीमिर इल्यीच ने तेजी से गलियारा पार किया। उन्होने अपनी कमर कुछ झुका ली थी। भेस के अनुसार बूढे होने का नाटक जो करना था!

हे भगवान!' जब वे व्लादीमिर इल्यीच के लिए निर्धारित कमरे मे पहुच गये तो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना अपने को धिक्कारने लगी। "मैने और मार्गरीता ने कितनी बडी बेवकूफी की है!"

"हा, बेवकूफी तो है ही व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

उन्होने नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना वो ढाढस बधाने की काई कोशिश नही की कि चलो, कोई बात नही, सब ठीक हो जायगा। ठीक तो शायद हो जायेगा, पर ऐसे सगीन वक्त पर ऐसा खतरा मोल लेना तो बुद्धिमानी नही थी!

"आशा है कि यह आखिरी गुप्तवास है, व्लादीमिर इल्यीच न खिडकी खोलत हुए कहा। नीचे पडा के बीच हवा साय-साय कर रही थी।

"बहुत खतरा है, बहुत " नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बडबडा रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि वह बहुत डरी हुई ह। हा, यहा सेर्दोबोल्स्काया सडक पर रज़लीव की झोपडी या हेल्सिगफोर्स से ज्यादा खतरा था। यहा हर नुक्कड पर, हर कदम पर अस्थायी सरकार के भेदिय थे।

यहा इतना अधिक खतरा था कि कोई भी यहा तक कि पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य भी नही जानत थे कि फिनलैण्ड से लौटकर व्लादीमिर इल्यीच कहा ठहरे हैं।

यह सिफ नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और एइना राहिया ही जानत थे।

पूर्ववेला में

कुछ दिन बाद राहिया लेनिन को एक गुप्त मीटिंग मे ले जान के लिए आया। रात हो गयी थी। दूकानें भी बद हो चुकी थी। घर से कुछ ही दूरी पर सुनहरे विस्कुट के साइनबोर्डवाली नानबाई की दूकान थी। दरवाजे पर ताला लगा हुआ था, खिडकिया भी बद थी। दूकान के सामन एक लबी सी लाइन लगी हुई थी, जिसमे अधिकतर औरत ही थी। शाल ओढे हुए व ठड से सिहरती हुई बडे धैय से प्रतीक्षा कर रही थी। ऐसा ही हाल दूसरी दूकानो के सामने भी था। साध्यकालीन पेत्रोग्राद मे कदम-कदम पर ऐसी थकी मादी, गुमसुम लाइनें नजर आती थी। रोटी का राशनिग बहुत पहले हो गया था। हर आदमी पीछे कभी आधा तो कभी चौथाई पाउण्ड रोटी दी जाती थी। हर कोई जल्दी से जल्दी रोटी खरीद लेना चाहता था। अगर देर हो गयी, तो किसी भी कीमत पर खरीदना मुमकिन नही था। औरत रात भर लाइन लगाये नानबाई की दूकाना के सामन खडी रहती। उनके सिर पर मुसीबतो का मानो पहाड आ टूटा था। मद–पत्नि

और बेटे—मोर्चे पर थे, अकारण मारे जा रहे थे और लड़ाई थी कि खत्म ही नहीं हो रही थी।

"और देश के अंदर भी हालत कोई अच्छी नहीं। मालिक लोग कारखाने बंद कर रहे हैं। मशीनें खड़ी हैं। बेरोजगारी बढ़ रही है," एइनो राहिया ने कहा।

देश सचमुच संकटपूर्ण स्थिति से गुजर रहा था। रेलगाड़ियाँ जैसे तैसे चल रही थीं। कल-कारखाने कोयले और कच्चे माल के लिए तरस रहे थे और शहर रोटी के लिए।

"अब इन्तजार किस बात का है?" राहिया ने पूछा।

"बोल्शेविक को जानना चाहिये," व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ सख्ती से जवाब दिया। "बोल्शेविक को इन्तजार नहीं, बल्कि सर्वहारा क्रांति करनी चाहिए।"

फरवरी क्रांति के शुरू से ही लेनिन इस पर जोर दे रहे थे कि बोल्शेविकों को सोवियतों पर कब्जा करना है। तभी मजदूर वर्ग शांतिमय तरीके से सत्ता पर अधिकार कर सकता है। किन्तु मेन्शेविकों ने इसमें कदम-कदम पर बाधा डाली।

अब स्थिति पूरी तरह बदल गयी थी। सशस्त्र क्रांति की घड़ी आ गयी थी। अब और देर ठीक नहीं थी।

अक्तूबर की उस शाम की गुप्त मीटिंग में पार्टी की केन्द्रीय समिति के सभी सदस्य उपस्थित हुए। सभी जानते थे कि लेनिन भी आयेंगे। उन्होंने उन्हें बहुत समय से नहीं देखा था, इसलिए सभी अधीरता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वृद्ध के भेस में लेनिन को पहचानना कठिन था। मगर आवाज, विचार, नारे और संकल्पशक्ति, सब कुछ लेनिन के थे।

हमें सशस्त्र क्रांति की तैयारी करनी है। हमें फौजों को मजदूरों का हिमायती बनाना है, सबसे तपे हुए बोल्शेविकों को विभिन्न प्रान्तों और शहरों में भेजना है, कल-कारखानों में लाल गार्ड टुकड़ियों को हथियारों से और अच्छी तरह लैस करना है उनके लिए अनुभवी, समझदार कमांडर नियुक्त करने हैं।

हमें यह ठीक-ठीक निर्धारित करना है कि क्रांति की घड़ी आने पर कौन सी लाल गार्ड टुकड़ी किधर बढ़ेगी।

और क्रांति का नेतृत्व सैनिक क्रांतिकारी समिति करेगी।

यह थी सशस्त्र क्राति की लेनिन की योजना। केंद्रीय समिति ने उस पर विचार किया। अच्छी योजना है। सब ठीक है, स्पष्ट है। सभी सदस्य सहमत हो गये।

किन्तु केंद्रीय समिति मे दो सदस्य ऐसे भी थे, जो अपने को कहते तो बोल्शेविक थे, मगर सर्वहारा की क्राति का जोरदार विरोध करते थे। वे पार्टी और लेनिन की योजना से सहमत नही थे। ये दो सदस्य थे जिनोव्येव और कामेनेव।

जिनोव्येव और कामेनेव बहस करना जानते थे। दोना उत्कृष्ट वक्ता थे। मगर जब क्राति का सवाल उठा तो दोना डर गये।

"क्या मजदूर वर्ग मे राज्य का सचालन करने की योग्यता है?" दोना ने अविश्वास से पूछा।

इस निर्णायक घडी मे दोना ने क्राति की योजना का विरोध किया। और इतना ही नही। उन्होने एक मेशेविक अखबार मे इसकी खबर भी छापी और इस तरह अस्थायी सरकार को, पूजीपतिया को बता दिया कि बोल्शेविक कहा, कब और कैसे क्राति शुरू करनेवाले है।

नही, वे साथी नही, गद्दार थे!

"मुझे यह कहने मे कोई झिझक नही कि मै अब इन दोना को अपना साथी नही मानता," रोषपूर्वक व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा। "ऐसी कठिन घडी मे, ऐसे महत्वपूर्ण काम मे ऐसा भारी विश्वासघात!"

लेकिन लेनिन विचलित नही हुए। क्राति होकर रहेगी। केंद्रीय समिति जी जान से क्राति की तैयारी मे जुट गयी।

स्मोल्नी में

नेवा के किनारे पर, जहा वह एकाएक मुडकर लादोगा झील की ओर बहने लगती है, वहा पहले जमाने मे तारपीन की फैक्टरी हुआ करती थी। यहा बडे-बडे कडाहो मे "स्मोला" यानी तारपीन तैयार किया जाता था।

बाद मे फैक्टरी की जगह पर एक मठ बनाया गया और उसके बाद अभिजातवर्गीय बालिकाओ का विद्यालय। तारपीन फैक्टरी की जगह पर बना होने के कारण ही विद्यालय का नाम स्मोल्नी पडा।

१९१७ में ज़ार की तरुणी पलटन के बालिका विद्यालय को बद कर दिया गया। स्मोल्नी मजदूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत का कार्यालय बन गया। सैनिक क्रातिकारी समिति का मुख्यालय भी यहा था।

सैनिक क्रातिकारी समिति सभी कारखानों से सपर्क बनाये रखती थी और उनमें लाल गार्ड टुकड़िया सगठित करती थी। पेत्रोग्राद के बीस हज़ार मजदूर हथियारों से लैस थे और क्राति की शुरूआत के आह्वान का इन्तज़ार ही कर रहे थे। सैनिक क्रातिकारी समिति ने बूर्जुआ सरकार और उसके प्रति वफादार अफसरों के विरुद्ध बाल्टिक बेड़े के जहाज़ियों को उभारने के लिए बोल्शेविक कमिसार भेजे। जहाज़ी सघर्ष के लिए तैयार हो गये। सिपाहियों की भी असख्य टुकड़िया बोल्शेविकों और सैनिक क्रातिकारी समिति के पक्ष में हो गयी।

जहा तक अस्थायी सरकार का सवाल है, तो वह बोल्शेविकों और मजदूरों से डरती थी।

उसने आदेश जारी किया

'मजदूरों के हथियार रखने पर पाबदी लगायी जाती है। समिति के सभी सदस्यों को गिरफ्तार किया जाये। लेनिन को पकड़कर कमरे में बद कर दिया जाये।'

निश्चय ही अस्थायी सरकार हाथ पर हाथ धरे नही बैठी थी। वह बोल्शेविकों और मजदूरों के विरुद्ध अपनी सारी ताकत समेट रही थी, फौजों को वापस बुला कर पेत्रोग्राद की घेराबदी करने की कोशिश कर रही थी, ताकि क्रातिकारी बाहर की दुनिया से कट जायें।

लेनिन ने केन्द्रीय समिति के सदस्यों को लिखा कि अब क्राति को और स्थगित करना ठीक न होगा। निर्णायक घड़ी आ गयी है।

चौबीस अक्तूबर को व्लादीमिर इल्यीच ने केन्द्रीय समिति के नाम एक सदेश फिर भेजा। फोफानोवा उसका जवाब लायी। लेनिन को अभी गुप्तवास से निकलने की इजाज़त नहीं दी गयी थी। सड़क पर अगर किसी अफसर ने उन्हे देख लिया, तो वह गोली चला सकता है।

व्लादीमिर इल्यीच के नेतृत्व मे केन्द्रीय समिति निर्णायक लड़ाई की अतिम तैयारिया कर रही थी। लेकिन क्राति का ठीक समय अभी तय नहीं किया गया था।

अगले दिन, २५ अक्तूबर को स्मोल्नी मे सोवियतो की दूसरी काग्रेस शुरू होनेवाली थी। उसमे भाग लेने के लिए सभी नगरो से प्रतिनिधि आये थे।

"क्राति को आज ही, सोवियतो की काग्रेस के उदघाटन से पहले ही शुरू करना जरूरी है," व्लादीमिर इल्यीच सोच रहे थे। "आज अस्थायी सरकार को अपदस्थ कर कल सारी सत्ता सोवियतो को सौंप दी जाय।

किन्तु समय तो बीत रहा था। उन्होने केद्रीय समिति को एक नोट और भेजा। उन्हे चैन नही थी। सेर्दोबोल्स्काया सडक के इस उजले फ्लैट मे और ठहरना इस समय उन्हे भारी लग रहा था। यहा तक कि खुलकर चहलकदमी भी नही कर सकते थे। कही कोई सुन न ले और पूछ न बैठे कि वहा, फोफानोवा के यहा कौन है?

शाम को फोफानोवा काम से लौटी। व्लादीमिर इल्यीच ने उसे दम भी नही लेने दिया कि कहा

"कृपया, एक पत्र और पहुचा दीजिये। अभी इसी क्षण। नही नही, कोट मत उतारिये। मैं अभी "

और तेजी से कमरे मे जाकर केद्रीय समिति के सदस्यो को लिखने लगे

"साथियो।

मै ये पक्तिया २४ तारीख की शाम को लिख रहा हू। स्थिति परम नाजुक है। पूरी तरह स्पष्ट है कि अब सचमुच ही क्राति को और टालना मौत को बुलावा देना है।"

आगे उन्होने लिखा कि आज ही क्राति शुरू करना, अस्थायी सरकार को अपदस्थ कर सत्ता अपने हाथो मे लेना अत्यावश्यक है। अगर आज हम फैसला नही कर पाये, तो इतिहास इस चूक के लिए हमे कभी माफ नही करेगा। कल तक देर हो सकती है। अतिम और निर्णायक घडी आज है।

'इस पत्र को तुरत पहुचा दीजिये," लेनिन ने अधीरता के साथ फोफानोवा से अनुरोध किया।

और फिर वह फ्लैट मे अकेले रह गये। उनकी व्याकुलता की सीमा नहा थी! वह बैठ गये, मानो कुछ सुन रहे थे, किसी चीज का इन्तजार कर रहे हो।

कुछ समय बाद सचमुच दरवाजे की घटी बजी। एइनो राहिया ने अन्दर प्रवेश किया।

व्लादीमिर इल्यीच, सोच सकते है कि शहर मे क्या हो रहा है?

और फिर खुद ही स्नान गया

बाहर मौसम ऐसा है कि घर से बाहर निकलना भी मुश्किल है। नेवा की तरफ से ठंडी हवा के तेज झोंके चल रहे हैं। सड़के बाहर से ढकी हैं। गीली बर्फ गिर रही है। बीच में कभी-कभी बारिश की रिमझिमी भी शुरू हो जाती है। मगर लोग फिर भी जहां-तहां फाटकों के नीचे इकट्ठे हो रहे हैं। सड़कों पर सिपाहियों और सशस्त्र मजदूरों से भरी लारियां गुजर रही हैं। कभी-कभी कहीं से गोलियां चलने की आवाजें आ जाती हैं। फिर सब शांत हो जाता है। वातावरण अत्यधिक तनावपूर्ण बना हुआ है।

पुलों के पास अलाव जले हुए हैं। लाल गार्ड पुलों पर पहरा दे रहे हैं। दिन में अस्थायी सरकार ने नेवा के सभी पुलों को खोलने का आदेश दिया था। युंकेरों ने पुलों से राहगीरों को खदेड़कर ट्रैफिक रोकने की कोशिशें की। मगर वे निकोलायव्स्की पुल ही खोल पाये थे कि हमारे लोग आ गये। उन्होंने युंकेरों को खदेड़ दिया।

अगर युंकेर सभी पुलों को खोल देते तो आफत हो जाती। सभी इलाके एक दूसरे से कट जाते और तब युंकेर एक-एक करके सभी क्रांतिकारी मजदूरों को दबा देते।

व्लादीमिर इल्यीच खामोशी से राहिया की सुनते रहे। फिर झटके से कुर्सी से खड़े हुए और बिना कुछ कहे अलमारी से अपने नकली बाल निकाले। 'यह क्या कर रहे हैं?' राहिया को चिन्ता हुई। पार्टी ने उसे, एइनो राहिया को लेनिन की सुरक्षा का काम सौंपा था।

'व्लादीमिर इल्यीच, आप कहां?'

'मुझे अभी इसी क्षण स्मोल्नी जाना है!' व्लादीमिर इल्यीच ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया।

'युंकेर आपको मार डालेंगे!'

व्लादीमिर इल्यीच ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप आइने के सामने खड़े होकर नकली बाल पहनने लगे। फिर पुराना सा कोट और ओवरकोट भी पहना। राहिया समझ गया कि उनसे बहस करना बेकार है, इसलिए खुद भी चलने की तैयारी करने लगा।

फिर यह भी तय हुआ कि व्लादीमिर इल्यीच दांत दुखने का बहाना कर गाल पर पट्टी बांध लें। तब कोई भी उन्हें पहचान नहीं पायेगा।

वे घर से निकले। व्लादीमिर इल्यीच स्मोल्नी जा रहे थे।

क्रांति की शुरुआत

सेर्दोबाल्स्काया सडक से स्मोल्नी कोई दस वर्स्ट दूर था। ट्राम कही नही दिखायी दे रही थी। लोग घरो मे छिपे हुए थे। अधेरा ऐसा कि हाथ को हाथ न सूझे। पाव रह-रहकर कीचड मे जा पडते थे। हवा चेहरे पर थपडे मार रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच हवा के सामने छाती ताने और सिर को थोडा सा झुकाये हुए चल रहे थे।

"ठहरिये, ठहरिये!" एइनो राहिया पूरी आवाज से चिल्लाया। सामने से ट्राम आ रही थी। वही पास ही मे उसका स्टाप था।

ट्राम रुकी, तो वे उछलकर उसमे चढ गये। वह लगभग खाली थी और डिपो वापस लौट रही थी। ठीक ही हुआ। कम से कम आधा रास्ता तो पैदल नही चलना पडेगा।

व्लादीमिर इल्यीच बडे ध्यान से अधेरे मे शरद की नीरव रात मे देख रहे थे। सशस्त्र सिपाहियो से भरी एक लारी ट्राम के बराबर आयी और आगे निकल गयी। फिर दूसरी लारी भी।

"आज पूजीपतियो को मजा आ जायगा" किसी ने कहा।

"ट्राम डिपो जा रही है। सब उतर जाये," कण्डक्टर की आवाज सुनायी दी।

व्लादीमिर इल्यीच और एइनो राहिया फिर सुनसान, अधेरी सडको पर चल पडे। बस कही युंकेर रास्ते मे न मिल जायें!

तभी खडजो पर घोडो की टापे सुनायी दी। सामने से दो घुडसवार युंकेर आ रहे थे।

एक ने जोर से लगाम खीची। घोडा हिनहिनाते हुए पिछले पैरो पर खडा हो गया।

'तुम्हारा अनुमति पत्र!' युंकेर ने राहिया से पूछा।

राहिया के साथी बूढे की तरफ युंकेरो ने कोई ध्यान नही दिया। बूढे से भला क्या खतरा! वह हाथ से पट्टी बधे गाल को थामे छोटे छोटे डग भरता हुआ बगल से गुजर गया।

'कैसा अनुमति पत्र?' नासमझी का बहाना करते हुए एइनो राहिया ने जवाब मे पूछा। वह इधर उधर की बात कर लेनिन को निकल जाने

या मौका देना चाहता था। "मैं जानता भी नहीं कि अनुमति पत्र कहां मिलता है। और फिर चाहिये भी किसलिए? उमर बगैर भी वहां जानता कि मैं मजदूर आदमी हूं।"

एक युंकेर ने गाली देते हुए चाबुक उठाया।

"अरे, रहने भी दो उसे," दूसरे ने उसे राय दिया।

दोनों घुड़सवार अपने रास्ते चल दिये। राहिया भी उस तरफ़ दौड़ पड़ा, जिधर लेनिन गये थे।

'धन्यवाद," राहिया के पहुंचने पर व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

स्मोल्नी के सामने का विशाल मैदान, जिसके बीचोंबीच से एक सड़क गुजरती थी और जिसमें कहीं कहीं पर पेड़ और झाड़ियां उगी हुई थीं, लोगों की भीड़ से गुलजार था। जगह-जगह पर अलाव जल रहे थे, चिंगारियां छोड़ रहे थे। सिपाही उनके इर्दगिर्द खड़े आग ताप रहे थे। एक के बाद एक लारी स्मोल्नी पहुंच रही थी। उनसे हथियारबंद जहाजी और मजदूर उतर रहे थे, स्मोल्नी में इकट्ठे हो रहे थे।

मैदान से सैनिकों को कतारों में खड़े होने के लिए आदेश सुनायी दे रहे थे।

हर तरफ़ भीड़ का कोलाहल था। स्मोल्नी के पास तोपें खड़ी थीं। प्रवेशद्वारों के सामने सन्तरी खड़े थे। स्मोल्नी की लंबी इमारत की तीनों मंजिलों की खिड़कियां उजाले में नहा रही थीं। तेज प्रकाश से जगमगाते स्मोल्नी और उत्तेजना से दहकती आंखोंवाले लोगों का यह दृश्य बहुत ही शानदार था।

व्लादीमिर इल्यीच का दिल बुरी तरह धड़क रहा था। आखिरकार वह दिन वह घड़ी आ ही गयी, जिसके लिए वह अब तक संघर्ष करते रहे थे।

व्लादीमिर इल्यीच और एइनो राहिया को स्मोल्नी में जाने दिया गया। व्लादीमिर इल्यीच के ओवरकोट के बटन खुले हुए थे, हाथ जेबों में थे और नकली बालों को वह भूल ही चुके थे। तेज कदमों से चलते हुए उन्होंने लोगों और अम्यूनिशन के बक्सों से भरा गलियारा पार किया और सीधे तीसरी मंजिल पर सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमरे की ओर लपके।

समिति के सभी सदस्य वहां पहले से ही मौजूद थे। पिछले बारह घंटा

से समिति की मीटिंग चल रही थी, जिसमे क्रांति को कायरूप देने के सवाल पर विचार हो रहा था।

बीच-बीच मे बार-बार लाल गार्ड, सैनिक टुकडिया और कल कारखानो के हरकारे दौडे चले आते थे।

लेनिन कमरे में दाखिल हुए। उन्होने टोपी उतारी और उसके साथ-साथ हमेशा के लिए नकली बाल भी उतार दिये, जिनकी अब कोई जरूरत नही रह गयी थी।

सैनिक क्रातिकारी समिति के दुबले पतले और उनीदेपन के कारण सूजी हुई आखोवाले अध्यक्ष निकोलाई इल्यीच पोदवाइस्की लेनिन की ओर लपके

"व्लादीमिर इल्यीच!"

लेनिन के आने से उन्हे कितनी खुशी हुई थी! मानो लेनिन के साथ साथ जोश और साहस भी आ गये हो। पोदवाइस्की अधीरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह क्या कहेगे।

"देरी का मतलब होगा मौत!" व्लादीमिर इल्यीच ने जल्दी जल्दी और दृढता के साथ कहा। "हमे तारघर और टेलीफोन एक्सचेज रेलवे स्टेशनो और पुलो पर कब्जा कर लेना है। अभी और इसी रात!"

हरकारे दौडे दौडे उस कमरे म आये, जहा सैनिक क्रातिकारी समिति का, क्राति का मुख्यालय था और जहा अभी अभी लेनिन आये थ।

"लेनिन आ गये है!" सारे स्मोल्नी मे बिजली की तरह खबर फैल गयी।

हरकारो को आदेश दे दिये गये। सैनिक क्रातिकारी समिति का आदेश था तारघर टेलीफोन एक्सचेज, रेलवे स्टेशनो और पुलो पर सभी सरकारी कार्यालयो पर कब्जा कर लिया जाये।

"लाल गार्ड, कतारबन्द!" स्मोल्नी के सामने का मैदान गूज गया।

अलाव जल रहे थे। सशस्त्र मजदूरो से भरी लारिया अक्तूबर की रात के अधेरे म जाकर खो रही थी। सिपाहियो और जहाजियो की टुकडिया भी सैनिक क्रातिकारी समिति का आदेश पूरा करने जा रही थी।

२४ अक्तूबर (वर्तमान तिथिक्रम के अनुसार ६ नवबर) की रात को सशस्त्र मजदूरो और क्रातिकारी सैनिक टुकडियो ने रूस की राजधानी पेत्रोग्राद को अपने कब्जे म ले लिया।

महान अक्तूबर समाजवादी क्राति सपन्न हो गयी।

शीत प्रासाद पर कब्जा

अस्थायी सरकार अपने हिमायतियो के साथ शीत प्रासाद म डेरा डाले हुई थी। शीत प्रासाद का एक अग्रभाग नेवा नदी की ओर था और दूसरा विशाल प्रासाद स्क्वायर की ओर। वह सफेद स्तभो और मूर्तियो से सजा हुआ था। कार्निसो पर बडी-बडी मूर्तिया और कलश बने हुए थे। शिखर पर पख फैलाये हुए बहुत बडी सुनहरी चील बनी हुई थी। पहले इस प्रासाद मे जार रहता था।

लेनिन सैनिक क्रातिकारी समिति के अध्यक्ष पोद्वोइस्की से बोले

'सारा पत्रोग्राद हमारे अधिकार मे है, पर शीत प्रासाद पर अभी कब्जा नही हो पाया है। उस पर भी यथाशीघ्र कब्जा कर अस्थायी सरकार को गिरफ्तार करना है।

२५ अक्तूबर को, अक्तूबर क्राति की पहली सुबह को लोगो ने लेनिन की 'रूस के लोगो के नाम" अपील पढी।

उसमे लेनिन ने लिखा था कि अस्थायी सरकार को अपदस्थ कर सोवियतो ने सत्ता अपने हाथो मे ले ली है। क्राति विजयी रही है।

बात सचमुच ऐसी ही थी। अस्थायी सरकार के हाथो म कोई सत्ता नही रह गयी थी। मगर उसके मत्रियो ने अपने को शीत प्रासाद म बन्द कर लिया था।

'यह क्या बात है?" लेनिन ने कठोरता के साथ पोद्वोइस्की से पूछा।

'घबराइये नही। शीत प्रासाद आज हमारा हो जायगा," सैनिक क्रातिकारी समिति के अध्यक्ष न जवाब दिया।

लाल गार्ड टुकडियो और क्रातिकारी दस्तो को शीत प्रासाद घेरने का आदेश दे दिया गया।

मजदूरो और सैनिको ने शीत प्रासाद के आसपास की सडको और पहुच मार्गो पर अधिकार कर लिया। शीत प्रासाद चारो ओर से घिर गया। खास खास जगहो पर तोपे लगा दी गयी। तारपीडो नौकाओ न धीरे धीरे नेवा मे प्रवेश कर शीत प्रासाद के सामने लगर डाल दिया।

नेवा मे ही खडे तीन चिमनियावाले युद्धपोत 'अव्रोरा" की तोपे भी शीत प्रासाद की ओर तन गयी। नाकेबदी पूरी हो गयी। यह २५ नवबर, १९१७ की रात की बात है।

लोगो को १९०५ का खूनी रविवार याद था। तब यहा, इसी प्रासाद के सामने के विशाल, भव्य प्रागण मे पीटसबग के कल-कारखानो के हजारो मजदूर शातिपूर्ण ढग से और देव प्रतिमाए लिये हुए इकट्ठे हुए थे। वे "पितातुल्य" जार से सहायता की प्रार्थना करने, रोटी की भीख मागने आये थे। मगर बदले मे उन्हे मिली गोलिया। उस रविवार को शीत प्रासाद के सामने स्क्वायर मे हजारो निहत्थे, निरीह मजदूरो का खून बहा।

इसलिये इस बार, अक्तूबर, १९१७ मे, मजदूर यहा देव प्रतिमाओ के साथ नही आये।

शीत प्रासाद, अब के देखना हमारी ताकत!

कमिसार और सैनिक क्रातिकारी समिति के सदस्य कारो और घोडो पर मोर्चाबदियो का निरीक्षण कर रहे थे।

"साथियो, धीरज धरिये! थोडी सी ताकत और बढा ले। साथी लेनिन क्राति का नेतृत्व कर रहे हैं।"

"लेनिन!" मजदूरो और सैनिको की मोर्चाबदिया गूज गयी।

स्मोल्नी मे लेनिन को लगातार रिपोर्टें मिल रही थी कि शीत प्रासाद के घेराव का काम कैसे चल रहा है। वह पेंसिल हाथ मे लिये हुए नक्शे पर झुके हुए थे। इन सडको पर अमुक अमुक टुकडिया तनात है, अमुक टुकडी यहा है यहा आदमियो की सख्या बढानी होगी। क्रानश्तादत से जहाजी आ गये है। युद्धपोत "अव्रोरा" तयार खडा है

"साथियो, समय हो गया है। हमला शुरू कर दीजिये!" लेनिन ने आदेश दिया।

शहर मे ठडी साझ उतर आयी थी। हवा चल रही थी। घरो के दरवाजे बद हो चुके थे। प्रकाशरहित खिडकिया अपरिचित सी लग रही थी। सडको पर जगह-जगह पर अलाव जले हुए थे। हवा मे कडुआ धूआ मिला हुआ था।

शीत प्रासाद का घेरा कसता जा रहा था।

उधर प्रासाद मे भी लोग हाथ पर हाथ धरे नही बठे थे। वे भी लडाई की तयारी कर रहे थे। युकेरो और अफसरो ने लकडियो के बैरिकेड खडे कर प्रासाद के सभी रास्ते बद कर दिये। बैरिकेडो के बीच मशीनगनें तनात थी।

९*

शीत प्रासाद के इर्दगिर्द अशुभ नीरवता छायी हुई थी।

स्मोल्नी से सैनिक-क्रांतिकारी समिति को पुन लेनिन का सदेश मिला ' देर करना अब ठीक नही। शीत प्रासाद पर हमला तुरत शुरु करिये।"

और रात के अंधेरे मे, खामोशी मे नेवा के ऊपर का आसमान तोपा की गडगडाहट से गूज उठा, हवा थर्रा गयी।

' अव्रोरा " की तोपा ने हमला शुरू करने का सकेत दिया था।

समुद्र की विकराल लहरो की तरह लाल गाड और सैनिक शीत प्रासाद की ओर बढ चले। पास की सडको से तोपें गोले बरसाने लगी। मशीनगनो से गोलिया की बौछार शुरु हो गयी। शीत प्रासाद के गिर्द खडे लकडी के बैरिकेडो पर आग बरसाती हुई बख्तरबन्द गाडी घडघडाती हुई प्रासाद स्क्वायर की ओर बढी। युकेर हथियार फेंक प्रासाद के अदर भागे।

हुर्रा! मजदूर क्राति जिन्दाबाद!" युकेरो और अफसरो का पीछा करते हुए लाल गाड और सैनिक चिल्लाये।

लाल सनिको की टुकडिया प्रासाद म दाखिल हुइ। पहली बार उन अदर से देखकर आखे चकाचौध हो गयी सैकडो कमरे और हॉल, बिल्लौर के फानूस मखमल, रेशम, तसवीरे मूर्तिया, कीमती फर्नीचर, बड-बडे दपण

किसी लाल गाड न सुनहरे फ्रेम से मढे दपण पर सगीन से चोट की और झनझनाकर काच के टुकडे जमीन पर बिखर गये।

'पागल हो गय हो क्या?' साथिया न उसे डाटा। ' आज स यह जार की नही, हमारी, जनता की सपत्ति है।

बदूक तान हुए लाल गाड और सनिक आगे, और आगे बढत गये। उनका नतत्व कर रहे थे अन्तानोव आव्सयेको, येरेमयेव, पाद्वाइस्की, आदि। गोटा किनारीवाली नीली वरदिया पहन प्रासाद के नौकरो की डर स मारे घिग्घी बध गयी थी। अस्थायी सरकार के सभी मत्रिया न अपने को एक हॉल म बद कर लिया था और युकर इस हॉल की रक्षा कर रहे थ।

' युकेरो, अफसरो, हथियार डाल दो! और श्रीमान मत्री लोगो, आप गिरफ्तार ह!"

रात बहुत हो चुकी थी, मगर स्मोल्नी की सभी खिडकिया तेज उजाले स जगमगा रही थी। सीढियो, गलियारो और कमरो म लोगो की भीड

लगी हुई थी। सभी बेहद उत्तेजित थे। शोर बेचैनी में शीत प्रासाद के समाचारों का इन्तज़ार कर रहे थे।

ज़ोर-ज़ोर से बूट बजाते हुए तरुण सैनिक क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष पाद्वाइस्की ने कमरे में प्रवेश किया। अक्तूबर महीने की ठंड और हवा से उनका चेहरा कठोर सा हो गया था।

"साथी लेनिन! शीत प्रासाद पर कब्ज़ा कर लिया गया है," सैनिक ढंग से सल्यूट करते हुए उन्होंने कहा।

लेनिन झटके से उठे हुए और पादवाइस्की को कमकर गले लगा लिया।

पहली आज्ञप्ति

सैनिक क्रांतिकारी समिति की बैठक दो दिन से चल रही थी। इस बीच किसी ने मिनट भर भी आराम नहीं किया। बैठक में लेनिन के अलावा स्वेदलोव, स्तालिन, दज़ेर्जीन्स्की, बूबनाव, पादवोइस्की अन्तानोव ओवसेयेन्को और बहुत से दूसरे बोल्शेविक भाग ले रहे थे। दो रात से व्लादीमिर इल्यीच ने आंख नहीं झपकायी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने उनके खुशी से खिले हुए, मगर बेहद थके हुए चेहरे को देखा, तो मुंह से आह निकल गयी।

"व्लादीमिर इल्यीच को आराम चाहिये, पर हमारे पास अपना घर भी तो नहीं है। रिश्तेदार दूर रहते हैं। समझ में नहीं आता क्या करूं," वह बाच-ब्रूयेविच से अपनी चिन्ता छिपा न पायी।

बाच-ब्रूयेविच जेनेवा के दिनों से व्लादीमिर इल्यीच के घनिष्ठ साथी और सहायक थे। वह "ईस्क्रा" के लिए लेख लिखते थे, रूसी मज़दूरों को पार्टी साहित्य भेजने का इंतज़ाम करते थे। १९०५ में उन्होंने रूसी मज़दूरों को बहुत बड़ी मात्रा में हथियार भी भिजवाये थे।

"मेरा घर किस लिये है?" उन्होंने जवाब दिया।

और तुरंत ही व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को जबरदस्ती स्मोल्नी के सामने खड़ी कार में बिठा दिया।

व्लादीमिर इल्यीच पीछे की सीट पर बैठे ही थे कि सो गये और जब घर पर पहुंचे तो एकाएक यों जग गये, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो।

"पहले कुछ खा लें," बोंच-ब्रूयेविच ने कहा।
और धीरे से, ताकि घर में सोये लोग जाग न जायें, उन्होंने खाने की चीजें मेज पर सजायीं। रोटी, पनीर और दूध।
"बहुत बढ़िया खाना है," व्लादीमिर इल्यीच ने तारीफ की।
खाना खाते हुए वे उन दिनों घटी घटनाओं की याद करते रहे। समाजवादी क्रांति हो चुकी थी। अब हमेशा-हमेशा के लिये उस महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के नाम से पुकारा जायेगा।
फिर चर्चा भावी जीवन की चल पड़ी। नींद के बारे में वे लगभग भूल ही गये। आखिरकार बोंच-ब्रूयेविच से न रहा गया
'व्लादीमिर इल्यीच, अब कुछ सो लीजिये। नहीं तो थक हार जायेंगे।"
और वह व्लादीमिर इल्यीच को अपने कमरे में ले गये। कमरे में खिड़की के पास लिखने की मेज भी रखी थी। व्लादीमिर इल्यीच लिखने की मेज और कलम के बगैर नहीं रह सकते थे। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना घर की मालकिन के कमरे में सोफे पर सो गयीं।
व्लादीमिर इल्यीच ने बत्ती बुझा दी। पर लाख कोशिश करने पर भी सो नहीं पाये। मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। कल के दिन से नये राज्य का, दुनिया में मजदूरों किसानों के पहले राज्य का निर्माण करना है।
व्लादीमिर इल्यीच ने कान लगाकर सुना। सारे घर में खामोशी थी। वैसे कभी न थकनेवाले बोंच-ब्रूयेविच भी शायद शांति से सो गये थे। व्लादीमिर इल्यीच ने लैम्प जलाया और मेज के पास बैठ गये। बाहर अंधेरी रात थी। कोई एक मिनट व्लादीमिर इल्यीच सिर को थोड़ा सा झुकाये हुए बिना हिले-डुले बैठे रहे, मानो अपने विचारों को सुन रहे हों। इस सुनसान, अंधेरी रात को वह बहुत गंभीर और विचारमग्न थे।
फिर उन्होंने कलम उठायी और लिखने लगे।
लेनिन ने लिखा कि आज से सभी जमींदारों, रईसों, मठों और *गिरजाघरों की जमीन किसानों को मुफ्त दे दी जाती है।* जो खुद काश्त नहीं करता, वह जमीन का मालिक नहीं बन सकता। जो काश्त करता है, वही मालिक भी होगा।
लेनिन उमंग में भरकर जनता के सदियों पुराने सपने और आशा के

बारे मे लिख रहे थे। सोवियत राज्य का जीवन इस सपने को, इस आशा को साकार करने से शरू हो रहा था।

उस क्षण व्लादीमिर इल्यीच मन ही मन कितना हल्का, कितना प्रमुदित महसूस कर रहे थे। अशाति, बमो के धमाका और हमला के बाद पेत्रोग्राद शात हो गया था। अघेरी सडक पर सिफ एक ही खिडकी म उजाला था। ऐसा ही शूशेन्स्कोये मे भी होता था। सारी बस्ती सोयी हुई होती थी और केवल निर्वासित उल्यानोव के घर म ही हग लैम्प जल रहा होता था।

व्लादीमिर इल्यीच ने लिखना बद कर दिया। बाहर आसमान म उजाला होने लगा था। सुबह करीब आ गयी थी।

"अब दो एक घटे सो सकता हू," व्लादीमिर इल्यीच न सोचा और लेट गये। सिर तकिये पर रखा ही था कि एक दम गहरी नीद म खो गये।

मेज पर लिखा हुआ कागज पडा हुआ था।

बाहर सुबह का उजाला बढता जा रहा था। शीघ्र ही आसमान म धुधले बादलो के पीछे से सूरज भी ऊपर चढ आया और किरणे उस कमरे म खेलने लगी, जहा व्लादीमिर इल्यीच सोये हुए थे। वे उस कागज पर भी पडी, जिस पर सबसे ऊपर बडे बडे अक्षरो म लिखा था "भूमि सबधी आज्ञप्ति।"

खभोवाला सफेद हॉल

पहले यहा उत्सव मनाये जाते थे। सगीत गूजता था। नृत्य होते थे। लकडी के पालिशदार फश पर स्मोल्नी विद्यालय की लडकियो की रेशमी जूतिया फिसला करती थी।

ओरलोव इलाके से आये गरीब सैनिक ने सपने मे भी नही सोचा था कि कभी वह भी इस खभोवाले सफेद हॉल मे पैर रखेगा। तब उसे स्मोल्नी के नजदीक भी नही फटकने दिया जाता।

और अब अब वह इस हॉल मे हो रही सोवियतो की दूसरी काग्रेस म भाग ले रहा था।

स्मोल्नी का सफेद हॉल लोगो से खचाखच भरा हुआ था। उनमे काग्रेस म भाग लेनेवाले भी थे और दशक तथा दूसरे लोग भी, जैसे धारीदार

कमीजें और नीली जैकेटें पहने और कमर पर हथगोले लटकाये जहाज़ी, शिशिर प्रासाद पर कब्जा करनेवाले हथियारबन्द लाल गार्ड, दूर-दूर के गांवों से सोवियतों के प्रतिनिधियों के तौर पर आये हुए दढ़ियल किसान और कल-कारखानों के मजदूर।

कुसियों और बेंचों के अलावा बहुत से लोग फ़र्श और खिड़कियों पर भी बैठे हुए थे। बहुत से बैठने की जगह न मिलने की वजह से खड़े थे। सभी की छातियों पर लाल फीतियां लगी हुई थीं। सारा हॉल तंबाकू के धूएं और शोरोगुल से भरा हुआ था।

'हम जीत गये हैं। बूर्जुआ वर्ग मुर्दाबाद! सारी सत्ता सोवियतों को!'

ओरलोव इलाके से आया सैनिक उत्सुकता भरी आंखों से सब कुछ देख रहा था। विशाल हॉल की ऊंची छतों को भी, संगमरमर के खंभों को भी और सामने की दीवार पर टंगे सुनहरे, आदमकद फ्रेम को भी। उसमें से जार का चित्र हटा दिया गया था। इसलिए अब वह खाली था।

मगर वह बड़ी व्याकुलता के साथ लेनिन के आने का इन्तज़ार भी कर रहा था।

तभी आसपास लोग चिल्लाये

"लेनिन! लेनिन!"

बहुत से उन्हें अच्छी तरह देखने के लिए अपनी जगह से खड़े हो गये।

अध्यक्षमण्डल के सदस्यों ने हॉल में प्रवेश किया और मंच पर रखी मेज के पीछे कुसियों पर बैठ गये। उनमें से एक काले चमड़े की जैकेट और कमानीरहित चश्मा पहने था। देखनेवाला उसे सैनिक भी कह सकता था और नहीं भी। पर वह लगता बड़ा दृढ़निश्चयी था।

'स्वेदलोव हैं', किसी ने सैनिक को बताया।

और फिर उसे ऊंचे कद के और दुबले पतले जुझारू बोल्शेविक फ़ेलिक्स एदमुंदोविच द्ज़ेर्जीन्स्की और चौकन्नी तथा भेदती हुई निगाहोंवाले सैनिक क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष निकोलाई इल्यीच पोदवोइस्की भी दिखाये गये।

अध्यक्ष ने कांग्रेस का उद्घाटन किया और साथी लेनिन को भाषण के लिए आमंत्रित किया।

सैनिक पंजों के बल खड़ा हो गया, ताकि अच्छी तरह देख सके कि

लेनिन नाम का यह आदमी कैसा है। उसने पाया कि वह गठीले बदन और मझोले कद के हैं। भौंह बीच म एकाएक उठती हुई बनपटियों को छू रही ह। और आखें ऐसी कि मानो सीधे आपके दिल म झांक रही हो

लेनिन तेजी से मंच पर चढे। हाल म बैठे सभी लोग खडे हो गये। टोपियां हवा म उछलने लगी।

"लेनिन जिंदाबाद!"

मंच पर खडे होकर सबसे पहले लेनिन ने सारे हाल पर दृष्टिपात किया। उनके सामने खुशी से जगमगाते चेहरे सादे और गरीबी के सूचक कपडे पहने लोगो, आम लोगों का सागर था। यहा फ्राक कोट और सफेद कमीजें पहने सभ्रांत पुरुष और फैशनेबुल पोशाकवाली भद्र महिलाए नही थी। यहा थे मजदूरो, किसानो और सैनिकों के प्रतिनिधि, यानी सिर्फ मेहनतकश लोग। लेनिन ने अनुभव किया कि वह इन लोगो के सुख और भाग्य के लिए उत्तरदायी ह।

लेनिन ने हाथ ऊपर उठाया। वह भाषण शुरू करने की इजाजत माग रहे थे। शनै शनै सारे हॉल म खामोशी छा गयी। लेकिन लोग बैठे नही। वे खडे-खडे ही लेनिन का भाषण सुनते रहे।

लेनिन ने शाति की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मजदूर और किसान युद्ध नही चाहते। सोवियत सरकार भी युद्ध नही चाहती। युद्ध का अंत करना चाहिये। आम लोग शाति से रहना चाहते ह। और तब उन्होंने अपनी शाति सबधी आज्ञप्ति पढकर सुनायी। यह आज्ञप्ति उन्होंने उसी सुबह बोंच-ब्रूयेविच के घर से स्मोल्नी लौटने पर लिखी थी।

कांग्रेस मे उपस्थित लोगो ने लेनिन को बडे ध्यान से सुना। जर्मनो के साथ लडाई चार साल से चल रही थी। लोग उससे तंग आ गये थे।

"तो यह है हमारी सोवियत सरकार, जनता के हित की सोचनेवाली न्यायप्रिय सरकार।" ओरलोव इलाके से आये सैनिक ने सोचा।

सारा हॉल "हुर्रा!" के उदघोषो से गूज गया। श्वेत हाल के मरमरी खभो ने "हुर्रा!" का ऐसा गगनभेदी उदघोष पहले कभी नही सुना था। शत शत कण्ठ एकस्वर मे गा रहे थे।

उठ अब, जजीरो मे जकडे
भूखो, दासो के ससार!

बाद मे लेनिन ने भूमि सबधी ग्राज्ञप्ति को पढा, जिसे उन्होने कल रात लिखा था। और प्रतिनिधियो ने, विशेषत किसान प्रतिनिधियो ने पुन लेनिन की आज्ञप्ति का जोशीले स्वरो म समथन किया।

२५ और २६ अक्तूबर, १९१७ को स्मोल्नी के हॉल मे हुई सोवियतो की दूसरी काग्रेस एक महान, ऐतिहासिक घटना थी। इस काग्रेस म लेनिन ने सोवियत सत्ता की स्थापना की घोषणा की थी।

इसी काग्रेस म उन्होने शाति और भूमि सबधी आज्ञप्तिया भी पढकर सुनायी और काग्रेस ने एकस्वर से उनका समथन किया।

काग्रेस ने जन कमिसारो की परिषद निर्वाचित की और व्लादीमिर इल्यीच लेनिन को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया।

इस तरह पहली सोवियत सरकार बनी।

काग्रेस खत्म हुई, तो लेनिन ने उसम भाग लेने के लिए आये मजदूरो, किसानो और सैनिको से कहा

"साथियो, अब आपको शीघ्रातिशीघ्र घर लौटना है, लोगो को हमारी विजय के बारे म बताना है। मजदूर जाति जीत गयी है। अब हमारी अपनी सोवियत सरकार है। जाइये, सारे रूस म सोवियत सत्ता को मजबूत बनाइये!"

वे ऐसे रहते थे

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना स्मोल्नी के लबे, चौडे गलियारे म जा रही थी। शाम हो गयी थी। वह घर लौट रही थी। दिन भर काम बहुत रहा था। अध्यापको, मजदूरो से मुलाकाते करनी पडी थी। स्कूल, पुस्तकालय, बालभवन, मजदूर क्लब, आदि खोलने थे, शिक्षा को मेहनतकशो के लिए नये ढग से गठित करना था।

वह थक गयी थी और अब खुशी-खुशी घर लौट रही थी।

उनका घर स्मोल्नी मे था। घर क्या था, बस एक ऊची छतवाला लबा सा कमरा था, जिसकी खिडकी अहाते म खुलती थी। कमरे के एक हिस्से को सोने के कमरे मे बदल दिया गया था जिसके एक ओर फौजी कबलो से ढकी लोहे की दो चारपाइया थी। वही पास ही मे अगीठी भी थी।

कमरे मे गुसलखाने से होते हुए जाना पडता था। गुसलखाने मे बीन-एक वाशबेसिन रहे होगे। इह पहले स्मोल्नी विद्यालय की छात्राए इस्तेमाल करती थी। "अब सभी हमारे लिए है" नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना मजाक करती थी। कमरे मे फर्नीचर बहुत साधारण था। बस एक आलमारी एक कपडा रखने की आलमारी, एक लिखने की छोटी सी मेज, एक सोफा दो कुर्सिया और एक छोटी सी गोल मेज। गोल मेज खाने के काम भी आती थी और मेहमानो के साथ बैठकर महत्त्वपूर्ण राजकीय मसलो पर बातचीत करने के भी।

नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने फर का कोट उतारा और अगीठी के पास खडी हो गयी। व्लादीमिर इल्यीच अभी नही लौटे थे। वह स्मोल्नी मे रहने के लिए इसीलिए तैयार हुए थे कि काम की जगह पास मे ही थी। जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष के कक्ष मे नये समाजवादी जीवन के निर्माण से सबधित मसले हल होते थे। यही से वे आज्ञप्तिया भी जारी हुई, जिनके अनुसार रूस मे जमीदारो और सेठ-साहूकारो का सदा-सदा के लिए खात्मा किया गया था, रेलवे, जहाजरानी बेडे, बैंक और कल-कारखानो को राजकीय सपत्ति बनाकर मजदूर वर्ग को उनका सचालन सौंपा गया।

सब हर चीज नयी थी, अभूतपूर्व थी। हर चीज का पहली बार मार्क्सवादी निर्देशन हमारे देश मे निर्माण हो रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच के कक्ष मे सुबह से शाम तक मजदूरो किसानो सैनिको और जहाजियो का जमघट लगा रहता था। वे सलाह लेने आते थे कि इन नये मजदूर किसानो के जीवन का निर्माण कैसे करना है।

'लगता है कि खाने के लिए भी समय नही निकाल पायेंगे,' नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने व्लादीमिर इल्यीच के बारे मे सोचा।

मगर तभी किसी के कदमो की आहट सुनायी दी। वही तो नही हैं? हा, लगता है कि वही है। वैसे ही तेज, हल्के कदम। गुसलखाने का दरवाजा खुला और व्लादीमिर इल्यीच कमरे मे दाखिल हुए।

'सोचा कुछ सुस्ता लू', व्लादीमिर इल्यीच की आवाज मे आह्लाद का पुट था। "खिडकी से बाहर झाका तो पाया कि सरदिया शुरू हो चुकी हैं। क्या, क्या कहती हो थोडा सा घूम आयें?"

"मैं तो कहती हू कि नौ बजे वैसे भी काम का दिन खत्म होना है" नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना ने जवाब दिया।

"देखो तो इन्हें!" मल्कोव ने उन्हें ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा। "अक्तूबर के दिनों में कहां थे?"

'शीत प्रासाद पर हमला करनेवालों के साथ। और कहां?"

पन्द्रह मिनट बाद तीनों जन कमिसारों की परिषद के स्वागत कमरे में खड़े थे। कमरा काफी बड़ा था, पर फर्नीचर बहुत साधारण था। बस बीच में लकड़ी की दो बेंचें और उनके दोनों ओर एक एक मेज और कुछ कुर्सियां।

मजदूरों ने कमरे पर निगाह दौड़ायी। "बिल्कुल हमारे घरों जैसा है।

तभी सेक्रेटरी ने दरवाजा खोला

आइये, साथी लेनिन आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

लेनिन ने खुद खड़े होकर उनका स्वागत किया। मजदूरों ने गौर किया कि लेनिन छोटे कद के तथा फुर्तीले हैं और उनकी सजीव आंखों में एक अद्भुत चमक है।

'नमस्ते साथियो। बैठिये।'

उन्हें बिठाकर लेनिन खुद भी बैठ गये। मेज के उस तरफ नहीं, बल्कि उन्हीं की बगल में। उनके हाथ में पेंसिल थी, जिसे हिलाते हुए वह जल्दी जल्दी पूछ रहे थे

"किस कारखाने से आये हैं? क्या पेशा है? कारखाने का कामकाज कैसा चल रहा है? कच्चा माल है? मजदूर नियंत्रण काम कर रहा है? यहां किस काम से आये हैं? देखिये, झिझक मत दिखाइये!"

और फिर मुस्करा पड़े।

लेनिन की मुस्कराहट से रोमान की हिम्मत बंधी और वह बिना किसी लाग-लपेट के बताने लगा कि वे यहां किस काम से आये हैं। रोमान और उसके साथी लेनिन को कारखाने के बारे में बताना चाहते, पर वे अब वहां काम नहीं करते थे। उन्हें जन कमिसारियत में काम करने भेज दिया गया था। जारशाही के जमाने के कर्मचारी सोवियत सरकार के साथ काम नहीं करना चाहते थे, इसलिए नौकरी छोड़कर भाग गये थे। और जो नहीं भागे थे, वे बेगार टाल [illegible] को भेजा गया

---

*जन कमिसारियत – मंत्रा[illegible]

"क्या सोवियत सरकार की सहायता के लिए?" व्लादीमिर इल्यीच ने बीच म टोका। "हा, और क्या?"

व्लादीमिर इल्यीच ने आखो को कुछ सिकोडा और गौर से रोमान को देखते रहे। रोमान सकोच के मारे अपने हल्के भूरे बालो मे हाथ फेरने लगा।

"लेकिन हमसे निभ नही पा रहा है, व्लादीमिर इल्यीच। उनसे हम वापस भेजने के लिए कह दीजिये। कारखाने म हम कुछ काम भी करते थे, जबकि यहा जन कमिसारियत मे हमारी स्थिति अधा जैसी है।

"आप सोचते हैं कि मेरे लिए राज्य का सचालन करना आसान है? जवाब के बदले व्लादीमिर इल्यीच ने सवाल किया। आप समझते ह कि मुझे इसका कोई अनुभव है? म भी तो पहले कभी जन कमिसारो की परिषद का अध्यक्ष नही था और हमारे दूसरे जन कमिसार भी पहले कभी जन कमिसार नही थे।"

एक मजदूर ने मानो फिर भी सहमत न होते हुए सिर हिलाया "हमारे लिए सब कुछ अपरिचित है, नया है।'

"मगर पुराने को तो हमने और आपने जड से खत्म कर दिया है! ऐसे म आप ही बताइये, नये का निर्माण कौन करेगा?"

लेनिन मजदूरो के और पास खिसक आये और समझाने लगे कि यह सही है कि मजदूरो को जानकारी, अनुभव के बगर जन कमिसारियतो म कठिनाई हो रही है। मगर सर्वहारा के पास एक तरह की जन्मजात समझबूझ है। जन कमिसारियतो मे हमारी अपनी, पार्टी की, सोवियतो की नीति पर अमल करवाने की जरूरत है। यह काम अगर मजदूर नही करेंगे, तो और कौन करेगा? सब जगह मजदूरो के नेतृत्व, मजदूरो के नियत्रण की जरूरत है।

"और अगर गलती हो गयी तो?'

"गलती होगी, तो सुधारेंगे। नही जानते तो सीखेंगे। इस तरह साथियो,' खडे होते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने दृढतापूर्वक कहा, "पार्टी ने आपको भेजा है, तो अपना कर्तव्य निभाइये।" और फिर अपनी उत्साह-वर्धक मुस्कान के साथ दोहराया, 'नही जानते तो सीखेंगे।'

लेनिन के साथ ऐसी बातचीत के बाद मजदूरो का सारा सकोच जाता रहा। अब जब तक वे सारा काम नही सीख जाते, सुबह से शाम तक वे जन कमिसारियत मे डटे रहते।

"साथी लेनिन, हम वायदा करते हैं कि अपना कर्तव्य पूरा तरह निभायेंगे, मजदूरों ने कहा।

जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के कमरे से निकलते हुए वे आपस में कह रहे थे कि व्लादीमिर इल्यीच ने ठीक ही कहा कि मजदूर किसानों की सरकार हमारी सरकार है और हम ही उसका सारा बोझ उठाना है।

कड़ुआ सबक

युद्ध ने देश को तबाह कर दिया था। पेत्रोग्राद में भुखमरी बढ़ती जा रही थी। राशन में सिर्फ चौथाई पाउण्ड रोटी मिलती थी, जो नाश्ते के लिए भी पूरी नहीं पड़ती थी। दिन में नमकीन मछली का सूप खाकर संतोष करना पड़ता था। ऐसी हालत मजदूर परिवारों की ही नहीं जन कमिसारों की परिषद के सदस्यों की भी थी। व्लादीमिर इल्यीच भी ऐसे ही रहते थे और उतना ही राशन पाते थे।

लेनिन रोजाना परिषद की मीटिंग बुलाते थे। काम बहुत था और किसी को भी टाला नहीं जा सकता था। सबसे फौरी समस्या थी भुखमरी से कैसे लड़ा जाये। अकाल से पेत्रोग्राद ही नहीं, सभी शहर पीड़ित थे। ऐसी बात नहीं कि रूस में अनाज नहीं था। साइबेरिया और वोल्गा प्रदेश में पर्याप्त अनाज था। जरूरत थी गावों में जाकर उसे इकट्ठा करने और अकालपीड़ित शहरों को भेजने की। मगर यह काम आसान नहीं था। रेलवे यातायात अस्तव्यस्त पड़ा था। इसका मतलब था कि पहले उसे ठीक करना था। शहरों में घरों को गरमाने के लिए लकड़ियों और कोयले का भारी अभाव था। इसके लिए भी रेलमार्गों का बहाल करना जरूरी था। पर असली दिक्कत यह थी कि हर जगह तोड़फोड़ और चोरबाजारी करनेवालों की भरमार थी। चोरबाजारी करनेवाले जनता की विपत्ति का फायदा उठाने पर तुले हुए थे और तोड़फोड़ करनेवाले क्रांति की जड़ काटने पर। बूर्जुआ वर्ग उनके साथ था। उसे सोवियत सत्ता फूटी आंखों नहीं सुहाती थी। उसे आशा थी कि जर्मन आकर सोवियत सरकार को उलट देंगे और तब उसकी पौ बारह होगी। बूर्जुआ वर्ग के लोग जर्मनों की जीत के ही सपने देख रहे थे।



मराया अलेक्साद्रोव्ना उल्यानोवा। १९१४।



व्ला० इ० लेनिन मक्सिम गोर्की के साथ काप्री (इटली) में। अप्रैल, १९०८।



व्ला० इ० लेनिन जाकोपान (पोलैण्ड) के बाहर सैर करते हुए। ग्रीष्म १९१४।



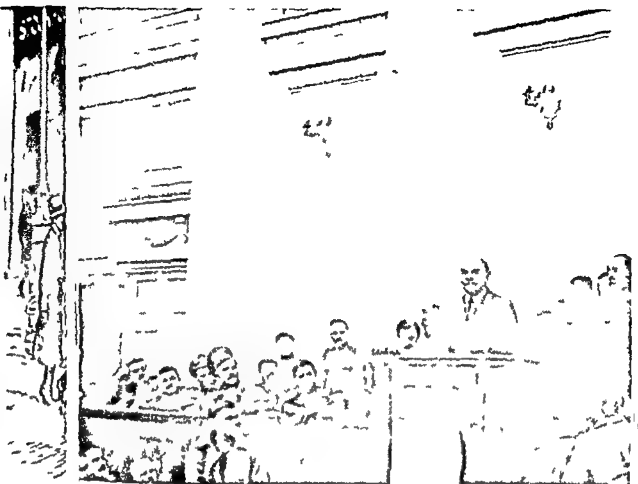
व्ला० इ० लेनिन मक्सिम गार्की के साथ काप्री (इटली) में। अप्रल, १६०८।



व्ला० इ० लेनिन जाकोपान (पोलण्ड) के बाहर सैर करते हुए। ग्रीष्म, १९१४।



स्विटज़रलण्ड म रूस जानवाल रूसी प्रवासिया क दल क साथ व्ला० इ० लनिन स्टाकहाम म। स्वीडन ३१ माच, १९१७।



व्ला० इ० लेनिन तव्रीचेस्की प्रासाद म भाषण करते हुए। पेत्रोग्राद, अप्रैल, १९१७।



याकोव मिखाइलोविच स्वेदलोव। १६१८।

ब्ला० इ० लेनिन भेस बदले हुए। रज़लीव स्टेशन, अगस्त १९१७।

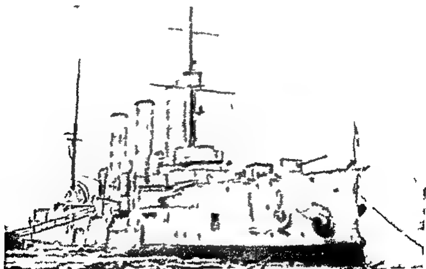


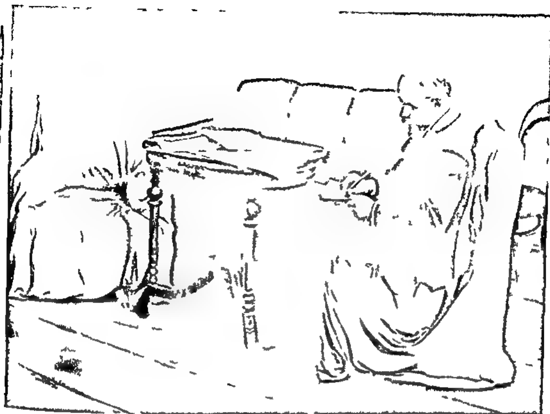
रज़लीव स्टेशन। जुलाई, १९१७ की घटनाओं के बाद ब्ला० इ० लेनिन इस झोपड़ी में छिपे थे।



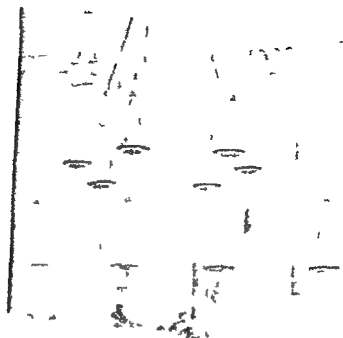
शीत प्रासाद पर धावा। भित्तिचित्र।

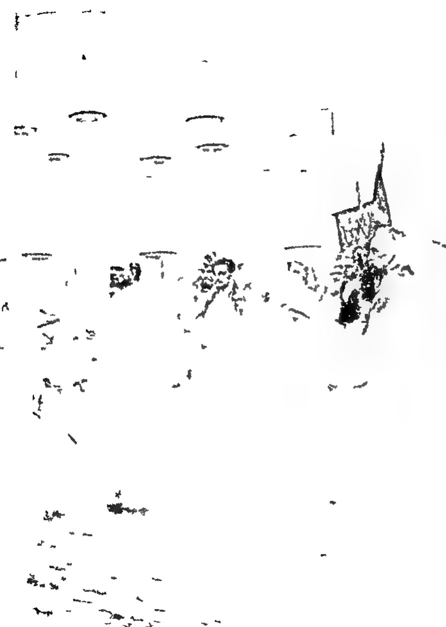
अव्रोरा युद्धपोत।





लेनिन स्माल्नी में। चित्रकार—इ० ब्रादस्की।





ला० इ० लेनिन सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में भाषण करते हुए। चित्रकार—व० सेरोव।



व्ला० इ० लेनिन अपने क्रेमलिन कक्ष में किताबों की आलमारी के पास। मास्को, १६ अक्तूबर, १९१८।



शांति सपन्न हो गयी। चित्रकार—स० लूक्नि।



गाव की खबर। चित्रकार—व० सेरोव।



व्ला० इ० लेनिन महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की पहली वर्षगांठ पर लाल मैदान में भाषण करते हुए। मास्को, ७ नवंबर, १९१८।



व्ला० इ० लेनिन या० मि० स्वेदलोव की अंत्येष्टि के अवसर पर भाषण करते हुए। मास्को, १८ मार्च, १९१९।

स्पष्ट है कि ऐसे में लेनिन के सामने चिंताओं का पहाड़ खड़ा था।

जर्मनों की सेना अभी भी काफी ताकतवर थी, जब कि रूसी पुरानी जारशाही सेना बुरी तरह तहस नहस हो गयी थी। अफसर सेना को छोड़कर भाग गये थे। सिपाही घर लौटने को आतुर थे। मातृभूमि के ऊपर गंभीर खतरा मंडरा रहा था।

"क्या किया जाये?" लेनिन सोचा करते थे। वह बार-बार जन कमिसारों की परिषद की मीटिंगें बुलाते। उसमें इस पर विचार करते कि आगे क्या किया जाये।

"साथियो, हमने शांति संबंधी आज्ञप्ति जारी की है। इसका मतलब है कि जर्मनों के साथ लड़ाई खत्म करनी चाहिये," लेनिन ने कहा।

जन कमिसारों की परिषद ने जर्मन कमान के सामने शांति का प्रस्ताव रखा। जर्मन सहमत हो गये, मगर इस शर्त पर कि जिन इलाकों पर उनका अधिकार है, वे उन्हें छोड़ेंगे नहीं।

"क्या किया जाय, मानना ही पड़ेगा। दूसरा तो कोई चारा है नहीं," लेनिन ने कहा।

दूसरा चारा सचमुच नहीं था। जनता युद्ध से, बरबादी से बुरी तरह तंग आ चुकी थी और शांति से रहना और मेहनत करना चाहती थी।

पार्टी की केन्द्रीय समिति की बैठकों में भी जर्मनी के साथ शांति के प्रश्न पर बहुत बार विचार हुआ। लेनिन का कहना था कि युद्ध की समाप्ति बहुत जरूरी है और इसमें देरी करना ठीक नहीं। सोवियत जनतंत्र को बचाने के लिए हमें किसी भी तरह की बलि देने, किसी भी तरह की शर्तें मानने के लिए तैयार रहना चाहिये। हम किसी भी कीमत पर सोवियत सत्ता को मजबूत बनाना है, मजदूर किसानों की नयी सेना गठित करनी है, अर्थव्यवस्था को बहाल करना है।

काश, सभी लोगों ने व्लादीमिर इल्यीच का समर्थन किया होता! मगर नहीं। केन्द्रीय समिति के सदस्यों के बीच गंभीर मतभेद पैदा हो गया। कमजोर और ढुलमुल लोगों ने लेनिन के शांति प्रस्ताव का विरोध किया और कहा: "यह कब्जावरों, लुटेरों के आगे घुटना टेकना है। हम ऐसी लुटेरू शांति के लिए कभी सहमत नहीं होंगे।" वे नहीं समझते थे कि सोवियत रूस कैसी भयंकर विपत्ति का शिकार होने जा रहा था। अगर शांति समझौते पर हस्ताक्षर नहीं हुए, तो ऐसा संकट अनिवार्य था।

लेनिन इस बात को समझते थे और इसलिए बहुत चिन्तित थे।

'साथियो! हम तबाही और भुखमरी के शिकंजे में फंसे हुए हैं। हममें ताकत भी बाकी नहीं रह गयी है। सोवियत जनतंत्र की रक्षा के लिए जरूरी है कि हम सांस लेने का वक्त पायें।"

अंततः व्लादीमिर इल्यीच साथियों से अपनी बात मनवाने में सफल हो ही गये।

सोवियत सरकार ने जर्मन जनरलों के पास पुनः एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा। उसके नेता त्रात्स्की थे।

किन्तु त्रोत्स्की ने लेनिन के निदेशों का उल्लंघन किया। केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार ने जमन अमान के साथ शांति दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने का फैसला किया था। यह तय हुआ था कि किसी भी कीमत पर शांति स्थापित की जानी चाहिए।

पर त्रोत्स्की ने किया क्या? उन्होंने शांति दस्तावेज पर तो हस्ताक्षर किये नहीं और हमारी तरफ से युद्धबन्दी की घोषणा कर दी। हमारे सिपाही मार्चे छोड़ छोड़कर घरों की ओर लपकने लगे। मोर्चा नहीं रह गया।

जमन फौजें निर्बाध रूस के अंदर, और अंदर घुसने लगी। वे राजधानी के बहुत नजदीक आ गयीं। पेत्रोग्राद के लिए खतरा पैदा हो गया। कहीं जमन जनरल राजधानी पर भी तो कब्जा नहीं करना चाहते? कहीं यह क्रांति का अन्त तो नहीं है?

बूर्जुआ वर्ग के लोग, चोरबाजारी करनेवाले और व्यापारी इसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके पास उन लोगों की सूचियां तैयार थीं, जिनका बाद में खात्मा करना है। और इनमें लगभग सभी बोल्शेविक और मजदूर थे।

त्रोत्स्की जमन साम्राज्यवादियों और बूर्जुआ वर्ग के बड़े काम आये।

त्रोत्स्की ने पहले भी कई बार रूस में कम्युनिस्टों की जुझारू पार्टी के निर्माण में रुकावटें डाली थीं, लेनिन और लेनिनवादियों के खिलाफ तरह-तरह के गुट बनाये थे।

केन्द्रीय समिति और जन कमिसारों की परिषद की बैठकें फिर होने लगीं। स्मोल्नी में लकड़ी नहीं थी। हॉल बहुत ठंडा था। केन्द्रीय समिति और परिषद के सदस्य ओवरकोट और फर के कोट पहनकर बैठकों में भाग लेते, कालरों को ऊपर उठाये रहते। बाहर फरवरी के महीने के बर्फीले तूफान सनसनाते रहते।

"यह बहुत कड़ुआ और अपमानजनक सबक है!" लेनिन ने कहा।

"समाजवादी मातभूमि खतरे में है! जन कमिसारो की परिषद ने मेहनतकश जनता को ललकारा। मजदूरो, किसानो और साथियो! मातभूमि की रक्षा के लिए खडे हो जाओ!"

शहरो, गावो और मजदूर बस्तियो से हजारो स्वयसेवक जन कमिसारो की परिषद और लेनिन की अपील पर आगे आये। एक नयी सेना गठित हुई।

यह लाल सेना थी। यह सोवियत सेना थी। वह जर्मन बटमारो से लोहा लेने लगी। उनका आगे बढना रोक दिया गया।

यह फरवरी, १९१८ की बात है। तब से हर साल २३ फरवरी को हम सोवियत सेना की स्थापना का दिवस मनाते हैं। उसने अनेक बार शत्रुओ से हमारी रक्षा की है और आगे भी हमेशा करती रहेगी।

लाल सेना से करारा जवाब पाकर जर्मन जनरल शाति के लिए सहमत हो गये। लेकिन अब यह समझौता और भी लुटेराना था। जर्मन हमारी और भी भूमि पर कब्जा कर चुके थे। ऊपर से वे हरजाने की माग भी करने लगे।

सोवियत सरकार को मजबूर होकर इन मागो को स्वीकार करना पडा।

पार्टी की सातवी काग्रेस ने युद्ध और शाति के बारे में जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष लेनिन की रिपोर्ट सुनी और उसका अनुमोदन किया।

कुछ महीने बाद जर्मनी में भी क्राति हो गयी और लुटेराना समझौता रद्द हो गया।

"हमारे इल्यीच बडे दूरदर्शी हैं!" मजदूरो ने मुक्तकण्ठ से लेनिन की प्रशसा की।

मास्को, मास्को

मार्च के महीने की शाम थी। पेत्रोग्राद के बाहरी छोर पर निकोलायेव्स्की लाइन के त्स्वेतोच्नाया प्लोश्चादका नामक छोटे से स्टेशन पर गाडी खडी हुई थी। प्लेटफार्म पर सैनिक गार्ड पहरा दे रहे थे। गाडी के साथ साथ लातवियाई बटालियन के सैनिक खडे थे। इंजन के टेंडर पर लगी मशीनगन रात के अधेरे को भेद रही थी।

एक डिब्बे के पास एक मझोले कद का, कमानीरहित चश्मा और चमडे की जकेटवाला आदमी लबा फौजी ओवरकोट पहने आदमी से बात कर रहा था।

"आपको विश्वास है कि प्रतिक्रातिकारी इस गाडी के बारे मे नहा जानते?' स्वेदलोव दजेर्जीन्स्की से पूछ रहे थे।

'हो सकता है कि जानते हो। पर रवाना कहा से होगी, यह नही जानते।"

"अच्छी चालाकी बरती है कि गाडी को मुख्य स्टेशन से नही, बल्कि इस छोटे से शात स्टेशन से रवाना कर रहे हैं," स्वेदलोव ने कहा।

"प्रतिक्रातिकारियो ने विस्फोट की तैयारिया की हुई थी। तोडफोड की साजिशे हर रोज प्रकाश मे आती हैं," दजेर्जीन्स्की ने जवाब दिया।

स्वेदलोव की तरह दजेर्जीन्स्की को भी जारशाही के जमाने म अनेक बार जेल, निर्वासन और कालेपानी की सजाए भुगतनी पडी थी।

अक्तूबर, १९१७ म उन्होने लेनिन और पार्टी की केद्रीय समिति के अन्य सदस्यो के साथ अक्तूबर क्राति का नेतत्व किया था। क्राति के बाद व्लादीमिर इल्यीच के सुझाव पर उन्हे प्रतिक्रातिकारियो के विरुद्ध सघर्ष के लिए गठित अखिल रूसी असाधारण आयोग (चेका) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

दजेर्जीन्स्की की नरमदिली को सभी जानते थे। मगर वे यह भी जानते थे कि क्राति के दुश्मनो के प्रति वे अत्यन्त निमम हैं। दजेर्जीन्स्की को बच्चो से विशेष प्यार था। उनका अटल विश्वास था कि सोवियत सत्ता आम जनता के लिए सुखी जीवन का निर्माण करेगी। क्राति के लिए, पार्टी के लिए, जनता के लिए वह एक क्षण भी विश्राम किये बिना दिन रात काम मे लगे रहते थे।

तभी प्लेटफाम पर कुछ लोग आते दिखायी दिये। व्लादीमिर इल्यीच तेज कदमो से आगे आगे चल रहे थे और उनके पीछे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी आ रही थी। वह हाथ पर एक चारखानेदार पट्टू डाले हुए थी।

सभी डिब्बे म सवार हुए। इजन ने सीटी दी। लाटवियाई बटालियन के सिपाही उछलकर डिब्बो के पायदानो पर खडे हो गये।

गाडी बुझी हुई बत्तिया के साथ चल पडी।

खिड़की के नजदीक [illegible] मेज के पास बैठकर व्लादीमिर इल्यीच ने बगल में कुछ कागज बिछाए और कभी कुछ ही समय पहले लिखे हुए लेख का सुधार करते। उसमें उन्होंने लिखा था कि हम अपनी जाति को महान और रूस को शक्तिशाली और समृद्ध बनाकर रहेंगे।

रूस शत्रुओं से घिरा हुआ था। प्रतिक्रियावादी उसके विनाश की भविष्यवाणी कर रहे थे। मगर लेनिन को पूर्ण विश्वास था कि हम अपनी समाजवादी मातृभूमि को महान बनाकर रहेंगे। [illegible] जा रही है और बिजली [illegible]।

गाड़ी में सब सोए हुए थे। [illegible] रात के अंधेरे में दौड़ता हुआ सावधानी से इंजन को आगे बढ़ाए जा रहा था। सजग लाटवियाई बटालियन के सैनिक ही पालियों पर खड़े पहरा दे रहे थे। और केवल व्लादीमिर इल्यीच ही मामूली से धुंधले उजाले में बैठे अखबार के लिए लेख लिख रहे थे।

उनके सामने [illegible] की बेंच पर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना हथेली पर गाल टिकाए चुपचाप सोयी हुई थीं। व्लादीमिर इल्यीच ने आहिस्ता से उन्हें धारियोंदार पट्टू ओढ़ा दिया। यह पट्टू मां ने जब वह मन्याशा के साथ स्टाकहोम आयी थीं, तब उन्हें भेंट किया था। यह मां की याददाश्त था

११ मार्च, १९१८ की शाम को स्पेशल गाड़ी सोवियत सरकार के सदस्यों को लेकर सकुशल मास्को पहुंच गयी। प्रतिक्रियावादियों को तोड़फोड़ का कोई मौका नहीं मिला। लेनिन, अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी और जन कमिसारों की परिषद ने पेत्रोग्राद छोड़ दिया। अब से मास्को सोवियत देश की राजधानी बन गया।

शुरू में व्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना क्रेमलिन के सामने होटल "नेशनल" में ठहरे। शीघ्र ही सारी जन कमिसारों की परिषद क्रेमलिन में रहने और काम करने लगेगी। पेत्रोग्राद से आने के दूसरे दिन व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना मास्को की सैर करने और क्रेमलिन देखने के लिए निकले। साथ में उनके पुराने मित्र बोंच-ब्रुयेविच भी थे। वह जन कमिसारों की परिषद के प्रबंध संबंधी मामलों के प्रभारी अधिकारी थे, इसलिए परिषद के क्रेमलिन में काम करने और रहने का इंतजाम करना उन्हीं के जिम्मे था।

अक्तूबर के दिनो मे क्रेमलिन पर यकेरा ने अधिकार कर लिया था। यहा से वे तोपो से गोले बरसाते थे। घमासान लडाई छिड गयी थी, पर क्रातिकारी टुकडिया ने सफेद गार्डों और जारशाही के चाकरो को प्राचीन क्रेमलिन से बाहर फेंक ही दिया।

वसत, १९१८ म लडाइया के बाद से क्रेमलिन उजाड पडा हुआ था। वहुत सी इमारते गोलो की मार और आग से खडहर हो गयी थी। जगह बेजगह टूटी हुई ईटो और काचो के ढेर लगे हुए थ, कूडा-करकट विखरा हुआ था

व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोस्तान्तीनोव्ना ने मैदान पार किया। सामने शाही घटा पहाड की तरह खडा था। इस ■ूबसूरत, ताबे के घट को पुराने जमाने के कुशल मजदूर हाथो ने ढाला था। शाही ताप, क्रेमलिन की प्राचीन दीवारे और ख़ूबसूरत मीनारे भी उनकी कुशल कारीगरी की गवाही दे रही थी। क्रेमलिन की हर चीज परीकथाओ की याद दिलाती थी, हर चीज प्राचीनता और इतिहास की साक्षी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ सोचते हुए से दूर दृष्टिपात किया। क्रेमलिन के टीले से मास्को का विहगम दृश्य दिखायी दे रहा था।

और फिर वह मुस्करा पडे

"शत शत अभिवादन है तुम्हारा, मास्को!'

क्राति के कदम

बोल्शेविक पार्टी की सातवी काग्रेस न जमनी के साथ युद्ध खत्म करने का फसला किया था। उसी काग्रेस मे लेनिन ने एक सवाल और भी उठाया था। यह था बोल्शेविक पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी का नाम दन का सवाल।

तब उन्होने कहा था "हमारा लक्ष्य कम्युनिज्म का निर्माण करना है। इसका मतलब है कि हम अपनी पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी नाम दना चाहिय।'

मजदूरो के साथ अपनी वहुसख्य मुलाकातो म और अपन क्रेमलिन कक्ष म काम करते हुए लेनिन हर समय नये समाज के निर्माण के बारे म सोचा करते थे। पहले, सबसे पहले कदम सबसे कठिन, सबस महत्त्वपूण होते

है। लेनिन उनके बारे में सोचते थकते नहीं थे। उनके बारे में वह जन कमिसारों की परिषद के सदस्यों से परामर्श भी करते।

याकोव मिखाइलोविच स्वेर्दलोव के साथ उनकी प्रायः मुलाकात होती थी। स्वेर्दलोव सोवियतों की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष थे। दोनों साथ-साथ राजकीय मामलों को हल करते।

लेनिन चाहते थे कि जब तक सोवियत सत्ता को युद्ध से फुरसत मिली हुई है, तब तक नये जीवन की मजबूत नींव डाल दी जाये।

इसके लिए सबसे पहले उन्होंने मजदूर वर्ग का दरवाजा खटखटाया। "हम सर्वहारा की लौह वाहिनियों के नपे-तुले कदमों की जरूरत है," उन्होंने "सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार" शीर्षक अपने विख्यात लेख में लिखा। पार्टी ने लेनिन की योजनाओं का समर्थन किया। यह लेख "प्राव्दा" और 'इज्वेस्तिया' में छपा। उसमें जनता का विराट लक्ष्यों से साक्षात्कार कराया गया था। कम्युनिस्ट, मजदूर और किसान लेनिन के पीछे थे और लेनिन में आस्था रखते थे।

क्रेमलिन में लेनिन के कक्ष में लिखने की मेज के पास ही बुनी हुई सीट और पीठवाली एक आराम कुर्सी पड़ी हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच को वह बहुत पसंद थी। शायद इसलिए कि बचपन में सिम्बीर्स्क वाले घर में भी ऐसी बुनी हुई कुर्सियां थीं। उसे देखते ही उन्हें खाने के कमरे में बितायी हुई बचपन के दिनों की सरदियों की शाम याद आ जाती। और जो बढ़िया-बढ़िया किताबें उन दिनों पढ़ी थीं, वे भी। वे दिन कितने सुखद थे।

लेनिन चाहते थे कि सोवियत देश में भी सभी मजदूरों और किसानों के बच्चों का बचपन वैसा ही सुखी और आह्लादपूर्ण हो।

जार के जमाने में मजदूरों और किसानों के बच्चों के लिए शिक्षा पाना बेहद कठिन था। ऐसा कोई विरला ही होता था, जो स्कूल खत्म कर पाता हो। उच्च शिक्षा तो रही दूर की बात। अब मेहनतकशों के बच्चों के लिए शिक्षा के सभी दरवाजे खुले थे। जितना चाहो, जहां तक चाहो पढ़ो! स्कूल, कालेज, पुस्तकालय सब तुम्हारे लिए हैं!

युद्ध ने रूस को तबाह कर डाला था। लोग भुखमरी और ठंड से त्रस्त थे। मगर सबसे अच्छा राशन, सबसे अच्छा खाना बच्चों के लिए था।

उससे पहले कभी किसी राज्य म, उन्नत से उन्नत बूर्जुग्रा राज्या म भी, मेहनतकशो के बच्चा का, मेहनत करनेवाले लोगा का इतना ख्याल नही किया गया था।

जारशाही के दिना मे मजदूर बारह ग्यारह घटे—ग्रौर कभी-कभी ता पद्रह घटे भी—काम करते थे। मगर जब सोवियत सत्ता ग्रायी, तो लेनिन ने ग्रादेश दिया सभी के लिए काम का दिन ग्राठ घटे से ग्रधिक न हो।

पहले सबसे ग्रच्छी जमीन जमीदारो ग्रौर धनी किसाना के पास थी। मगर ग्रब वह सारी जनता की सपत्ति बन गयी। कल कारखाने, रलवेमाग, खानें, तैल उद्योग, बैंक, ग्रादि भी राज्य के हाथो म ग्रा गये। जमीदारा ग्रौर पूजीपतियो से कह दिया गया चाहते हो तो काम करो। जो काम नही करगा उस खान को नही मिलेगा।

य थे वे ग्रभूतपूव परिवतन, जो हमारे देश मे ग्राये। क्राति दृढता के साथ ग्रागे बढ रही थी। ग्रौर इस नये समाज, नयी व्यवस्था के ग्रगुग्रा थे व्लादीमिर इल्यीच ग्रौर कम्युनिस्ट पार्टी।

गावो-देहातो में

क्राति से बहुत पहले जब व्लादीमिर इल्यीच ग्रन्य साथियो के साथ जेनेवा मे रहा करते थे, एक दिन रूस से एक युवती क्रातिकारी ग्रायी। उसका नाम था लीदिया ग्रलेक्साद्रोव्ना फोतियेवा। वह शीघ्र ही लेनिन की जोशीली सहायक बन गयी। वह तन मन से क्राति के ध्यय को ग्रपित थी। क्राति के ग्रलावा एकमात्र चीज जिसम उनकी गहरी रुचि थी, वह था सगीत। कभी-कभी जब शामे खाली होती, बोल्शेविक लोग लेपेशीन्स्की के भोजनालय म एकत्र होते जो उनके लिए क्लब जैसा था, ग्रौर लीदिया ग्रलेक्साद्रोव्ना पियानो पर बीथोवन का "पैथेटिक सोनाटा" बजाती। व्लादीमिर इल्यीच को यह रचना बहुत पसद थी। उसे सुनते हुए वह कितने भावविभोर, कितने विचारमग्न हो उठते थे।

क्राति के बाद लीदिया फोतियेवा जन कमिसारा की परिषद की सचिव नियुक्त हुईं। वह हर समय काम म व्यस्त रहती। उनका निवास भी क्रेमलिन मे ही था, ताकि परिषद के कामकाज म ग्रासानी हो। उन्ह

इसकी पूरी जानकारी रहती कि लेनिन को कब किससे मिलना है, कब कहा जाना है और काम के लिए किस चीज की आवश्यकता है।

जन कमिसारा की परिषद के अध्यक्ष से मिलने के लिए बडी सख्या मे लोग आते थे।

"ब्लादीमिर इल्यीच, किसी दूर गाव से कुछ किसान आये हैं और आप से मिलना चाहते ह, एक दिन फोतियेवा ने कहा।

"बुलाइये, बुलाइये!" ब्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया।

धूप और हवा से झुलसे चेहरोवाले दढियल किसान हरे मेजपोश म ढकी लबी मेज के पास बैठ गये। पहले वे कुछ झिझक रहे थे, मगर लेनिन की सादगी को देखकर हिम्मत बघ गयी।

लेनिन की सादगी से मानो उनकी बुद्धि भी प्रखर हा गयी। और लेनिन को यही चाहिये था। उनके लिए यह महत्त्वपूण था कि वे अपनी हर बात को साफ-साफ और दो टूक शब्दा मे कहे।

"साथी ब्लादीमिर इल्यीच, तुम हमसे बहुत बडे हा," दूर गाव से आये किसान बोले। "ज्ञान तुम्हे इतना है कि "

"अरे, मै जानता ही क्या हू," ब्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की। "यही लीजिये, देहात के बारे मे म कितना जानता हू? लगभग कुछ भी नही।"

"देहात के बारे मे जो कुछ है हम तुम्हे बता सकते हैं।'

"बताइये, बताइये!"

"सबसे पहले तो यह कि किसानो को सोवियत सरकार बहुत पसद आयी है, क्योकि उसने जमीदारो को निकाल बाहर किया है,' सीने तक फली दाढीवाले सबसे बूढे किसान ने बताना शुरू किया।

"हा, हा। आगे?"

"मगर सवाल कुलका का है। वे नयी जिन्दगी का गला घाट देंगे, उसे चलने नही देंगे। ब्लादीमिर इल्यीच, तुम्हे गरीब किसाना पर भरोसा करना है। कुलक सोवियत सरकार के साथी नही, दुश्मन हैं '

लेनिन यह सब जानते थे। फिर भी उन्होंने गरीब किसाना को ध्यान स सुना, अपनी जानकारी को परखा, आवश्यक नतीजे निकाले और कुछ समय बाद, १९१८ की गरमिया मे एक नयी आज्ञप्ति, नया सोवियत कानून जारी किया।

यह ज्ञाप्ति गावों म गरीब किसानों की समितियां बनाने के बारे म थी, जिन्हे आगे चलकर "ग्रामवेद" कहा जाने लगा। कुलकों के विरुद्ध संघर्ष मे ये समितियां ही सोवियत सत्ता का मुख्य सहारा सिद्ध हुई।

मगर कुलक कौन थे? आज सोवियत देश म उनका नामोनिशान भी बाकी नही रह गया है।

कुलक भी किसान थे। मगर खाते-पीते और कभी-कभी बहुत समृद्ध भी। वे कृषि उपज की चोरबाजारी करते थे, दूसरा की मेहनत के भरोसे रहते थे। जब और पैसा हो जाता था, तो और जमीन खरीद लेते थे और भूमिहीन गरीब देहातियों से उनपर काम करवाते थे। गरीबो का अनाज वसन्त तक भी नही चल पाता था। तब वे कुलकों स अनाज उधार लेते और इसके बदले म उनकी जमीन जोतते और शरद आने पर, जब फसल पकती, तो जितना अनाज उधार लिया था, उसका दुगुना वापस देते। और कोई चारा था भी नही। गरीब किसान गुलामी करने के लिए मजबूर था। वह भूखा रहता, दाने-दाने के लिए तरसता, मगर कुलक के घर मे अनाज के अंबार लगे रहते। कुलक बस इसी का इन्तजार करता कि अनाज महगा हो, और महगा हो अपने मुनाफे के लिए वह पडोसी का गला काटने के लिये भी तैयार रहता था।

शहरो मे भुखमरी निरन्तर बढती जा रही थी। क्या किया जाय? मजदूरो, नौकरीपेशा लोगो, बच्चो, लाल सेना के सिपाहियो को क्या खिलाया जाये? अनाज कैसे प्राप्त किया जाये?

ऐसी बात नही थी कि देहातो मे अनाज नही था। अनाज था। सिर्फ कुलक उसे देना नही चाहते थे। उन्होने उसे छिपा दिया था।

यह सरासर अन्याय था! एक तरफ तो शहरो मे लोग रोटी के टुकडे टुकडे के लिए तरस रहे थे और दूसरी ओर कुलको के गोदाम अनाज से भरे पडे थे। उसे गरीब किसानो ने उगाया था। वह कुलको का नही, आम जनता का था।

इन्ही सब बातो को सोचते हुए एक दिन लेनिन ने मजदूरो का बुलाया।

"साथी मजदूरो," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "कारखानो और फैक्टरियो मे अनाज इकट्ठा करनेवाली टुकडियां बनाइये और गावो म जाइये। वहा गरीब किसानो की समितियां हैं। वे हमारे साथ हैं। और

मझोले किसान भी हमारी तरफ हो जायेंगे। आप उन्हें बताइये कि गावों मे सोवियत सत्ता को मजबूत कैसे करना है और वे आपको बतायेंगे कि कुलको ने अनाज कहा छिपा रखा है।

इसके साथ ही लेनिन ने एक आज्ञप्ति तयार की कि देहात का सारा अतिरिक्त अनाज गरीब किसानो की समितियो और मजदूर टुकडियो को दे दिया जाये।

जन कमिसारो की परिषद ने उसका अनुमोदन किया। इस तरह क्राति के पहले सालो म लेनिन और सोवियत सरकार ने मजदूर जनता को भुखमरी से बचाया।

हमला

ध्रुव वृत्त के पार बैरट सागर के तट पर १६१४ मे मूर्मान्स्क नाम का एक नया शहर बसाया गया था। यह उत्तर म हमारे देश का एक छोटा सा, मगर महत्वपूर्ण बदरगाह था।

१६१८ के वसत मे एक दिन सुबह सुबह, जब अभी समुद्र के ऊपर से कुहासा छटा भी नही था, कुहासे के बीच से एक सैनिक जहाज की काली रूपरेखा प्रकट हुई। उसकी तोपे निशाना साधे हुई थी। यह युद्धपोत था, जो मूर्मान्स्क बदरगाह मे घुस आया था।

शीघ्र ही, उतने ही अप्रत्याशित ढग से एक और युद्धपोत उसकी बगल मे आकर खडा हो गया। यह फ्रासीसी युद्धपोत था। उसके पीछे पीछे अमरीकी युद्धपोत ने भी बदरगाह मे प्रवेश किया।

सोवियत रूस की धरती पर विदेशी फौजे उतर आयी।

उन्हें एटेंट ने भेजा था। उस समय ब्रिटेन, फ्रास और सयुक्त राज्य अमरीका के सैनिक गठबधन को एटेंट कहते थे। यह पूजीपतियो का, बूर्जुआ सरकारो का गठबधन था।

एटेंट रूस मे सोवियत शासन को उलटना चाहता था। उसे डर था कि कही दूसरे देशो के मजदूर भी रूसियो की देखादेखी अपने यहा क्राति न कर दें।

गरमियो के मध्य मे एटेंट के युद्धपोतो ने श्वेत सागर मे प्रवेश किया। यहा श्वेत सागर मे प्रचण्ड उत्तरी द्विना नदी आकर गिरती थी। मुहाने से कोई पचास वर्स्ट की दूरी पर, बेडो और जहाजो से खचाखच

भरी इस बहुजला नदी के साथ-साथ लकडी के फुटपाथो, गोल्यिा, लक्डी के गोदामो और मिलो वाला एक सकरा सा शहर बसा हुआ था। दूसरा तरफ से असीम टुण्ड्रा शहर को छूता था। यह हमारा सनिक और व्यापारिक बदरगाह अर्खांगेल्स्क था।

एटेट ने अर्खांगेल्स्क पर कब्जा कर लिया। बूजुआ वग ने एटेंट के हमले पर बेहद खुशिया मनायी। दोनो का एक ही सपना था सोवियत सत्ता को अपदस्थ करना। अर्खांगेल्स्क मे प्रतिक्रातिकारी विद्रोह शुरू हो गया। असमान लडाई म सैकडो मजदूर, लाल सैनिक और सोवियत जहाजी वीरगति को प्राप्त हुए।

अब तक खामोश बैठे व्यापारी और बूर्जुआ फिर सक्रिय हो गये। जारशाही अफसरो ने अपनी वरदिया फिर पहन ली। गिरजाघरो के घट ज़ोर-ज़ोर से बजाये जाने लगे। धन्यवाद प्रदशन अनुष्ठान शुरु हो गये।

उत्तर मे प्रतिक्राति ने हमला शुरु कर दिया था।

प्रतिक्राति की आग सुदूर पूव म भी फैली हुई थी। साइबेरिया और उराल से होते हुए वह वाल्गा प्रदेश तक पहुच गयी थी। शत्रुओं के युद्धपोतो ने व्लादीवोस्तोक के बदरगाह मे अपन सनिक उतार दिये थे।

साइबेरिया के गावो मे कुलको की बगावत शुरू हो गयी थी। गरीब किसानो की समितिया और कम्युनिस्ट उनके निमम हमलो का शिकार बन रहे थे।

दोन और कुबान प्रदेशो के शहरो और देहातो मे खून बह रहा था। सफेद गार्डों के जनरलो ने दोन और कुबान पर कब्जा कर लिया था। उक्रइना पर जमनो का कब्जा था।

सोवियत रूस के चारो ओर शत्रु का घेरा कसता जा रहा था।

सुबह का समय था। सूरज अभी नही उगा था। सिफ क्षितिज पर हल्का-हल्का उजाला होने लगा था।

व्लादीमिर इल्यीच क्रेमलिन के अपन फ्लट से निकले। जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष का काय कक्ष थोडे ही कदमो की दूरी पर था।

गलियारे के आखिर म, कक्ष के दरवाज़े पर सतरी खडा था।

"नमस्ते," व्लादीमिर इल्यीच ने सतरी का अभिवादन किया।

हो सकता है कि यह नियमसगत नही था, पर ब्लादीमिर इल्यीच हमेशा सतरियो को नमस्ते करते थे। सतरी लेनिन को देखते ही तनकर खडा हो गया और आश्चर्य से सोचने लगा "ये भला सोते कब है?"

कुछ ही समय पहले, लगभग भोर होने पर ही, जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष घर लौटे थे। और अब सूरज अभी निकला भी नही कि पुन काम पर आ गये।

लेनिन के कक्ष मे खिडकियो के बीच दीवार पर बडा सा नक्शा टगा हुआ था। ब्लादीमिर इल्यीच हाथ पीठ के पीछे किये हुए देर तक उसमे मोर्चे की लाइनो को देखते रहे। वह उन सभी शहरो और जगहो को जानते थे, जहा लडाई चल रही थी। वह सभी कमाडरो और कमिसारो को भी जानते थे और उनके चरित्र, स्वभाव और योग्यता को जानने की कोशिशें करते थे।

जब शत्रुओ ने सोवियत धरती पर आक्रमण किया तो जनता म से बहुत से प्रतिभाशाली कमाडर पैदा हो गये थे।

मिसाल के लिए वसीली इवानोविच चपायेव को ही लीजिये। वह असली जन नायक थे। उनके शौर्य और सैनिक सूझबूझ के बारे म कहानिया तक गढी जा चुकी थी। और क्लीम वोरोशीलोव का नाम तो देश के बच्चे बच्चे की जबान पर था।

लेनिन ने फ्रूजे के बारे मे भी बडे आदर और भरोसे के साथ सोचा। दिसबर, १६०५ मे बोल्शेविक मिखाईल वसील्येविच फ्रूजे ने मास्को म प्रेस्न्या के विद्रोही मजदूरो की सहायता के लिए इवानोवो वोज्नेसेन्स्क से आये मजदूरो की टुकडी का नेतृत्व किया था और अब एक सबसे कठिन मोर्चे के कमाडर थे।

ब्लादीमिर इल्यीच ने मन ही मन सभी मोर्चों का चक्कर लगाया। वोरोशीलोव, बुद्योनी, लाजो, कोतोव्स्की, श्चोर्स, तुखाचेव्स्की, ब्ल्यूखेर

उत्तरी मोर्चा, दक्षिणी मोर्चा, पूर्वी मोर्चा

पूर्व मे साइबेरिया, उराल और वोल्गा। पूर्व मे ही अनाज का मुख्य स्रोत भी है

एटेंट की सहायता से सफेद गार्डों और कुलको ने पूर्व के अनाज उत्पादक इलाको पर कब्जा कर लिया था। इस तरह एटेंट मजदूरो और किसानो के राज्य को भूखा मार डालना चाहता था।

"लाल सेना का मुख्य प्रहार पूर्वी मोर्चे पर ही होना चाहिये," व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा। "वोल्गा इलाके और साइबेरिया से सफ़ेद गार्डों का भगाना और कुलकों को कुचलना अत्यावश्यक है।"

व्लादीमिर इल्यीच ने बैठकर मोर्चों से आयी रिपोर्टों को एक बार फिर पढ़ा। कल वह द्ज़ेर्जीन्स्की, स्वेर्त्लोव, चिचेरिन और दूसरे सहयोगियों के साथ देर तक मोर्चों की स्थिति के बारे में विचार विमर्श करते रहे थे। फैसले ले लिये गये थे। अब कमांडरों को जवाब लिखना और आवश्यक आदेश देना ही बाकी रह गया था। व्लादीमिर इल्यीच तब तक काम करते रहे, जब तक सुबह का हल्का पीला उजाला सारे आकाश पर नहीं फैल गया और छतों के पीछे से गरमियों का सूरज ऊपर नहीं झांकने लगा और लीदिया अलेक्सान्द्रोव्ना आकर यह न कह गयी कि बाहर लोग उनसे मिलने के लिए बैठे हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने घड़ी देखी। हां, मिलनेवाले नियत समय पर ही आये हैं।

"साफ़ लगता है कि सैनिक हैं," उन्होंने मन ही मन सोचा।

फिर कागजों को फाइल में रखकर फोतियेवा को देते हुए कहा

"इन्हें तुरंत भेजना है।"

और चेहरे पर हाथ फेरा। मानो सभी चिन्ताओं और झुर्रियों को साफ़ कर रहे हों, ताकि दूसरे न देख सकें कि वह कितने चिन्तित हैं, कितने आशंकित हैं।

सैनिकों ने कक्ष में प्रवेश किया। ये लाल सेना के कमांडर थे। लेनिन उन्हें अच्छी तरह जानते थे। उनमें एक भूतपूर्व ज़ारशाही सेना का जनरल भी था।

"हां, तो बताइये, हमारी हमले की योजना क्या है?" लेनिन ने भूतपूर्व जनरल को सबोधित करते हुए पूछा।

क्या हैरानी की बात नहीं थी कि व्लादीमिर इल्यीच ज़ारशाही जनरल से सैनिक मामलों में परामर्श कर रहे थे? आखिरकार यह आदेश उन्होंने ही तो दिया था कि लाल सेना में सेवा करना बड़े सम्मान की बात है और यह सम्मान अब से सभी गरीबों, मजदूरों, मेहनतकशों और उनकी सन्तानों को दिया जाता है, कि लाल सेना में अभिजात वर्ग और कुलकों के लड़कों को न लिया जाय, कि कम्युनिस्टों को ही लाल सेना में कमांडर नियुक्त किया जाय।

और अब अचानक यह जारशाही के जमाने का जनरल! यह कैसे हो सकता है? लेकिन यह जनरल लेनिन के ध्येय में, लेनिन के काम में आस्था रखता था। अतः आश्चर्य नहीं कि लेनिन ने ऐसे शानदार और ईमानदार सैनिक विशेषज्ञों को भी लाल सेना की मदद के लिए बुलाया था।

जनरल ने लंबी छडी से नक्शे पर दिखाते हुए ब्लादीमिर इल्यीच को हमले की योजना बतायी।

ब्लादीमिर इल्यीच ने जनरल की योजना का समर्थन किया, क्योंकि कल, परसों और आज सुबह फिर उन्होंने अकेले में और साथियों के साथ भी बिल्कुल ऐसी ही योजना तैयार की थी और इस समय वह अपने विचारों, निर्णयों की सत्यता को जांच रहे थे।

"हमारा यह आपरेशन शानदार साबित होना चाहिये," छडी नीचे रखते हुए जनरल ने संतोष के साथ अपनी बात खत्म की।

"शानदार साबित हो या न हो, इसका कोई महत्त्व नहीं," ब्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "असल महत्त्व है विजय का... क्या, आप लोग क्या सोचते हैं?" इस बार उन्होंने लाल सेना के कमांडरों से पूछा।

वे देर तक और विस्तार से योजना की सभी बारीकियों के बारे में अपने विचार प्रकट करते रहे।

निर्णय सब का एक था और अटल था।

"साथियो, स्थिति बहुत गंभीर है," ब्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें विदा देते हुए कहा। "मगर लाल सेना को अवश्य जीतना है।"

नीचताभरा हमला

ब्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना रसोई में नाश्ता कर रहे थे। ऐसी बात नहीं कि उनके क्रेमलिन वाले फ्लैट में खाने का कमरा नहीं था। पर वहां वे तभी इकट्ठे होते थे, जब कोई मेहमान आया होता था और साथ बैठकर चाय पीते हुए कामकाज की बातें करनी होती थीं।

शुक्रवार का दिन था। मास्को में यह नियम था कि शुक्रवारों को केंद्रीय समिति के सदस्य और जन कमिसार मजदूरों की मीटिंगों में भाषण

दिया करते थे। मास्को की पार्टी समिति ने व्लादीमिर इल्यीच को पहले से ही बता दिया था कि इस शुक्रवार को उन्हे किस मीटिंग मे भाषण देना है।

अचानक पेत्रोग्राद से तार मिला। जन कमिसारो की परिषद के कार्यालय का तारघर रात दिन काम करता था। इसलिए तार व्लादीमिर इल्यीच को तुरत पहुचा दिया गया।

उसमे लिखा हुआ था कि पेत्रोग्राद चेका के अध्यक्ष साथी उरीत्स्की की हत्या हो गयी है। थोडे ही समय बाद मास्को की पार्टी समिति से टेलीफोन आया

"साथी व्लादीमिर इल्यीच, मास्को समिति की राय है कि आप आज का भाषण स्थगित कर दे। खतरा है। प्रतिक्रातिकारी गुस्ताखी पर उतर आये है।'

'अरे, आप समझते हैं कि भेडियो के डर से क्या जगल मे जाना छोड दू?' व्लादीमिर इल्यीच ने जवाब दिया और तेजी से अपने क्रैमलिन कक्ष की ओर चल दिये।

उरीत्स्की की हत्या हो गयी है। उनसे पहले एक अन्य प्रमुख बोल्शेविक वोलोदार्स्की को भी मार डाला गया था।

प्रतिक्रातिकारी तत्व केन्द्रीय समिति और सरकार के सदस्यो को एक एक करके खत्म करने पर तुले हुए थे।

लेकिन यह कैसे हो सकता था कि व्लादीमिर इल्यीच मजदूरो की सभा मे न जायें। वे इन्तजार कर रहे होगे।

कार आ गयी। हमेशा की तरह ड्राइवर स्तेपान काजीमीरोविच गील कार मे बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। आज व्लादीमिर इल्यीच को दो अलग अलग इलाको मे मजदूर सभाओ मे भाषण करना था। शाम को जन कमिसारो की परिषद की बैठक थी।

"सोचता हू कि भाषणो के बाद परिषद की बैठक के लिए ठीक समय पर पहुच सकूगा," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

'आपमे इतनी सारी ताकत कहा से आ जाती है, व्लादीमिर इल्यीच?"

उसने लेनिन को सपुखोव्स्काया सडक पर स्थित भूतपूर्व मिखेल्सन कारखाने मे पहुचा दिया। व्लादीमिर इल्यीच यहा पहले भी आ चुके थे।

मजदूर हाल ही मे बनायी गयी लकडी की एक बडी सी इमारत—

तोपो के गोले बनानेवाले वकशाप–मे इकट्ठे हो रखे थे। कोई वठा हुआ था, तो कोई लेथ के पास या गलियारे म खडा हुआ था। सबके चहरा पर गभीरता और एकाग्रता का भाव था।

लेनिन ने अपने भाषण मे गृहयुद्ध और सफेद गार्डों के गिरोहो के विरुद्ध सघष की चर्चा की।

इस वक्शाप के मजदूर सफेद गार्डो के विरुद्ध लडने के लिए ही गोले तैयार करते थे। जरूरत पडने पर वे मोर्चे पर जाने के लिए भी तैयार थे।

लेनिन ने अनुभव किया कि मजदूर किसी भी कीमत पर अपना कारखाना, अपनी सत्ता पूजीपतिया का वापस देने को तयार नही ह।

तो यह है, साथी गील, हमारी शक्ति का स्रात। मजदूर वग ही वह बटरी है, जो हममे इतनी ताक्त भरती है।

मीटिग खत्म हो गयी। मजदूरा से घिरे हुए लेनिन वक्शाप से निकले। गील ने पलक झपकते ही कार स्टाट कर दी। वह सतक था। लोगा की इतनी अधिक भीड और ऊपर से ऐसा अशातिपूण समय। ड्राइवर गील को उरीत्स्की की हत्या के बारे मे मालूम था। अच्छा हो, व्लादीमिर इल्यीच जल्दी से जल्दी कार मे बैठ जायें मगर लोग उन्ह छोड नही रहे थे। चारा तरफ से सवाल पर सवाल पूछे जा रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच की जवानी मानो लौट आयी थी। वह बडे उत्साह से उनके जवाब दे रहे थे। अचानक कही से धाय धाय की आवाज हुई। यह क्या? गोली चली है? व्लादीमिर इल्यीच एकाएक कुछ समझ न पाये। बायें हाथ मे कोई चीज लगी थी। वह लडखडाये। तभी फिर गोली चली। गरदन मे एक जबदस्त टीस उठ गयी। व्लादीमिर इल्यीच गिरन लगे। तीसरी गोली पीठ पर ओवरकोट को रगडती निकल गयी।

"लेनिन को मार डाला!" भीड हताश स्वर म चिल्लायी।

पतले लबे चेहरे और काली आखावाली एक औरत पिस्तौल जमीन पर फेंक्कर फाटक की ओर भागी। लोग हत्यारी प्रतिक्रातिकारिणी को पकडने के लिए दौडे।

"व्लादीमिर इल्यीच! साथी लेनिन!" गील न पुकारा।

"घर चलो," सफेद पडे होठा से व्लादीमिर इल्यीच बुदबुदाये

मजदूरों ने उन्हें उठाकर कार में बैठने में मदद दी। भीड़ में मौत का सा सन्नाटा छा गया। लगा कि लेनिन की रुक-रुककर चलती सांस सबको सुनायी दे रही थी।

कार पूरी रफ्तार से क्रेमलिन के लिए चल पड़ी।

"व्लादीमिर इल्यीच, हम आपको उठाकर ले चलते हैं," घर पहुंचने पर गील ने कहा।

मगर व्लादीमिर इल्यीच राजी नहीं हुए। दर्द बेहद बढ़ गया था। कमीज़ खून से तर हो गयी थी। फिर भी वह गील और मजदूरों का सहारा लेकर ख़ुद ही सीढ़ियां चढ़ने लगे। धीरे-धीरे और ख़ामोशी से तीसरी मंजिल तक। उफ्फ, ये सीढ़ियां भी कितनी लंबी, कितनी ऊंची और मुश्किल हैं!

भयस्तब्ध मरीया इल्यीनिच्ना उनकी तरफ़ दौड़ी।

"वोलोद्या! वोलोद्या!" वह चिल्लायी।

"कोई बात नहीं। थोड़ा सा घायल हो गया हूं... ठीक हो जायेगा," व्लादीमिर इल्यीच ने बड़ी मुश्किल से कहा। "मन्याशा, घबराओ नहीं। नाद्या को डराना नहीं।"

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना घर पर नहीं थी। वह काम पर गयी हुई थी।

उधर बैठक के लिए सभी जन कमिसार इकट्ठे हो गये थे। व्लादीमिर इल्यीच ने ही नौ बजे का समय तय किया था और सभी जानते थे कि किसी का देर से आना उन्हें पसंद नहीं था। पहली बार और अकेली बार जन कमिसारों के परिषद के अध्यक्ष को ख़ुद देर हो गयी...

चारख़ानेदार पट्टू से ढके बिस्तर पर सावधानी से व्लादीमिर इल्यीच को लिटा दिया गया। वह कमजोर हो गये थे। चेहरा सफ़ेद पड़ गया था।

फ्लैट के दरवाज़े खुले हुए थे। भय से किंकर्तव्यविमूढ़ साथियों की भीड़ जमा हो गयी थी, डाक्टर भी आ गये थे।

"डाक्टर, व्लादीमिर इल्यीच की जान को तो कोई ख़तरा नहीं है न?" साथी आशा भरे स्वर में पूछ रहे थे।

ख़तरा? ख़तरा बहुत है...

एक-एक मिनट एक-एक युग की तरह बीत रहा था। तभी नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी काम से लौट आयी। दरवाज़े खुले हुए क्यों हैं? घर में इतने लोग क्या हैं?

किसी ने सहानुभूति के साथ उनका कंधा सहलाया। वह समझ गयी और बस इतना ही पूछा

"ज़िंदा हैं?"

लेनिन के कमरे से कराहने की आवाज़ आयी। वह तनकर खड़ी हुई और सूखी आंखों से कमरे की ओर बढ़ी। ब्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें देखा और सायास मुस्कराये

"घबराओ नहीं, नाद्या। क्रांतिकारियों के साथ ऐसा कभी भी हो सकता है। मामूली सा घाव है। जल्दी ही ठीक हो जायेगा"

और आंखें बंद कर लीं। उनकी नाड़ी मंद पड़ रही थी। हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी।

संकट के साल

जन कमिसारों की परिषद के गलियारे में तार मशीनें लगातार खटखटा रही थीं टा टा, टा टा, टा-टा फौजी ओवरकोट पहने एक आपरेटर ने मशीन से निकलते फीते को उठाया एक खास तरह की जल्दबाजी से पढ़ा और गलियारे के आखिर में लेनिन के फ्लैट में पहुंचने के लिए दौड़ा।

दरवाज़ा नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने खोला।

"जाइये, तुरंत ब्लादीमिर इल्यीच को दे दीजिये," उन्होंने कहा। स्वयं जाकर तार देने के आदेश से उत्तेजित आपरेटर ने छोटे कमरे में प्रवेश किया।

वहां कारखानेदार पट्टू से ढकी एक चारपाई थी। उसकी बगल में खिड़की के पास एक लिखने की मेज़ थी। ब्लादीमिर इल्यीच मेज़ के पास बैठे पढ़ रहे थे। बायां हाथ पट्टी में लटका हुआ था। वह बिलकुल पहले जैसे ही दीख रहे थे। पहले जैसी ही पैनी आंखें और पहले जैसी ही फुर्तीली हरकतें। हां, कमज़ोर और दुबले अवश्य हो गये थे।

तार लाल सेना के योद्धाओं ने भेजा था।

"प्रिय ब्लादीमिर इल्यीच, आपके जख्म का जवाब है सिम्बीर्स्क पर कब्ज़ा। दूसरे घाव का जवाब समारा पर कब्ज़ा होगा।'

'शाबाश!' लेनिन अपनी प्रसन्नता को न छिपा पाये। "बहुत खूब

शुनिया!" और तार को एक बार फिर बुलंद आवाज में पढ़ा 'आपने जमनगर पर कब्जा ' सुना, गाधी आपरेटर, हमारी फौज ने सिम्बीर्स्क पर कब्जा कर लिया! नाद्या, सुन रही हो, कितनी शानदार सफलता है?"

व्लादीमिर इल्यीच ने तुरत जवाबी तार लिख दिया। उसमें उन्होंने तार भेजनेवालों को बधाई दी थी और लिखा था कि सिम्बीर्स्क पर कब्जा उनके घाव के लिए सबसे अच्छा मरहम है।

"इस समाचार से बढ़कर मरहम मेरे लिए और कुछ नहीं है! मेरा चंगा होना देर नहीं लगेगी।"

और सचमुच कुछ दिन बाद "प्राव्दा" में डाक्टरी बुलेटिन छपी कि व्लादीमिर इल्यीच स्वस्थ हो गये हैं।

डाक्टरों ने लेनिन को काम पर लौटने की इजाजत दे दी।

देश के ऊपर छायी हुई विपत्ति और गंभीर होती जा रही थी। एंटेंट समझ गया था कि लाल सेना के साथ लड़ना मजाक नहीं है, इसलिए उसने और फौजें बुला ली थीं। चौदह राष्ट्रों ने मिलकर सोवियत धरती पर हमला शुरू किया। सोवियतों का देश चारों तरफ से घिरा हुआ किला बन गया।

'घेरे में पड़े किले में हर चीज युद्धकाल के अनुसार होनी चाहिये,' व्लादीमिर इल्यीच ने कहा और प्रस्ताव रखा कि सभी नागरिकों के लिए काम करना अनिवार्य बना दिया जाये। अब से सभी सोवियत लोगों को कल-कारखानों, दफ्तरों, खेतों और रेलवे में काम करना होगा। देशवासियो, लाल सेना की मदद करो!

लाल सेना को हथियारों की जरूरत है। मजदूर साथियो, ज्यादा हथियार तैयार करो!

लाल सेना को जूतों-कपड़ों की जरूरत है। मजदूर साथियो, ज्यादा से ज्यादा जूते, वरदियां, कोट तैयार करो!

जितने कपड़ों की जरूरत थी, फैक्टरियां नहीं सी पाती थीं। जूतों के लिए चमड़ा पूरा नहीं पड़ता था। कपड़े की कमी थी। क्या किया जाये? जनता और लाल सेना की जरूरत कैसे पूरी की जाये?

सरकार और पार्टी ने लोगों से गरम कपड़े इकट्ठे करने की अपील की। लोग संग्रह-केन्द्रों में फर के कोट, स्वीटर, ऊनी मफलर, मोजे लाने लगे।

मगर बूर्जुआ वर्ग अपनी चीजें नहीं देना चाहता था।

"बूर्जुआओं से सभी अतिरिक्त गरम कपड़े जब्त करना जरूरी है। उनका काम कोट से भी चल सकता है" लेनिन ने द्जेर्जीन्स्की से कहा। "मेहनतकश अपना सब कुछ दे रहे हैं। अमीर लोग भी दें।"

द्जेर्जीन्स्की चेका के अध्यक्ष थे। उन्होंने चेका के कर्मचारियों को अमीरों रईसों के घरों में भेजा, अतिरिक्त कपड़ों और जूतों को इकट्ठा किया। बाद में इनमें से कुछ चीजें गरीब फटेहाल मजदूरों के बीच मुफ्त बांटी गयी और कुछ मोर्चे पर लड़ रहे लाल सैनिकों को भेजी गयी।

लेकिन सबसे भयंकर चीज तो भुखमरी थी। शहरों में राशन की व्यवस्था कभी से लागू थी। पर अनाज, खान की चीजें फिर भी पूरी नहीं पड़ती थी।

सोवियत सरकार ने एक नया, कठोर कानून पास किया, जिसके अनुसार किसानों के लिए सारा अतिरिक्त अनाज और खाने की चीजें सरकार के हाथ बेचना अनिवार्य हो गया। आटा, सूजी, मांस, मक्खन, आलू, सब कुछ लाल सेना, मजदूरों और दफ्तरी कर्मचारियों को दिया जाने लगा। किसानों को इससे दिक्कत तो हुई, पर और कोई उपाय था भी तो नहीं।

ऐसी व्यवस्था थी, जब सोवियत देश में अतिरिक्त खाद्य सामग्री राज्य को बेचने और अनिवार्य श्रम का कानून लगा था जब सारी जनता मोर्चे के लिए काम करती थी, जब खाने का राशन और कपड़ों का विशेष आदेश पत्रों के अनुसार बांटने की व्यवस्था थी, क्योंकि खाने-कपड़े की बड़ी भारी कमी थी, और जब आधी तबाह हुई पड़ी परिवहन व्यवस्था मोर्चों के लिए शस्त्रास्त्र और सैनिक ढोने में व्यस्त थी और रेलगाड़ियों में विशेष पासों से ही यात्रा की जा सकती थी, ऐसी व्यवस्था को लेनिन ने युद्धकालीन कम्युनिज्म का नाम दिया। कितने भयंकर साल थे वे!

सौभाग्य से इन भयंकर सालों में सोवियत सत्ता की बागडोर लेनिन के हाथों में थी।

सोकोल्निकी की वारदात

व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी के समय, जब वे कुछ दिनों तक मौत के कगार पर खड़े थे, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना अपने भय और व्याकुलता को छिपाये रही थी। लोग उनकी अविचलता को देखकर दंग रह जाते थे।

मगर बाद मे जब व्लादीमिर इल्यीच चगे हुए, तो ख ुद बीमार पड गयीं। और वह भी बहुत गभीर। डाक्टरो ने कहा कि केवल स्वच्छ, ताजी हवा ही मदद कर सकती है।

उन दिनो सेनेटोरियम तो थे नही। मगर दुबल बच्चो के लिए मास्को के बाहर सोकोल्निकी मे पाक से घिरा हुआ एक स्कूल था। यहा ताजी हवा की कमी न ी थी।

काफी अनुनय विनय के बाद नादेज्दा कान्स्ता तीनो ना को इस स्कूल म रहने के लिए राजी कर लिया गया।

लेनिन बहुत व्यस्त रहते थे। हर रोज रात गय तक वह सरकारा कामकाज म लगे रहते। देश मे हर चीज का नये सिरे स निमाण हो रहा था और लेनिन देश के कणधार थे।

फिर भी शाम को एक-आध घटे का समय निकालकर वह गील से कहते "चले, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को देख आयें।"

सरदिया आ गयी थी। मास्को बफ से ढक गया था। छकडेवाल दिन-रात काम करने पर भी शहर से पूरी बफ नही हटा पाते थे, इसलिए सडको पर दो-दो मजिल ऊचे ढेर लगे हुए थे।

जनवरी, १९१९ के ऐसे ही एक बर्फीले दिन सोकोल्निकी के स्कूल म नववष का समारोह मनाया जाना था। व्लादीमिर इल्यीच ने उसम उपस्थित होने का वायदा किया था। शाम को वह मरीया इल्यीनिच्ना क साथ तैयार हुए और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के लिए एक बरतन म दूध लेकर सोकोल्निकी के लिए चल पडे।

हमेशा की तरह कार मे ड्राइवर की सीट पर गील बठा था। साथ मे सुरक्षा विभाग से चेबानोव नाम का एक आदमी और था।

रविवार का दिन था। सडको पर लोग बहुत थे। दोनो ओर बफ के ढेर लगे होने की वजह से सडक खाइयो की तरह तग हो गयी थी। कुछ-कुछ जगहा पर तो उनसे गुजर पाना भी कठिन था। फिर भी गील बडे सधे हुए ढग से लोगो और बफ के ढेरो के बीच मे कार को बढाये जा रहा था। कार बिना रुके जा रही थी।

अचानक सोकोल्निकी के निकट रलवे पुल क पास एक सुनसान जगह पर तीन आदमियो ने रास्ता रोक लिया।

"रुको। नही तो गोली चला देंगे!"

गील ग्रागे निकल जाना चाहता था। पर व्लादीमिर इल्यीच न रुकने का ग्रादेश दिया। व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा कि ये मिलीशिया के ग्रादमी हैं। लड़ाई का जमाना है, इसलिए यह चेक करना मिलीशिया का काम है कि कार मे शहर से बाहर कौन जा रहा है। ग्रौर ग्रगर वे लोग वरदी नही पहने थे, तो उस समय मिलीशिया की कोई विशेष वरदी थी भी नहीं।

कार रुक गयी। तीन हट्टे-कट्टे ग्रादमिया न उसे घेर लिया। फिर दरवाजे खोलकर पिस्तौल दिखाते हुए कहा

"बाहर निकलो!"

"म लेनिन हू," व्लादीमिर इल्यीच न कहा।

वह ग्रभी भी सोच रहे थे कि ये मिलीशियावाले हैं। लेकिन यह क्या? उनमे से दो ग्रादमिया ने व्लादीमिर इल्यीच की कनपटियो पर पिस्तौल तानी हुई थी। उन्होंने उनके ठडे फौलाद को महसूस किया। तीसरे न जो भेड की खाल की काकेशियाई टोपी पहन था ग्रौर जिसका चेहरा पीला ग्रौर उद्दण्ड था, जल्दी-जल्दी उनकी जेबें टटोली ग्रौर क्रेमलिन का पास ग्रौर छोटी सी पिस्तौल निकाल ली।

इसके बाद तीना गुण्डे कार म बठे ग्रौर रफूचक्कर हो गये। कार नजरा म ग्रोझल हो गयी। यह सारा काण्ड इतनी जल्दी हुग्रा कि कोई भी एकदम ग्रापे मे न ग्रा सका।

कुछ क्षण तक व्लादीमिर इल्यीच गुस्से मे बौखलाए हुए चुप रहे। फिर धिक्कारते हुए बोले

"शम की बात है! हम इतने लोग ह, फिर भी उन्ह कार समत भागने दिया।"

'व्लादीमिर इल्यीच, मैंन उनपर गोली इसलिए नही चलायी कि कही वे ग्रापको मार न दें," गील भी बेहद उत्तेजित था।

"हा, ठीक ही किया। झगडा बेकार था। वे हमसे इक्कीस ही पडते थे," व्लादीमिर इल्यीच ने सहमति जतायी।

फिर साथी चेबानोव पर नजर जो डाली, ता ठहाका लगाकर हस पडे। इस तरह का ठहाका केवल वही लगा सकते थे। मरीया इल्यीनिच्ना ग्रौर गील भी एकाएक हसने लग गये। केवल चेबानोव ही नही हसा, उसके हाथ म दूध का बतन था।

"एकमात्र चीज, जो उन गुण्डो ने नही लूटी," हसते-हसते व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

और चेका के सदस्य चेबानोव से दिल्लगी करते हुए, जो हक्का-बक्का सा होकर एक हाथ से जेब मे रिवाल्वर को टटोल रहा था और दूसरे से कमबख्त वतन को पकडे था, सब पास ही मे स्थित सोकोल्निकी की इलाकाई सोवियत के दफ्तर की ओर चल पडे। वहा से उन्होने दूसरी कार ली और उसमे स्कूल के लिए रवाना हुए। साथ ही उस वारदात के बारे मे दजेर्जीन्स्की को सूचित भी कर दिया गया। शीघ्र ही चेका के लोगो ने उन डाकुओ को पकड लिया।

इधर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को चिन्ता होने लगी कि व्लादीमिर इल्यीच अभी तक क्यो नही पहुचे। वह बार-बार खिडकी से बाहर झाकती और जब वहा से भी कुछ न दिखायी पडता, तो दूसरी खिडकी के सामने जा खडी होती। बाहर सारा पार्क बर्फ से ढका हुआ था।

उनकी परेशानी बच्चो से छिपी न रही। शीघ्र ही सारा स्कूल भी चिन्तित हो उठा। घडी की सूई धीरे-धीरे आगे बढती जा रही थी।

आखिरकार किसी का खुशी से भरा स्वर सारे स्कूल मे गूज उठा

"आ गये!"

व्लादीमिर इल्यीच तेजी से कमरे मे दाखिल हुए। ओवरकोट के बटन खुले हुए थे, दाढी और भौहो पर बर्फ के कण जमे हुए थे और गाल ठड से गुलाबी हो रखे थे।

"जाडे बाबा! जाडे बाबा!" चिल्लाते हुए बच्चे उनसे लिपट गये।

उनसे किसी तरह छूटकर व्लादीमिर इल्यीच नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के पास पहुचे। वह पहले तो गुण्डो के हमले के बारे मे नही बताना चाहते थे, पर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना उन्हे इतनी चिन्ता भरी दृष्टि से देख रही थी कि मानो महसूस कर रही हो कि कुछ न कुछ अवश्य हुआ है।

"कोई खास बात नही है, नाद्यूशा। सचमुच, कोई खास बात नहीं है।"

गुण्डो के हमले के बारे मे सुनकर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के चेहरे का रग उड गया। वह बस इतना ही कह सकी

"लाख लाख धन्यवाद कि तुम्हे कुछ नही हुआ।"

ग्रौर फिर सब हसी खुशी मनाने लग गये। स्कूल के हाल म छत तक ऊचा नववप वक्ष खडा था। खुद ही बनायी हुई चडिया, सुनहर तारो ग्रौर खिलौना से सजा हुग्रा। उसकी पत्तिया स मनमोहक बिरोजई महक ग्रा रही थी। बच्चे गोला बनाकर वक्ष के इदगिद नाचन लगे। व्लादीमिर इल्यीच भी उनके साथ शामिल हो गये। बच्च गा रह थे व्लादीमिर इल्यीच भी गा रहे थे। बच्चे खेलने लगे, ता व्लादीमिर इल्यीच फिर उनके साथ हो लिए। सभी जी भरकर नाचे-खेले। ग्रगर त्योहार का मौका था तो क्या न त्योहार की तरह हसा-खेला जाय?

नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना, जिन्ह ग्रकेली का ही यह मालूम था कि दो घटे पहले व्लादीमिर इल्यीच मौत से बाल-बाल बचे थे, ग्रलग खडी हुई उन्ह प्रशमा भरी नजरा से देख रही थी ग्रौर गव की भावना के साथ सोच रही थी "तुम निर्भीक ग्रादमी हो। इसीलिए इतन ग्रामोद प्रमादप्रिय भी हो।"

मित्र-विछोह

माच, १६१६। रेलगाडी फिर पेत्रोग्राद से मास्को जा रही थी। एक डिब्बे मे व्लादीमिर इल्यीच ग्रौर बहन ग्राना इल्यीनिच्ना बैठे थे। रात का समय था। मिट्टी के तेल का लैम्प मद मद उजाला फेंक रहा था। डिब्बा हिचकोले खा रहा था। पहियो की लगातार एक सी ग्रावाज उक्ताहट पदा कर रही थी।

ग्राना इल्यीनिच्ना कोने मे कधे झुकाये हुए बैठी थी। व्लादीमिर इल्यीच ग्रौर वह पेत्रोग्राद माक तिमोफेयेविच – ग्राना इल्यीनिच्ना के पति – को दफनाने गये थे।

सोवियत देश पर एक ग्रौर विपत्ति ग्रा पडी थी। टाइफस का प्रकोप शहरा ग्रौर गावा मे, रेलगाडिया म हजारा लागा की जान ले रहा था। ग्रस्पतालो का ग्रभाव था, डाक्टरा का ग्रभाव था, दवाइया का ग्रभाव था।

माक तिमोफेयेविच येलीजारोव सरकारी काम से पेत्रोग्राद ग्राये थे। मगर यहा टाइफस ने दबोच लिया ग्रौर कुछ ही दिना म वह इस दुनिया स उठ गये। वोल्कोव कब्रिस्तान मे भोज के सफेद पड के नीचे प्रियजना की दो कब्रो की बगल मे एक कब्र ग्रौर खडी हो गयी।

व्लादीमिर इल्यीच के जीवन में सुख-दुख भरे कितने साल याकोव के साथ जुड़े हुए थे! जवानी में याकोव साशा का साथी था। साशा को फांसी हुई, तो याकोव उल्यानोव परिवार का अंग ही बन गया। कितना बुद्धिमान, सहृदय और आत्मीय था वह!

रेलगाड़ी रात के अंधेरे को चीरती हुई दौड़ी जा रही थी। लाइन के किनारे-किनारे घना भोज के महीने का पत्तों से रहित जंगल काली बाड़ जैसा लग रहा था। रास्ते में फूस की छतों के धराशायी गांव आते और पीछे छूट जाते। कल-कारखानों की चिमनियों से धुआं नहीं निकल रहा था। कल-कारखाने बंद होते जा रहे थे। कच्चे माल की कमी थी। ईंधन नहीं था। सारी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी थी।

मास्को में एक और दुखद समाचार प्रतीक्षा कर रहा था। अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष याकोव स्वेर्दलोव को स्पेनी फ्लू हो गया था। यह भयंकर बीमारी न जाने कहां से, शायद स्पेन से, तूफान की तरह फैल गयी थी। हजारों लोग मर रहे थे, फ्लू से, टाइफस से, भुखमरी से, गृहयुद्ध से। विपत्ति पर विपत्ति। विदेशी अखबारों में खुश होते हुए बदनीयती से लिखा : सोवियत सत्ता का अन्त अब दूर नहीं!

व्लादीमिर इल्यीच ने माथा पकड़ लिया। वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें।

काश, स्वेर्दलोव रोग से मुक्ति पा जायें! वे दोनों कितने हेलमेल से काम करते थे!

"याकोव मिखाइलोविच, हम..." व्लादीमिर इल्यीच किसी काम के बारे में कहना शुरू करते कि याकोव मिखाइलोविच छूटते ही जवाब देते :

"कर दिया है।"

"क्या कहा, कर दिया है?"

"हां, हां, व्लादीमिर इल्यीच, कर दिया है।"

"कब, याकोव मिखाइलोविच? हमने इस बारे में अभी पूरी तरह बात भी नहीं की थी!"

"पूरी तरह..." स्वेर्दलोव हंसने लगते।

वह लेनिन की बात आधे में ही समझ जाते थे। लेनिन स्वेर्दलोव की कार्यकुशलता, क्रांतिकारिता और राजनीतिमत्ता के कायल थे।

डाक्टरो ने व्लादीमिर इल्यीच को मरीज के पास जाने की इजाजत नही दी। स्पेनी फ्लू सक्रामक बीमारी थी।

मगर लेनिन उनकी बात अनसुनी कर साथी से मिलने आये और भौंचक्के रह गये।

क्या ये स्वेदलोव ही है? याकाव मिखाइलाविच तकियो का सहारा लिए हुए निश्चल पडे हुए थे। वह बेहद कमजोर हो गये थे। नाक पहले से कुछ नुकीली लग रही थी। दाढी बढ गयी थी। आखें ढलकी हुई थी। चेहरा बूढा और अनजान सा लग रहा था।

व्लादीमिर इल्यीच शय्या के पास बठ गये। "मेरे प्यारे, विश्वासनीय, प्रतिभाशाली साथी, हमे छोडकर मत जा!" वह सोच रहे थे।

याकाव मिखाइलोविच का स्वस्थ, यौवन की आभा से भरपूर, सतत सक्रिय, जिन्दादिल और साहसी रूप—उस समय स्वेदलोव की आयु सिर्फ ततीस वर्ष ही थी—लेनिन को अच्छी तरह याद था। वह कल्पना भी नही कर सकते थे कि स्वेदलोव कभी किसी भयकर से भयकर खतरे से डरे होगे। और लोगो से बाते करने, उन्हे क्रातिकारी कार्यो के लिए प्रेरित करने मे वह कितने कुशल थे!

पलको मे हरकत हुई। स्वेदलोव ने आखें खोली। कही दूर से, अर्धचेतना की हालत मे उन्होने लेनिन को देखा और जब पहचान गये, तो होठो पर एक विषाद और व्यथा से भरपूर मुस्कान तिर गयी। व्लादीमिर इल्यीच ने उनका दफ्ती जैसा चपटा हाथ अपने हाथ मे ले लिया। गला रुध गया।

सिर झुकाये हुए लेनिन बाहर निकल आये।

कुछ मिनट बाद स्वेदलोव के प्राणपखेरू उड गये। मृत्यु से पहले एक क्षण के लिए चेतना मानो इसीलिए लौटी थी कि लेनिन को देख सके। आखो ने अलविदा कहा और हमेशा-हमेशा के लिए मुद गयी।

सोवियत समाज के जीवन और निर्माण के सबसे पहले और कठिन दिनो के अपने इस अथक सहयोगी को व्लादीमिर इल्यीच आजीवन नही भुला पाये।

जीवन यथावत जारी था। सोवियत समाज की रक्षा करने, उसे मजबूत बनाने की जरूरत थी।

लेनिन ने स्वेर्दलोव के स्थान पर मिखाईल इवानोविच कालीनिन को अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी का अध्यक्ष नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा।

कालीनिन का जन्म त्वेर प्रदेश के एक किसान परिवार में हुआ था। वह पीटर्सबर्ग में मजदूर रह चुके थे। लेनिन जानते थे कि सबसे उपयुक्त व्यक्ति कौन है। मिखाईल कालीनिन अच्छे कम्युनिस्ट, ईमानदार और बुद्धिमान थे। लोग भी उन्हें बहुत चाहते थे।

"मैं, मेहनतकश जनता का बेटा ..."

सर्वोत्तम हथियारों से लैस दस लाख से अधिक सफेद गार्ड और विदेशी हस्तक्षेपकारी रूस के हृदय मास्को की ओर बढ़ रहे थे। शत्रु के छह मोर्चों ने सोवियत मातृभूमि को अपने लौह घेरे में कस लिया था।

मई महीने की बात है। एक दिन सारा मास्को अभूतपूर्व हलचल का केन्द्र बन गया। आशंकित औरतें सुबह से ही कारखानों और फैक्टरियों के फाटकों पर इकट्ठा हो रही थीं, किसी चीज का इन्तजार कर रही थीं। छोटे छोटे, कागज जैसे सफेद चेहरों और भूख से चमकती आंखोंवाले बच्चे, मास्को की मजदूर बस्तियों के बच्चे माओं के पल्ले पकड़े उनसे चिपटे खड़े थे।

कारखानों के फाटक खुले। उनसे मजदूर बाहर निकले। कोई फौजी कोट पहने था, तो कोई रूई भरी जैकेट। किट और बंदूकें सबके कंधों पर थीं।

"कतारबंद!" फौजी आदेश सुनायी दिया।

लाल सैनिक कतार बांध कर खड़े हो गये। उन्होंने कुछ ही समय पहले अल्पकालिक सैनिक प्रशिक्षण पाया था। सीधी कतार बांधना तो उन्हें खास नहीं आता था, पर बंदूक चलाना सब जानते थे।

"लाल मैदान की तरफ क्विक मार्च!"

मास्को के सभी इलाकों से, सभी कारखानों से मजदूर-सैनिकों की कतारों पर कतार क्रेमलिन की दीवारों की ओर बढ़ रही थीं।

बगल में साथ साथ सिरों पर सफेद और लाल रूमाल बांधे औरतें भी चल रही थीं। वे ठोकर खाकर गिरते-गिरते बचतीं, फिर दौड़ने लगतीं, सैनिकों के चेहरों को देखतीं और उन्हें गठरियां पकड़ातीं।

एक बुढ़िया मा, जिसका चेहरा बेटे से बिछड़ने के दुख से मलिन पड़ गया था, चिल्लायी

"वा स्या-स्या, मेरे बेटे! हे प्रभु, मेरे वास्या को बूजुआओं की गोली से बचाना "

नंगे पैर लड़के सैनिक टुकड़ियों के बीच इधर-उधर भाग रहे थे और एक दूसरे के सामने शेखियां बघार रहे थे

'मेरे बापू के पास जानते हो कितनी बढ़िया बंदूक है?"

'जा, जा, बड़ा आया बंदूक वाला। मेरे बापू के पास मशीनगन है। उससे गोलियां दागेंगे, तो सब बूजुआ ढेर ही हो जायेंगे।"

"और मेरे बाप के पास देखने हो कितने हथगोले हैं? सारी कमर ढकी हुई है। देखना, हमारे कारखाने के मजदूर बदमाश सफेद गार्डों की कैसी खबर लेते हैं "

"मैं, मेहनतकश जनता का बेटा, सोवियत जनतंत्र का नागरिक, अपने को आज से मजदूरों और किसानों की सेना का सैनिक घोषित करता हूं

कितने अभिमान भरे, कितने उदात्त शब्द थे! उन्हें सुनकर दिल और जोर से धड़कने लगता था। साल भर पहले जब लेनिन ने खुद सोवियत राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करने की शपथ ली थी, तो उनका हृदय भी ऐसे ही जोर-जोर से धड़का था। यह मिखेल्सन कारखाने की बात है। वहां युवा मजदूरों और लाल सेना के सैनिकों के साथ लेनिन ने शपथ ग्रहण की थी "मैं मजदूरों और किसानों की सरकार की पहली पुकार पर ही सोवियत जनतंत्र की रक्षा के लिए उठ खड़े होने की शपथ खाता हूं।"

सोच में खोये हुए व्लादीमिर इल्यीच साथियों के साथ लाल मैदान में पहुंचे।

लाल मैदान में लोगों का सागर उमड़ा हुआ था। भीड़ का शोर संयत और दबा-दबा था। व्लादीमिर इल्यीच ने ऊपर उठी हुई संगीनों का जंगल देखा। इस्पात धूप में कठोर और चकाचौंध करती हुई चमक फेंक रहा था। औरतें अपने पतियों और बेटों से अलग नहीं हो रही थीं। व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि बहुत से लाल सैनिक अपनी पत्नियों को गले लगाकर विदा ले रहे थे, बच्चों को चूम रहे थे।

लाल मैदान में लाल सेना की और अनिवार्य सैनिक सेवा के लिए भरती हुए सैनिकों की टुकड़ियां एकत्र थीं।

पिछले साल लेनिन ने आज्ञप्ति जारी की थी कि सभी मज़दूरों और मेहनतकशों के लिए सैनिक प्रशिक्षण अनिवार्य है। मातृभूमि खतरे में है। मज़दूरो, देश के सभी नागरिको, बंदूक चलाना सीखो, सोवियत मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार रहो!

लाल मैदान में कोई विशेष मंच नहीं बनाया गया था। बस एक कीचड़ से सना हुआ पुराना ट्रक खड़ा हुआ था। उसकी एक बगल पर लाल कपड़ा डाल दिया गया था और एक तख्ता चढ़ाकर उसपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था "ज़मींदारों और पूंजीपतियों के कमीने गिरोह को तहस नहस करके ही दम लेंगे।"

लाल सेना के कमांडरों के साथ व्लादीमिर इल्यीच ने सभी टुकड़ियों का मुआयना किया और ट्रक पर खड़े हुए।

आंखों के सामने हज़ारों मज़दूर बंदूकें हाथ में लिये खड़े थे।

उनमें से हर एक का अपना दुख था, सुख था, प्रेम था, सपने थे। फिर भी हर कोई मज़दूरों और किसानों की सरकार की पहली पुकार पर सब कुछ त्यागकर सफ़ेद गार्डों के विरुद्ध लड़ने के लिए उद्यत था।

व्लादीमिर इल्यीच ने बोलना शुरू किया।

सारे मैदान में खामोशी छा गयी।

लेनिन कह रहे थे कि पहले सिपाही को ज़ार और बूर्जुआ वर्ग की रक्षा करना सिखाया जाता था। और अब लाल सैनिक ख़ुद अपनी, अपने घर, अपने बच्चों की रक्षा कर रहे हैं। ज़मींदारों और बूर्जुआओं से अपने राज्य की रक्षा कर रहे हैं। लेनिन की बातें दिल को छूनेवाली और सीधी सादी थीं। वह वही बातें कह रहे थे, जिनके बारे में क्रेमलिन की दीवार के सामने खड़े हज़ारों लाल सैनिक ख़ुद भी सोच रहे थे, उनकी पत्नियां भी सोच रही थीं। पत्नियां नहीं रो रही थीं। हां, चेहरे उनके पीले अवश्य पड़ गये थे।

मीटिंग के बाद लाल सेना की टुकड़ियां लाल मैदान से सीधे मोर्चों के लिए रवाना हो गयीं।

सरकारी सपत्ति

जन कमिसारो की परिषद मे कमचारी थोडे ही थे, हालांकि काम बहुत था। मगर हर कोई अपने काम को पसद करता था। सभी खुशी खुशी काम करते थे। व्लादीमिर इल्यीच कर्मचारियो के इस छोटे से समुदाय का आदर करते थे। जन कमिसारो की परिषद की मीटिंग के लिए लेनिन पाच मिनट पहले ही आ गये। वह हमेशा पहले आ जाया करते थे। वह अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ गये। सामने तरह-तरह की सूचनाओ और तारो का ढेर लगा हुआ था। जब तक परिषद के अन्य सदस्य आते, लेनिन कागजो को पढने लग गये। कुछ को पढकर उन्हान अलग रखा, कुछ पर हस्ताक्षर किये और कुछ को वापस सेक्रेटरी को भेज दिया।

सभी जन कमिसार ठीक समय पर पहुच गये। कोई नही चाहता था कि उसका नाम कारवाई रिपोर्ट मे देर से आनेवालो म दज हो या जो इससे भी बदतर था, उसे चेतावनी मिले। लेनिन देर से आनेवालो को माफ नही करते थे।

"तो मीटिंग की कारवाई शुरू होती है," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

एक साथी खडा होकर खाद्य स्थिति पर रिपोर्ट पेश करने लगा। वह खाद्य आयोग का सदस्य था। खाद्य आयोग के पास सभी उपलब्ध खाद्य पदार्थों का एक एक पाउण्ड तक का हिसाब था। साथी ने बताया कि इस महीने मेहनतकशो को कितना अनाज, नमक और मक्खन दिया जा सकता है।

हर आदमी के हिसाब म आनेवाली मात्रा बहुत कम थी। बेशक बच्चो के लिए कुछ अधिक की व्यवस्था थी, पर वह भी अपर्याप्त थी।

'और बेसहारा बूढो को न भूलियेगा," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

रिपोर्ट पेश करनेवाले साथी ने जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष के सुझाव का कोई जवाब नही दिया। लगता था कि खाद्य स्थिति सचमुच ही बहुत सकटपूर्ण थी।

'बेसहारा बूढो को भुलाना ठीक नही," व्लादीमिर इल्यीच ने दृढतापूर्वक पुन दोहराया। "अगर सोवियत सत्ता उनकी चिता नही करेगी, तो और कौन करेगा? नही, कोई न कोई रास्ता ढूढना ही होगा।'

व्लादीमिर इल्यीच ने खाद्य विभाग के जन कमिसार अलेक्सांद्र द्मीत्रियेविच की ओर प्रश्न भरी निगाहो से देखा। अलेक्सांद्र द्मीत्रियेविच

त्सुरूपा को लेनिन बहुत पहले से, जब वह निर्वासन से लौटे थे तबसे जानते थे। व्लादीमिर इल्यीच को वह एकदम पसंद आ गये थे। खुशमिजाज, नीली आंखें, उलझे-उलझे, घुंघराले, हल्के सुनहरे बाल।

लेकिन सवाल बाहरी शक्ल-सूरत का नहीं था। अलेक्सांद्र दमीत्रियेविच बहुत अच्छे क्रांतिकारी थे और अपने इसी गुण के कारण लेनिन को पसन्द आये थे। वह लगनशील कार्यकर्ता और अत्यन्त कुशल जन कमिसार थे।

लेकिन उन्हें यह क्या हो गया है? लेनिन ने उन्हें गौर से देखा। कितने दुबले पड़ गये हैं! चेहरा कितना पीला-पीला है!

"भरपेट खाना न खाने की वजह से!" व्लादीमिर इल्यीच समझ गये।

उन्होंने नोटबुक से एक कागज फाड़ा, रिपोर्ट पेश करनेवाले को सुनते रहे और कागज पर त्सुरूपा के लिए एक सख्त नोट लिखा कि सरकारी संपत्ति की ऐसी उपेक्षा ठीक नहीं। उसे संभालकर रखना चाहिये।

त्सुरूपा ने नोट पढ़ा और मुस्करा दिये। व्लादीमिर इल्यीच स्वास्थ्य को, विशेषतः राज्य के लिए बहुत काम करनेवाले लोगों के स्वास्थ्य को सरकारी संपत्ति कहा करते थे। त्सुरूपा की इच्छा हुई कि वह व्लादीमिर इल्यीच का जवाब दें कि वह अकेले ही भूखे नहीं रहते, भूखे दूसरे भी हैं, और किसी न किसी तरह अच्छे दिनों तक खींच ही लेंगे।

लेकिन इस बीच खाद्य आयोग के सदस्य ने अपना भाषण समाप्त कर दिया था और त्सुरूपा ने व्लादीमिर इल्यीच को जवाबी नोट न लिखकर हाथ उठाकर बोलने की अनुमति मांगी। विचाराधीन प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण था। खाद्य विभाग के जन कमिसार का इस प्रश्न पर बोलना अनिवार्य था। वह खड़े हुए। मगर एकाएक लड़खड़ाकर गिर गये और बेहोश हो गये। लेनिन उछलकर खड़े हुए और उनकी तरफ दौड़े

"अलेक्सांद्र दमीत्रियेविच, क्या हो गया है आपको?"

त्सुरूपा मुर्दे की तरह पीले पड़े हुए जमीन पर पड़े थे। लोगों ने उन्हें घेर लिया। कोई डाक्टर को टेलीफोन करने दौड़ा। कोई उनके चेहरे पर पानी छिड़कने लगा। बदन में कुछ हरकत हुई। गहरी सांस के साथ सीना ऊपर उठा। वह होश में आ रहे थे। लोगों ने उन्हें उठाकर कुर्सी पर बिठाया। उन्होंने रूमाल से चेहरा पोंछा। उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था कि वह मानो अपने को अपराधी महसूस कर रहे हों।



व्ला० इ० लेनिन महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की दूसरी वर्षगांठ पर लाल मैदान में। मास्को, ७ नवंबर, १९१९।

ТЫ

ЗАПИСАЛСЯ
ДОБРОВОЛЬЦЕМ?



फेलिक्स एदमुदोविच दज़ेर्जीस्की। १६१६।



"तुमने स्वयंसेवकों मे नाम लिखाया?" चित्रकार – द० मोच्रोर।



मिखाईल वसीलियेविच फ्रुंजे। १६१६।

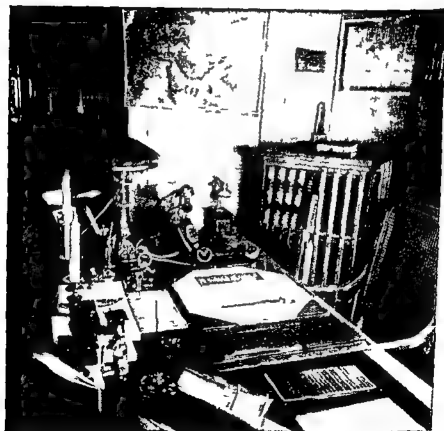


ला० इ० लेनिन क्रेमलिन में श्रमदान के समय। १ मई, १९२०। चित्रकार–म० सोकोलोव।

व्ला० इ० लेनिन। मास्को १ मई, १९२०।



क्रेमलिन में व्ला० इ० लेनिन का कक्ष।



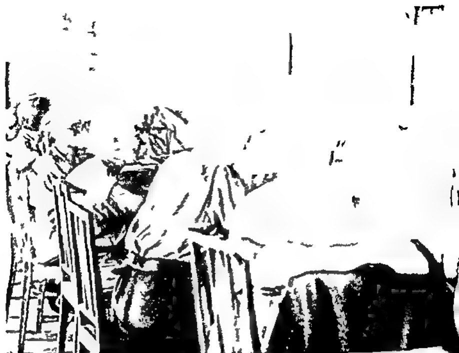


व्ला० इ० लेनिन अपने क्रेमलिन कक्ष मे। मास्को, ४ अक्तूबर, १९२२।





व्ला० इ० लेनिन बिजलीकरण की योजना के बारे में रिपोर्ट पेश करते हुए। चित्रकार – ल० श्मात्को।



व्ला० इ० लेनिन कोमिण्टर्न की दूसरी कांग्रेस में एक आयोग की बैठक में।
मास्को, जुलाई-अगस्त, १९२०।



[illegible] १९७०।



व्ला० इ० लेनिन क्रेमलिन म जन कमिमारा की परिपद की बठक मे।
३ अक्तूबर, १९२२।



क्रेमलिन के फ्लैट म व्ला० इ० लेनिन अपने परिवार के साथ। निचली पंक्ति व्ला० इ० लेनिन, ना० को० क्रूप्स्काया, आ० इ० यलीज़ारोवा। ऊपरी पंक्ति म० इ० उल्यानोवा, द० इ० उल्यानोव, ग० या० लोज़गाचेव। मास्को, शरद, १९२०।



व्ला० इ० लेनिन गोर्की में सैर करते हुए। अगस्त १९२२ का प्रारंभ।



व्ला० इ० लेनिन और ना० क० क्रूप्स्काया अपने भतीजे विक्तोर उल्यानोव और एक स्थानीय मजदूर की बेटी वेरा के साथ। गोर्की, अगस्त, १९२२ का प्रारंभ।



व्ला० इ० लेनिन। चित्रकार—न० आन्द्रेयव।

"ओह, मैं भी ये क्या तमाशा कर बैठा! मीटिंग में विघ्न डाल दिया!"

"खाद्य विभाग के जन कमिसार अपर्याप्त भोजन के कारण बेहोश हो गये," व्लादीमिर इल्यीच सिर हिलाते हुए कह रहे थे। "जीवन कितना कठिन हो गया है! पर फिर भी सरकारी संपत्ति की रक्षा करना जरूरी है," उन्होंने त्सुरुपा से कहा। "साथियो, यह सरकारी संपत्ति बहुत गंभीर हालत में है। मैं समझता हूं कि इसे तुरन्त पूरी मरम्मत के लिए भेजा जाना चाहिये।"

"आया खुशी का दिवस मई का..."

अभी सुबह भी नहीं हुई थी कि व्लादीमिर इल्यीच उठ गये। कहीं नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना की नींद न खुल जाये, वह बिना कोई आहट किये, रसोई में गये। आज वह एक पुराना सूट और पुराने जूते पहने हुए थे। टाई नहीं बांधी थी।

रसोई में केतली में पानी खौल रहा था। पतीली में उबला हुआ आलू गरम-गरम भाप छोड़ रहा था। क्रेमलिन में उल्यानोवों के घर का कामकाज साशा के जिम्मे था। वह इवान वसील्येविच बाबुश्किन की, जिन्हें ज़ार की पुलिस ने १९०६ में मार डाला था, चचेरी बहन थी।

"व्लादीमिर इल्यीच, आप सचमुच तैयार हो गये?" साशा ने आश्चर्य से पूछा।

"यह क्या?" व्लादीमिर इल्यीच ने, जिनकी आंखों में एक तरह की चालाकी भरी चमक थी, केतली और पतीली की ओर इशारा करते हुए पूछा। "यह क्या? मेरे लिए नाश्ता किसने तैयार किया है? शुक्रिया, साशा। आइये, साथ-साथ नाश्ता करें।"

और नाश्ता करने बैठ गये। गिलास में कड़ी चाय उड़ेलते हुए साशा अभी भी अपना आश्चर्य छिपा नहीं पा रही थी

"यह आपका काम नहीं है, व्लादीमिर इल्यीच। आपको दिमागी काम करना चाहिये।"

"और अगर सोवियत राज्य को जरूरत हो कि हम कम से कम एक दिन हाथों से भी काम करें, तो?" व्लादीमिर इल्यीच मुस्कराये।

जल्दी-जल्दी नाश्ता खत्म कर वह घर से निकल गये। सुबह सुहावनी, ताजगी भरी थी। हवा के मद मद चावे पडा क चमकीले, हर पत्ता को डुला रहे थे। नीले आसमान म सफेद बादल उड रहे थे।

क्रेमलिन मे आज असाधारण चहल पहल थी। मदान मे सनिक स्कूल के विद्यार्थियो की कतार खडी थी। व क्रेमलिन म ही रहते और शिक्षा पाते थे। पास ही भ जन कमिसारा की परिषद और अखिल रूसी केद्रीय कायकारिणी के कमचारी भी खडे थे।

यह पहली मई का दिन था।

पार्टी ने आज औत्सविक प्रदशना के बदले "सुब्बोतिनक" यानी शनिवासरीय श्रमदान मे भाग लेन की अपील की थी।

साल भर पहले, एक शनिवार को मास्का क एक रेलवे डिपो के मजदूरा न दिन के काम के बाद घर न जाकर अपन वकशापा म चार इजना और सोलह डिब्बा की मुफ्त मरम्मत की थी। लेनिन ने तब मजदूरा के इस पहले श्रमदान के बारे म शानदार शुरुआत ' शीषक से एक लेख लिखा था। उन्हाने स्वच्छा से किय गये इस मुफ्त श्रम को कम्युनिस्ट श्रम की सज्ञा दी थी।

इस बार पार्टी ने पहली मई, १९२० के पव का अखिल रूसी श्रमदान का दिन घोषित किया। हमारे विशाल देश के सभी भागो मे लोग सामूहिक श्रम म भाग लेने के लिए सडका पर निकले। कल-कारखाना के मजदूरा ने अपने अपने वकशापा मे काम किया। प्रत्यक नागरिक ने देश के हित के लिए कोई न कोई महत्त्वपूण काम किया।

क्रेमलिन सैनिक स्कूल के विद्यार्थी अपनी बरका से थोडी दूरी पर शाही तोप के पास खडे थे। तोप लोहे के अरावे पर खडी थी। पास ही लाह के गोले रखे हुए थे। शाही तोप का इस्तमाल कभी नही किया गया था। प्राचीन काल के कारीगरो ने उसे ऐसा बनाया था कि देखनेवाल चकित हो और दुश्मन भय से काप जाये। वह हमेशा से क्रेमलिन म ही खडी थी।

कमाडर ने विद्यार्थियो को बताया कि क्या करना है। क्रेमलिन के अहाते म पडे शहतीरो, तख्तो और कबाड को हटाना है, सफाई करनी है।

तब तक व्लादीमिर इल्यीच भी आ गये। एक पुराना सा कोट और टोपी पहने हुए, गभीर और अज्ञात उमग से भरपूर और आख खुशी से चमकती हुइ।

"मैं हाजिर हूं," सैनिकों की भांति तनकर खड़े होते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने कमांडर से कहा। 'मुझे भी श्रमदान में भाग लेने दीजिये।'

"दायीं बगल में खड़े हो जाइये," कमांडर ने कहा।

क्रेमलिन के घंटाघर ने अपनी सुमधुर आवाज से श्रमदान का समय शुरू होने की सूचना दी। आर्केस्ट्रा बजने लगा।

सभी लोग काम में जुट गये। संगीत बज रहा था। धूप खिली हुई थी। सैनिक विद्यार्थी इससे बहुत खुश थे कि लेनिन उनके साथ काम कर रहे हैं।

शहतीर काफी भारी थे। एक को छह-छह आदमी उठा रहे थे। शीघ्र ही विद्यार्थियों ने गौर किया कि व्लादीमिर इल्यीच हर बार शहतीर को मोटे हिस्से की तरफ से उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

"साथी लेनिन," उनमें से एक बोला, "यह ठीक नहीं कि आप ऐसा भारी बोझ उठायें।"

"आप भी तो उठा रहे हैं! तो मैं ही क्यों न उठाऊं?" व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

"नहीं, व्लादीमिर इल्यीच, बेहतर होगा कि आप घर चले जायें। हम आपके बगैर सब काम कर लेंगे," दूसरे विद्यार्थी बोले।

"नहीं, नहीं। मैं नहीं जाऊंगा।"

"जरा अपनी उम्र का तो ख्याल कीजिये, व्लादीमिर इल्यीच। पचास साल की उम्र में ऐसी मेहनत ठीक नहीं!" एक विद्यार्थी कहने को कह गया, पर फिर खुद ही झेंप भी गया। लेनिन से कैसे बातें कर रहा है, मानो वह जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष न होकर अपने ही मजदूर भाई हों।

व्लादीमिर इल्यीच ने मुड़कर पीछे देखा और तर्जनी से धमकाते हुए हंसकर कहा:

'नौजवान, अगर मैं तुम से बड़ा हूं, तो अच्छा होगा कि मुझ से बहस न करें।'

व्लादीमिर इल्यीच को एक दूसरा मई दिवस याद आ गया, जब वह नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के साथ शूशेन्स्कोये में निर्वासन की सजा काट रहे थे। पुलिसवालों से छिपकर उन्होंने गांव से दूर घास के मैदान में लाल झंडा फहराया था और पहली मई का पर्व मनाया था। सभी ने मिलकर गाया था:

आया खुशी का दिवस मई का,
दुखों की छाया दूर हटे!
गीत हमारा जग-जग गूंजे,
हडतालों का दौर चले!

और वहा, निर्वासन म, सुखी, उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे थ
यही था वह भविष्य। अब जनता आजाद थी, खुद अपने लिए मेहनत करती थी। मोर्चों पर लाल सेना ने प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया था। शीघ्र ही हस्तक्षेपकारियो और प्रतिक्रातिकारियो को धूल चटा देगे और हमेशा के लिए सोवियत धरती से बाहर फेंक देंगे।

व्लादीमिर इल्यीच श्रमदान से लौटे, तो कमीज पसीने से तर थी। एक जूते का तलवा निकल गया था।

'तुम्हारे लिए म बार-बार जूते कहा से लाऊ?" नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना बोली।

और व्लादीमिर इल्यीच के लिए साफ, धुले कपडे लेने चली गया। और वह, थकावट से चूर, मन ही मन सतुष्ट, रसोई मे नल पर, पानी के छपाके दे देकर, हाथ मुह धोने लगे।

बाद मे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने व्लादीमिर इल्यीच के कोट पर एक लाल रिबन बाधा और वह थियेटर स्क्वायर मे काल मार्क्स के स्मारक का शिलान्यास करने को चल दिये। उन्होंने जोशीला भाषण दिया। उसी दिन 'मुक्त श्रम' के स्मारक की नीव भी रखी जानी थी। व्लादीमिर इल्यीच ने उस मौके पर भी भाषण दिया।

शाम को वह तीन इलाकाई मीटिंगो मे बोले। फिर एक मजदूर प्रासाद के उदघाटन समारोह म भाग लिया।

व्लादीमिर इल्यीच आज के देशव्यापी श्रमदान, नये स्मारको के शिलान्यास और सस्कृति प्रासाद के उदघाटन से बहुत खुश थे।

थकावट के मारे वह हाथ पर नही उठा पा रहे थे। पर मन मे एक अद्भुत शाति थी, सतोष था, उल्लास था।

कोम्सोमोल

सभी जानते हैं कि कोम्सोमोल—लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग—के सदस्य, जिन्हें युवा कम्युनिस्ट भी कहते हैं, सबसे साहसी और अग्रगामी नौजवान होते हैं। पार्टी का जाना के दिन के लिए निर्भीक लोगों को किसी खतरनाक मिशन पर भेजना है, तो सबसे आगे आगे कौन जायेंगे? निस्संदेह, कोम्सोमोल के सदस्य।

अब तक दुर्गम समझे जानेवाले क्षेत्रों में रास्ते बनाते हैं। पहली पुकार पर आगे कौन आयेंगे? कोम्सोमोल के सदस्य। लड़ाई छिड़ गयी है। युवा कम्युनिस्ट पुनः सबसे आगे आगे रहेंगे।

गृहयुद्ध के दिनों में कोम्सोमोल के सदस्यों ने असंख्य शौर्यपूर्ण कारनामे दिखाये। साइबेरिया और उक्रइना, क्रीमिया और वोल्गा प्रदेश, कूर्स्क और पेत्रोग्राद में युवा कम्युनिस्टों की, कोम्सोमोल वीरों की घास और फूलों से ढकी हज़ारों कब्रें हैं।

व्लादीमिर इल्यीच ने पेंसिल अलग रख दी। सामने मेज़ पर पतली और लंबी लिखावट में लिखा हुआ कागज़ पड़ा था। यह लेनिन के भाषण की रूपरेखा थी।

आज वह कोम्सोमोल संगठन की तीसरी कांग्रेस में भाषण देंगे। कोम्सोमोल को स्थापित हुए अभी दो ही साल हुए थे। लेनिन को कोम्सोमोल के सदस्यों के बारे में सोचना बड़ा प्रिय लगता था। कितने जोशीले और लगनशील हैं ये मज़दूरों और गरीब किसानों के बच्चे! हमने, हमारी पीढ़ी ने क्रांति तो की है, व्लादीमिर इल्यीच ने सोचा, मगर कम्युनिस्ट समाज का निर्माण पूरा शायद ही कर पायें। यह काम नयी, नौजवान पीढ़ी करेगी। और आप, युवा कम्युनिस्टों, सबसे पहले!

इस बीच कोम्सोमोल के प्रतिनिधि कांग्रेस के लिए इकट्ठे हो गये थे। सभी सीधे श्रमदान से आये थे। सारी सुबह वे रेलवे स्टेशनों पर माल उतारते, गोदामों में लकड़ी के ढेर लगाते और सड़कें साफ करते रहे थे। मास्को का रूप निखर गया था।

२ अक्तूबर, १९२० का दिन था। ठंडी हवा चल रही थी। आसमान में बादल छाये हुए थे। हवा के झोंके शरदकालीन पेड़ों से पीले पत्ते उड़ा रहे थे।

ताजगी भरी सुबह, पत्तों की सरसराहट और सामूहिक गायन से, जिसके कारण उनकी हथेलियां लाल पड़ गयी थीं, युवा कम्युनिस्टों में अपूर्व उल्लास छाया हुआ था। सभी अत्यंत उत्तेजित थे कि आज कांग्रेस में लेनिन भाषण करेंगे।

स्वाभाविक ही था कि कोम्सोमोल के प्रतिनिधि नियत समय पर मालाया दमीत्रोव्का सड़क के ६ नंबर मकान में पहुंचने के लिए उत्सुक थे। अब इस मकान में लेनिनवादी कोम्सोमोल नामक थियेटर स्थित है। तब थियेटर नहीं था। कोई मंच भी नहीं था। अनगढ़े तख्तों से एक कामचलाऊ मंच बना दिया गया था। उस पर एक लंबी सी मेज और व्याख्यान मंच रखा हुआ था। पीछे दीवार पर लाल कपड़ों पर लिखे नारे और पोस्टर टंगे हुए थे।

एक पोस्टर पर बुद्योनी की फौज के सैनिकों की नुकीली कनटोपी पहने हुए एक लाल सैनिक बना हुआ था, जो अधिकारपूर्वक अंगुली से दिखाते हुए पूछ रहा था "तुमने स्वयंसेवकों में नाम लिखाया है?"

कांग्रेस में उपस्थित बहुत से युवा कम्युनिस्ट प्रतिनिधि मोर्चों से ही आये थे। वे स्कूली विद्यार्थी नहीं थे। उनमें बहुत से ऐसे भी थे, जिन्होंने जीवन में एक बार भी किताब हाथ में नहीं ली थी, क्योंकि शिक्षा पाने का कभी कोई अवसर ही नहीं पाया था। मगर सभी ने प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों को छठी का दूध याद दिलाया था, अद्भुत निर्भीकता का परिचय देते हुए कुलकों से छिपा हुआ अनाज छीना था और सोवियत सत्ता की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उद्यत थे।

कोम्सोमोल सदस्य बड़ी आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि अभी लेनिन आयेंगे, कि अभी लेनिन को सुनेंगे।

लेनिन की प्रतीक्षा में वे सब, कोई फौजी ओवरकोट पहने हुए तो कोई चमड़े की जकेट, एक दूसरे से सटे हुए बेंचों पर बैठे थे। तीसरे दशक के युवा कम्युनिस्टों को स्वेदलोव जैसी चमड़े की काली जैकेटें विशेष रूप से पसंद थीं। और फौजी ओवरकोट—पसीने और बारूद की गंध से महकता फौजी ओवरकोट भी खराब पोशाक नहीं था। उस जमाने के कोम्सोमोल सदस्यों की पोशाक का एक अनन्य अंग थी चौड़ी काकेशियाई टोपी या लाल सितारेवाली नुकीली कनटोपी।

"लेनिन क्या कहेंगे?" प्रतिनिधि अनुमान लगा रहे थे। वे सोच रहे थे कि लेनिन लड़ाई के बारे में कहेंगे, संघर्ष, वीरता और कारनामों के

लिए प्रेरित करेंगे। लाल सेना सफेद गार्डों को भगा रही थी। पर गृहयुद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था।

आगे बढ़ते जायेंगे हम

एक कोने में कुछ नौजवानों ने गाना शुरू किया। शीघ्र ही सारा हाल गूंज रहा था

सोवियत सत्ता की रक्षा में।
और मरेंगे एक जुट हम
इसके हेतु लड़ाई में।

फिर सभी खामोश हो गये। जैसे कि सभी मीटिंगों में होता है, अध्यक्षमंडल का चुनाव शुरू हुआ। अध्यक्षमंडल की मेज लाल कपड़े से ढकी हुई थी। सभी साथी अपनी जगहों पर बैठ गये। दीवार पर मार्क्स और एंगेल्स के चित्र टंगे हुए थे।

अचानक दरवाजे के पास बैठे हुए नौजवान खुशी से चिल्लाये

"लेनिन!"

सारा हॉल खड़ा होकर तालियां बजाने लगा। कोम्सोमोल के नौजवान लेनिन को अत्यधिक चाहते थे। लेनिन में उनकी अटूट निष्ठा थी।

लेनिन ने काले मखमली कालर वाले ओवरकोट को उतारा और संभालकर कुर्सी पर रख दिया। फिर मंच पर बैठे साथियों से हाथ मिलाया। उनकी सभी हरकतें, उनकी मुस्कान और सब कुछ जो उन्होंने किया और जैसे किया, कोम्सोमोल नौजवानों को इतना पसंद आया वह उन्हें इतने अच्छे प्रिय और सहृदय लगे कि भावावेग और एक असामान्य से सौभाग्य की अनुभूति से बहुतों की आंखों में आंसू आ गये।

मंच के किनारे पर आकर लेनिन ने वास्कट की जेब से जंजीरदार बिना ढक्कन की घड़ी निकाली और उसे यों दिखाया मानो वह कह रहे हों कि बस हो गया, तालियां काफी बजा ली, अब कारवाई शुरू की जाय।

कोम्सोमोल युवाओं की नजरों में उनका आकर्षण और बढ़ गया।

उस समय अगर वह कहते कि आप में से हर किसी को अभी मोर्चे पर जाना है, तो सबके सब मोर्चे पर चले जाते।

लेकिन लेनिन ने कुछ और ही कहा। प्रतिनिधि पहले असमंजस में पड़ गये। वे आश्चर्यचकित थे। वे पहले समझ नहीं पाये।

लेनिन बोलते जा रहे थे और मंच पर चहलकदमी करते जा रहे थे। जगह कम थी। अध्यक्षमंडल में जो बड़े थे, वे मेज के पीछे बैठे हुए थे और जो छोटे थे, वे किसी भी बात का लिहाज किये बिना सीधे फर्श पर ही बैठे थे। लेनिन सावधानी से उनकी बगल से गुजरते हुए बोल रहे थे।

वह कह रहे थे कि इस समय कोम्सोमोल-सदस्यों का सबसे बड़ा कर्तव्य है पढ़ना।

सभी नौजवान आश्चर्यचकित थे। लेनिन उनके एकाग्र, युवा चेहरों पर आश्चर्य और संभ्रम की छाया देख रहे थे और अपने विचारों को ज्यादा से ज्यादा बोधगम्य ढंग से व्यक्त करने की कोशिश कर रहे थे। शीघ्र ही गृहयुद्ध खत्म हो जायेगा। दुश्मन को खदेड़ दिया जायेगा। मगर आगे? आगे क्या होगा? हमें निर्माण शुरू करना है। कल-कारखाने बनाने हैं। ट्रैक्टर, हवाई जहाज, मशीनें बनानी हैं। देश का बिजलीकरण करना है। बिजलीकरण क्या है, आप जानते हैं?

नहीं जानते तो जानना चाहिये। और भी बहुत कुछ जानना चाहिये।

व्लादीमिर इल्यीच ने सरल और समझ में आने योग्य ढंग से युवा कम्युनिस्टों को बताया कि ज्ञान के बिना कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना असंभव है।

और मेहनत करना भी जरूरी है। केवल मजदूरों और किसानों के साथ मिलकर श्रम करने से ही असली कम्युनिस्ट बना जा सकता है।' व्लादीमिर इल्यीच ने बताया कि कम्युनिज्म की शिक्षा पाने का मतलब है जीवन को पूर्ण रूप से पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध सर्वहारा के संघर्ष से जोड़ना और नये कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना।

सपने, जो सिर्फ सपने ही नहीं थे

व्लादीमिर इल्यीच के कक्ष में प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक एच० जी० वेल्स बैठे थे। अब ऐसा शायद ही कोई स्कूली विद्यार्थी होगा, जिसने वेल्स के "विश्वों का संघर्ष," 'टाइम मशीन' और 'अदृश्य मानव' नामक

किताबें न पढी हो। कल्पना की आश्चर्यजनक उडान से भरपूर उनकी किताबें सारी दुनिया म मशहूर है।

वेल्स पूजीवादी समाज की कमियो की आलोचना करते थे और विज्ञान और तक्नीक मे रुचि रखते थे। व्लादीमिर इल्यीच का उनसे मिलकर बडी खुशी हुई। वह भारी भरकम शरीर चौडे कधो, भली भाति सवारे हुए बालो और बारीक छटी हुई मूछोवाले इस अग्रेज जेण्टलमैन को हसौहा नजरो से देख रहे थे। वेल्स बढिया किस्म का सूट पहने हुए थे। सफेद चिट्टी कमीज का कसकर बद किया हुआ कालर उनकी गोल, अच्छी तरह शेव की हुई ठोडी को और उभार रहा था। साफ दीख रहा था कि इस मशहूर लेखक ने अभाव कभी नही जाना है।

और सोवियत लोग अभावो से बुरी तरह त्रस्त थे। कमीजे खरीदते भी तो कहा खरीदते ? दूकाने खाली थी।

वेल्स ने व्लादीमिर इल्यीच को अपने अनुभव बताये। वह दो हफ्ते पहले इग्लैण्ड से आये थे और तब से पेत्रोग्राद और मास्को की गली गली छान चुके थे। वह कारखानो म गये थे। आधे से ज्यादा कारखाने बद पडे थे। उन्होने स्कूल भी देखे थे। विद्यार्थियो को नाश्ते म रोटी का छोटा सा टुकडा मिलता था। किताबो की कमी थी। एक किताब से तीन-तीन, चार चार विद्यार्थी काम चलाते थे।

वेल्स ने जो कुछ देखा, सुना, उसने उन्हे झकझोर डाला था। सोवियत देश की हालत अकल्पनीय रूप से सकटपूर्ण थी। चारो तरफ तबाही थी, भुखमरी थी, इधन नही था, बिजली नही थी। देश अधकार मे डूबा हुआ था।

अपने यही सब अनुभव वेल्स ने लेनिन को बताये।

शनै शनै लेनिन के चेहरे से मुस्कान गायब हो गयी। नही, वह विख्यात अग्रेज लेखक से नाराज नही हुए थे। लेनिन को स्पष्टवादिता पसद थी। और वेल्स सच कह रहे थे रूस पूर्ण तबाही के कगार पर खडा है। वेल्स का कहना ठीक ही था कि इस तबाही का कारण बोल्शेविक नही, बल्कि जार सरकार, रूसी और विदेशी पूजीपति है। उन्होने ही रूस को युद्ध म घसीटा था। लेकिन साथ ही वेल्स को विश्वास नही था कि बोल्शेविक रूस को गरीबी और युद्ध से उबार सकते ह, अपने परो पर खडा कर सकते है।

लेनिन मेज के दूसरी तरफ बैठे वेल्स की ओर झुके और किंचित व्यंग्य भरी दृष्टि से उन्हें देखते हुए पूछा

"और आप जानते हैं कि बाल्शेविक रूस के उद्धार के लिए क्या कर रहे हैं? जानना चाहेंगे?"

वेल्स कल्पनाजीवी और वैज्ञानिक, दोनों थे। इसीलिए लेनिन ने उन्हें अपनी योजना के बारे में बताने का निर्णय किया। योजना बहुत बड़ी थी।

जवानी के दिनों से ही व्लादीमिर इल्यीच के एक घनिष्ठ साथी थे ग्लेब मक्सीमीलियानोविच क्रजीजानोव्स्की। वह कम्युनिस्ट थे, योग्य इंजीनियर थे और कवि भी थे। जारशाही के जमाने में उन्होंने कुछ पोलिश क्रांतिकारी गीतों का रूसी अनुवाद किया था। उन्हें लोग पहले भी गाते थे और अब तो सारा देश गाता था

मगर हम उठायेंगे
गर्व से और साहस से
झंडा संघर्ष का
मजदूरों के सुख का

लेनिन ने इंजीनियर क्रजीजानोव्स्की के साथ कई शाम बैठकर अपनी योजना पर विचार किया था। बाद में उसे अंतिम रूप देने के लिए दो सौ सबसे बड़े और अनुभवी वैज्ञानिकों की सहायता ली गयी।

इस समय लेनिन वेल्स को इसी योजना के बारे में बता रहे थे। वेल्स रूसी नहीं जानते थे। लेकिन लेनिन धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते थे। वेल्स अंग्रेजी भाषा पर उनके ऐसे अधिकार से बहुत प्रभावित हुए। जहां तक विचारों का सवाल था, तो वे बिजली की भांति सुस्पष्ट और सबसे साहसिक कल्पना से भी अधिक साहसिक थे। लेनिन की योजना को सुनकर वेल्स हक्के-बक्के रह गये। रूस का विजलीकरण! क्या उसी रूस का, जिसमें असीम मैदान और जंगल हैं, जिसके गांवों में आज भी लकड़ी की छिपटियां जलाकर उजाला किया जाता है, जिसके शहरों में घोर अव्यवस्था छायी है, जिसके कारखाने बंद पड़े हैं, जिसका व्यापार ठप्प है, जिसकी रेलवे लाइनें तहस-नहस हो चुकी हैं?

"ऐसी भयंकर परिस्थितियों में आप इतने विशाल देश के बिजलीकरण का सपना देख रहे हैं?"

"हा। हम बिजलीघर बनायेंगे। गांवों को बिजली देंगे। बिजली की रेल चलायेंगे।"

"आश्चर्यजनक ख्याल है!" लेनिन की सुनते हुए वेल्स सोच रहे थे। 'बिल्कुल स्वप्नद्रष्टा है।' रोमांसप्रधान उपन्यासों के लेखक को लेनिन की योजना कभी सच न सिद्ध होनेवाली कहानी लगी।

दो महीने बाद मास्को के बोल्शोई थियेटर में सोवियतों की आठवीं अखिल रूसी कांग्रेस प्रारंभ हुई। यह दिसंबर १९२० की बात है।

मखमली कुर्सियों पर कामगारोंवाली कमीज और फौजी पोशाक, पुराने कोट और नमदे के जूते पहने गंभीर और गर्वीले चेहरेवाले लोग बैठे थे। ये सोवियत सत्ता के प्रतिनिधि थे। ये यहां नये कानूनों और भावी जीवन की योजनाओं को पास करने के लिए एकत्र हुए थे।

मंच पर देश के बिजलीकरण की योजना का बहुत बड़ा नक्शा बना हुआ था। व्लादीमिर इल्यीच ने इस नक्शे को तैयार करने के लिए अनेक बार क्रजीजानोव्स्की को फोन किया था, नक्शानवीस और कारीगरों को उसे समय पर पूरा करने के लिए आदेश पर आदेश दिये थे। वह चाहते थे कि सोवियतों के प्रतिनिधि आंखों से देख सकें कि हमारी बिजलीकरण की योजना क्या है और हम रूस का कैसा कायाकल्प करेंगे। मिस्टर वेल्स, दस साल बाद फिर आइयेगा और देखियेगा कि

मझोले कद और काली आंखोंवाले इंजीनियर क्रजीजानोव्स्की मंच पर खड़े थे। वैसे वह बहुत सक्रिय और उत्तेजनापूर्ण थे। मगर इस समय बहुत खामोश थे। शायद घबरा रहे थे।

कल यहां, इसी मंच पर लेनिन ने कहा था "सोवियत सत्ता और समूचे देश के बिजलीकरण का ही दूसरा नाम कम्युनिज्म है।' आज इंजीनियर क्रजीजानोव्स्की को बताना था कि बिजलीकरण की इस योजना का कायाकल्प कैसे किया जायेगा। वह घबरा रहे थे। उनके हाथ में प्वाइंटर हल्के-हल्के कांप रहा था। वह प्वाइंटर से नक्शे पर दिखाने लगे। हाल में रोशनी बुझ गयी। प्वाइंटर के नक्शे को छूते ही उसपर एक बत्ती जल उठी। फिर दूसरी, तीसरी... क्रजीजानोव्स्की ने बताया कि हम बिजलीघर कहां बनायेंगे और कैसे बनायेंगे और कैसे हमारे उद्योग और

खेती शीघ्र ही फलने-फूलने लगेंगे। नक्शे पर जली हुई बत्तियां भावी बिजलीघरों के निर्माण-स्थलों का सूचित कर रही थीं। नक्शा जादुई लग रहा था। अर्जीजानोव्स्की की दृढ़ और सशक्त आवाज सारे हाल में गूंज रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने प्रसन्न मित्र के उत्तेजित चेहरे, हाल में बैठे लोगों की एकाग्रता और भविष्य के प्रभात की सूचक नक्शे की बत्तियों का देखा। वह जानते थे कि यह योजना, जिसके लिए उन्होंने इतनी कोशिश की है, सभी प्रतिनिधियों का, सारी जनता का सपना और लक्ष्य बन जायगा। वह अकेले नहीं थे। उनके साथ सारी सोवियत जनता थी, सभी साथी थे।

१६२१ का भयानक साल

अंतत दिसंबर, १६२० में 'प्राव्दा' समाचारपत्र में सैनिक क्रान्तिकारी समिति की आखिरी बुलेटिन छपी कि मोर्चों पर शांति स्थापित हो गयी है, लाल सेना ने हस्तक्षेपकारियों को खदेड़ दिया है और सफेद गार्डों का तहस-नहस कर दिया है। केवल सुदूर पूर्व में ही अभी सोवियत सत्ता स्थापित नहीं हो पायी थी।

लगभग सारे देश में युद्ध खत्म हो गया था। युद्धकालीन कम्युनिज्म की अब और जरूरत नहीं थी। लेनिन ने शांतिकाल की जरूरतों के अनुकूल एक नयी नीति सोची।

लेकिन सोवियत देश एक और भयंकर विपत्ति का शिकार बननेवाला था।

सर्दियों में बर्फ नहीं गिरी थी। पाले ने नंगी धरती को जमा दिया था। वसन्त में अंकुर जो फूटे, तो उनका विकास रुका हुआ था। वे बड़ी आतुरता से बारिश की प्रतीक्षा कर रहे थे, पर वह भी व्यर्थ सिद्ध हुई। सारे वसन्त और सारी गरमियों में बादलों से रहित दमघोटू आसमान से सूरज आग बरसाता रहा। गरम हवा ने जैसे-तैसे उगी फसल से अंतिम रस भी सोख लिया। जमीन सूखकर पत्थर बन गयी। वोल्गा प्रदेश में सारी फसल बरबाद हो गयी। क्रीमिया और दक्षिणी उराल भी सूखे की मार से नहीं बच पाये।

मौत करोड़ो लोगो की राह ताक रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच जन कमिसारो की परिषद के कार्यालय में पहुचे। मीटिंग नियत समय पर शुरू हो गयी। उस में अकालपीड़ितो की सहायता के प्रश्न पर विचार किया जाना था। युद्धकाल की तरह इस बार भी व्लादीमिर इल्यीच ने आदेश दिये, नेतृत्व किया तात्कालिक और निर्णायक कदम उठाने की माग की।

सोवियत सरकार ने जनता के नाम अपील जारी की। सभी प्रदेशो और शहरो को टेलीफोन सदेश भेजे गये "साथियो जहा तक हो सकता है, अकालग्रस्त इलाको की सहायता कीजिये।"

चेका के अध्यक्ष द्जेर्जीन्स्की वोल्गा प्रदेश के लिए अनाज इकट्ठा करने के लिए साइबेरिया गये।

उक्रइना मे फसल अच्छी हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने उक्रइनावासियो को पत्र लिखा।

"तत्काल सहायता की और प्रचुर सहायता की जरूरत है," व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा।

सहायता की अपील विदेशी मजदूरो से भी की गयी।

सोवियत सरकार ने अकालपीड़ित सहायता आयोग स्थापित किया, जिसका अध्यक्ष कालीनिन को बनाया गया। लेनिन मिखाईल इवानोविच कालीनिन पर, उनकी किसान बुद्धि और सर्वहारा सूझबूझ पर बडा भरोसा करते थे।

"अक्तूबर क्रान्ति" नामक एक विशेष ट्रेन से मिखाईल इवानोविच वोल्गा प्रदेश के लिए रवाना हुए।

"पहली चिन्ता बच्चो की करनी है," व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हे कहा और फिर अपनी बात पर जोर सा देते हुए बोले 'भूलियेगा नही, बच्चो की विशेष चिन्ता करनी है।'

मिखाईल इवानोविच ने लेनिन की आवाज म छिपे दर्द को अनुभव किया। अपनी उद्विग्नता को छिपाते हुए वह खासे और दाढी पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया

'भरसक कोशिश करूगा।"

'भरसक नही, उससे भी ज्यादा, व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

रात हो गयी थी। जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के कमरे में बत्ती जल रही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने हस्ताक्षर किये हुए और निबटाये हुए कागजों का ढेर उठाकर अलग रख दिया।

वह बेहद थक गये थे। सिर दर्द से फटा जा रहा था। वह जानते थे कि वह बीमार पड़ने का समय नहीं है। मगर चूंकि इस समय कोई नहीं देख रहा था वह माथे को हथेली पर टिकाकर झुककर बैठ गये। लाख चाहने पर भी वह अकाल की तरफ से अपना दिमाग हटा नहीं पा रहे थे।

"भरसक नहीं, उससे भी ज्यादा!" वह सोच रहे थे।

सोवियत सरकार ने अपने सामर्थ्य से भी ज्यादा प्रयत्न किया। सोवियत कोष में सोना बहुत कम था। लेकिन लेनिन ने बीज खरीदने के लिए १ करोड़ २० लाख स्वर्ण रूबल मंजूर किये।

मजदूरों ने जन कमिसारों की परिषद को लिखा

"साथी लेनिन, हमारे रूस में हजारों गिरजाघर हैं। उन में सोने के क्रास और अन्य कीमती चीजें हैं। बेहतर है कि भूखों को रोटी का इन्तजाम करने के लिए उन्हें जब्त कर लिया जाये।"

शाबाश, मजदूरो! लेनिन को उनका प्रस्ताव बहुत पसंद आया।

तभी टेलीफोन की घंटी बजी। वोल्गा प्रदेश से कालीनिन बोल रहे थे। लेनिन ने डरते-डरते रिसीवर उठाया।

"क्या, कैसी स्थिति है, मिखाईल इवानोविच?"

"बहुत खराब है, व्लादीमिर इल्यीच।"

खेत मुर्दा पड़े थे। गांव मरीचिकाओं की तरह उजाड़ थे। गायों का रंभाना नहीं सुनायी देता था। मवेशियों को या तो मारकर खा लिया गया था, या चारे के अभाव में वे खुद मर गये थे। इन कमबख्त गरमियों में जंगली फल और खुंभियां भी नहीं हुई थीं। लोग घास पत्ते खाने को मजबूर थे। कमजोरी के मारे खड़े भी नहीं हो पाते थे। पूरे के पूरे परिवार कालकवलित हो रहे थे, मानो प्लेग फैली हो।

कालीनिन से बातचीत के बाद व्लादीमिर इल्यीच देर तक कुर्सी पर निश्चल बैठे रहे। ऐसा उनके साथ आम तौर पर होता नहीं था।

अकालपीड़ित सहायता आयोग ने भुखमरी से ग्रस्त प्रदेशों से बच्चों को दूसरी जगहों पर भेजने का इन्तजाम करके ठीक ही किया। इन भूखे,

मरियल, बाजन मे भी भ्रममय बच्चा से भरे वगना को देखकर दिल कराह उठता था।

अकालग्रस्त प्रदेशो मे बच्चो को लानेवाली गाड़िया विभिन्न शहरो मे पहुचने लगी। मास्को मे चुवाश बच्चो की गाड़ी पहुची। भूतपूर्व अमीर उमरावो और बुर्जुग्रावो की कोठिया मे इन अनाथ चुवाशो के लिए बालगृह खोले गये।

रात काफी हो चुकी थी। व्लादीमिर इल्यीच बिना कोई आहट किये घर मे घुसे। सभी सोये हुए थे। केवल मरीया इल्यीनिच्ना ही नही सोयी थी। वह व्लादीमिर इल्यीच की प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होने उन्हे रसोई मे बुलाकर कहा

'भैया, तुम अपनी तनिक भी चिन्ता नही करते। बैठो, कम से कम चाय तो पी लो। तुम्हारा काम मे इतनी बुरी तरह थकी हुई तोटा कि श्रात ही ग्वदम सा गयी।"

व्लादीमिर इल्यीच की नजर मेज पर पडे पार्सल पर पडी। उसे ताम्बोव प्रान्त के किसानो ने भेजा था। उन्होने लिखा था "व्लादीमिर इल्यीच, हम आपको अपने दहात का खाना भेज रहे है। इसे खाकर अपनी ताकत बढ़ाइये।'

'वोलोद्या, तुम कभी किसी से कोई चीज स्वीकार नही करते हो मरीया इल्यीनिच्ना बोली, "और मै और नाद्या भी इस बारे मे तुमसे सहमत है। मगर जरा देखो तो तुम कितने थके हुए हो, क्या शक्ल बन गयी है "

व्लादीमिर इल्यीच बहन की ओर देखकर मुस्करा दिये। मेरी प्यारी मन्याशा! वह बहन को बहुत चाहते थे। १८८७ मे जब साशा को फासी हुई थी, वह छोटी ही थी। सारे शहर ने उल्यानोव परिवार की ओर से मुह मोड लिया था। सिर्फ चुवाश इवान याकोव्लेविच याकोव्लेव नही, जो पिता के गहरे मित्र थे, उन्हे नही छोडा। और चुवाश ओखोत्निकोव ने भी विपत्ति मे उनकी तरफ से मुह नही मोडा था। उल्यानोव परिवार उनका कितना आभारी था!

"जानती हो, हम इस पार्सल का क्या करेगे?" व्लादीमिर इल्यीच पार्सल को थपथपाते हुए बोले। 'मास्को मे चुवाश बच्चे पहुचाये गये है। उनके लिए भेज देगे। ठीक है न, मन्याशा?'

मरीया इल्यीनिच्ना टकटकी लगाये भाई को देख रही थी। बेचारे! कितने थक गये हैं! उनका गला भर आया।

"हम कहेंगे कि इसे सबसे कमजोर बच्चों को दिया जाये," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

मरीया इल्यीनिच्ना ने सिर हिलाकर सहमति जतायी।

व्लादीमिर इल्यीच का सिर अभी भी दुख रहा था। लेकिन वह हंसी मज़ाक करते रहे। ताम्बोव से आया हुआ पासल ऊंट के मुंह में ज़ीरा जैसा था। मगर फिर भी यह सोचकर उन्हें खुशी का अनुभव हुआ कि कल कुछ न हैं, सबसे कमज़ोर बच्चों को कुछ तो पौष्टिक खाना मिलेगा!

नयी आर्थिक नीति

व्लादीमिर इल्यीच के यहां मजदूरों, लाल सेना के कमांडरों और वैज्ञानिकों का तांता लगा रहता था। मजदूर अपने काम के बारे में बताते थे, कमांडर सैनिक स्थिति के बारे में चर्चा करते थे, वैज्ञानिक शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान और उद्योगों से संबंधित सवालों पर परामर्श लेने आते थे। व्लादीमिर इल्यीच हर किसी को ध्यान से सुनते थे, आवश्यक सलाह देते।

बाद में इन सब बातों पर जन कमिसारों की परिषद में विचार होता और सरकार आवश्यक निर्णय लेती, कानून पास करती।

लेनिन से मिलने आनेवालों में किसान भी होते थे। पहले महीनों में किसानों के सामने मुख्य समस्या जमींदारों और कुलकों की ज़मीन की थी। उसे गरीब और मझोले किसानों के बीच कैसे बांटा जाय, उसका बेहतर उपयोग कैसे किया जाये?

बाद में गृहयुद्ध शुरू हो गया।

सोवियत सरकार ने कानून बनाया कि किसानों को सारा अतिरिक्त उत्पादन सरकारी गोदामों में जमा करना होगा। इसका मतलब यह था कि वे सिर्फ अपने खाने और बीजों के लिए आवश्यक गल्ला ही अपने पास रख सकते थे। बाकी सरकार को देना अनिवार्य था। नहीं तो लाल सेना और मज़दूरों को कहां से खिलाया जाता?

किसानों के लिये ये बहुत कठिन दिन थे। पर और कोई उपाय था भी तो नहीं। कठिनाइयां सभी को उठानी पड़ रही थीं।

मगर अब गृहयुद्ध भी खत्म हो गया। जन कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के कार्यालय में किसानों की भीड़ लगने लगी। दढ़ियल जीवन को समझनेवाले, अनुभवी किसान। लेनिन के अतिथि बनते थे। वह उनसे पूछते भविष्य के बारे में आप क्या सोचते हैं?

किसान चाहते अतिरिक्त उत्पादन की अनिवार्य उगाही बन्द की जाय। इसकी जगह पर टैक्स की व्यवस्था की जाय।

इसका क्या मतलब था? इसका मतलब था कि सारी उपज न छीनी जाय। जो ज्यादा बोये, उसके पास ज्यादा अनाज रहने दिया जाय। किसान की रुचि इसी में है। तब वह ज्यादा से ज्यादा बोना चाहेगा और मेहनत भी अच्छी करेगा। उसे सरकार को टैक्स के रूप में जितना अनाज देना है, उतना दे देगा और बाकी उसके पास ही रहेगा, जिसे बाजार में बेचकर वह अपनी जरूरत की चीजें—साबुन, कपड़ा, मिट्टी का तेल, खेती के औजार, आदि खरीद सकेगा। और क्योंकि ये चीजें खेतों में नहीं उगतीं तो इसका मतलब है कि शहरों में कल-कारखानों का विकास किया जाये, ताकि किसी चीज की कमी न रहे।

क्या मेहनतकश जनता अपने ही हाथों से गरीबीरहित जीवन का निर्माण नहीं कर पायेगी? पूंजीपतियों को, सफेद गार्डों को आखिरकार इसीलिए तो खदेड़ा है कि हम अपने भाग्य का निर्माण आप करें।

किसानों की ऐसी बातों से, साथियों की सलाहों से और खुद अपने सोचने से लेनिन के मन में एक नयी योजना ने जन्म लिया। इसे उन्होंने नयी आर्थिक नीति का नाम दिया।

सोवियत सरकार ने निजी व्यापार की अनुमति दे दी। लेकिन बहुत सीमित पैमाने पर। इससे सोवियत सत्ता को कोई खतरा नहीं था। आखिरकार शासन तो मजदूरों और किसानों के हाथों में था। मजदूर किसान सत्ता इस बात का पूरा पूरा ख्याल रखने लगी कि उद्योग, रेलवे, जहाजरानी, वगैरह की बहाली और विकास हो। अब यह सब कुछ सारी जनता की, राज्य की संपत्ति था।

लेनिन जो कुछ करते थे, सब जनता के लाभ, भलाई और सुख के लिए था। अब युद्ध के बाद वह अर्थव्यवस्था, व्यापार, उद्योग, बिजलीकरण, मशीन निर्माण और गांवों तथा शहरों के बीच सुदृढ़ मैत्री के विकास पर जोर दे रहे थे।

नयी ग्रार्थिक नीति की जरूरत इसी के लिए थी। पार्टी की दसवा काग्रेस ने लेनिन की योजना का अनुमोदन कर दिया।

नये ढग के जीवन के निर्माण मे लेनिन को कम कठिनाइया का सामना नही करना पडा। रास्ते म बाधाए पडी। तरह-तरह के मतभेद पैदा हुए। नयी ग्रार्थिक नीति पर हमले हुए। मिसाल के लिए, त्रोत्स्की ने हमेशा की तरह इस बार फिर लेनिन की नीति का विरोध किया, जो बहुत गलत और हानिकारक था। उन्होने ब्रेस्त समझौते का भी विरोध किया था। सोवियत जनता का उन्होने बहुत अनिष्ट किया।

त्रोत्स्की ने लेनिन और पार्टी के विरुद्ध काम करते हुए ढुलमुल सदस्या को इकट्ठा कर पार्टी के अदर गुटबदी शुरू की। लेनिन के बहुत से अन्य विरोधी भी थे।

जरूरत थी मेलजाल से, परस्पर सहमति से शातिपूर्ण जीवन का निर्माण करने की। लेनिन इसी का सपना देखते थे। वह चाहते थ कि पार्टी हमेशा एकबद्ध होकर आगे बढे।

लेकिन कुछ लोग ऐस भी थे, जो नय जीवन के निर्माण म रोडे अटकाते थे।

लेनिन न निममतापूवक उनके विरुद्ध सघर्ष किया।

अधिकाश कम्युनिस्ट लेनिन के साथ थे। विजय उनकी ही हुई। वे पार्टी और सोवियत जनता को कम्युनिज्म की दिशा मे आगे बढाते रहे।

बर्फ का सगीत

"चलेगे!" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बोली।

"जरूर चलेगे, वोलोद्या!" मरीया इल्यीनिच्ना ने भी उनका साथ दिया। वह मन ही मन डर रही थी कि व्लादीमिर इल्यीच सहमत नही हागे।

लेकिन वह सहमत हा गय, हालाकि एक तरफ मे यह इच्छा भी हो रही थी अकेले म, विशेषकर रविवार के एकान्त म बैठकर लेख का खत्म कर डाले। फिर कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र भी लिखन थ

पर अक्तूबर की सुहावनी सुबह खुली हवा म घूमन का निमत्रण दे रही थी। ऐस लुभावन दिन शहर से बाहर सर क लिए जान और कामकाज को कल तक के लिए भुला दन म कितना मजा था! रविवार का दिन था

हो। वे सब इग्लैण्ड में बनी हुई बनी भारी 'रोल्स रायस' में बैठ और गोर्की के लिए चल पड़े। हमेशा की तरह ड्राइवर की सीट पर गील बैठा था।

मास्को से बाहर निकलते ही ब्लादीमिर इल्यीच जी भरकर खुली ताज़ी हवा का आनंद लेने लगे। गुलाबी सुबह कितनी मनभावनी थी! हल्के नीले आकाश को अपनी शांत किरणों से आलोकित करता हुआ सूरज धीरे धीरे ऊपर उठ रहा था। रात में बर्फ पड़ चुका था, जम गया था, जिसकी वजह से वह ऊबड़-खाबड़ और फिसलनदार हो गया थी। गील कार को धीमे और सतर्कता से चला रहा था।

"साथी गील, आप तो ऐसे ड्राइव कर रहे हैं, जैसे हर मुर्गी को सलाम कर रहे हो," ब्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

ब्लादीमिर इल्यीच के मजाक गील को हमेशा अच्छे लगते थे। पर फिर भी उसने रफ्तार तेज़ नहीं की। नहीं, गांव के पास से गुजरते हुए "मुर्गियों को सलाम करना" ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर ब्लादीमिर इल्यीच को पटकारने से बेहतर है।

गोर्की में एक पुरानी कोठी थी। उसके चारों तरफ एक शानदार पार्क था, विशाल लिण्डन वृक्षों और शाहबलूतों से ढकी छायादार पगडंडियां थीं और लंबे चौड़े घास के मैदान थे। वहां कुछ ऐसी जगहें भी थीं, जहां से दूर-दूर तक, यहां तक कि पादाल्स्क भी दिखायी देता था।

ब्लादीमिर इल्यीच को क्षितिज तक फैली हरियाली देखना और वहां जंगलों और कलकल बहती पख्रा नदी के बहुत आगे शहर की कल्पना करना अच्छा लगता था। १९०० में वह निर्वासन से लौटने के बाद पादाल्स्क आये थे। उन दिनों मरीया अलेक्सान्द्रोव्ना मास्को से निर्वासित बीस्या के साथ वहां रहती थीं। और जब ब्लादीमिर इल्यीच स्विट्ज़रलैण्ड जाने से पहले वहां आये थे, तो बहनें भी वहीं थीं। उन दिनों वह विदेश में मजदूरों के क्रांतिकारी अखबार "ईस्क्रा" को निकालने की तैयारी कर रहे थे।

कार सरपट भागती हुई कोठी की उत्तरी इमारत के सामने आकर रुक गयी। ब्लादीमिर इल्यीच को कोठी की मुख्य इमारत कोई खास पसंद नहीं थी। इसलिए वह हमेशा उत्तरी इमारत में आकर ही रुका करते थे। यहां कमरे छोटे थे, छतें नीची थीं और खिड़कियां कोई बहुत बड़ी नहीं थीं। पहले शायद इसमें नौकर रहते थे। अक्तूबर क्रांति के बाद मालिक विदेश

भाग गये। सरकार ने यहां गोर्की में विश्रामगृह खोलने का फैसला किया। घायल होने के बाद जब व्लादीमिर इल्यीच को डाक्टरों ने ताजी हवा में रहने की सख्त हिदायत दी, तो उनके लिये यहां रहने की व्यवस्था कर दी गयी।

सचमुच व्लादीमिर इल्यीच बैठकों के घुटन भरे वातावरण और मास्को के कोलाहल से ज्यों ही यहां गोर्की पहुंचते थे, उनका सिरदर्द लगभग जाता रहता था।

"वोलोद्या, देखो तो गांव की ताजी हवा लगते ही तुम्हारे गाल कैसे गुलाबी हो गये हैं," नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपनी खुशी प्रकट की।

"देवी जी, अभी तो हम और आगे जाना है," व्लादीमिर इल्यीच ने ऐलान किया।

मौसम सूखा और ठंडा था। पैरों के नीचे जमीन पत्थर की तरह बज रही थी। पेड़ों से पत्ते झड़ चुके थे। सारे पार्क के आर-पार देखा जा सकता था। केवल बकायन की झाड़ियां ही मटमैले हरे पत्तों का आवरण ओढ़े मानो उदास सी खड़ी थीं। कहीं-कहीं लाल फलों से लदी टहनियोंवाले रोवनवृक्ष भी दिखायी दे जाते थे।

झाड़ियों में पीली छातीवाली चिड़ियां फुदक रही थीं।

"ऐ कुर्तीवालियो!" व्लादीमिर इल्यीच उन्हें देखकर जोर से बोले।

"ये कुर्तीवालियां कौन हैं?" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना नहीं समझीं।

'देखो, इन फुदकियों ने मानो पीली कुर्तियां पहन रखी हैं,' व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

विदेश प्रवास के दिनों में वे खाली समय में पहाड़ों पर चढ़ा करते थे या साइकिल पर सैर करने के लिए निकल जाते थे। जंगल जितना घना होता था, पगडंडी जितनी सर्पिल और सुनसान होती थी, व्लादीमिर इल्यीच को उतना ही अधिक मजा आता था।

'नाद्यूशा, चलो वहां, झील के किनारे खड़ी चट्टान पर चढ़ें।'

स्विट्जरलैण्ड के पहाड़, झीलें अत्यंत भव्य और मनोरम थे। पर रूस की शांत प्रकृति अधिक प्रिय और आत्मीय थी।

'देखो, वह छोटी झील है!" व्लादीमिर इल्यीच बोले।

"सचमुच कितनी खूबसूरत जगह है," मरीया इल्यीनिच्ना भी खुशी से चिल्लायीं।

झील जम गयी थी। बर्फ की परत हल्के नीले रंग की और पारदर्शी थी। मानो कांच की चादर हो। और उसमें पेड़ों के तनों, नंगी शाखाओं और झाड़ियों की परछाई पड़ रही थी। बर्फ की परत के नीचे से पानी में उगी हुई घास भी दिखायी दे रही थी।

अचानक झील में किसी चीज़ के खनखन की मधुर आवाज़ तिर गयी। मानो किसी अनजाने वाद्ययंत्र का तार छेड़ दिया गया हो। आवाज़ बहुत कोमल थी और देर तक गूंजती रही।

किसी ने पत्थर फेंका था और फिसलता हुआ वह तट से झील के बीचोंबीच आकर रुक गया था। बर्फ की परत झनझना गयी थी।

"चमत्कार है!" व्लादीमिर इल्यीच ने हल्के से आश्चर्य प्रकट किया।

तभी उन्हें झाड़ी के पास एक लड़का और एक लड़की दिखायी दिये। दोनों की उम्र कोई दस-एक साल रही होगी। यह उस लड़के ने ही बर्फ पर पत्थर फेंका था।

"अहा! कैसे गाती है! सारी झील गूंज गयी," लड़की ने कहा।

"सिर्फ ऐसा छांटना चाहिये जब बर्फ की परत अभी अभी बनी हो," लड़के ने जवाब दिया। "नहीं तो बाद में मोटी पड़ने पर वह गायेगी नहीं।"

"एक बार और फेंको," लड़की ने अनुरोध किया।

झील पर पत्थर फिर फिसला और आवाज़ एक किनारे से दूसरे किनारे तक गूंज गयी।

"अरे!" लड़की ने एकाएक कहा।

बच्चों की नजर बड़ों पर पड़ी। लड़के ने टोपी उतार ली।

"नमस्ते!"

"नमस्ते," व्लादीमिर इल्यीच ने पास आकर जवाब दिया। "तुम लोग कहां रहते हो?"

"यहीं पास ही में रहते हैं," लड़के ने हाथ से गोर्की गांव की ओर इशारा किया, जो झील से दिखायी दे रहा था। "और आप क्या मास्को से आये हैं?"

"ठीक ही अंदाजा लगाया तुमने," व्लादीमिर इल्यीच हंस पड़े। "तुम्हारे यहां बर्फ बहुत अच्छा गाती है।"

"और क्या! बस ठीक समय जानना चाहिये। और फिर हर कोई ऐसा नहीं कर सकता," लड़के ने शेखी बघारते हुए जवाब दिया। "आप क्या कोई बड़े अफसर हैं?"

'हमारे यहा इल्यीच की वत्तिया' जलती हैं," लडकी वाली।

"बिजली हैं। मास्को से कम नही है। शाम होते ही सारा गाव जगमगाने लग जाता है," लडके ने फिर डीग हाकी।

"तो क्या लाग खुश हैं?" व्लादीमिर इल्यीच ने थाडा मजाक में और थोडा गभीरता से पूछा।

"और क्या? बाद म तो और भी अच्छा होगा।"

लडके न टापी उतारी, नमस्ते कहा और दोना घर की ओर दौड पडे। या हो सकता है कि शरदकालीन जगल के चमत्कारा और आश्चर्यो को पुन दखने लग गये हा।

और व्लादीमिर इल्यीच, नादज्दा कोन्स्तातीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना पार्क मे और आगे बढ चले क्योकि छोटी झील घर से कोई बहुत दूर नही थी और व्लादीमिर इल्यीच आज दूर, बहुत दूर तक घूमना चाहते थे।

प्रकाशस्तभ

उठ अब जजीरो मे जकडे
भूखो, दासो के ससार।
खून खौलता है नस-नस मे
मर मिटने को हम तैयार।

बडे क्रेमलिन प्रासाद के हाल म "इण्टरनेशनल" गूज रहा था।

ईश्वर, राजा, याद्धा-नायक
मुक्ति नही हमको देंगे
अपने ही बल-बूते पर
हम अपनी आजादी लेंगे।

क्रेमलिन के हॉल मे खडे कई सौ आदमी विश्व की पचास भाषाओ मे इस गीत को गा रहे थे। फ्रासीसी, जर्मन, इतालवी, तुर्की, जापानी, अग्रेजी, नार्वेजियाई, फिनिश, एस्तोनियाई, लाटवियाई और, निस्सदेह, रूसी मे।

[illegible]

[illegible]

जर्मन मार्क्सवादियों में व्लादीमिर इल्यीच क्लारा त्सेटकिन, रोज़ा लुक्सेम्बुर्ग, कार्ल लीब्कनेख्त से भली भांति परिचित थे। ब्रिटिश क्रान्तिकारी मज़दूरों में से अनेक लोग [illegible] से व्लादीमिर इल्यीच का परिचय था। और [illegible] का पुलिस [illegible] जिसने लेनिन को [illegible] में बचाया था। [illegible] व्लादीमिर इल्यीच और उनके साथियों को रूस की फ़रवरी क्रान्ति के बाद स्वदेश लौटने में मदद की थी। यहां भी बहुत विदेशी क्रान्तिकारी मज़दूर और ग़ैर मज़दूर थे, जिनसे लेनिन की मित्रता थी।

अब जब रूस में अक्तूबर क्रान्ति सफल हो गयी, तो अन्य देशों के मार्क्सवादी क्रान्तिकारियों ने भी अपने यहां कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना की।

'हमें अपना एकीभूत संगठन बनाना चाहिए,' व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

कम्युनिस्ट पार्टियां एकबद्ध हो गयीं। अपने एकीभूत संगठन को उन्होंने नाम दिया कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल, जिसे संक्षेप में कोमिण्टर्न भी कहते थे।

व्लादीमिर इल्यीच व्याख्यान-मंच पर आकर खड़े हो गये। सैकड़ों आंखें उन पर केंद्रित थीं। व्लादीमिर इल्यीच ने देखा कि वे उत्सुकता से

व्यग्र थी। वह सोचने लगे "इन विदेशी कम्युनिस्टों के समक्ष किस बारे में बातें? हो सकता है कि सोवियत समाज के जीवन, नये जीवन के बारे में बताऊं?"

और वह बताने लगे कि हमारे यहां, सोवियत रूस में अर्थव्यवस्था किस तरह चल रही है, इन पांच वर्षों में हमने क्या हासिल किया और क्या नहीं। हमने लड़ाई में विजय पायी। भुखमरी पर काबू पाया। अब विनष्ट अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे हैं। किसानों और मजदूरों का जीवन बेहतर हो गया है। हम व्यापार भी सीख रहे हैं। अभी जो मशीनें बनाते हैं, वे कम तो हैं ही, पर घटिया भी हैं। हमें मशीनों की बहुत जरूरत है। उनके बिना कम्युनिज्म का निर्माण नहीं किया जा सकता। और हमारा लक्ष्य है कम्युनिज्म। और, विदेशी साथियो, आपका लक्ष्य है शांति।

व्लादीमिर इल्यीच जर्मन में बोल रहे थे। उस समय विदेशों में रूसी बहुत कम लोग जानते थे। मगर जर्मन काफी व्यापक तौर पर समझी जाती थी।

"कितनी अच्छी जर्मन बोलते हैं!" जर्मन साथियों ने मन ही मन लेनिन की दाद दी।

भाषण खत्म हो गया।

कम्युनिस्टों की विशाल वाहिनी खड़ी हो गयी।

"हुर्रा, लेनिन! लेनिन जिन्दाबाद!"

हाल उद्घोषों और तालियों की गड़गड़ाहट से बड़ी देर तक गूंजता रहा।

स्नेह की इस अभूतपूर्व अभिव्यक्ति ने व्लादीमिर इल्यीच के दिल को छू लिया। मगर साथ ही उन्हें कुछ संकोच भी हुआ। वह जल्दी से जल्दी हाल से निकल जाना चाहते थे। पर निकलें कैसे? भीड़ रास्ता रोके खड़ी थी। हर कोई कुछ न कुछ कहना चाहता था, कुछ न कुछ पूछना चाहता था। या और कुछ नहीं तो एक बार हाथ ही मिला लेना चाहता था।

'नमस्ते, साथी लेनिन!" किसी तरह निकट पहुंचकर एक घुंघराले बालोंवाला आदमी फ्रांसीसी में जोर से चिल्लाया। उसकी काली आंखें, सारा चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह लगातार सौहार्दपूर्ण स्वर में चिल्लाता जा रहा था "नमस्ते, साथी लेनिन! कामरेड, कामरेड"

लेनिन उसे देखकर मुस्कराये

"साथी, आप फ्रास के किस इलाके के रहनेवाले हैं?

"मैं इतालवी हूं। पर आप तो इतालवी भाषा नहीं जानते

"थोडी बहुत जानता हूं," इतालवी में बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

"अहा, साथी लेनिन सब कुछ जानते हैं!" घघराले बालोवाले इतालवी के आश्चर्य का कोई अंत न था।

हर तरफ से इतालवी, फ्रासीसी, जर्मन, अंग्रेजी में लोग चिल्ला रहे थे

"लेनिन हमारे मित्र हैं! लेनिन कम्युनिस्ट पार्टियो के नेता हैं! लेनिन हमारे शिक्षक हैं!"

और बर्फ सी सफेद कमीज पहने हुए एक विदेशी खान मजदूर, जिसके चेहरे के रेखाओं मे कोयले की धूल के निशान अभी भी देखे जा सकते थे, दोनों हथेलियो को मुह के पास लाया और जोर से चिल्लाया

"सोवियत देश हमारा प्रकाशस्तंभ है! हम इस प्रकाशस्तंभ की ओर बढेंगे!"

नये साल से पहली शाम

व्लादीमिर इल्यीच बीमार पड गये। इतने बीमार कि जीवन खतरे में था।

कुछ लोग सोचते थे कि बीमारी एकाएक पैदा हुई है। पर नही। उसके लिए जमीन बहुत पहले से तैयार हो रही थी। लेनिन को अनिद्रा का रोग था। कभी कभी वह सुबह तक आखे नही झपक पाते थे। कभी खतम न होनेवाली रात को काटना अत्यंत तकलीफदेह हो जाता था। फिर सिर भी लगभग हर समय दुखता रहता था। और जब सब कुछ चरम पर पहुच गया, तो व्लादीमिर इल्यीच भयंकर रूप से बीमार पड गये।

वह क्रेमलिन के फ्लैट में अपने छोटे-से कमरे में लेटे हुए थे।

"व्लादीमिर इल्यीच ने अपने को बेहद थका दिया है। भला इतना अधिक काम आदमी के बस की बात है?" डाक्टरो ने कहा। "अब आवश्यकता है कि वह पूरी तरह आराम करें।"

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच काम के बगैर नही रह सकते थे। यम नही। बीमारी खतरनाक थी। साथियो को समय रहते अपने सभी जरूरी विचारो से अवगत कराना भी आवश्यक था।

व्यग्र थी। वह सोचने लगे "इन विदेशी कम्युनिस्टो के समक्ष किस बारे मे बोलू? हो सकता है कि सोवियत समाज के जीवन, नये जीवन के बारे मे बताऊ?"

और वह बताने लगे कि हमारे यहा, सोवियत रूस मे अर्थव्यवस्था किस तरह चल रही है, इन पाच वर्षों मे हमने क्या हासिल किया और क्या नही। हमने लडाई मे विजय पायी। भुखमरी पर काबू पाया। अब विनष्ट अर्थव्यवस्था को बहाल कर रहे है। किसानो और मजदूरो का जीवन बेहतर हो गया है। हम व्यापार भी सीख रहे हैं। अभी जो मशीनें बनाते हैं वे कम तो है ही, पर घटिया भी हैं। हम मशीनो की बहुत जरूरत है। उनके बिना कम्युनिज्म का निर्माण नही किया जा सकता। और हमारा लक्ष्य है कम्युनिज्म। और, विदेशी साथियो, आपका लक्ष्य है क्राति।

व्लादीमिर इल्यीच जर्मन मे बोल रहे थे। उस समय विदेशो मे रूसी बहुत कम लोग जानते थे। मगर जर्मन काफी व्यापक तौर पर समझी जाती थी।

"कितनी अच्छी जर्मन बोलते है!" जर्मन साथियो ने मन ही मन लेनिन की दाद दी।

भाषण खत्म हो गया।

कम्युनिस्टो की विशाल वाहिनी खडी हो गयी।

"हुर्रा, लेनिन! लेनिन जिन्दाबाद!"

हॉल उदघोषो और तालियो की गडगडाहट से बडी देर तक गूजता रहा।

स्नेह की इस अभूतपूर्व अभिव्यक्ति ने व्लादीमिर इल्यीच के दिल को छू लिया। मगर साथ ही उन्हे कुछ सकोच भी हुआ। वह जल्दी से जल्दी हाल से निकल जाना चाहते थे। पर निकले कैसे? भीड रास्ता रोके खडी थी। हर कोई कुछ न कुछ कहना चाहता था, कुछ न कुछ पूछना चाहता था। या और कुछ नही, तो एक बार हाथ ही मिला लेना चाहता था।

'नमस्ते, साथी लेनिन!' किसी तरह निकट पहुचकर एक घुघराले बालोवाला आदमी फ्रासीसी मे जोर से चिल्लाया। उसकी काली आख, सारा चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह लगातार सौहार्दपूर्ण स्वर मे चिल्लाता जा रहा था "नमस्ते, साथी लेनिन! कामरेड, कामरेड"

लेनिन उसे देखकर मुस्कराये

"साथी, आप फ्रास के किस इलाके के रहनेवाले है?"

"मैं इतालवी हू। पर आप तो इतालवी भाषा नही जानते '

"थोडी बहुत जानता हू," इतालवी म बोलते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने आपत्ति की।

"अहा, साथी लेनिन सब कुछ जानते है! घघराले बालावाले इतालवी के आश्चय का कोई अत न था।

हर तरफ से इतालवी, फ्रासीसी, जमन, अग्रेजी म लोग चिल्ला रहे थे "लेनिन हमारे मित्र ह! लेनिन कम्युनिस्ट पार्टियो के नेता है! लेनिन हमारे शिक्षक ह!"

और बफ सी सफेद कमीज पहन हुए एक विदेशी खान मजदूर जिसके चेहरे के त्वचारध्रा म कोयले की धल के निशान अभी भी देखे जा सकते थे, दोना हथेलियो को मुह के पास लाया और ज़ोर से चिल्लाया

"सोवियत देश हमारा प्रकाशस्तभ है! हम इस प्रकाशस्तभ की ओर बढेगे।"

नये साल से पहली शाम

व्लादीमिर इल्यीच बीमार पड गये। इतने बीमार कि जीवन खतरे मे था।

कुछ लोग सोचते थे कि बीमारी एकाएक पैदा हुई है। पर नही। उसके लिए ज़मीन बहुत पहले से तैयार हो रही थी। लेनिन को अनिद्रा का रोग था। कभी-कभी वह सुबह तक आखें नही झपक पाते थे। कभी खत्म न होनेवाली रात को काटना अत्यत तकलीफदेह हो जाता था। फिर सिर भी लगभग हर समय दुखता रहता था। और जब सब कुछ चरम पर पहुच गया, तो व्लादीमिर इल्यीच भयकर रूप से बीमार पड गये।

वह क्रेमलिन के फ्लैट मे अपने छोटे-से कमरे म लेटे हुए थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने को बेहद थका दिया है। भला इतना अधिक काम आदमी के बस की बात है? डाक्टरो ने कहा। 'अब आवश्यकता है कि वह पूरी तरह आराम करे।"

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच काम के बगर नही रह सकते थे। बस नही! बीमारी खतरनाक थी। साथियो को समय रहते अपने सभी ज़रूरी विचारो से अवगत कराना भी आवश्यक था।

व्लादीमिर इल्यीच अपने लकवाग्रस्त दायें हाथ को कबल के ऊपर रखे हुए निश्चल पडे थे। तपते माथे पर ठडी पट्टी रखी हुई थी।

शाम का समय था। मेज पर हल्के प्रकाशवाला लैम्प जल रहा था। व्लादीमिर इल्यीच को भोजन के बाद आराम करने को कहा गया था। मगर वह किसी तरह सो नही पा रहे थे।

कल मास्को मे सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ की सोवियतो की पहली काग्रेस शुरू हुई थी। कल ३० दिसबर, १९२२ को काग्रेस ने सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ की स्थापना से सबधित सधि की पुष्टि की थी।

व्लादीमिर इल्यीच इस ऐतिहासिक दिन की बहुत समय से तयारी करते रहे थे।

सभी लोग एकदम नही समझ पाये कि सोवियत सघ की स्थापना इतनी महत्वपूर्ण क्यो है, व्लादीमिर इल्यीच इसके लिये इतने जोश और दढता के साथ प्रयत्न क्या कर रहे हैं।

लेनिन चाहते थे कि सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ एक सर्वथा नवीन राज्य, जारशाही रूस से एक सर्वथा भिन्न राज्य हो। जारशाही के काल मे क्या था? एकमात्र रूस था। उक्रइना और बेलोरूस का मानो अस्तित्व ही नही था। और आर्मीनिया, आजरबजान तथा जार्जिया को रूस का अग मात्र ही माना जाता था। गररूसी जातियो को किसी भी तरह की आजादी नही थी। स्कूलो मे इनके बच्चे अपनी मातभाषा मे शिक्षा नही पा सकते थे। बहुत सी जातियो का अपना साहित्य और यहा तक कि अपनी लिखित भाषा भी नही थी। छोटी जातियो को विकास का कोई मौका नही दिया जाता था। उन्हे निकृष्ट माना जाता था। लेनिन को इस प्रकार की असमानता से घोर नफरत थी।

वह विचारो मे गहरे खो गये थे। नाद्रेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना दरवाजे पर आयी और कान लगाकर सुनने लगी "सो गये हैं?"

"मै सो नही रहा हू, नाद्यूशा। काम की तैयारी कर रहा हू।"

वह बिना कोई आहट किये कमरे मे दाखिल हुई। हल्के उजालेवाली बत्ती बुझाकर उन्होने दूसरी बत्ती जला दी। सारा कमरा प्रकाश से नहा उठा। तकिये पर टिका व्लादीमिर इल्यीच का पीला चेहरा भी आलोकित हो गया।

खाने के कमरे में दीवार घड़ी ने छह का घंटा बजाया। ठीक उसी समय व्लादीमिर इल्यीच की स्टेनो मरीया अकीमोव्ना वोलोदिचेवा ने कमरे में प्रवेश किया। वह दुबली पतली, कोई तीस एक वर्ष की, बुद्धिमती और समझदार युवती थी। वह कागज़-पेंसिल लेकर चारपाई के करीब रखी मेज़ के पास बैठ गयी।

"हां, तो," व्लादीमिर इल्यीच बोले।

आज डाक्टरों ने उन्हें चालीस मिनट तक डिक्टेशन देने की अनुमति दे दी थी। चालीस मिनट! बहुत काफ़ी हैं। इसलिए भी कि लेख उनके मस्तिष्क में लगभग पूरी तरह तैयार है।

अगर व्लादीमिर इल्यीच कांग्रेस में उपस्थित होते, तो वही कहते, जो इस समय लिखा रहे थे। यह साथियों के लिए उनका निर्देश था। साथी उन्हें सुनेंगे, उनका निर्देश मानेंगे और उसके अनुसार सोवियत संघ का निर्माण करेंगे। लेनिन का एक सख्त निर्देश यह था कि छोटी जातियों को किसी भी अधिकार से वंचित न किया जाये। जातियों की उपेक्षा, अवमानना ठीक नहीं! सभी सोवियत जनतंत्रों का समान होना चाहिये। हलमेल से रहना चाहिये। और तब सोवियत संघ एक शक्तिशाली और न्यायपूर्ण राज्य बन जायेगा। और सारे विश्व में साम्राज्यवाद के जूए तले दबे हुए राष्ट्रों में चेतना का संचार हो जायेगा

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना पास के कमरे में बैठी हुई उनकी परिचित, प्रिय आवाज़ को सुन रही थी। वह एक दूसरे में फंसी हुई अंगुलियों पर ठोडी टिकाये बैठी थी। उनका दुबल चेहरा चिन्तामिश्रित प्रेम की आभा से चमक रहा था।

डिक्टेशन खत्म होने पर वोलोदिचेवा चली गयी, तो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना उसकी जगह पर रोगी की शय्या के पास आकर बैठ गयी। उनके चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी। व्लादीमिर इल्यीच को उनकी आंखों में दुख या भय की कोई छाया नहीं दीखी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की शान्त-सौम्य मुद्रा ने व्लादीमिर इल्यीच के मन की हलचल को भी शांत कर दिया।

"नाद्या, जानती हो, मुझे क्या याद आ रहा है?" विचारमग्न मुद्रा में व्लादीमिर इल्यीच बोले। "मुझे याद आ रहा है कि पिताजी सिम्बीर्स्क

प्रान्त म चुवाशा, मादविना और तातारा के लिए स्कूल खुलवाने के लिए कैसे दिन रात कोशिश करते रहते थे। उनसे पहले सिम्बीर्स्क प्रान्त म ऐसा एक भी स्कूल नहीं था।"

"वह असाधारण आदमी थे," नादेज्दा कान्स्तान्तीनोव्ना न जवाब दिया। 'उन्हे सचमुच बहुत कठिनाइया उठानी पडी। मगर अब क्राति न असीमित सभावनाओ के द्वार खोल दिये हैं।"

उन्हाने गौर किया कि व्लादीमिर इल्यीच आज के काम से सतुष्ट है। यहा तक कि आखें भी पहले की तरह चमकने लगी हैं। माथे पर रखी ठडी पट्टी अगर हटा दी है, तो इसका मतलब है कि बुखार उतर गया है। हो सकता है कि शीघ्र ही चगे हो जायेंगे।

हो सकता है?' नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना भय से सिहर गयी। "हो सकता है नहीं, बल्कि अवश्यमेव! छह महीने पहले भी ऐसा ही हुआ था! बीमारी के बाद चगे हो गये थे। इस बार भी ऐसा ही होगा।"

उन्होने सभलकर व्लादीमिर इल्यीच के कबल को ठीक कर दिया। 'वोलोद्या जानते हो, आज पुराने साल की अतिम शाम है," वह बोली। 'तुम्हारी तबीयत यो ही नही सुधरी है।" और झुककर उन्होने व्लादीमिर इल्यीच को चूम लिया। "नया साल मुबारक हो, वोलोद्या।'

हमेशा सघर्ष में

डाक्टरो को भय था कि डिक्टेशन देने की अनुमति से कही व्लादीमिर इल्यीच की हालत बिगड न जाय। व्लादीमिर इल्यीच, मस्तिष्क को आराम करने दीजिये! सरकारी कामकाज, लेखो को कुछ समय के लिए भूल जाइये!

किसी भी कीमत पर नही!

मगर डाक्टरो के साथ बहस करना आसान नही था। तब व्लादीमिर इल्यीच ने चालाकी का सहारा लिया।

"मैं लेख नहीं, डायरी डिक्टेट करवाया करूगा।

डाक्टर झासे मे आ ही गये, हालाकि वे शायद यह जानते थे कि डायरी मौसम के हालचाल के बारे म तो होगी नहीं। मगर क्या लेनिन को अपने ही हाथो से बनाये गये राज्य के बारे म सोचने से रोका जा

सकता था? जब उन्हें डिक्टेशन देने की अनुमति नहीं मिलती थी, व्लादीमिर इल्यीच चिड़चिड़ा जाते थे, निद्रा भी नहीं पाते थे। इसलिए डाक्टरों को अनुमति देनी ही पड़ी। मगर दिन में तीस चालीस मिनट के वास्ते ही। ज्यादा बिल्कुल नहीं।

नियत समय पर स्टेनो आ जाती। दिन में वह कभी एक पृष्ठ लिखती तो कभी दो या तीन। इन पृष्ठों में हमारे समाज के भावी निर्माण की योजनाएं सूत्र रूप में पेश की हुई होतीं। व्लादीमिर इल्यीच कमियों की आलोचना करते। सलाह देते कि राजकीय मशीनरी को बहतर कैसे बनाया जाये। कम्युनिस्ट पार्टी की एकता को सुरक्षित कैसे रखा जाय। लेनिन को सबसे अधिक डर इसी बात का था कि पार्टी में कहीं फूट न पड़ जाय।

बिस्तर में लेटे हुए व्लादीमिर इल्यीच घंटों अपने लेखों के हर हिस्से को, हर शब्द को सोचते रहते।

लेनिन के लेख "प्राव्दा" में छपते थे। मजदूर लोग उन्हें पढ़ते और आपस में कहते

'हमारे जीवन के बारे में इल्यीच की समझ बिल्कुल सही है। जिस चीज को हम नहीं देख पाते, उसे भी देख लेते हैं।

और वे खुश होते

"लगता है कि हमारे इल्यीच का स्वास्थ्य सुधर रहा है।'

मगर अचानक मार्च का दिन था। वसन्तकालीन धूप खिली हुई थी। बुलवारों, पार्कों, हर कहीं चिड़िया चहचहा रही थी। सड़कों के किनारों पर पानी की फेनिल धार बह रही थी। प्रकृति की हर चीज जीवन और खुशी का संदेश दे रही थी। लेकिन १४ मार्च की इस सुबह को अखबार खोलते ही लोगों का सारा हर्ष, सारा उत्साह जाता रहा। लोग सड़कों पर अखबारों के स्टैण्डों के पास इकट्ठे हो रहे थे। हर कहीं "सरकारी बुलेटिन' टंगी हुई थी।

अगर सरकारी है, तो इसका मतलब है कि कोई गंभीर मामला है। कहीं कोई अशुभ समाचार तो नहीं है?

"व्लादीमिर इल्यीच के स्वास्थ्य के बारे में बुलेटिन।

पिछले कुछ दिनों से व्लादीमिर इल्यीच की हालत में काफी गिरावट आयी है "

काले अक्षर चिल्ला रहे थे अशुभ घटना घटी है "व्लादीमिर इल्यीच की हालत मे काफी गिरावट आयी है।" लोगो से पढा नही जा रहा था। सबके चेहरे लटक गये थे।

वर्कशापो म दिन भर उदासी छायी रही।

"आह, हमारे इल्यीच!" कोई बूढा मजदूर गहरी सास लेते हुए कहता।

नौजवान मजदूरो को यकीन नही हो पा रहा था कि कोई भयानक घटना होनेवाली है।

"नही, ये बुलेटिने यो ही नही निकाली गयी ह," बूढे मजदूर कहते। "आह, इल्यीच!"

व्लादीमिर इल्यीच की हालत सचमुच गभीर हो गयी थी। बीमारी लगातार बढती जा रही थी। उनकी जबान को लकवा मार गया था। इससे भयकर और क्या हो सकता था! लेनिन की वाक्शक्ति जाती रही थी। उनकी सजीव, थोडी थोडी तुतलाती, तेज वाणी मूक हो गयी थी।

दिन रात डाक्टर व्लादीमिर इल्यीच की शय्या के पास रहते। चिकित्सको का सारा विज्ञान, प्रतिभा और कौशल उनके भव्य जीवन के लिए सघर्ष करने लगा। सारा देश आशा की छोटी से छोटी किरण पाने के लिए आतुर था। हर सुबह लोग अखबार के लिए दौडते, लेनिन के स्वास्थ्य की बुलेटिन पढते।

शाम होती। जन कमिसारो की परिषद की इमारत पर हवा लाल झडे से खेलती होती। मगर वहा, क्रेमलिन के फ्लट म क्या हालत है?

शाम होती। लोग दिन भर की मेहनत, दौडधूप के बाद घर लौटते। मगर दिल पुन पुकार उठते वहा क्रेमलिन के फ्लैट म स्थिति क्या है?

व्लादीमिर इल्यीच के कमरे म खामोशी थी। ऐसी खामोशी कि खान के कमरे की दीवार घडी के पण्डुलम की आवाज भी सुनायी दे जाये। वहा डयूटी नर्स बैठी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना शय्या के पास बैठी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी भारी पलकें उठायी "नाद्या, तुम यहा हो?" नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना सब समझ गयी कि वह क्या कहना या पूछना चाहते हैं। वह उनसे या बोली, मानो उत्तर सुनती जा रही हो।

"आज तुम कुछ बेहतर दिखायी देते हो," उन्होने विश्वास के साथ कहा।

ग्रौर व्लादीमिर इल्यीच को लगा कि सचमुच वह पहले से बेहतर है। उनकी ग्राखो ने जवाब दिया "हा।"

"तुम ठीक हो जाग्रोगे। डाक्टर कहते है कि तुम्हे ग्रपनी सारी शक्ति समेटनी है। समझे, वोलोद्या, सारी शक्ति समेटनी है।"

"ठीक है, समेटूगा," व्लादीमिर इल्यीच ने ग्राखो से जवाब दिया।

"तुमने जीवन भर लोगो के लिए सघर्ष किया। ग्रब जरा ग्रपने लिए भी करो। यह भी लोगो के लिए, क्राति के लिए होगा। पूरी ताकत से सघर्ष करो, वोलोद्या।"

व्लादीमिर इल्यीच ने पुन ग्राखो की भाषा मे, जिसे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना समझती थी, जवाब दिया "हा।"

ग्रचानक नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना मन ही मन रोने लगी। उनका गला रुध गया। क्षण भर के लिए वह शक्ति शून्य हो गयी। मगर फिर ग्रपने पर काबू पाया। ग्रपने दुख को ग्रदर ही ग्रदर दबाकर वह स्नेह मे बोली

"ग्रौर ग्रब सोने का समय हो गया है। कुछ सो लो, ताकि ताकत लौट ग्राये। सब ठीक हो जायगा। सो जाग्रो। मै कही जाऊगी नही। यही पास ही बैठी रहूगी।"

१६२३ को शरद

ग्रप्रैल मे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की बारहवी काग्रेस शुरू हुई। काग्रेस ने व्लादीमिर इल्यीच को एक ग्रभिनदन सदेश भेजा।

"पार्टी, सर्वहारा ग्रौर सभी मेहनतकशो की ग्रोर से काग्रेस ग्रपने नेता को, सर्वहारा विचारधारा ग्रौर क्रातिकारी कार्यों की सरक्षक विभूति को ग्रभिनदन ग्रौर ग्रगाध प्रेम का सदेश भेजती है

पार्टी सर्वहारा ग्रौर इतिहास के समक्ष ग्रपने उत्तरदायित्व का ग्राज पहले से कही ग्रधिक ग्रनुभव करती है। वह ग्रपने ध्वज ग्रौर ग्रपने नेता के पहले से भी कही ग्रधिक योग्य बनना चाहती है ग्रौर बनेगी "

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने ग्रभिनदन सदेश पढकर सुनाया। गहरी, बहुत गहरी ग्रौर भावो से भरी हुई दृष्टि से व्लादीमिर इल्यीच ने उसका जवाब दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने बीमारी के सामने घुटने नहीं टेके। मई के मध्य

म उन्ह गोर्की म, बडी इमारत म स्थानान्तरित कर दिया गया। जन कमिसारो की परिषद के अध्यक्ष ने अपने लिए सबसे छोटा, खाने का और ऊंची-ऊंची खिडकियोवाला कमरा चुना। खिडकियो म बाग दिखायी देता था। हरियाली म डूबा हुआ बाग चिडियो की चहचहाहट स भरपूर था। हर टहनी स उनका खुशी भरा सगीत सुनायी देता था।

और रात मे बुलबुले गाती थी। सितारे खिडकियो म झाकते थे।

ताजी हवा म रहने से व्लादीमिर इल्यीच की तबीयत म कुछ सुधार आया। उन्ह नीद आने लगी। देहात की हवा म भूख भी लगने लगी। खोयी शक्ति पुन लौटने लगी।

स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा था। व्लादीमिर इल्यीच बायें हाथ से छडी का सहारा लेकर चलने फिरने लगे। उन्होने बायें हाथ से लिखने और वाक्शक्ति को लौटाने का अभ्यास भी शुरू कर दिया।

उनकी शिक्षिका नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना थी। पढाई के समय कमरे का दरवाजा बद कर दिया जाता। वे दोनो अकेले होते। कोई नही सुन पाता कि नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना कैसे पढा रही है।

घर म खुशी का वातावरण थोडा बहुत लौट आया। जब व्लादीमिर इल्यीच हसते, तो सभी बेहद हर्षित होते। सभी जानते थे कि वह बहुत हसोड और खुशमिजाज आदमी है। मगर इधर जबसे उनके स्वास्थ्य म कुछ सुधार आया था, तब से वह हर मजाक और बुद्धिमत्तापूर्ण बात पर, मास्को से मित्रो के आने और नयी किताब पाने पर, शरदकालीन बाग के पीले पत्तो को देखने पर खुशी से हसने लगे थे। १९२३ की शरद शुरू हो गयी थी।

अक्तूबर म एक दिन छडी का सहारा लिए हुए व्लादीमिर इल्यीच गोर्की के छोटे से गरेज म पहुचे और इशारे से बताया कि मास्को जाना चाहते ह। कार निकालिय, अभी चलते ह। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना बेहद घबरा गयी

वोलोद्या, तुम भी क्या बात करते हो! जानते हो, इसका क्या नतीजा हो सकता है?

डाक्टर भी उनके मास्को जाने के विरुद्ध थे।

लेकिन व्लादीमिर इल्यीच अडियल थे। एक बार फसला कर लिया, तो उससे हटना असभव था।

काली "राल्स-रायस" बाग के नारगी पत्ता पर फिसलती हुई मास्को के लिए चल पडी। धीरे धीरे और उतार चढाव से बचते हुए। दूर से मास्को दिखायी दिया। सुनहरे गुबद, सफेद पत्थरा की दीवारे, धूम्रा उगलती हुई फैक्टरियो की चिमनिया। मास्को को देखत ही व्लादीमिर इल्यीच ने टोपी उतार ली और ऊपर उठाकर हिलाने लगे। मास्का! तुरत क्रेमलिन को!

जन कमिसारो की परिषद के बैठक हाल की दहली पार करते ही दिल ज़ोर से धडकने लगा। यहा की हर चीज व्लादीमिर इल्यीच को प्रिय थी। हरे कपडे से ढकी लबी मेज। उसके ऊपरी सिरे पर रखी बुनी हुई कुर्सी। इस हॉल म बिताया हर क्षण अविस्मरणीय था!

अचानक उनकी नजर कोने म अगीठी पर पडी और वह हस दिय। उन्ह याद आया कि कैसे सिगरेट पीनवाले उनके पीछे छिपकर सिगरेट पीते थे और धूम्रा चिमनी म छोडते थे। व्लादीमिर इल्यीच बैठका क समय सिगरेट पीने के घोर विरोधी थे। ज्याही किसी जन कमिसार से और न रहा जाता, वह चुपके से उठकर अगीठी के पीछे चला जाता और तब तक धूम्रा उगलता रहता, जब तक अध्यक्ष मेज पर पेंसिल ठकठकाकर चेतावनी न देते।

व्लादीमिर इल्यीच के मन म कठोरता और कोमलता, दाना का भाव एकसाथ आ गया। वह अपन साथिया को बहुत चाहत थे।

व्लादीमिर इल्यीच वहा खडे कुछ देर पुरानी बात याद करते रहे और फिर अपने कमरे म चले गये। उन्हाने सारे कमरे पर एक नज़र दौडायी। भौगोलिक नक्शे, मार्क्स के चित्र मेज पर रखे टेलीफोन और किताबो की आलमारिया को देखते ही यादो का सिलसिला फिर शुरु हो गया।

लेकिन उन्हान अपने कमरे से विदा नही ली। नही। वह जीना और यहा लौटना चाहते थे।

कमरे मे खडे हुए वह कुछ देर विभिन्न चीजा का देखते रह। फिर खिडकी के पास गमले मे उगे बडे से छायादार ताड के पास आये। उसकी टहनिया छतरी की तरह फैली थी। व्लादीमिर इल्यीच के अनुराध पर उसकी लगातार देखभाल की जाती थी।

बचपन म, उनके सिम्बीर्स्क वाले घर म बहुत फूल थे और गान व

कमरे मे ऐसा ही बडा सा ताड खडा था। बिल्कुल ऐसा, ऐसे ही बारहा मास हरे पत्तावाला।

याद म ब्लादीमिर इल्यीच ने मास्को की सर की, कृषि और हस्तउद्योग प्रदर्शनी देखी।

यह पहली सोवियत प्रदर्शनी थी और ब्लादीमिर इल्यीच उसे अवश्य देखना चाहते थे।

प्रदर्शनी मास्को नदी के तट पर नेस्कूच्नी उद्यान मे आयोजित की गयी थी। पहले यहा मलवा फेंकने की जगह थी। मलबे को हटा दिया गया था, उसकी जगह पर फूलो की क्यारिया, मण्डप, आदि बना दिये गये थे। भूतपूर्व मलवागाह की जगह पर लकडी का बना, परीकथाओ जैसा एक छोटा सा शानदार शहर बस गया था।

लोगो को लडाई, भुखमरी और ठड अभी बहुत याद थी। शायद इसीलिए तरह-तरह के अलकरणो से सजे लकडी के मण्डप परीकथाओ जैसे थे।

यह तो परीकथाओ जसा इसलिए भी था कि मण्डपो मे सुनहरी गेहू, राई के ढेर, मोटी मोटी पत्तागोभियो के पिरामिड और गुलाबी, जल्दी पकनेवाले आलू, तरबूजो और सरदो के पहाड लगे थे। यह सब रूस के खेतो और बागो की उपज थी।

साफ दिखायी दे रहा था कि गाव फिर फलने फूलने लगे ह।

फैक्टरिया और कारखाना ने भी प्रदर्शनी म अपने उत्पादन भेजे थे। वे इसका प्रमाण थे कि शहर गरीबी और तबाही से उबरने लगे ह।

ब्लादीमिर इल्यीच मास्को से थके हुए, लेकिन आतरिक उल्लास और जीवन से भरपूर लौटे।

उन्हे देखकर नादेज्दा कोन्स्तातीनोव्ना को लेनिन का २० नवबर, १९२२ को बोल्शोई थियेटर में दिया हुआ भाषण एकाएक और बडी प्रखरता के साथ याद आ गया। यह बीमारी से पहले लेनिन का आखिरी भाषण था।

उसम लेनिन ने कहा था ' नयी आर्थिक नीति के रूस से समाजवादी रूस का उदय होगा।"

जीवन से लगाव

स्लेजगाड़ी सरपट भाग रही थी। घोड़ा के खुरा के नीचे से वफ रेत की तरह उड़ रही थी। फिसलनदार लीका पर स्लेज की पटरिया चीख रही थी। सूय अभी अभी डूबा था। क्षितिज पर लालिमा अभी भी छायी हुई थी। लेकिन धुधलका तेजी से बढ रहा था और बफ से ढके खेत नीले पड़ते जा रहे थे। दूर क्षितिज के पास जगल काली दीवार की तरह खडे थे। तभी आकाश के व्यापक विस्तार म एक शात, ऊचा तारा भी चमकने लगा।

व्लादीमिर इल्यीच शिकार से लौट रह थे। अभी उनम इतनी ताकत नही थी कि बदूक थाम सके। वह सिफ दूसरा को शिकार करत देखने रहे लेकिन इमसे भी उह अतुलनीय खुशी मिली थी। उह शिकार और शिकार से सबधित हर चीज पसद थी जगल मे घूमना, वय जीवन को सुनना, देखना, जानवरा का पीछा करना और बदूक से फायर करना।

लेकिन बहुत से ऐसे मौके भी होते थे, जब कोई दूसरा शिकारी अवश्य फायर करता, मगर व्लादीमिर इल्यीच नही। एक बार सरदिया म वह झडियो से लोमडी के शिकार पर गये थे। शिकारी जगल के काफी हिस्से म लाल झडिया गाड देते थे। लोमडी उनसे डरकर भागती थी और बाहर निकलने का रास्ता खोजती थी। उस बार भी वैसा ही किया गया था। एक ओर से शिकारी चिल्लाते हुए लोमडी को बाहर निकलने के रास्ते की ओर भगा रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच बदूक हाथ म थामे खडे थे और सोच रहे थे कि काश, अभी फायर करने का मौका मिल जाये। अचानक चमत्कार सा हुआ। उनके सामने देवदार के पेडो के पीछे से एक लोमडी निकली। व्लादीमिर इल्यीच जहा के तहा जड हो गये। वह बेहद खूबसूरत थी। चमकीला लाल रग, नुकीला मुह और सुदर रोयेदार पूछ। वह सीधे उनकी तरफ आ रही थी। मगर उहोने फायर नही किया। वह बहुत सुदर, खूबसूरत थी। और दिन भी आज की तरह बर्फीला धूपखिला और चमकता हुआ था।

व्लादीमिर इल्यीच उस घटना को याद कर मुस्कराये।

स्लेज की पटरिया कितनी सुदर आवाज कर रही थी। आहिस्ता आहिस्ता शाम निकट आती जा रही थी। धुधलका फैलता जा रहा था और जगल के ऊपर उजला हसिया सा बन रहा था।

घर पर खिड़की से नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने भी इस दृश्य को देखा और मरीया इल्यीनिच्ना से कहा

"आज मानो त्यौहार है। देखो तो आज चन्द्रमा कितना खूबसूरत लग रहा है।"

"ऐसा हमें इसलिए लग रहा है कि वोलोद्या की तबीयत सुधर गयी है। ज़रा सोचो तो, यहां तक कि शिकार पर भी जाने लगे हैं। कमाल है न?" मरीया इल्यीनिच्ना ने उत्तर दिया।

"और याद है, वह नववर्ष के अवसर पर कैसे हंस थे? बिल्कुल पहले की तरह!"

और वे कुछ ही दिन पहले मनाये गये नववर्ष के त्यौहार की याद करने लगे, जब नववर्ष वृक्ष भी सजाया गया था। उसे गोर्की की बड़ी कोठी में हाल में समीपवर्ती राजकीय फार्म और कर्मचारियों के बच्चों के लिये खड़ा किया गया था। व्लादीमिर इल्यीच बच्चों के साथ बहुत हंसे खेले थे। उन्हें मरीया इल्यीनिच्ना का पियानो बजाना भी याद आया। व्लादीमिर इल्यीच संगीत सुनकर अत्यन्त भावविभोर हो गये थे।

इस दिन उन्हें सुखद क्षणों की याद करने की ही इच्छा हो रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच शीतकालीन वन से बहुत उल्लासपूर्ण मुद्रा में घर लौटे। उनके गाल बिल्कुल गुलाबी हो गये थे। आंखें अद्भुत रूप से चमक रही थीं। ठंडी हवा, शिकार और स्लेज पर सफर ने उनमें ताज़गी और फुर्तीलापन भर दिया था। मगर अब आराम करना ज़रूरी था। डाक्टर व्लादीमिर इल्यीच पर हर समय नज़र रखते थे। न चाहते हुए भी एक घंटे बिस्तर पर लेटना ही पड़ा।

जब तक व्लादीमिर इल्यीच आराम करते रहे, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मरीया इल्यीनिच्ना ने आपस में कोई बात नहीं की। सिर्फ मुंह पर अंगुली रखकर एक दूसरे को चेताती रहीं शश्श व्लादीमिर इल्यीच कहीं जाग न जायें!

मन में दोनों के एक सकुचाहट और झिझक भरी मूक सी खुशी थी। वे आशापूर्ण नज़रों से भविष्य की ओर देखतीं। डाक्टर आशाएं बंधाते। एक ने तो हाल ही में कहा था

"शायद वसंत तक पूरी तरह चंगे हो जायेंगे।"

शाम को नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना व्लादीमिर इल्यीच को कुछ न कुछ

पढ़कर सुनाती थी। जबसे उनकी हालत में सुधार आया है, तबसे वह हर रोज़ "प्राव्दा" भी पढ़कर सुनाने लगी। और इस समय जब लण्डन की कहानी सुना रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच आराम कुर्सी में बैठे, विचारों में खोये, थोड़ी सी सकुचित आंखों से खिड़की की ओर देख रहे थे। वहां पार्क था, जिसे बर्फ ने ढक दिया था। भीषण ठंड की वजह से खिड़की के कांचों पर पाला जम गया था। सफेद पर्णांग की टहनियां अत्यन्त मोहक ढंग से खिड़कियों पर फैली थीं। जैसा कि बचपन में होता था, ये बर्फ के फूल बिल्कुल जादुई लगते थे।

नादेज्दा कोन्स्तांतीनोव्ना जो कहानी पढ़कर सुना रही थी उसका शीर्षक था "जीवन की चाह"। भूख से तड़पता आदमी बर्फ के रेगिस्तान से निकलने की कोशिश कर रहा है। वह बेहद थक गया है, कमज़ोर हो गया है और आगे नहीं चल सकता। उसके पास ही एक बीमार, मरता हुआ भेड़िया भी रेंग रहा है। भेड़िये और आदमी के बीच लड़ाई शुरू हो जाती है। कौन जीतेगा? भेड़िया तो नहीं? नहीं। जीत आदमी की हुई। उसकी अकल्पनीय जिजीविषा ने उसे अद्भुत शक्ति दे दी थी। आदमी का एक लक्ष्य था जहाज़, जो बर्फ के रेगिस्तान के छोर पर समुद्र तट के पास दिखायी देने लगा था। वहां जीवन था। और वह आगे बढ़ता गया, बढ़ता गया।

व्लादीमिर इल्यीच को यह कहानी बहुत पसन्द थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना जानती थी कि उसमें उन्हें क्या उत्तेजित करता है। यह था साहस, दृढ़ता, जिजीविषा, हार न मानने का संकल्प।

व्लादीमिर इल्यीच ने भी हार नहीं मानी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना आज की कहानी से उनके मन में जगे विचारों, भावों को समझती थीं। कुछ भी हो जीवन की ओर, श्रम की ओर लौटना है।

मगर क्या जनवरी की उस शाम को वह भाव भी सकती थीं कि व्लादीमिर इल्यीच अब बहुत कम समय के ही मेहमान हैं।

बीमारी के नये दौर ने एकाएक और अप्रत्याशित निर्ममतापूर्वक हमला किया। यह अन्तिम और घातक हमला था।

२१ जनवरी, १९२४ की शाम के छः बजकर पचास मिनट पर गोर्की में लेनिन के प्राणपखेरू उड़ गये।

खड़े हो जाओ, साथियो!

इंजन न० "ऊ १२७" ने गृहयुद्ध के दिनों में असंख्य लाल सैनिकों और छापामारों को जाना था। सारे युद्धकाल में वह सैनिक और हथियार मोर्चे पर पहुंचाता रहा था। और मोर्चे से घायलों को पिछवाड़े में लाता था। वह दिन रात काम करता रहता था। सफ़ेद गार्डों के हथगोलों और गोलियों ने उसे जर्जर कर दिया। लड़ाई ख़त्म होते होते वह बिल्कुल बेकार हो गया।

मगर जब सोवियत जनता ने देश की अर्थव्यवस्था की बहाली शुरू की, तो उसकी याद की गयी। मज़दूरों ने उसे रद्दी इंजनों के ढेर में पड़ा पाया और फ़ैसला किया कि मरम्मत करके उसे पुनः कार्य योग्य बनाया जाये।

मरम्मत सफल रही। इंजन नंबर "ऊ १२७" वर्कशाप से यों निकला, जैसे बिल्कुल नया हो। मरम्मत करनेवाले मज़दूर पार्टी के सदस्य नहीं थे। फिर भी उन्होंने अपने नये इंजन को, जिसे उन्होंने ओवर टाइम के घंटों में तैयार किया था, कम्युनिस्टों को भेंट किया। और व्लादीमिर इल्यीच को उसका ऑनरेरी ड्राइवर निर्वाचित किया।

जब लेनिन का निधन हुआ, तो इस इंजन को एक अत्यन्त शोकपूर्ण कार्य सौंपा गया। उसे जनाज़े की गाड़ी को गोर्की से मास्को पहुंचाना था।

सारी रात, सारे दिन और फिर सारी रात आसपास और दूर दूर के गांवों और बस्तियों से किसान अपने प्रिय नेता से अंतिम विदा लेने के लिए गोर्की पहुंचते रहे।

कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। रह-रहकर तेज़, बर्फ़ीली हवा चल रही थी। गोर्की के पार्क में हवा से हिलती हुई पेड़ों की शाखें कांच की तरह बज उठती थीं। बड़ी इमारत के सफ़ेद खंभे काले और लाल कपड़ों से लिपटे हुए थे। सड़कों को देवदार की टहनियों से ढक दिया गया था। बर्फ़ पर पड़े फूल वातावरण को और भी विषादमय बना रहे थे। मज़दूर, किसान, साथी और सरकार के सदस्य अर्थी को अपने कंधों पर उठाकर घर से चार वर्स्ट की दूरी पर स्थित स्टेशन तक ले गये। वहां से इंजन नंबर "ऊ १२७" को उसे मास्को पहुंचाना था।

मात्वेई कुज़्मिच लूचिन इक्कीस साल से ड्राइवरी कर रहे थे। इस बार

"ऊ १२७" को चलान का काम उन्हे सौंपा गया। गाडी बिना रुके जा रही थी। उसे लेनिन की अर्थी को लेकर ठीक एक बजे मास्को पहुंचना था।

गोर्की से मास्को तक सारे रास्ते भर रेलवे लाइन के किनारे किनारे किसान खडे थे।

इजन नजदीक पहुचने पर लबी, शोकपूर्ण सीटी देता। लोग अपनी जगह से न टलते। वे निश्चल पटरियो पर खडे रहते। कधे से कधा मिलाये हुए और मौन। इजन स्टेशन तक नही पहुच पाता और रुक जाता। तब ड्राइवर कैबिन से बाहर निकलकर लोगो से कहता

"साथियो! ब्लादीमिर इल्यीच इस इजन के आनरेरी ड्राइवर थे। मैने उन्हे वचन दिया था कि कभी लेट नही होऊगा। आज मुझे ठीक एक बजे मास्को पहुचने का आदेश मिला है। मुझे अपना वचन पूरा करने दीजिये। इल्यीच को दिया हुआ वचन "

और उसकी आखो से आसुओ की झडी लग जाती। लोग भी रो पडते और गाडी के लिए रास्ता छोड देते।

मास्को। साथियो ने इल्यीच की अर्थी को पुन कधो पर उठा लिया। मास्को की सडको से होते हुए, हजारो मौन खडे लोगो की भीड के बीच से वह धीरे धीरे उसे ट्रेड यूनियन भवन ले जा रहे थे।

सहसा छतो के ऊपर आसमान घूघाहट की भारी आवाज से भर गया। हवाई जहाज काफी निचाई पर उड रहे थे। और सफेद कबूतरो की तरह परचे इधर-उधर उडने लगे। लोगो ने उन्हे पकडा। लेनिन के बारे मे पढा।

चौराहो पर लकडी के स्टैण्डो पर लेनिन की जीवनी के बारे मे पोस्टर टगे हुए थे। लेनिन अत्यन्त विनम्र व्यक्ति थे। अपने बारे मे वह किसी को नही लिखन देते थे। मगर अब चूकि वह नही रहे थे, लोग उत्कण्ठापूर्वक लेनिन के महान जीवन की सक्षिप्त कहानिया पढ रहे थे।

ठड बहुत थी। मास्को की सडको पर जगह-जगह पर अलाव जल रहे थे। दिन रात लोगो की अन्तहीन भीड ट्रेड यूनियन भवन की ओर बढ रही थी। लोग थोडी देर रुक कर अलावो के सामने अपने को गरमाते और फिर चल पडते। या फिर एक ही जगह पर खडे पैर पटकते रहते, ताकि ठड से जम न जायें। भीड बहुत धीरे धीरे बढ रही थी।

भीड मे मास्कोवासी भी थे और देश के अन्य भागो से आये लोग भी।

ग्गी, उत्तरनी, आर्मीनियाई, जाजियाई, बेलारूसी, बजाग गभी। यहां से विदेशी कम्युनिस्ट और मजदूर भी लेनिन के अंतिम दर्शन के लिए आये थे।

ट्रेड यूनियन भवन में लेनिन का शव फूलों के सागर में डूबा हुआ था। शोक संगीत बज रहा था। लाग खामोशी से शव की बगल से गुजर रहे थे।

रविवार, २७ जनवरी को मास्को समय के अनुसार चार बजे व्लादीमिर इल्यीच को दफनाया गया।

लाल मैदान में समाधि बना दी गयी थी। तीन दिन तक भीषण ठंड में काम करते हुए उसे तैयार किया गया था। उस समय उसे लकड़ी से बनाया गया था। बाद में उसकी जगह पर ग्रेनाइट और संगमरमर का शानदार समाधि का निर्माण किया गया।

२७ जनवरी की सुबह कल-कारखाना, सोवियत जनतंत्रों के विभिन्न शहरों और विदेशी कम्युनिस्ट पार्टियों के अनगिनत प्रतिनिधिमंडल लाल मैदान में श्रद्धांजलि अर्पित करने आये। वहां सुबह से ही जनवरी के हिमशीत आकाश तले एक ऊंचे मंच पर लाल कपड़े से ढका लेनिन का शव रखा हुआ था।

सलामी देनेवाले सैनिक निश्चल खड़े हो गये। सारा लाल मैदान निश्चल खड़ा हो गया। विश्व में पहली समाजवादी क्रांति के नेता के शव की बगल से घुड़सवार टुकड़ी सलामी देती हुई गुजरी। उसके पीछे पीछे आर्टिलरी सेना की टुकड़िया भी लेनिन को अंतिम सैनिक सलामी देने के लिए आयी।

और फिर मजदूरों की कतार गुजरने लगी। मंच के पास पहुंचने पर वे अपने शोकसूचक ध्वजा को नीचे झुका लेती।

ठीक चार बजे शहरों और गांवों में रेडियो पर सुनायी दिया

"खड़े हो जाओ, साथियो! इल्यीच के शव को समाधि में रखा जा रहा है।'

कारखानों में मशीनें रुक गयी। सड़कों पर यातायात रुक गया। सिर झुकाकर लोग खड़े हो गये। विदेशों में मजदूरों ने काम रोक दिया। पांच मिनट तक सभी मौन रहे। और कल-कारखानों के भोंपू बजते रहे। रेलगाड़ियां भी ठहर गयी। सागरों में हमारे जहाज रुक गये। खेतों, गांवों,

कल-कारखाना, शहरों, और हमारी समूची मातृभूमि के आकाश में शोक का मात्वनाहीन स्वर देर तक गूंजता रहा।

लाल मैदान में बर्फीली हवा चल रही थी, मातम के सूचक लाल झंडों को फड़फड़ा रही थी। चेहरों पर आंसू जम गये थे।

तोपों की गरज के साथ लेनिन को अंतिम विदा दी गई।

लेनिन के शव को हमेशा-हमेशा के लिए समाधि में रख दिया गया।

संध्या का वक्त हो गया था। मगर लोगों की कतार लाल मैदान में लेनिन की समाधि की बगल से गुजरती जा रही थी गुजरती जा रही थी

चेरी फूलने लगी

वसन्त शुरू हो गया। गोर्की के पार्क में रूस पक्षी वापस आ गये और अपने उल्लास भरे कोलाहल से आसपास के इलाकों को गुंजाते हुए नये घोसले बनाने या पुराने घोसलों को ठीक करने लगे। भरद्विया भी लौट आया। आसमान का ऊंचा, अथाह नीला विस्तार उनके रंगीले तरंगवान कलरव से भर गया। छोटी झील के ऊपर पारदर्शी पंखोंवाले भिड़ूने सूरज की किरणों में मंडराने लगे।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना झील के तट पर कुछ देर के लिए रुक गई। वह गोर्की के पार्क में व्लादीमिर इल्यीच की सभी प्रिय जगहों और पगडंडियों को जानती थी।

लेकिन एक जगह ऐसी भी थी, जिसे व्लादीमिर इल्यीच नहीं देख पाये थे। पर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को वह बहुत पसन्द थी। इस समय वह पुनः यहां आयी। वह वहां पड़ी एक बेंच पर बैठ गयी और अपने झुर्रीदार, फूली हुई नसोंवाले हाथों को घुटनों पर रख विचारों में खो गयी।

यहां चेरी फूल रही थी। पेड़ अभी बिल्कुल जवान थे। उनकी शाखें लचीली, पतली और गहरे, चमकीले लाल रंग की थीं।

ये पहली बार फूल रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच उनको फूलता हुआ नहीं देख पाये थे।

पिछली शरद में रूसगावा फैक्टरी के मजदूर व्लादीमिर इल्यीच से मिलने गोर्की आये थे। चिट्ठी के अलावा वे व्लादीमिर इल्यीच के लिए भेंट के तौर पर अपने फैक्टरी के बाग में उगाये गये चेरी के पौधों को भी लाये थे।

व्लादीमिर इल्यीच मजदूरा स मिलकर कितन हर्षित हुए थ। उनकी आखे उल्लास स चमकने लगी थी।

व्लादीमिर इल्यीच से विदा लेते हुए एक वृद्ध मजदूर न कहा था

व्लादीमिर इल्यीच, म लुहार हू। हम हर चीज को वैसा ही गढ देगे, जसा तुमन सोचा है।"

और उसने लेनिन का कसकर बाहुपाश म ले लिया था। वे देर तक उस हालत म खडे रहे थे। इस बूढे लुहार के माध्यम स व्लादीमिर इल्यीच मानो सारे मजदूर वग को अपना हार्दिक अभिवादन भेज रहे थे। और मजदूर न लेनिन को वचन दिया था।

"हम वचन देते हैं, इल्यीच, हमारे प्यारे इल्यीच!" नादज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना न मजदूर की शपथ को दोहराया।

चेरी के पेडो के ऊपर मधुमक्खिया मडरा रही थी

तबसे बहुत से वसन्त, बहुत साल बीत गये हैं।

गोर्की के पाक के चेरी के पेड बहुत बडे हो गये हैं।

लेनिन द्वारा स्थापित राज्य भी बढकर शक्तिशाली हो गया है। लेनिन द्वारा स्थापित पार्टी भी काफी प्रौढ हो गयी है।

बीच म कठिनाइया, विपत्तिया के साल भी आये। पर मातृभूमि न सब कुछ सहन किया। हमारा सोवियत सघ अधिक मजबूत, शक्तिशाली और सुदर होता जा रहा है। आज हमारे देश के दूरदराज इलाको म भी "इल्यीच की बत्तिया" जलती हैं। देश मे असख्य बिजलीघर, कल कारखाने, सामूहिक और राजकीय फाम, नये शहर, स्कूल, क्लब, थियेटर, और अतरिक्ष अड्डे है

काश, व्लादीमिर इल्यीच यह सब देख पाते!

और अगर देख पाते, तो शायद कहते

"रुको नही। अभी सब कुछ हासिल नही किया है। हमारा लक्ष्य कम्युनिज्म है!"

कम्युनिज्म—यह न्याय और सत्य है। यह सबकी भलाई के लिए सबका श्रम है। यह नये की खोज मे आगे, निरतर आगे बढने का निर्भय रास्ता है। यह सुदर, उदात्त और सुखी जीवन का हमारा सपना है।

लेनिन ने हम इस सपने को साकार करने का माग दिखाया।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।